पुस्तक 2

□□□□□

कश्यप

नरसिंह त्रयी

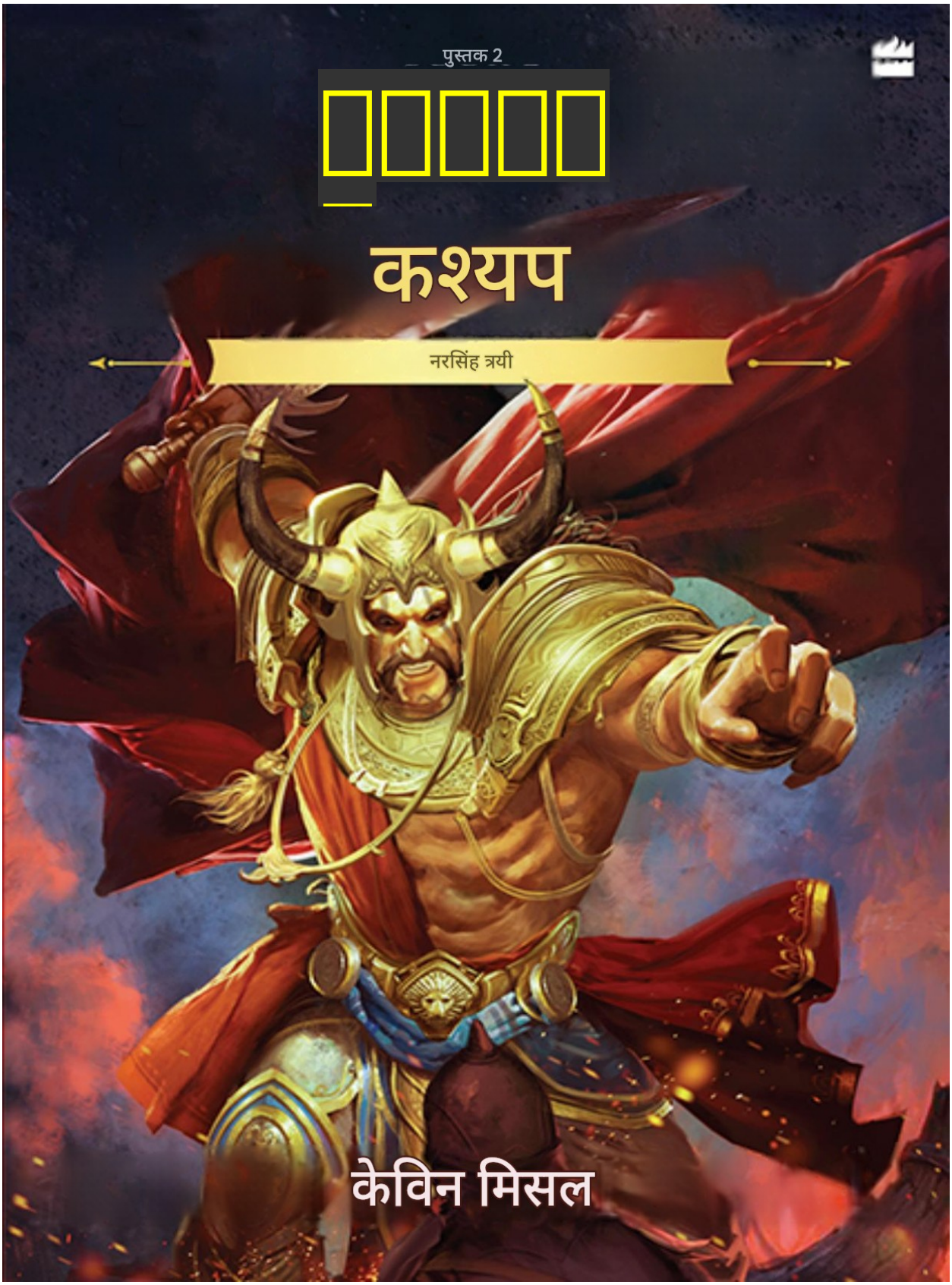

केविन मिसल

Table of Contents

शीर्षक पेज़
समर्पण
अंतर्वस्तु
प्रस्तावना
1 नरसिम्हा
2 हिरण्यकश्यप
3 नरसिम्हा
4 हिरण्यकश्यप
5 नरसिम्हा
6 हिरण्यकश्यप
7 नरसिम्हा
8 हिरण्यकश्यप
9 प्रहलाद
10 चेनचेन
11 होलिका
12 नरसिम्हा
13 प्रहलाद
14 होलिका
15 हिरण्यकश्यप
16 चेनचेन
17 नरसिम्हा
18 हिरण्यकश्यप
19 चेनचेन
20 नरसिम्हा
21 हिरण्यकश्यप
22 चेनचेन
23 नरसिम्हा

24 प्रहलाद
25 होलिका
26 प्रहलाद
27 नरसिम्हा
28 हिरण्यकश्यप
29 चेनचेन
30 प्रहलाद
31 नरसिम्हा
32 प्रहलाद
33 नरसिम्हा
34 होलिका
35 नरसिम्हा
36 होलिका
37 चेनचेन
38 प्रहलाद
39 नरसिम्हा
40 प्रहलाद
41 नरसिम्हा
42 प्रहलाद
43 हिरण्यकश्यप
44 चेनचेन
45 प्रहलाद
46 नरसिम्हा
47 नरसिम्हा
48 प्रहलाद
49 नरसिम्हा
50 चेनचेन
51 प्रहलाद
52 पार्वती
53 नरसिम्हा
किताब के बारे में

[illegible]
[illegible]

BOOK 2

HIRANYAKASHYAP

THE NARASIMHA TRILOGY

KEVIN MISSAL

HarperCollins *Publishers* India

[redacted]

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना
1 नरसिम्हा
2 हिरण्यकश्यप
3 नरसिम्हा
4 हिरण्यकश्यप
5 नरसिम्हा
6 हिरण्यकश्यप
7 नरसिम्हा
8 हिरण्यकश्यप
9 प्रहलाद
10 चेनचेन
11 होलिका
12 नरसिम्हा
13 प्रहलाद
14 होलिका
15 हिरण्यकश्यप
16 चेनचेन
17 नरसिम्हा
18 हिरण्यकश्यप
19 चेनचेन
20 नरसिम्हा
21 हिरण्यकश्यप
22 चेनचेन
23 नरसिम्हा
24 प्रहलाद
25 होलिका
26 प्रहलाद
27 नरसिम्हा
28 हिरण्यकश्यप

29 □□□□□□□
30 □□□□□□□□
31 □□□□□□□□□
32 □□□□□□□□
33 □□□□□□□□□
34 □□□□□□□
35 □□□□□□□□□
36 □□□□□□□
37 □□□□□□□
38 □□□□□□□□
39 □□□□□□□□□
40 □□□□□□□□
41 □□□□□□□□□
42 □□□□□□□□
43 □□□□□□□□□□□□□
44 □□□□□□□
45 □□□□□□□□
46 □□□□□□□□□
47 □□□□□□□□□
48 □□□□□□□□
49 □□□□□□□□□
50 □□□□□□□
51 □□□□□□□□
52 □□□□□□□□
53 □□□□□□□□□
□□□□□□ □□ □□□□□ □□□
□□□□□ □□ □□□□□ □□□
□□□□□□□□□

पाठक के लिए नोट

इस त्रयी की पहली पुस्तक, नरसिम्हा, को इस पुस्तक को शुरू करने से पहले पढ़ें। हालाँकि मैंने आपको पहली पुस्तक का सारांश दिया है ताकि आपको याद रहे, फिर भी मुझे लगता है कि नरसिम्हा पढ़ने के बाद आप इस पुस्तक के पात्रों और घटनाओं से और भी अधिक जुड़ाव महसूस करेंगे और उनके प्रति और भी अधिक रुचि लेंगे।
इस पुस्तक के लिए, मेरी प्रेरणा केवल इन पात्रों और उनके जीवन को आगे ले जाना और इसमें अत्यधिक गति लाना रही है, क्योंकि पहली पुस्तक पूरी तरह से परिदृश्य बनाने के बारे में थी।
आशा करते है कि आप को आनंद आया!
— केविन।

जनजातियाँ

देवता
देव, इल्लावर्ती के उत्तर में स्थित स्वर्ग द्वीप से आए विदेशी हैं। उन्होंने देश के उत्तरी भाग पर कब्ज़ा कर लिया और प्रमुख शहरों पर अधिकार कर लिया। उनके शासक का नाम इंद्र है। वे अग्नि, जल और हिम जैसे प्रकृति के विभिन्न तत्वों की पूजा करते हैं। उनकी आयु लंबी होती है - दो से तीन सौ वर्ष। वे अत्यंत गोरे होते हैं और अक्सर उन्हें सफेद रंग से जोड़ा जाता है। वे सोमास के निर्माता हैं, जो स्वर्ग में पाए जाने वाले सोमालिया पौधों से प्राप्त एक नीला औषधीय द्रव है। वे धर्म के साथ-साथ त्रिदेव - विष्णु, महादेव और ब्रह्मा में भी विश्वास रखते हैं।
असुरों
असुर पाताल द्वीप के विदेशी हैं, जो इल्लावर्ती के पूर्व में, काला सागर के पार स्थित है। वे भूरे रंग की त्वचा और सुनहरी आँखों वाले हैं और देवताओं की तरह तत्वों की पूजा नहीं करते, बल्कि शक्ति और वीरता जैसे गुणों की पूजा करते हैं। वे इल्लावर्ती के दक्षिणी क्षेत्रों पर शासन करते हैं और उनकी राजधानी कश्यपुरी है। उन्हें अक्सर बुराई से जोड़ा जाता है क्योंकि उनका कोई धर्म नहीं है और वे किसी धर्म में विश्वास नहीं करते। वे सोमा का सेवन नहीं करते। उनका कवच मजबूत होता है और वे युद्ध में कुशल होते हैं।
दानवस
दानवों को पौलोमा और कालकेय में विभाजित किया गया है। पौलोमा बौने विशालकाय होते हैं, जिनकी लंबाई अक्सर दस से पंद्रह फीट तक होती है, जबकि कालकेय बीस फीट से अधिक लंबे होते हैं। वे विशेष रूप से उनके लिए निर्मित विशाल मीनारों में रहते हैं। वे अत्यधिक मात्रा में भोजन और जल का सेवन करते हैं। वे ऐतिहासिक रूप से असुरों के रक्त संबंधी हैं और हिरण्यपुर में

रहते हैं। निरंतर नींद और भोजन की आवश्यकता के अलावा, उनके जीवन का कोई अन्य उद्देश्य नहीं है।
सिम्हास
इलवर्ती में प्रचलित पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु ने बुराई के विरुद्ध अपने पहले युद्ध में सिंह वंश की उत्पत्ति की थी। सिंह वंश आधा शेर और आधा मनुष्य है। वे मृत शेर की खाल धारण करते हैं। वे भगवान विष्णु के लुप्त धार्मिक नगर वैकुंठ में निवास करते हैं। चूंकि देवता धर्म के पक्ष में हैं, इसलिए सिंह वंश देवताओं की ओर से युद्ध लड़ता है। वे अधर्म से संबंधित मानी जाने वाली प्रथाओं के विरुद्ध हैं। उनके पंजे मजबूत होते हैं और उनकी त्वचा पीली होती है। उनकी दाढ़ी लाल रंग की होती है। इस युग का अवतार सिंह वंश से ही होगा।

Chronology

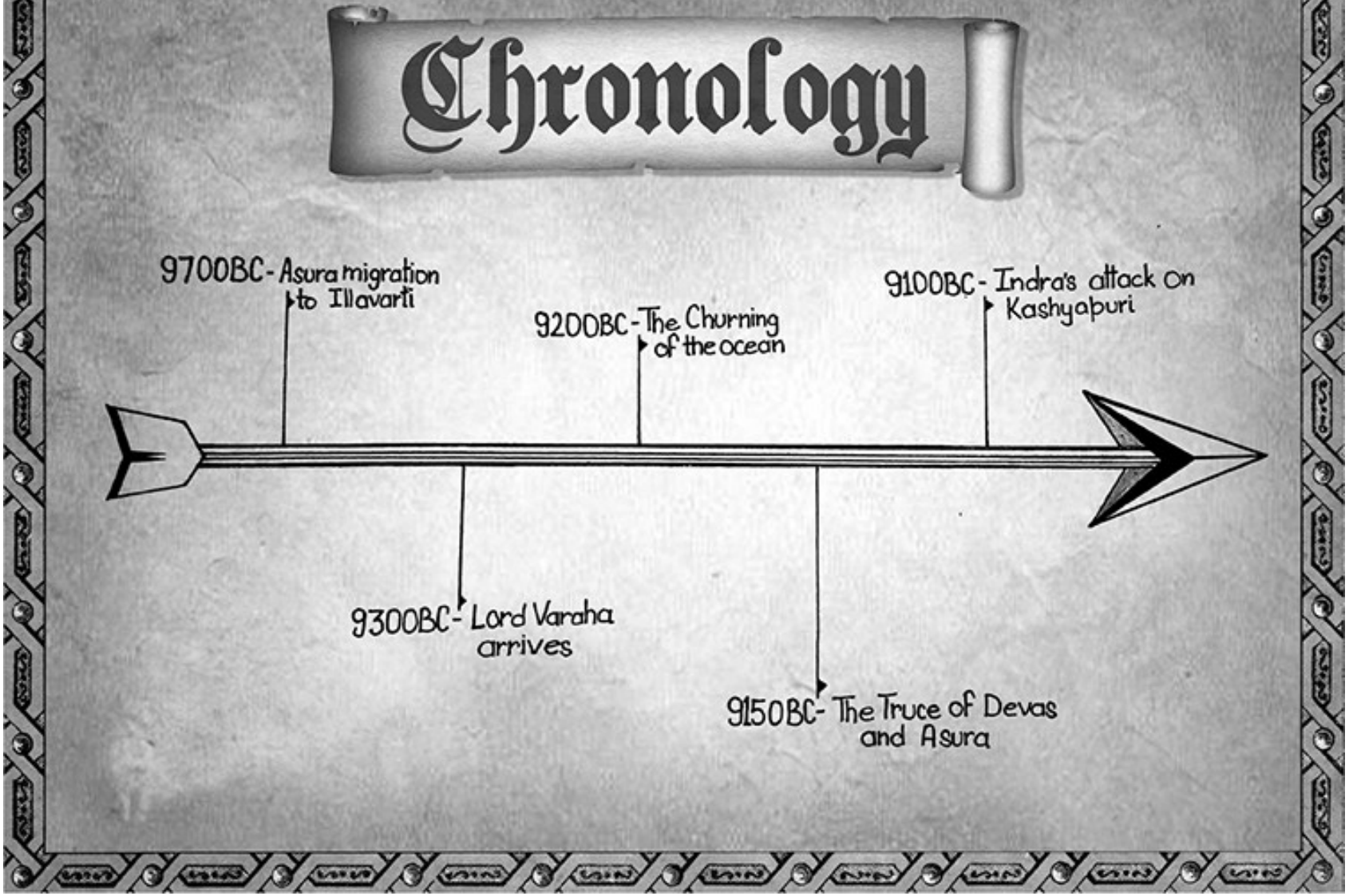
9700BC - Asura migration to Illavarti
9200BC - The Churning of the ocean
9100BC - Indra's attack on Kashyapuri
9300BC - Lord Varaha arrives
9150BC - The Truce of Devas and Asura

अब तक कहानी

चौदह वर्ष पूर्व, असुरों और देवों के बीच की संधि टूट गई, जिसके परिणामस्वरूप असुर रानी की मृत्यु हो गई।
एक दशक से अधिक समय बीत चुका है। कश्यपपुरी में आक्रमण के सूत्रधार लगभग गायब हो चुके हैं।
जैसे ही हिरण्यकश्यप देवताओं के खिलाफ अपने प्रतिशोध की योजना बनाता है, वह अपने दिवंगत भाई के पदचिन्हों पर चलने का विकल्प चुनता है, और सिंहासन अपने सबसे बड़े पुत्र अनुहृद के बजाय अपने अनुभवहीन 15 वर्षीय पुत्र प्रहलाद को सौंप देता है।
सिंह वंश के एक अनुभवी योद्धा नरसिम्हा अपने अतीत से व्याकुल हैं और मानव वंश के साथ छिपकर रहने का विकल्प चुनते हैं। लेकिन जब उनका भेद खुल जाता है, तो उन्हें तीसरे शिव, भैरव के साथ हिरण्यकश्यप के भतीजे अंधक के विरुद्ध लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित किया जाता है। पहले आक्रमण की रात, वे अंधक को सफलतापूर्वक परास्त कर देते हैं।
नरसिम्हा के हमले में अंधका के बच जाने की खबर सुनकर भैरव को गहरा आश्चर्य हुआ। भैरव इस बात पर विचार कर रहे थे कि क्या उन्हें अपने शत्रु के विरुद्ध पशुपतास्त्र जैसे परमाणु हथियार का प्रयोग करना चाहिए, वहीं नरसिम्हा सोच रहे थे कि क्या इन लोगों की सहायता करने का निर्णय उन्हें इस युग का धर्म बना देगा। भविष्यवाणी के अनुसार, इस युग का धर्म समय से पहले ही समाप्त हो जाएगा, और इस संसार का भाग्य अधर्म के हाथों में आ जाएगा।
अपने भाई के शोध का अध्ययन करते हुए हिरण्यकश्यप को पता चलता है कि वे ब्रह्मा के वंशज हैं और इसलिए अवतार मोहिनी के सार से निर्मित अजेय कवच के उत्तराधिकारी हैं। वह ब्रह्मा की तीन परीक्षाओं से गुजरकर और देवताओं को परास्त करके उस अजेय कवच को पुनः प्राप्त करना चाहता है।

कार्यवाहक राजा प्रहलाद अपने राज्य में गुप्त रूप से सक्रिय एक उग्रवादी संगठन, विष्णुसेना की जांच करते हैं। लेकिन जब उन्हें पता चलता है कि संगठन का नेता नारद है, जो एक मानव कुलीन और उनकी दिवंगत माता का विश्वासपात्र है, तो वे यह सोचने लगते हैं कि क्या यह संगठन वास्तव में उतना ही दुष्ट है जितना उनकी मौसी होलिका ने बताया था। वे यह भी सोचने लगते हैं कि क्या धार्मिक आस्था के नाम पर संगठन के उद्देश्य अंततः असुर कानूनों में सुधार ला पाएंगे।
पशुपतास्त्र के दुष्परिणाम देखकर भयभीत नरसिम्हा उस शस्त्र को नष्ट कर देते हैं और अंधक से शांति स्थापित करने का सुझाव देते हैं, जिससे भैरव बेहद नाराज हो जाते हैं। अपने स्वामियों का सम्मान प्राप्त करने और अपनी देखभाल करने वाले सिंहों में से एक के प्रति प्रेम विकसित करने के बाद, भैरव को लगता है कि अब उन्हें छिपने की आवश्यकता नहीं है और वे अवतार बने बिना ही शांति प्राप्त कर सकते हैं। जब भैरव अपने पुत्र को न बचा पाने के अपराधबोध को व्यक्त करते हैं, तो अंधक उन्हें पशुपतास्त्र लाने की शर्त पर शांति संधि करने के लिए बुलाता है।
दोनों पक्ष शांति स्थापित करने के लिए मिलते हैं: एक ओर भैरव की सेना और सिंह वंश, और दूसरी ओर असुर राजा के भाई अनुह्रद के साथ अंधका की सेना। अंधका उनकी पोल खोल देता है और खुलासा करता है कि वह वास्तव में भैरव का खोया हुआ पुत्र है। भैरव भावुक होकर अपने पुत्र को गले लगा लेते हैं, लेकिन पुत्र उन्हें छुरा घोंप देता है और कहता है कि वह अब वह बेचारा बच्चा नहीं, बल्कि अंधा राजकुमार अंधका है। क्रोधित नरसिंह उन पर युद्ध की घोषणा कर देते हैं और अनजाने में अनुह्रद को मार देते हैं। अनुह्रद बताता है कि उसने असुर साम्राज्य के विनाश के अंधका के उद्देश्य का समर्थन इसलिए किया था क्योंकि उसे लगा था कि इससे उसके पिता द्वारा उसकी प्रेमिका की हत्या का बदला पूरा हो जाएगा। लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि इससे उसे मृत्यु में भी अकेलापन ही मिला है। वह बताता है कि अंधका के मृत्यु से बच निकलने का एक कारण था। वह दुविधा में फंसे नरसिम्हा से, जिसे लगता है कि उसने एक और निर्दोष को मार डाला है, अपने छोटे भाई की रक्षा करने के लिए कहता है, जो उससे कहीं अधिक गुणी है।
क्रोधित नरसिम्हा भागते हुए अंधका का पीछा करते हैं और उसके सभी प्रतिरूपों का वध कर देते हैं। शिव के त्रिशूल को असली अंधका के गले में

प्रस्तावना

वह सांस नहीं ले पा रहा था। मौत के इतने करीब पहुँचते ही वह बुरी तरह घबरा गया। उसने जंजीरों से जूझने की कोशिश की, अपने हाथों और पैरों को छुड़ाने की कोशिश की। नहीं! हे भगवान विष्णु, मेरी मदद कीजिए!
लेकिन उसकी आँखें बंद होने लगीं, उसकी साँसें रुकने लगीं, उसके अंग सुन्न पड़ गए, जैसे-जैसे वह पानी से जूझता रहा। तभी उसे एहसास हुआ – दो हाथ उसे पानी से उठाकर ठोस ज़मीन पर ले आए। हे प्रभु, क्या यह आप हैं?
उसके कानों में तरह-तरह की आवाज़ों का शोर गूंज रहा था, मानो निरर्थक शोर की लहरें एक के बाद एक आ रही हों। उसकी सांस फूल रही थी और हार व असफलता का एहसास उसे जकड़ रहा था। उस पल, केवल आकाश ही उसके जितना शांत था। उसके कान फड़क रहे थे, खून तेज़ी से दौड़ रहा था, लेकिन वह आकाश के साथ एक हो चुका था और चलते बादल समय के बीतने का हिसाब रख रहे थे।
उसे कई आगों का तीखा धुआँ महसूस हो रहा था, और उसे लोहे के टकराने की तेज़ आवाज़ सुनाई दे रही थी जो आम नागरिकों की चीखों को दबा रही थी, उनके जूतों की कीचड़ भरी ज़मीन पर आवाज़... लेकिन जैसे-जैसे ये जादुई हाथ उसे दूर खींचते गए, ये आवाज़ें धीरे-धीरे मंद होती गईं। ये कौन था? क्या भगवान विष्णु मुझे बचाने आए हैं?
वह अपनी आंखें खोल नहीं पा रहा था। इसलिए उसने उन्हें बंद ही रखा। बस थोड़ी देर के लिए।

वह झटके से जाग उठा। हांफते हुए प्रहलाद ने अपने कमरे का जायजा लिया। वह बीच में एक चट्टानी शिला पर लेटा हुआ था, उसकी छाती नंगी थी और शरीर पर एक

शॉल लिपटा हुआ था। कोने में आग जल रही थी और अगरबत्ती की खुशबू से कमरा महक रहा था।
‘शांत हो जाओ,’ एक मधुर आवाज ने कहा।
प्रहलाद ने परिचित आवाज सुनकर मुड़कर देखा तो धृति एक कोने में खड़ी थी।
घबराहट में उसने शांत और सौम्य धृति पर ध्यान ही नहीं दिया था – वही हत्यारी लड़की जो विष्णुसेना की सदस्य थी। वही थी जिसने प्रहलाद को अपने अत्याचारी पिता के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया था। और वही थी जिससे उसे प्यार होने लगा था।
अपने मासूम चेहरे पर मुस्कान लिए, पीठ पर लहराते अपने आकर्षक लाल बालों के साथ, वह प्रहलाद के पास गई और उसके गाल पर हाथ फेरा। 'मैं नहीं चाहती कि तुम... मैं नहीं चाहती कि तुम अब और चिंता करो। हमने तुम्हें बचा लिया है।' प्रहलाद ने एक पल के लिए उसे घूरकर देखा। ‘क्या? मुझे तो फांसी दी जाने वाली थी। फिर…’
धृति ने बताया, ‘मैं अपने आदमियों को भेस बदलकर शहर ले आया और हमला कर दिया। हमने तुम्हें वहां से निकाला और जंगल में भाग गए और इस तरह छिप गए कि वे हमारे छिपने की जगह का पता न लगा सकें।’
प्रहलाद ने जबड़े भींचते हुए सिर हिलाया। इस समय उसे अपनी चाची से बहुत नफरत हो रही थी, लेकिन शायद उसके सौतेली बेटी की हत्या के बाद उसे जान से मारने की उसकी कुछ वजहें थीं, क्योंकि प्रहलाद परोक्ष रूप से इसके लिए जिम्मेदार था। वह यह जानता था और उसे इस बात का अफसोस था। लेकिन फिलहाल, उसका ध्यान फिर से धृति पर था, जो चिंता से उसे देख रही थी।
‘धन्यवाद,’ प्रहलाद ने उठते हुए कहा। ‘मैं देखना चाहता हूँ… कि हम कहाँ हैं…’
धृति ने उसे कठोर पलंग से उठने में मदद की, और प्रहलाद उस पर सहारा लेकर दरवाजे तक चले। हालाँकि उसका चेहरा पीला पड़ गया था, फिर भी उसे सुरक्षित महसूस हो रहा था, क्योंकि हाल ही में वह मौत के मुंह से बचकर आया था। उसने दरवाजा खोला तो खुद को एक युद्ध शिविर में पाया।
विद्रोहियों का दैनिक जीवन उसके सामने चल रहा था। कुछ खाना बना रहे थे, तो कुछ अपने हथियार तेज कर रहे थे। पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की कतारें एक साथ इकट्ठा होकर तरह-तरह के वस्त्र बुन और सिल रही थीं। बच्चे इधर-उधर

दौड़ रहे थे और एक-दूसरे के साथ खेल रहे थे। झोपड़ियाँ बहुत बड़ी नहीं थीं और पेड़ों की घनी छाया में सुरक्षित रूप से छिपी हुई थीं।
प्रहलाद ने अपनी आँखों के कोने से उस खुले मैदान को देखा जो चट्टान से मिलता था, और वहाँ से कश्यपपुरी के बाहरी इलाके में स्थित विशाल युद्धक्षेत्र दिखाई देता था – जहाँ से अब उसका कोई संबंध नहीं था। उसे एहसास हुआ कि वे उस शहर के बाहरी इलाके में स्थित घने जंगलों वाली पहाड़ियों में हैं, जहाँ से अब भी वह राजकुमार कहलाता था।
धृति ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, 'तुम्हारे नए जीवन में स्वागत है। कुछ लोग तुमसे मिलना चाहते हैं, लेकिन तुम आराम कर रहे थे इसलिए मैंने तुम्हें परेशान नहीं किया।'
प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'कोई नई जानकारी मिली?'
'हमने अपना नेता खो दिया है, इसलिए सब कुछ अस्त-व्यस्त है। लोगों को नहीं पता कि किसका अनुसरण करें।'
‘नारद ने मेरी रक्षा की; उन्होंने मुझे अपने किए का प्रायश्चित करने को कहा। मैं बस…’ प्रहलाद अपनी भौंहें चढ़ाते हुए चुप हो गया। ‘इसके बारे में सोचकर अब भी मुझे दुख होता है। लेकिन पहले, धृति, मुझे बताओ – मैं अभी तक जीवित कैसे हूँ?’
धृति ने मुस्कुराते हुए कहा, 'खूब आयुर्वेद और उससे भी ज्यादा नींद। लेकिन एक बात आपको जरूर जाननी चाहिए।'
'हाँ?'
उन्होंने कहा, “हमें हाल ही में एक पत्र मिला है। मुझे नहीं पता कि उसे यहाँ हमारी जानकारी कैसे मिली। लेकिन उसके कई जासूस ज़रूर हैं, और मुझे आश्चर्य नहीं है, हालाँकि यह जानकर डर लगता है कि उसे हमारी लोकेशन पता है। वह इस तरफ आ रहा है और अगले कुछ दिनों में आपसे मिलना चाहता है। ज़ाहिर है, वह आपके साथ गठबंधन करना चाहता है। मुझे उस पर भरोसा नहीं है, लेकिन…”
'आप किसके बारे में बात कर रहे हैं?'
धृति ने उत्तर दिया, 'तुम्हारा चचेरा भाई।' 'अंधका.'

1

नरसिंह

एक माह बाद …
दर्द भरी चीख नरसिम्हा और जंगल दोनों को एक साथ भेद उठी। नरसिम्हा एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। वह कश्यपुरी जा रहा था और अब तक का सफर काफी शांतिपूर्ण रहा था।
अपने घोड़े पर सवार होकर उसने सीधे जंगल की गहराई में देखा जहाँ से आवाज़ आ रही थी। वह घोड़े से उतरा और बिना सोचे समझे आवाज़ की ओर दौड़ने लगा। जैसे- जैसे वह करीब आता गया, आवाज़ तेज़ होती गई और वह चीखों को सुनने की कोशिश करने लगा। आखिर यहाँ क्या हो रहा था?
झाड़ियों और हरियाली से गुजरते हुए उसका दिल तेजी से धड़क रहा था, और आखिरकार वह घटनास्थल पर पहुंच गया।
काली त्वचा, भूसे जैसे बालों और काले कवच वाले तीन पिशाचों ने नारंगी धोती पहने और हाथ में लाठी लिए हुए उलझे बालों वाले एक ऋषि को घेर लिया था, जो अपने पीछे खड़ी महिला और दो बच्चों की रक्षा करने की कोशिश कर रहा था। पिशाचों में से एक ने सभ्य लहजे में कहा, 'हमें बस यह जानने की जरूरत है कि पक्षी-मानव कहाँ है।'
ऋषि ने शांत लेकिन दृढ़ स्वर में कहा, 'वह यहाँ नहीं है।'
“फिर भी कौवे यहाँ उसकी उपस्थिति की सूचना दे रहे हैं। वह घायल था, आपने उसकी देखभाल की, और अब आप हमें उससे दूर रख रहे हैं। कश्यपुरी की परिषद ने उसका फैसला सुना दिया है – वह राज्य का शत्रु है।”
'चले जाओ, वरना पछताओगे।'
‘यहीं पर तुम गलत हो, बूढ़े आदमी। तुम ही होगे जो –’
ठीक उसी क्षण, ऋषि ने आगे बढ़कर पिशाच के जबड़े पर सिर से प्रहार किया और फिर उसके पैरों को ज़ोर से पटका। पिशाच, जो उस बूढ़े व्यक्ति से दुगना लंबा था, अपना संतुलन खो बैठा और गिर पड़ा, जबकि अन्य दो वहीं जड़वत खड़े रह गए, एक साधारण से दिखने वाले ऋषि की इतनी ताकत देखकर वे अचंभित रह गए।

हाथों में भाले लिए वे आगे बढ़े, लेकिन ऋषि ने लाठी से उनके हमलों को रोक दिया। एक पिशाच के वार को रोकते हुए, दूसरे ने अपना हमला उस महिला और बच्चों की ओर मोड़ दिया जो डर से एक-दूसरे को जकड़े हुए थे।
अपने जबड़े को भींचते हुए, नारा तेजी से दौड़ा, उसके सुनहरे बाल उसके चारों ओर लहरा रहे थे, उसके पंजे सूरज की रोशनी में चमक रहे थे, जैसे ही वह पिशाच के पास पहुंचा और अपने नाखूनों से उसके धड़ को चीर दिया, उसकी त्वचा और नसों को फाड़ दिया, जिससे उसकी आंतें बाहर निकल आईं।
पिशाच के ज़मीन पर बेसुध गिरने पर बच्चे और स्त्री भय से चीखने लगे और खून से लथपथ अपने चेहरे छिपाने लगे। तब तक ऋषि ने दूसरे पिशाच को भी पकड़कर नीचे गिरा दिया था। फिर वह नारा की ओर मुड़े। अपनी छड़ी से इशारा करते हुए उन्होंने पूछा, 'तुम कौन हो? क्या तुम उनमें से एक हो?' उनकी नीली आँखें चमक उठीं।
‘नहीं,’ नारा ने कहा। ‘मैं यहाँ दुश्मन नहीं हूँ।’
ऋषि को अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने पलकें झपकाईं तथा अपना दंड नीचे रख दिया। ‘मैं… मुझे खेद है। आपने मेरे परिवार की जान बचाई।’ उन्होंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। ‘धन्यवाद, सिंह।’
उन्होंने कहा, ‘यह नारा है। नरसिम्हा।’
ऋषि ने अपने उद्धारकर्ता की ओर देखा। उनके सिर पर शेर की सुनहरी अयाल थी। उन्होंने जंगल के राजा की खाल को कवच की तरह धारण कर रखा था। उनका शरीर कांसे की तरह गढ़ा हुआ था और चेहरा सुंदर और सुस्पष्ट था।
‘मैं गुरु भारद्वाज हूं,’ बूढ़े व्यक्ति ने फिर से झुककर प्रणाम किया।
‘सुशीला, बच्चों को अंदर ले जाओ।’
महिला ने तुरंत बच्चों को पकड़ा और वहां से चली गई, उसने अपने हाथ से उनकी निगाहें लाशों से हटा दीं।
‘मैं इन्हें दफनाने में आपकी मदद करती हूँ,’ नारा ने कहा।
ऋषि ने संदेह भरी निगाहों से अपनी आँखें सिकोड़ीं और फिर सिर हिलाते हुए कहा, 'धन्यवाद।'

जब उनका काम पूरा हो गया, तो नारा और गुरु भारद्वाज ने अंत्येष्टि की रस्म अदा की, जो अंत्येष्टि स्थल छोड़ने से पहले की जाने वाली अंतिम रस्म थी। आश्रम लौटते समय नारा ने भारद्वाज से पूछा, 'उन्होंने एक ऋषि पर हमला क्यों किया? क्या यह नियमों के विरुद्ध नहीं है?'
“मेरे मित्र, हम अब एक अराजक देश में रहते हैं,” ऋषि ने कहा। वे नारा से कद में छोटे थे, लेकिन फुर्तीले और चुस्त थे, और उनके सफेद बालों के अलावा उनकी उम्र का कोई संकेत नहीं था। “उन्हें किसी बात की परवाह नहीं है। मैं शहर छोड़कर यहाँ शांति से रहने आया, उनके पापों से दूर, लेकिन फिर भी वे मेरा पीछा करते आए। किसलिए? एक जान बचाने के लिए?”
‘वह पक्षी-पुरुष,’ नारा को याद आया। ‘वह कौन है?’
मुझे खुद नहीं पता। पक्षी मानव के बारे में उनकी धारणा गलत थी।
नारा ने सिर हिलाया, हालाँकि भारद्वाज के कहने के तरीके में कुछ गड़बड़ थी। क्या मुझे उस पर विश्वास करना चाहिए? एक सिंह होने के नाते, जिसने अनगिनत युद्ध लड़े थे और कई विश्वासघात देखे थे, उसके लिए यह समझना आसान था कि कोई झूठ बोल रहा है या नहीं। और भारद्वाज निश्चित रूप से कुछ छुपा रहा था।
‘हे भगवान नरसिम्हा, क्या आप रात्रि भोजन के लिए रुकना चाहेंगे?’
‘मैं…’ नारा हिचकिचाया, लेकिन उसे बहुत भूख लगी थी। खाने के ख्याल से ही उसके पेट में गुड़गुड़ाहट होने लगी। ‘दरअसल मैं कश्यपुरी जा रहा हूँ।’ ‘राक्षसों की भूमि में इंद्र का सेवक? हम्म, यह अच्छा नहीं माना जाएगा। तुम्हें ठीक से अपना वेश बदलना होगा,’ भारद्वाज ने कहा।
नारा ने सिर हिलाया। उसने इस बारे में सोचा था। वह अपने सांवले रंग और घने बालों को छिपाने के लिए अपने सिर पर शॉल ओढ़ लेगा। 'मैं किसी का सेवक नहीं हूँ। मेरे रिश्तेदार थे, लेकिन मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति हूँ।'
‘तो आप ऐसा कहते हैं।’
“लेकिन धन्यवाद, मैं… थोड़ा खाना खा लूँगा। मुझे बहुत भूख लगी है।” नारा ने आह भरी, और उम्मीद की कि उसके पेट की गुड़गुड़ाहट की आवाज़ उसके बोले शब्दों से ज़्यादा तेज़ न हो।
वे चुपचाप झोपड़ियों की ओर चलने लगे। जैसे ही वे पास पहुँचे, भारद्वाज को एक गंध महसूस हुई। भारद्वाज ज़रूर झूठ बोल रहा था। उसे ऋषि की ज़मीन पर कहीं किसी घायल व्यक्ति के छिपे होने की गंध आ रही थी।

2

हिरण्यकश्यप

वह उन्हें गला घोंटकर मार डालना चाहता था। धीरे-धीरे।
अंधेरे में अकेले घोड़े पर सवार होकर, उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी और उसके मन में बस यही ख्याल था। पीछे उसके साथी उसका पीछा करते हुए दिख रहे थे, लेकिन ज़्यादा करीब नहीं। यह उसकी लड़ाई थी, और सिर्फ़ उसकी। उसने अपना घोड़ा रोका, और उसका ब्रह्मास्त्र, एक विशाल स्वर्ण तलवार और एक मोटा कवच, चांदनी में जगमगा उठा। यह उसके शरीर पर इतना कोमल और मुलायम महसूस हुआ कि मानो उसने उसे कसकर गले लगा लिया हो। उसने अपने सैनिकों और घोड़े पर सवार होलिका की ओर देखा, जिसकी दोनों तलवारें उसकी पीठ पर म्यान में थीं। उसके चेहरे पर विजय की मुस्कान फैली हुई थी।
हिरण्य ने आगे देखते हुए मन ही मन सिर हिलाया। सामने वह घर था, उसके शहर की गलियों में ईंटों से बनी एक इमारत। यहीं पर सब कुछ तहस-नहस कर दिया गया था। यहीं पर विष्णुसेना के सदस्यों को आखिरी बार देखा गया था।
हिरण्य को उसके जासूसों ने इस स्थान के बारे में बताया था, और वह यहाँ उन्हें नष्ट करने और अपने पुत्र प्रहलाद को मुक्त कराने आया था। वही बालक जिसने उसका विरोध किया था, और फिर उसे त्याग दिया था।
अनुहरद की मृत्यु के बाद, उसे उम्मीद थी कि कम से कम प्रहलाद तो उसके वश में रहेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह बस गायब हो गया। मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ, पुत्र। और मैं तुम्हें आगे किसी भी तरह के दुष्प्रचार से बचाऊँगा। हिरण्य अपने घोड़े से उतरा, उसके पैरों की आहट से धातु की गड़गड़ाहट सुनाई दी। उसने अपनी तलवार को बुलाया, और वह उसके हाथ में मात्र धूसर धुएँ और हवा से आकार लेने लगी। तलवार ने आकार ले लिया, एक भव्य हथियार जो उसके हाथ में भारी था, एक लंबी तलवार जिसका हैंडल सोने का था।

अग्नि को मारकर यक्षलोक को छोड़ने के बाद, वह कश्यपुरी लौटा तो उसे अपने बेटों के बारे में पता चला – एक मर चुका था, दूसरा अपने शत्रुओं के साथ भाग गया था। उसने यह भी सुना कि होलिका ने प्रहलाद को कैद करके मारने की कोशिश की थी, जिससे वह क्रोधित हो गया। यद्यपि वह समझता था कि उसने ऐसा क्यों किया, फिर भी उसे इससे घृणा थी। होलिका के विपरीत, वह आशावादी था। उसे विश्वास था कि प्रहलाद सुधर सकता है। शायद उसे ऐसा इसलिए विश्वास था क्योंकि उसे अपने वंश को आगे बढ़ाने का एकमात्र मौका खोने का डर था।
अब यह समाप्त हुआ।
हिरण्य घर की ओर दौड़ा, उसके हाथों में लगे धातु के दस्तानों से खनखनाहट की आवाज़ आ रही थी। उसने देखा कि दो आदमी ठीक बाहर तैनात थे, जो अंधेरे में छिपकर उसे देख रहे थे। वे पहरेदार थे, जो अपना काम कर रहे थे, और जब उन्होंने अपने शहर के राजसी राजा को अपनी ओर आते देखा, तो वे दुम दबाकर भागने लगे।
लेकिन हिरण्य ने उन्हें ज्यादा दूर नहीं जाने दिया। उसने अपनी तलवार एक आदमी पर चलाई और उसे धड़ से लेकर कमर तक चीर डाला, फिर दूसरे पर झपटा, उसकी पीठ पर कूद गया और उसकी रीढ़ की हड्डी तोड़ दी। उसने घायल आदमी का गला पीछे से पकड़ा और धड़ से अलग कर दिया। अब पहरेदारों को ज्यादा चौकसी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
अपने शरीर से खून पोंछते हुए, उसने लाश से अपना चाकू निकाला और घर के दरवाजे पर आया। दरवाजा तोड़ने के बजाय, उसने दस्तक दी।
कुछ देर तक कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। अंत में, यह थोड़ा-थोड़ा, लगभग दबे स्वर में खुला।
एक महिला वहां खड़ी थी, हिरण्य के चमकते चेहरे को देखकर वह भयभीत लग रही थी
- उसकी गहरी पुतलियां और उसकी पतली, घुमावदार मूंछें।
हिरण्य ने उसके पीछे से कमरे में झाँका और देखा कि वहाँ कुछ और निहत्थे पुरुष और महिलाएँ, यहाँ तक कि बच्चे भी थे। वे सभी नए आगंतुक को देखकर आश्चर्यचकित होकर उसे घूर रहे थे। किसी ने भी उन्हें घुसपैठियों के बारे में नहीं बताया था! सभी पहरेदार मारे जा चुके थे, हिरण्य के आदमियों ने, जो उसके पीछे-पीछे आए थे।
उसने दरवाजे पर खड़ी महिला की ओर देखा, और उनकी आँखें एक ठंडी, पूर्ण खामोशी में मिलीं। दोनों जानते थे कि खून बहने वाला है।

हिरण्य अपने राजधानी के भीतर स्थित इस घर में रहने वाले स्त्रियों, बच्चों और पुरुषों के शवों पर से गुजरा, जो चूहों की तरह सड़ चुके थे। उसने उन सभी को बेरहमी से काट डाला था। धड़ से लेकर गर्दन और अंगों तक, सब कुछ छलनी कर दिया था। दीवारें जलकर राख हो चुकी थीं। उसके आदमियों ने उस जगह को आग लगा दी और वह जीवन के किसी भी संकेत की तलाश में चारों ओर देखने लगा।
'लगता है तुम्हें कुछ नहीं मिला?' एक आवाज ने ताना मारा।
हिरण्य ने मुड़कर देखा तो होलिका उसकी ओर आती हुई दिखाई दी। 'नहीं।' ‘आपको महिलाओं और बच्चों को मारने की जरूरत नहीं थी।’
‘उन्हें इस विचार ने जकड़ लिया था कि कोई उन्हें बचाएगा।’ उसने आकाश की ओर देखा, जहाँ से उन्हें लगता था कि भगवान विष्णु उनकी सहायता के लिए अवतरित होंगे। ‘उन्हें अपने जीवन के अंत में यह एहसास होना ही था कि विष्णु भी उन्हें मुझसे नहीं बचा सकते।’ उसने होलिका की ओर देखा; उसकी आँखों में उसे भय का एक अंश दिखाई दिया।
यह भय हिरण्य के उस आतंक और रक्तपात की क्षमता से उत्पन्न हुआ था जो उसने कवच और तलवार प्राप्त करने के क्षण से ही प्रदर्शित की थी। वह तब से जानता था कि वह सर्वशक्तिमान है - वह जानता था कि वह एक देवता है। और कोई भी देवता को मार नहीं सकता।
एक पहरेदार उनके पास आया, उसके हाथ में कागजों का एक गट्ठा था। 'मुझे लगता है ये महत्वपूर्ण हैं, महाराज,' उसने खांसते हुए कहा, आग का धुआं अभी भी उसके गले में था।
हिरण्य ने उसे अपने हाथों में लिया। वह एक पत्रिका थी, और उसके शीर्ष पर 'प्रहलाद' नाम लिखा था।
'दिलचस्प। मुझे नहीं पता था कि मेरा बेटा डायरी लिखता है।'
मेरा बेटा तो आश्चर्यों से भरा हुआ है।
‘इन्हें पढ़ो,’ उसने कागज़ होलिका की ओर बढ़ाते हुए कहा। ‘अगर तुम्हें इससे उसके ठिकाने के बारे में कुछ पता चले तो मुझे बताना।’
जैसे-जैसे आग फैलती जा रही थी, गर्मी असहनीय होती जा रही थी।

होलिका ने सुझाव दिया, 'हमें यहां से चले जाना चाहिए।'
लेकिन अचानक एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी। यह उस अलमारी से आ रही थी जिसे आग धीरे-धीरे अपनी चपेट में ले रही थी। 'तुम चले जाओ,' हिरण्य ने कहा। 'मैं जल्द ही तुम्हारे पास आऊंगा।'
तुम जल जाओगे!
‘मैं ऐसा नहीं करूंगा,’ हिरण्य ने कहा। ‘मैं अजेय हूं।’
होलिका ने गुस्से में कुछ बुदबुदाया और कागजात और बाकी बचे आदमियों को लेकर चली गई।
असुरों का राजा उस अलमारी की ओर गया जहाँ से उसे घुटन की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उसने अलमारी खोली और देखा कि एक युवती अंदर छिपी हुई है और डर के मारे सिसक रही है।
हिरण्य ने धमकी भरे अंदाज़ में मुस्कुराते हुए कहा, 'कोई बात नहीं, बच्चे। बाहर आ जाओ - मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाऊँगा।'
वह हिली तक नहीं।
‘मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाऊँगा, नन्हे बच्चे, अगर तुम मुझे बताओगे कि प्रहलाद और तुम्हारे बाकी आदमी कहाँ हैं।’
‘मुझे नहीं पता,’ वह रोते हुए बोली। ‘मैं…मुझे नहीं पता। प्रहलाद को बचा लिया गया, और फिर वे इस जगह को छोड़कर चले गए। हमें भी – आप जानते हैं… हमें भी जल्द ही निकलना था, लेकिन आपने हमें उससे पहले ही ढूंढ लिया,’ वह खांसते हुए बोली। ‘हम तो बस आम नागरिक हैं, जो इस मकसद में यकीन रखते हैं। हम उनके जैसे नहीं हैं – उन सैनिकों जैसे, जो एक कैंप में छिपे हुए हैं। मुझे नहीं पता, कसम से… मुझे नहीं पता कि कैंप कहाँ है।’
हिरण्य ने सिर हिलाया और उसके बाल पकड़कर उसे अलमारी से बाहर खींच लिया।
वह दर्द से चीखी और उसने हिरण्य की छाती पर प्रहार किया। प्रहार असुर से टकराकर वापस उछल गया, लेकिन लड़की के हाथों की हड्डियाँ चकनाचूर हो गईं। उसने उसे गले से पकड़कर ऊपर खींच लिया, तभी विष्णुसेना के छिपने के अवशेष आग की चपेट में आ गए।
'और कुछ?'
‘उह… उह…’ वह घुटते हुए बोली, हिरन्या के दस्ताने को पकड़कर खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वह ऐसा नहीं कर पा रही थी। वह मौत के बेहद करीब थी। बहुत करीब।

और हिरण्य को इसमें मज़ा आ रहा था। उसे अच्छा लग रहा था कि इस इंसान की आखिरी साँस उसके हाथों में है। उसने उसकी बची हुई साँसों को गिनना शुरू किया और उसे थोड़ा और ज़ोर से दबाने लगा। फिर थोड़ा और। जब तक कि उसका गला और सहन न कर सके, और उसकी आँखें धीरे-धीरे झुक गईं, फिर अचानक एक तेज़ आवाज़ हुई।
उस शाम पहली बार वह खुश था। उसने उनमें से कम से कम एक का गला घोंटकर जान ले ली थी।

3

नरसिंह

चुपचाप खाना खाते हुए नारा उस गंध को भूल नहीं पा रहा था जो उसने थोड़ी देर पहले महसूस की थी। हालाँकि यह उसका निजी मामला नहीं था, फिर भी वह उत्सुक था। उसे यह बात हैरान कर रही थी कि एक ऋषि किसी भगोड़े को छिपाएगा। और पिशाच ने जिस पक्षी-मानव का ज़िक्र किया था, क्या वह वही था जो वह सोच रहा था?
नारा ने अपनी थाली में रखे भोजन पर ध्यान केंद्रित किया और हाथ से मसली हुई सब्जियां खाने लगा, जबकि भारद्वाज उसके सामने जमीन पर अपनी पत्नी और दो बच्चों के बगल में बैठा था, जो सभी शांत थे।
भारद्वाज ने टिप्पणी की, 'तुम एक योद्धा हो। तुम्हारे शरीर पर कई घाव हैं, फिर भी वे सभी अच्छी तरह से सिले हुए हैं।'
‘मैं भी एक चिकित्सक हूं,’ नारा ने जवाब दिया।
‘एक ऐसा व्यक्ति जो विनाश भी करता है और उपचार भी? दिलचस्प!’ ऋषि ने विस्मय से कहा। ‘हमारे लिए आपके पास और कौन-कौन से चमत्कार हैं?’
नारा खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'और कुछ नहीं।'

भारद्वाज ने ऊपर देखा और फिर अपने परिवार की ओर एक नज़र डाली। 'हमें घुसपैठियों के बारे में बात नहीं करनी चाहिए - इससे वे डर जाते हैं।'
‘ठीक है,’ नारा ने कहा। ‘क्या आप स्वयं एक चिकित्सक हैं?’
‘जी हां।’ भारद्वाज ने सिर हिलाया। ‘मैं चिकित्सा के क्षेत्र में नई खोजें करने का प्रयास करता हूं। मेरा अपना क्लिनिक है, और मैं मुख्य रूप से घायल और क्षत-विक्षत यात्रियों के कल्याण के लिए काम करता हूं।’
‘यह एक नेक प्रयास है।’
'हाँ, ऐसा ही है।'
क्या यह टिकाऊ है?
ऋषि ने उत्तर दिया, 'हमें विलासिता की कोई आवश्यकता नहीं है - हमारी आवश्यकताएं सरल हैं।'
नारा ने सिर हिलाया। उसने मन ही मन आह भरी। उत्तर से दक्षिण तक का सफर उबाऊ था, जिसमें कई दिन लग गए थे। रास्ते में उसे ज़्यादा लोग नहीं मिले थे, लेकिन एक बार जब उसे आराम करने का मौका मिला, तो वह इस आदमी के सामने था, जिसके पास एक राज़ था। एक ऐसा राज़ जिसमें नारा के जानने वाले किसी व्यक्ति का ज़िक्र था।
भारद्वाज ने कहा, ‘मैंने इस जीवन की शुरुआत बहुत कम उम्र में की थी। मैंने एक अप्सरा को उसके स्वामियों से भागते हुए देखा, वह घायल थी। जब मैंने उसे पाया तो मैं नहीं जानता था कि वह कौन है। मैंने चिकित्सा के अपने थोड़े से ज्ञान से उसकी मदद की, और जब वह ठीक हो गई, तो उसने मुझे तांत्रिक प्रथाओं के बारे में सिखाया। मैं उस ज्ञान को दुनिया तक पहुंचाना चाहता हूं।’
‘यह अप्सरा कौन थी?’
‘ओह,’ ऋषि ने आह भरी, ‘यह तो कोई मायने नहीं रखता। लेकिन हे भगवान नरसिम्हा, क्या आप मानते हैं कि दयालुता का प्रतिफल हमेशा मिलता है?’
नारा ने दांत भींच लिए। उसके जीवन ने उसे इसके विपरीत सिखाया था। 'मैं मानता हूँ कि ऐसा है। लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि इस दुनिया में हर समस्या का समाधान दयालुता से नहीं हो सकता।'
भारद्वाज ने जवाब दिया, 'यह दुर्भाग्यपूर्ण है।'
‘मुझे हाथ धोने हैं,’ नारा उठते हुए बोली।
पानी का घड़ा बाहर रखा है।

नारा ने सिर हिलाया और धुंधली रोशनी वाली झोपड़ी से बाहर निकल आया। घायल व्यक्ति की उपस्थिति हवा में महसूस हो रही थी। वह झोपड़ी के किनारे रखे घड़ों के पास घुटनों के बल बैठा, अपने हाथ धोए और मुंह कुल्ला किया, फिर उस गंध की ओर चल पड़ा।
मुझे पता लगाना होगा।
उसने पीछे मुड़कर देखा, उम्मीद कर रहा था कि भारद्वाज ने उसे जाते हुए न देखा हो। दूसरी झोपड़ी पूरी तरह अंधेरी थी। उसने दरवाजा खोलने की कोशिश की, लेकिन वह कसकर बंद था, इसलिए उसने पूरी ताकत लगाकर उसे खोल दिया। अंदर आते ही उसे आयुर्वेदिक मलहमों और घावों की तीखी गंध का सामना करना पड़ा। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं कोई घुसपैठिया हूँ।
नारा घायल व्यक्ति को देखना चाहता था। वह लैवेंडर की खुशबू वाली मोमबत्तियों से घिरे ज़मीन पर पड़े शव की ओर बढ़ा। वह व्यक्ति लंबा और चौड़ा था, और उसके चेहरे के भाव आकर्षक थे। उसकी त्वचा कांसे जैसी थी, और उसकी बगल में चील के सिर के आकार का मुखौटा पड़ा था।
यह वही है। मैं सही थी।
वह बुरी तरह घायल हो गया था, और भारद्वाज द्वारा दी गई दवा ही एकमात्र ऐसी चीज थी जिसने उसे मृत्यु से बचाए रखा।
'तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए था,' भारद्वाज ने उसके पीछे से कहा।
नारा ने मुड़कर देखा तो ऋषि प्रवेश द्वार पर खड़े थे, उनके कंधे झुके हुए थे और हाथ पीठ पीछे बंधे थे। वे सहज भाव से नारा की ओर बढ़े।
'उसे पहचानती हूँ।'
‘सच में?’ उनके स्वर में हल्का आश्चर्य था। ‘मैंने उसे और उसकी मशीन को जंगल में पाया, दोनों पूरी तरह से खराब हालत में थे। मैंने उसे अपने साथ ले लिया, और इसी वजह से शाही गार्डों ने मुझ पर हमला किया। जाहिर तौर पर, वह एक भगोड़ा है। लेकिन मेरे जैसे डॉक्टर के लिए, वह एक मरीज है।’
‘उसके साथ क्या हुआ है?’
‘इसे कॉर्डिसेप्स से जहर दिया गया है।’ भारद्वाज ने घायल व्यक्ति की पसलियों पर पड़े बैंगनी धब्बे की ओर इशारा करते हुए कहा। ‘मेरा अनुमान है कि इसे तीर लगा है, जिससे इसके अंग धीरे-धीरे खराब हो रहे हैं। मैंने घावों को साफ कर दिया है और कुछ मलहम भी लगा दिए हैं, लेकिन जहर अभी भी बाकी है।’

नारा ने दूर से ही पसलियों का जायजा लिया। उसने घाव को छूने की हिम्मत नहीं की, कहीं उसे संक्रमण न हो जाए। 'शायद मैं उसके इलाज में मदद कर सकूँ। कम से कम, मैं उसे तब तक स्थिर रखने में मदद कर सकता हूँ जब तक वह खड़े होने लायक न हो जाए, और फिर मैं एंटीडोट ढूंढ लूँगा।'
मुझे थोड़ी मदद मिल जाए तो कोई आपत्ति नहीं होगी, हालांकि किसी और के क्लिनिक में जबरदस्ती घुसने से पहले शायद आपको पूछ लेना चाहिए?
नारा ने तुरंत माफी मांगते हुए कहा, 'जब मैंने पिशाच को "पक्षी पुरुष" के बारे में पूछते सुना, तो मुझे एहसास हुआ कि शायद मैं जानती हूं कि वे किसके बारे में बात कर रहे हैं।'
'कौन है ये?'
‘वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त हुआ करता था,’ नारा ने कहा। ‘उसका नाम गरुड़ है, जो सुपर्नों का मुखिया था।’

4

हिरण्यकश्यप

विष्णुसेना के ठिकाने को जलाने के अगले दिन की बात है। वह अपने महल के खाली गलियारों में अपने सिंहासन पर बैठा था।
हिरण्य का कवच फिलहाल गायब हो चुका था, और उसका शरीर अधूरा सा महसूस हो रहा था – मानो वह नंगा हो। लेकिन वह कवच को हर समय धारण नहीं कर सकता था, और खासकर उस समय तो बिलकुल नहीं, क्योंकि गोधूलि बेला थी, और वह उस समय कवच को प्रकट नहीं कर सकता था। न ही वह उसे तब प्रकट कर सकता था जब वह न तो धरती पर हो और न ही आकाश में। न ही तब जब वह अंदर हो या बाहर। ये वे नियम थे जो इस अजेय कवच के निर्माता भगवान ब्रह्मा ने बताए थे।
महल की मोज़ेक खिड़कियों से भोर की हल्की रोशनी छनकर आ रही थी, जो विशाल संरचना को सहारा देने वाले अलंकृत, राजसी स्तंभों पर अपनी धुंधली छाया डाल

रही थी। ज़मीन सुनहरी चादरों से ढकी थी जिन पर लाल फीते बुने हुए थे। कालीन के दोनों सिरों पर धातु के डंडों पर जलती हुई मशालें थीं। यहाँ सब कुछ सुनहरा था, फिर भी उसे इस कमरे में बहुत अंधेरा महसूस हो रहा था।
उसने अपने सभी पहरेदारों को हटा दिया था। वह अकेला रहना चाहता था, और शांति चाहता था। उसका हृदय प्रहलाद, अनुहरद और कायधु के लिए व्याकुल था। वे उसका परिवार थे - और वे सब चले गए थे। वह अपनी इकलौती बची बहन के साथ अकेला था, जो हमेशा उसे समझ नहीं पाती थी।
‘तुम कब तक उदास रहने का इरादा रखते हो?’ गलियारों में एक आवाज गूंजी।
वह आ रही है।
हिरण्य ने ऊपर देखा तो होलिका उसकी ओर आती हुई दिखाई दी।
दो आदमी उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। अमरका और शांद। अमरका दुबला-पतला, लंबा- चौड़ा आदमी था, जो संस्कृति मामलों का मंत्री था, और शांद इस शहर का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति था, जो कोषाध्यक्ष और वित्त मंत्री था। उसका सिर गोल था, कद छोटा था और बाल झड़ रहे थे।
‘मुझे अकेला छोड़ दो,’ हिरण्य दहाड़ा।
‘हमें सूचना मिली है, महाराज,’ अमरका ने कहना शुरू किया। ‘द्वार के बाहर कुछ अशुभ संकेत मिल रहे हैं। पहरेदारों को हर पंद्रह मिनट में हमें सूचना देनी थी, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। यह सामान्य बात नहीं है। हमें लग रहा है कि शहर पर हमला होने वाला है।’
'किसके द्वारा?'
‘जिस व्यक्ति से तुम इतने लंबे समय से लड़ रहे हो, उसी के हाथों,’ शैन्ड ने उत्तर दिया। ‘हमें अपने शस्त्रागार को मजबूत करने और अपने सैनिकों को किसी भी अप्रत्याशित हमले के लिए तैयार करने की आवश्यकता है।’
‘बाहरी सीमा पर तैनात सैनिकों का क्या हुआ?’ हिरण्य ने कश्यपपुरी के द्वारों की रक्षा कर रहे पहरेदारों का जिक्र करते हुए पूछा। ‘क्या उन्होंने किसी को देखा है?’
‘अभी तक तो कोई नहीं आया,’ होलिका ने झल्लाकर कहा। ‘लेकिन पहरेदार अभी तक नहीं आया। कुछ तो गड़बड़ है।’
‘छी!’ हिरण्य बड़बड़ाते हुए खड़ा हो गया। ‘कुछ नहीं। वह पेशाब करने के लिए रुका होगा और खुद से पूछा होगा कि आखिर वह राख के इस राज्य की सेवा क्यों कर रहा है।’

होलिका ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैं समझ सकती हूँ कि बेटों को खोने से आपको दुख हुआ है, लेकिन हमें किसी भी तरह के हमले के लिए तैयार रहना होगा। शहर के बाहरी इलाके में, जहाँ हम देवों से लड़ रहे हैं, वह युद्धक्षेत्र लाशों से भरा पड़ा है जिन पर गिद्ध मंडरा रहे हैं। दुश्मन कुछ समय से शांत है। मुझे लगता है कि वे कुछ योजना बना रहे हैं।'
‘तो फिर उन्हें रोक दो।’ हिरण्य ऊबकर पीछे झुक गया, तभी उसे एहसास हुआ कि उसके मन में कुछ और भी महत्वपूर्ण बात है। ‘क्या तुम्हें प्रहलाद के बारे में रिपोर्ट मिली है? क्या जासूसों ने कुछ कहा है?’
‘नहीं।’ होलिका ने सिर हिलाया। ‘विष्णुसेना ने अपना नया शिविर बहुत अच्छी तरह से छिपा रखा है, लेकिन यह हमारी प्राथमिकता नहीं होनी चाहिए।’
‘तुम राजा को यह नहीं बता सकते कि उसकी प्राथमिकताएँ क्या होनी चाहिए। यह राजा स्वयं तय करता है।’ हिरण्य अपने सिंहासन से उठकर अपनी बहन के पास गया। ‘मुझे नहीं लगता कि तुम मेरे बेटे को ढूँढना चाहती हो – क्योंकि तुम तो उसे मारने के लिए इतनी उत्सुक थी।’
होलिका सहम गई, उसकी निगाहें अपने भाई की आंखों में गड़ी हुई थीं। 'वह इसके लायक ही था।'
मुझे परवाह नहीं है। क्या आपने पत्रिका पढ़ी है?
‘नहीं,’ होलिका ने कहा। ‘क्योंकि इस शहर को बचाना मेरे लिए आपके उस बिगड़े हुए बेटे को बचाने से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है जिसने उन सिद्धांतों के साथ विश्वासघात किया है जिनके लिए हम खड़े हैं।’
हिरण्य ने अपने जबड़े भींच लिए। 'यदि तुम मेरे रिश्तेदार न होते, तो मैं तुम्हें अपने हाथों से मार डालता और तुम्हारा खून अपनी उंगलियों से रिसने देता।'
उसकी आँखों में डर साफ दिखाई दे रहा था, हालाँकि उसने इसे छिपाने की पूरी कोशिश की थी। यही उसकी बहन थी – मौत के सामने भी वह कभी अपनी कमजोरी नहीं दिखाती। यही उसने पाताल में अपने गुरु से सीखा था।
‘यह आपस में लड़ने का समय नहीं है,’ शैन्ड ने हस्तक्षेप करते हुए कहा। ‘अभी हमारे सामने इससे भी बड़े मामले हैं जिन पर हमें ध्यान देना है।’
हिरण्य ने अपने मंत्री की ओर घूरकर देखा। 'जासूसों को कहो कि वे तलाशी दल की संख्या दोगुनी कर दें और मेरे बेटे को ढूंढें। ठीक है?'

‘क्या आपको एहसास नहीं है कि हमें नागलोक पर कब्जा करने के लिए उतने ही लोगों की जरूरत है, जितने आपने यक्षलोक पर कब्जा करने के लिए की थी?’ होलिका ने दांत पीसते हुए कहा। ‘हम इन तुच्छ चरमपंथियों पर अपना समय बर्बाद नहीं कर सकते। फिलहाल तो हम उनमें से ज्यादातर से छुटकारा पा चुके हैं।’
‘नागलोक…’ हिरण्य मुँह फेरकर उस गढ़ के बारे में सोचने लगा जिसे उसे अभी जीतना था। यह समुद्रों का राज्य था, विशाल भवनों और सुंदर द्वीपों से बना हुआ। सभी लोग वहाँ नावों से यात्रा करते थे, और कोई तैरकर नहीं जाता था, क्योंकि तैरने से उनकी मृत्यु हो जाती। यह सागर के बीचोंबीच बसा एक नगर था। यहीं वरुण था, वह असुर जिसने देवताओं का साथ दिया था। हिरण्य उससे घृणा करता था। जो कोई भी उसके विरुद्ध जाता, वह…
वह जानता था कि वह पाखंडी बन रहा है, क्योंकि वह अपने बेटे के लिए वही विचार नहीं रखता था। लेकिन उसका बेटा आसानी से प्रभावित हो जाता था और उसे आसानी से बहकाया जा सकता था। हिरण्य जानता था कि एक बार उसे अपने वश में कर लेने पर वह उसे सही रास्ता दिखा सकता है।
दूसरी ओर, वरुण ने नागलोक सागर की चट्टान से निकाले गए विलक्षण धातु का उपयोग करके देवों की सेना के लिए हथियार बनाए। यदि नगर पर कब्जा हो जाता, तो देवों का पूरा शस्त्रागार ठप हो जाता।
लेकिन इसके अलावा, इसमें उनके खनिज सोमा या सोमरा का सबसे बड़ा भंडार था - जिसे देव अमृत कहते थे। वे इसे दीर्घायु और शक्ति के लिए पीते थे - यह देवताओं के लिए बनाया गया एक अमृत था।
और हालांकि हिरण्य के पास इस अभियान के लिए एक हजार जहाज थे, लेकिन वह अपने बेटे को लेकर ज्यादा चिंतित था।
होलिका ने कहा, ‘तुम्हारे पास ब्रह्मास्त्र है। यह बहुत शक्तिशाली है, बहुत बलशाली है… तुम्हें देरी नहीं करनी चाहिए।’
‘मैं-मैं…’ हिरण्य पिता और राजा होने के बीच दुविधा में था।
अचानक एक चटखने और बुलबुले उठने जैसी ऊर्जा की आवाज़ से उसका ध्यान भंग हो गया। घंटियाँ बजने लगीं और वह समझ गया कि इनका क्या मतलब है।
हिरण्य और उसके साथियों ने एक-दूसरे को देखा और फिर बाहर की ओर दौड़ पड़े।
भोर की ढलती रोशनी में, अंधेरे आसमान में गड़गड़ाहट हुई और धातु के दांतों वाले विशालकाय भूरे हाथी द्वार तोड़कर उसके शहर में प्रवेश कर गए।

वह हाथियों के ऊपर झंडे देख सकता था। वह अपने लोगों को अपने शहर की ओर भागते हुए देख सकता था। वह आकाश में गरज सुन सकता था, और वह एक शासक के रूप में अपनी कमियों को देख सकता था।
जब सिंहों ने हाथियों पर सवार होकर अपने रास्ते में खड़े पहरेदारों पर हमला किया, तब हिरण्य को एहसास हुआ कि वही हुआ है जो होलिका ने भविष्यवाणी की थी। और वह किनारे खड़ा होकर इसे होने देता रहा।
‘चलो चलें! ब्रह्मास्त्र का आह्वान करो!’ होलिका चिल्लाई और फिर उस मुख्य शहर की ओर दौड़ पड़ी जहाँ युद्ध हो रहा था।
हिरण्य वहीं जम कर खड़ा रहा। उसने आकाश की ओर देखा: गोधूलि बेला उसके सिर पर छुरी की तरह मंडरा रही थी। वह ब्रह्मशास्त्र का आह्वान नहीं कर सका। मै क्या करू?

5

नरसिंह

भारद्वाज ने कहा, 'उसे पकड़ो - इससे शायद वह थोड़ा जाग जाए।'
नारा ने गरुड़ को कंधों से पकड़कर कसकर थाम लिया, जबकि भारद्वाज यथासंभव उसके घावों को साफ करने की कोशिश कर रहा था।
उन्होंने कहा, 'मुझे जहर निकालना होगा, लेकिन यह एक अजीब तरह का जहर है... इस जहर की गंध उन मामलों से अलग है जिनसे मैंने पहले निपटा है।'
‘सावधान रहना,’ नारा ने कहा।
‘बताओ नारा, तुम उसे कैसे जानती हो?’
‘हम बहुत समय पहले इंद्र के अधीन एक साथ सेवा करते थे,’ गरुड़ के सहम जाने पर नारा ने अपनी पकड़ और कसते हुए कहा। ‘सुपर्न नागों के दूसरे आधे भाग हैं, न कि उनके शत्रु जैसा कि आम धारणा है। गरुड़ की माता, रानी वनिता, एक नाग रानी के साथ सिंहासन साझा करती थीं। वनिता, अह, एक सुपर्न थीं, एक चील

उपासक, और इसीलिए वह अपना मुखौटा पहनते हैं,’ नारा ने बगल में चोंच जैसे मुखौटे की ओर इशारा करते हुए कहा।
‘देवों के आने और हमेशा की तरह मामले को उलझाने तक बाज और नाग शांतिपूर्वक एक साथ रहते थे। पहले उन्होंने नागलोक में वरुण को मंत्री नियुक्त किया, जिसके अधीन गरुड़ और उसके साथियों का विकास हुआ। उसने कुछ समय तक इंद्र के अधीन काम किया और इस प्रकार मेरे साथ काम किया। लेकिन जल्द ही देवों ने उन पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया और उनके जीवन पर कठोर प्रतिबंध लगाने शुरू कर दिए। सबसे बुरा तब हुआ जब उन्होंने यह फरमान जारी किया कि सोम के भंडार सुपर्णों को नहीं सौंपे जाने चाहिए, जो इस अमृत का उपयोग अपने उड़ने वाले यंत्रों को शक्ति देने के लिए करते थे।’
सुपर्ण जानते थे कि देव उनकी मशीनों से भयभीत हैं। उनका मानना था कि इससे सुपर्ण उनसे अधिक शक्तिशाली हो जाएँगे। गरुड़ क्रोधित थे, यह तो निश्चित था। उन्होंने और रानी वनिता ने देवों का विरोध किया, लेकिन नाग रानी ने नहीं किया, जिससे टकराव और उसके बाद विद्रोह हुए, और अंततः नागों और चीलों के बीच कुख्यात प्रतिद्वंद्विता का जन्म हुआ। बाकी...’ गरुड़ को वहाँ लेटे हुए देखकर नारा रुक गए, ‘...इतिहास है।’
भारद्वाज चुपचाप सुपर्ण प्रमुख का उपचार कर रहे थे। सन्नाटे में नारा ने देखा कि गरुड़ दर्द से कराहने और हिलने-डुलने लगे थे, वे धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदा रहे थे और बुरी तरह कांप रहे थे।
'लगभग काम पूरा हो गया है। दवा का असर दिखने लगा है।'
उसे शांत करो।
‘इसे यह पिलाओ,’ भारद्वाज ने नारा को पीतल के कटोरे में एक औषधि देते हुए कहा। ‘इससे उसका शरीर सुन्न हो जाएगा और वह सो जाएगा, तब तक मैं उसका इलाज पूरा कर लूँगा।’
नारा ने एक हाथ से गरुड़ को नीचे दबाए रखा और दूसरे हाथ से उसके मुंह में औषधि डालने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही औषधि उसके मुंह से बाहर निकलने लगी, सुपर्न प्रमुख और भी अधिक उत्तेजित हो गया।
‘वह मानसिक रूप से अस्थिर होता जा रहा है!’ नारा ने हैरानी से कहा।
उसे कसकर पकड़ो!

नारा ने गरुड़ की छाती पकड़ ली और उसका मुंह ढक दिया। गरुड़ ने अपनी आंखें खोलीं, उसकी पुतलियां खून से लाल थीं, और घबराहट में उसने अपनी संक्रमित लार से नारा के हाथ को काट लिया।
स्तब्ध होकर नारा ने गरुड़ को भारद्वाज की दवाइयाँ संभालने के लिए छोड़ दिया और खुद अपनी त्वचा पर लगी लार को पोंछा। पल भर में गरुड़ का शरीर गतिहीन हो गया।
‘यह सब क्या था?’ नारा ने पूछा। ‘और…’ वह रुक गया, उसकी त्वचा गर्म होने लगी। ‘क्या उसे किसी तरह का बुखार था?’
मुझे लगता है कि उसने आपको संक्रमण फैला दिया है।
नारा दीवार के सहारे पीछे गिर पड़ी। 'लेकिन क्या यह जहर नहीं था?' ‘संक्रामक विष।’ भारद्वाज नारा की हथेली के पास आया और उसने घाव में लार की बूंदें जाते हुए देखीं। ‘हाँ, संक्रमण तुम तक पहुँच गया है। मुझे तुम्हें यहाँ आने ही नहीं देना चाहिए था।’
‘संक्रामक विष?’ नारा को अपने माथे पर पसीना आता महसूस हुआ और उसका शरीर कमजोर होता जा रहा था। ‘मैंने इस तरह के विष के बारे में कभी नहीं सुना…’ ‘मुझे पता है, लेकिन तुम्हें मुझ पर भरोसा करना होगा। लो, इसे पी लो।’ भारद्वाज ने उसे वही औषधि पिलाई जो गरुड़ को शांत करने के लिए दी गई थी। ‘अब तुम दोनों संक्रमित हो चुके हो। बस लेटे रहो – तुम ठीक हो जाओगे… अभी के लिए।’ ऋषि का ‘अभी के लिए’ शब्द काफी खतरनाक लग रहा था।
जब भारद्वाज गरुड़ को स्थिर करने के लिए उसके पास वापस गया, तो भयभीत नारा ने महसूस किया कि वह कमजोर होता जा रहा है।
नहीं, मैं मर नहीं सकता! मैं प्रहलाद से मिलने से पहले नहीं मर सकता।
और इससे पहले कि नारा आराम करने के लिए अपनी आँखें बंद कर पाता, उसने भारद्वाज की अविश्वास भरी आवाज सुनी, 'वह जाग गया है! वह जाग गया है!'

6

हिरण्यकश्यप

असुरों का राजा ज्यादा देर तक स्थिर नहीं रह सका। वह दौड़ने लगा। बिना हथियार के, बिना कवच के। वह युद्ध के मैदान में जा घुसा। शाम होने में सिर्फ तीन मिनट बचे थे।
दो दहाड़ते हाथियों ने अपनी सूंडें इमारतों पर पटक दीं, जिससे मलबा हर जगह बिखर गया, जबकि उनके भारी कदमों से भयंकर भूकंप के झटके महसूस हुए। हिरण्य के सैनिकों ने भूखे सिंहों से लड़ाई लड़ी, जो उन सभी पर टूट पड़े।
हिरण्य दूसरी ओर होलिका को देख सकता था, जो अपने दो तलवारों से एक सिंह से आमने-सामने लड़ रही थी।
हिरण्य एक सैनिक के पास गया और उसकी तलवार छीनकर एक सिंह पर फेंक दी। तलवार सिंह की पूजा करने वाले उस आदिवासी की आंख में जा लगी और वह गिर पड़ा।
अभी दो मिनट और बाकी हैं।
हिंसक हाथियों की ओर बढ़ते हुए, किसी ने उसे पीछे से पकड़ लिया और धक्का दे दिया। मुड़कर देखा तो हिरण्य ने पाया कि वह एक सिंह था। उसने सोचा, "इनमें से एक मेरा भी नाश करेगा," और उसे भगवान ब्रह्मा की चेतावनी याद आ गई। सिंह ने हिरण्य पर हमला करना शुरू किया, जिसने उसे पेट में लात मारी और अपने सात फुट लंबे, बलिष्ठ शरीर की पूरी ताकत लगाकर उसके चेहरे पर घूंसा मारा। सिंह बुरी तरह पीछे हट गया और भाग गया। जैसे ही वह सिंह से दूर चला गया, घायल नागरिकों की चीखें, धातु की तलवारों और पंजों की खड़खड़ाहट, धनुष-बाण की तेज ऊर्जा और जानवरों की सूंडों की सरसराहट सब एक साथ मिल गईं। हिरण्य ने गिरे हुए सैनिक से पास पड़ा हथियार उठा लिया। वह एक भाला था। जब सिंह ने उस पर पुनः आक्रमण किया, तो हिरण्य ने मुड़कर भाले को क्षैतिज रखते हुए उसे आर-पार भेद दिया। अपने शत्रु के रक्त के छींटे अपने चेहरे पर पड़ते देख हिरण्य ने उसे एक तरफ फेंक दिया।
एक मिनट शेष।
‘मेरा बेटा!’ पास से एक कराहने की आवाज आई।
हिरण्य लड़खड़ाते हुए खड़ा हो गया जब उसने एक बच्चे को देखा, जो भ्रमित और खोया हुआ सा था और एक विशाल हाथी के पैरों तले कुचलने ही वाला था। उसकी माँ को अन्य नागरिक रोके हुए थे, जिन्होंने बच्चे के जीवित रहने की उम्मीद छोड़ दी थी।

हिरण्य तेजी से आगे बढ़ा, उसकी सांसें जोर-जोर से चल रही थीं और सीने से टकरा रही थीं।
तीस सेकंड।
हाथी लगभग बच्चे के ऊपर आ ही गया था।
बीस सेकंड।
हिरण्य अन्य सिंहों और अपने लिए लड़ रहे सैनिकों की अनदेखी करते हुए आगे बढ़ गया।
दस सेकंड।
जैसे ही उग्र हाथी ने बच्चे को कुचलने के इरादे से अपना पैर नीचे किया, हिरण्य ने बीच में आकर अपने विशाल हाथों से उसे रोक दिया। उसने भगवान ब्रह्मा का आह्वान किया और तुरंत ही उसके शरीर पर कवच प्रकट हो गया, जो सुनहरे तारे की तरह चमक रहा था।
मेरे क्रोध का सामना करो।
उसने एक ज़ोरदार धक्का दिया। हिरण्य की भयानक शक्ति के आगे विशाल हाथी की ताकत धराशायी हो गई और वह युद्ध के मैदान में धड़ाम से गिर पड़ा।
लड़के को उसकी मां ने तुरंत बचा लिया, जिसने हकलाते हुए हिरण्य के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।
‘कुछ नहीं है। जाओ खुद को बचाओ! छिप जाओ!’ उसने चिल्लाकर कहा।
वे तुरंत उसके आदेश का पालन करने लगे।
हिरण्य ने अपने शत्रुओं को मार गिराने की तैयारी करते हुए अपनी तलवार को सोने की म्यान से बाहर निकाला।
जैसे ही सिंह देवता तेजी से उसकी ओर बढ़ने लगे, हिरण्य ने व्यवस्थित और कुशल ढंग से एक-एक करके उन पर वार किया, हर वार के साथ उसकी तलवार चमक रही थी।
तभी उसे एहसास हुआ कि पांच सिंह उसके चारों ओर आ गए हैं। उसे घेर रहे हैं।
उसके कवच पर दुश्मन का खून लगा हुआ था। कुछ खून उसके चेहरे पर भी छिटक गया था।
उसने उसे पोंछ दिया।
और मुस्कुराई।
जैसे-जैसे हिरण्य ने हर सिंह को मारा, उसकी अमरता पर आस्था और मजबूत होती गई, क्योंकि भगवान ब्रह्मा ने उसे बताया था कि उसे केवल उन्हीं में से एक

ही पराजित कर सकता है। और यदि वह उन सभी को एक-एक करके मार डाले, तो उसे पराजित करने वाला कोई नहीं बचेगा...
जैसे-जैसे उसके विचार उलझते गए –
सभी पांचों सिंह उछल पड़े।
छिपने की कोई जगह नहीं, भागने की कोई जगह नहीं। हिरण्य तुरंत घुटनों के बल बैठ गया और अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया, जबकि सिंहों ने अपने पंजों से उसके कवच को नोंच डाला।
एक पल के लिए हिरण्य अपनी माँ की स्नेहपूर्ण बाहों में खो गया, जिनका असमय निधन हो गया था। उसे अपनी माँ की याद आ रही थी। उसे अपने पिता की याद आ रही थी, जो अन्य असुरों की तरह उसके प्रति इतने क्रूर नहीं थे। और उसे अपने गुरुजी की भी याद आ रही थी, जिनके साथ उसने पाताल लोक में रहते हुए खूब साधना की थी।
अचानक, उसकी आँखों में आग सी भड़क उठी और उसके शरीर में ऊर्जा का संचार होने लगा। उसका कवच चमक उठा। उसने अपनी मांसपेशियों को कसते हुए ऊपर की ओर ज़ोर से उछाला और सिंहों को खुद से दूर फेंक दिया। इससे पहले कि वे संभलकर फिर से संगठित हो पाते, उसने उनमें से एक को पकड़ लिया, उस पर कई बार वार किया और उसके शरीर को ज़मीन पर पटक दिया। बिजली की तेज़ी से उसने दूसरे हमले को चकमा दिया, सिंह के चेहरे पर मुक्का मारा और उसे बुरी तरह पीटा। उसने तीसरे को ज़मीन पर पटक दिया, जिससे उसकी पसलियाँ टूट गईं। दो सिंह एक साथ उस पर टूट पड़े। हिरण्य ने उनकी गर्दनें पकड़ लीं, लेकिन इससे पहले कि वह उन्हें मार पाता, उनमें से एक ने उसके चेहरे पर खरोंच मार दी। उसने गुर्राते हुए उन्हें छोड़ दिया। उन पर हमला करने के बजाय, उसने अपनी मुट्ठी ज़मीन पर पटकी। युद्धक्षेत्र हिल गया; सिंह ज़मीन पर गिर पड़े। अपनी तलवार को तेज़ी से घुमाते हुए, उसने उसे एक की छाती में घुसा दिया और दूसरे की खोपड़ी को अपने शक्तिशाली पैर से कुचल दिया।
सिर झुकाए वह इंद्र के कुछ सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं के शवों के बीच घुटने टेककर बैठ गया।
और फिर उसने दहाड़ सुनी। उनमें से और भी उसकी ओर आ रहे थे।
वह खड़ा हुआ और उसने अपने कंधों को हिलाया।
आओ इसे करें।

सिंह का कटा हुआ सिर जमीन पर गिर गया।
हिरण्य ने उनमें से किसी को भी नहीं बख्शा। युद्ध पर नियंत्रण हासिल करने के बाद, बचे हुए सिंहों को, जिन्हें युद्धबंदी बना लिया जाना चाहिए था, उसके सामने एक पंक्ति में घुटने टेकने के लिए मजबूर किया गया, उनके हाथ पीछे बंधे हुए थे और उनके बाल उनके ही खून से लथपथ थे।
वे शहर के केंद्र में थे, एक ऐसी सड़क पर जो अस्त-व्यस्त थी, जहाँ उनके और इंद्र के आदमियों के शव बिखरे पड़े थे। खून बह रहा था। आंतें बिखरी पड़ी थीं।
उसके बचे हुए योद्धा चुपचाप एक तरफ खड़े थे, सिवाय होलिका के जो सिंह सैनिकों के आगे चलते हुए उसके कदमों का पीछा कर रही थी।
‘कहा जाता था कि तुम ही मेरा अंत करोगे, कि तुम्हारे जैसे लोग मुझे हानि पहुँचाएँगे,’ हिरण्य ने दाँत पीसते हुए कहा। ‘परन्तु मैं इसे असत्य मानता हूँ। मैं तुम सबको मार डालूँगा। एक-एक करके। यदि कोई सिंह नहीं बचा, तो मुझे हानि पहुँचाने वाला कोई नहीं बचेगा।’ उसने अपनी लंबी नीली तलवार घुमाई और एक और सिर लुढ़क गया।
‘तुम्हें मेरे शहर में नहीं आना चाहिए था। आम तौर पर, मैं तुममें से किसी एक को उसके शिविर में वापस जाने देता और उन्हें हमारी जीत की सूचना दे देता, लेकिन अभी तुम्हारी मौत एक बहुत बड़ी चेतावनी साबित होगी।’ उसने एक और सिंह की गर्दन पकड़कर काट दी। ‘आज का दिन कितना सुंदर है!’
जब हिरण्य ने अपने आदमियों की ओर रुख किया, तब तक बारह और सिंह बचे हुए थे। “सुनिश्चित करो कि तुम उन्हें यातना दो और फिर सूली पर चढ़ा दो। उनके शवों को मेरे आंगन के ठीक बाहर प्रदर्शित करो ताकि हमारे लोग देख सकें कि हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता।”
गार्डों ने सिर हिलाया और बाकी कैदियों को ले गए।
हिरण्य ने अपनी तलवार म्यान में डाली और आह भरी। उसके कई सैनिक मारे गए थे, और कुछ नागरिक भी। उसे पछतावा तो हुआ ही, साथ ही गुस्सा भी आया।

उसने होलिका की ओर देखा, जो उसे इस भाव से घूर रही थी मानो कह रही हो, मैंने तुमसे कहा था कि ऐसा ही होगा।
‘मेरे बेटे को ढूंढो,’ उसने गुस्से से भरी आँखों से उसे आदेश दिया। ‘मैं जा रहा हूँ।’ और इतना कहकर वह अपने महल की ओर वापस चल पड़ा।
होलिका ने जोर से पूछा, 'तुम कहाँ जा रही हो?'
हिरण्यकश्यप ने बिना मुड़े कहा, 'नागलोक।'

7

नरसिंह

अब रोगी के बिस्तर पर लेटे हुए नारा को लगा मानो समय एक चक्र में फंस गया हो। उसने पलकें झपकाईं और छत को घूरते हुए महसूस किया कि खोई हुई ऊर्जा उसकी नसों में फिर से प्रवेश कर रही है और उमड़ रही है। शायद भारद्वाज द्वारा दी गई मरहम या पिसे हुए भोजन ने उसे होश में ला दिया था।
‘तुम भी संक्रमित हो गए हो,’ ऋषि ने उसके बगल में खड़े होकर और धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदाते हुए सच कहा। ‘और यह बहुत बुरा है। अगले कुछ दिनों में तुम्हें थकान, चक्कर और लकवा हो जाएगा – अगर मुझे इस ज़हर का इलाज नहीं मिला। हे भगवान, तुम गरुड़ की तरह घायल नहीं हुए हो, जिसका इलाज कराना पड़ा था। इसलिए, जब तक इलाज नहीं मिल जाता, तुम अपना जीवन यापन कर सकते हो।’ नारा जानती थी कि ऋषि खुश नहीं हैं। 'मुझे खेद है। मुझे आपकी प्रक्रिया में बाधा नहीं डालनी चाहिए थी। मैं मूर्ख थी।'
भारद्वाज ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'खैर, हम सब कभी-कभी मूर्खतापूर्ण काम कर बैठते हैं। याद है मैंने तुम्हें उस अप्सरा के बारे में बताया था?' 'हाँ?'
‘खैर, वह सिर्फ मेरी शिक्षिका ही नहीं, बल्कि मेरी प्रेमिका भी थीं।’ वह थोड़ी देर रुके और फिर खिलखिलाकर हंस पड़े। ‘मुझे जज मत करो, मैं जवान था।’

नारा ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'अच्छा, उम्म...' उसे समझ नहीं आ रहा था कि एक ऋषि के निजी जीवन के बारे में जानकर उसे कैसा महसूस करना चाहिए, लेकिन वह मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।
भारद्वाज भी मुस्कुराए। ऋषि ने नरसिम्हा के करीब आते हुए सहज मुस्कान के साथ कहा, 'मुझे लगा कि यह किस्सा आपकी कुछ चिंता दूर कर देगा। सावधान रहें, भगवान नरसिम्हा। आप संक्रमित हैं और आपको सतर्क रहना होगा और अपना ख्याल रखना होगा। और भविष्य में यदि आपको मुझसे किसी चीज की आवश्यकता हो तो अवश्य मुझसे मिलें।'
नारा मुस्कुराई।
और इतना कहकर भारद्वाज उसे अकेला छोड़कर चला गया।
‘मेरे दोस्त, सितारों ने हमारी मुलाकात कराने के लिए कैसी साजिश रची,’ एक जानी-पहचानी आवाज ने कहा।
धीरे-धीरे नारा ने अपना सिर घुमाकर देखा तो गरुड़ सोने की धोती पहने दीवार से टिका हुआ था, उसके चौड़े चेहरे पर एक आकर्षक दाँतों वाली मुस्कान थी। ‘हेलो गरुड़,’ नारा ने आह भरते हुए धीरे से उठते हुए कहा। ‘काफी समय हो गया।’ ‘शायद कई साल। सुना है तुमने सब कुछ त्याग दिया है। यह सोचकर मुझे आश्चर्य होता है कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो,’ गरुड़ा ने एक मनमोहक मुस्कान के साथ कहा।
‘खैर, आप सोचते रह सकते हैं।’
‘हमेशा की तरह रहस्यमय लड़का, है ना?’ गरुड़ नारा के चारों ओर घूमते हुए उसे निहार रहा था।
नारा ने अपने पुराने दोस्त की परख भरी नज़र का जवाब दिया। गरुड़ पहले से थोड़ा पीला पड़ गया था, लेकिन उसके चेहरे पर वही जानी-पहचानी मनमोहक मुस्कान और आँखों में वही शरारती चमक थी जो कमरे में जगमगा रही थी। 'खैर, मुझे अभी-अभी ज़हर दिया गया है। अगर मैं थोड़ा चिड़चिड़ा लगूँ तो मुझे माफ़ कर देना।'
‘वो तो मैं ही हूँ, है ना?’ गरुड़ ने अपने धड़ पर लगी पट्टियों को छुआ। ‘बहुत बुरा लग रहा है।’
‘मुझे पता है। तुम यहाँ जंगल के बीचोंबीच, नागलोक से इतनी दूर, क्या कर रहे थे?’

गरुड़ ने अपनी नाक खुजाई। “खैर, जब नागों ने सुपरणों के साथ विश्वासघात करके देवताओं का साथ दिया, तो मैंने अपने लोगों को इकट्ठा करके तख्तापलट किया और उनके खिलाफ अनगिनत विद्रोह किए, और धीरे-धीरे हमारे विमानों को शक्ति देने वाला अमृत चुरा लिया। लेकिन दुर्भाग्य से, आखिरी विद्रोह बुरी तरह विफल रहा: मेरे कई सैनिक मारे गए, हमारे शिविर में घुसपैठ हो गई, और मेरी माँ को पकड़कर उस भयानक शहर में ले जाया गया। मैं ऐन मौके पर बच निकला, लेकिन मेरे पेट में यह खून से सना तीर लग गया और इसी वजह से हम यहाँ पुराने दोस्तों से मिल रहे हैं। किस्मत कैसे हमारे लिए पुल बनाती है, है ना?”
नारा ने सिर हिलाया। कहानी समझ में आ रही थी।
‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो, लड़के?’
‘अच्छा…’ नारा ने अपनी कहानी सुनाई कि कैसे वह इंद्र की सेना में शामिल था, फिर हिंसा को छोड़कर एक गाँव में वैद्य बन गया। उसे अंधका के विरुद्ध युद्ध में वापस बुलाया गया और उसने उसे मार डाला। उसने प्रहलाद की मदद करने की बात छोड़ दी, क्योंकि वह उसका निजी लक्ष्य था। ‘अब मैं बस एक घुमक्कड़ हूँ।’
'क्या हम सब नहीं हैं? तो सुनिए, आपके लिए एक खबर है। यह जहर जो हम दोनों को जकड़ कर रखता है, उसका इलाज सिर्फ एक ही चीज से हो सकता है।'
'क्या?'
'आपको पता है।'
नारा ने दांत पीसते हुए कहा, 'अमृत।'
‘बिल्कुल सही! और मेरे कस्बे में तो ये सब आसानी से मिल जाएगा,’ गरुड़ ने हाथ बांधते हुए कहा। ‘हालांकि इसे पाना मुश्किल होगा क्योंकि मैं उस राज्य में भगोड़ा हूँ और तुम... तुम तो सेना से भागे हुए हो।’
क्या कोई और रास्ता नहीं है?
‘कुछ नहीं। यह कॉर्डिसेप्स का एक विकृत रूप है और दुर्भाग्य से, हमारे पास अमृत ढूंढकर उसे ग्रहण करने और खुद को बचाने के लिए एक सप्ताह से भी कम समय है,’ उन्होंने कहा। ‘अब, अगर आप पहले की तरह घूमना-फिरना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको जीवित रहना होगा।’
‘क्या आप निश्चित हैं?’ नारा असमंजस में पड़ गया। निश्चित रूप से, और भी तरीके होंगे। लेकिन गरुड़ गंभीर और भावहीन था।

‘मैं अपने जहर को जानता हूँ और उसके इलाज को भी, मेरे मित्र। और मेरा विश्वास करो, जब मैं यह कहता हूँ, तो इसका कोई दूसरा इलाज नहीं है। और तुम मुझसे बेहतर जानते हो, जब किसी चीज का कोई इलाज न हो, तो अमृत ही अंतिम उपाय होता है। शुद्ध, मिलावट रहित अमृत।’
नारा यह बात जानता था। वह इस दुनिया में इतना लंबा जी चुका था कि उसने देख लिया था कि अमृत से हर समस्या का समाधान हो सकता है।
तो तुम अमृत के लिए उस शहर तक जा रहे हो जो तुमसे नफरत करता है?
‘बिल्कुल नहीं, बेटा!’ गरुड़ ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मुझे अपनी माँ से मिलना है और उसे भागने में मदद करनी है। और मुझे सुपर्नों के गुप्त ठिकाने पर वापस जाना है जहाँ मेरे बाकी साथी हैं।’
नारा को अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था। नागलोक वो आखिरी जगह थी जहाँ वो जाना चाहता था। लेकिन अपने दोस्त को देखकर पुरानी यादें ताज़ा हो गईं – साथ में खाना खाने और हँसने की, कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने की। गरुड़, भले ही एक अप्रत्याशित साथी था, हमेशा उसके साथ था, ज़रूरत पड़ने पर मदद के लिए तैयार। उसके पास कोई चारा नहीं था। उसकी अपनी लापरवाही ही उसे इस मुसीबत में ले आई थी। वो खुद को ठीक करने का कोई और तरीका ढूंढ सकता था, लेकिन ये जोखिम भरा होता। वो ज़हर के बारे में उतना नहीं जानता था जितना गरुड़ जानता था... ज़ाहिर सी बात है। और कौन जाने इसमें कितना समय लगेगा। दुनिया एक अन्यायपूर्ण, अप्रत्याशित जगह है। बेहतर होगा कि हम इसकी आदत डाल लें। नारा ने सिर हिलाया। 'ठीक है, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी - वैसे भी मेरे पास कोई और विकल्प नहीं है।'
'जी नहीं, आपको इसकी ज़रूरत नहीं है। जब आप आराम से सो रहे थे, तब मैंने एक व्यापारिक जहाज़ के बारे में पूछताछ की थी। वह एक घंटे में रवाना हो जाएगा।'
'अब?'
‘तो फिर कब?’ गरुड़ हँसते हुए बोला। ‘क्या तुम मृत्यु के निकट आकर अमृत की खोज शुरू करना चाहते हो? ठीक है, कर लो। मैं जा रहा हूँ।’
‘ठीक है, ठीक है।’ नारा कमजोरी महसूस कर रहा था, इसलिए उसे खड़े होने में काफी मुश्किल हो रही थी।
'जल्दी करो, बूढ़े आदमी। आकाश के देवताओं की कसम, तुम जरा भी नहीं बदले हो।'

नारा ने अपने मित्र को देखकर मुंह बनाया और गरुड़ का बढ़ाया हुआ हाथ थाम लिया। गरुड़ ने उसे ऊपर खींच लिया।
'बहुत बढ़िया, मैं अभी आपके लिए चलने के लिए एक छड़ी ले आता हूँ।'
मुझे अगले कुछ दिनों तक इन व्यंग्यात्मक टिप्पणियों को सुनना पड़ेगा। ‘ठीक है, मैं अपना सामान ले आता हूँ,’ नारा ने खड़े होते हुए कहा। उसे प्रहलाद से मिलना था। कश्यपुरी में उसे उसके पिता से बचाना था। लेकिन हिरण्यकश्यप की खोज करने के बजाय, वह उससे दूर जा रहा था। नागलोक। जहाँ हिरण्य का कोई अस्तित्व नहीं होगा।

8

हिरण्यकश्यप

हिरण्यकश्यप अपने एकांत कक्ष में अगले दिन नागलोक की यात्रा की तैयारी कर रहे थे। शराब का प्याला उठाकर वे खिड़की के पास गए और रात के अंधेरे में डूबे अपने शहर को देखा। कश्यपपुरी खंडहर में तब्दील हो चुका था, कम से कम उसका अधिकांश भाग। इंद्र के हालिया आक्रमणों ने शहर को भारी नुकसान पहुंचाया था। लेकिन विनाश की शुरुआत इससे पहले ही हो गई थी, जब होलिका और राक्षसों ने असुरों के नियमों का उल्लंघन करने और शत्रुओं का साथ देने के कारण प्रहलाद पर आक्रमण किया था।
प्रहलाद…
वह पुत्र जिससे उसे उम्मीद थी कि अनुहरद की मृत्यु के बाद वह उसका उत्तराधिकारी बनेगा। लेकिन वह जा चुका था। हिरण्य को अपनी पत्नी से किया वादा याद आया... कि वह अपने बच्चों को दुख नहीं पहुंचाएगा। लेकिन वे उसे ऐसा करने पर मजबूर कर रहे थे...
मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। मैं क्या करूँ? काश, उसे अक्ल आ जाए।

हिरण्य ने अपने हाथ में पकड़े हुए प्याले से एक घूंट ही ली थी कि दरवाजे पर दस्तक हुई।
अब कौन आया है? इस समय?
जब उसने दरवाजा खोला तो गार्ड ने कहा, 'महाराज, वह आ गई हैं।'
वह?
जैसे ही गार्ड आगंतुक को रास्ता देने के लिए एक तरफ हटा, हिरण्य ने विरोध किया। 'रात है। किसी को भी अंदर जाने की अनुमति नहीं है...'
लेकिन अंदर आने वाले व्यक्ति ने बात नहीं सुनी।
उसकी त्वचा पीली सफेद थी, बाल बैंगनी रंग के थे और वह हिरण्य से दुगनी लंबी थी। अगर कोई और होता तो हिरण्य अब तक उसे मार चुका होता।
लेकिन यह मताली थीं, जो दानवों की गुरु थीं और हिरण्यपुर राज्य पर शासन करती थीं - वह राज्य जिसे हिरण्य ने अपने विशालकाय चचेरे भाइयों के लिए बनवाया था। और वह क्रोधित थीं।
हिरण्य का अपने चचेरे भाइयों से काफी समय से कोई संपर्क नहीं था, और इसका एक ठोस कारण था। वे उसकी गति धीमी कर देते थे। वे बेशक बलवान थे, लेकिन हिरण्य को चपलता और फुर्ती चाहिए थी।
‘तुम यहाँ क्यों हो? हम डिनर पर मिल सकते थे—’
‘हिरण्या, इस गंभीर समस्या को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश मत करो,’ मताली ने तीखे स्वर में कहा। ‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई अपने चचेरे भाइयों को अंधेरे में रखने की! हमें तुम्हारी योजनाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। यह महज़ संयोग है कि मैं हमलों के बाद तुमसे मिलने आ रही थी और मुझे पता चला कि तुम नागलोक जा रहे हो।’
हिरण्य ने आह भरी और अपने प्याले में रखी शराब एक ही घूंट में खत्म कर दी। 'अच्छा, आने के लिए धन्यवाद।'
क्या आपको हमारी मदद नहीं चाहिए? या आपका अहंकार आपको मदद मांगने नहीं देगा?
जब मुझे मदद की जरूरत होगी, मैं मदद मांगूंगा।
‘आप हार रहे हैं…’
‘मैं जीत रहा हूँ!’ उसने चिल्लाकर अपने चचेरे भाई को चुप कराया। ‘और मैं जीतता रहूँगा क्योंकि मेरे पास कुछ ऐसा है जो दानवों के पास भी नहीं है।’

हिरण्य की शत्रुता देखकर मताली दंग रह गया। 'हमने तुम्हारा ऐसा क्या बिगाड़ा है कि तुम हमें इस तरह बहिष्कृत कर रहे हो?'
'मैं प्रगति के लिए प्रयासरत हूं, मताली। मैं एक उज्जवल, तेज गति वाले भविष्य के लिए प्रयासरत हूं।'
'उम्मीद है कि इतनी तेज रफ्तार से आपके पैर जल न जाएं,' मताली ने रूखेपन से कहा।
हिरण्य मुस्कुराया। वह गुस्से में था, लेकिन मताली को परेशान करने में उसे आनंद भी आ रहा था। 'अब, अगर और कुछ नहीं तो तुम जा सकती हो। अगर मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत पड़ी, जिसकी मुझे ज़रूरत नहीं पड़ेगी, तो मैं तुम्हें बता दूंगा।'
चिंता मत करो। हम नहीं आएंगे, चाहे तुम्हें कितनी भी ज़रूरत क्यों न हो। जब तुम्हारा शव चिलचिलाती धूप में जल रहा होगा और तुम्हारा राज्य तुम्हारे अहंकार के कारण नष्ट हो रहा होगा, तब हम आएंगे। तुम्हें या तुम्हारे राज्य को बचाने के लिए नहीं, बल्कि असुरों का नाम बचाने के लिए।
हिरण्य उसकी उग्रता पर फिर हँस पड़ा। चिलचिलाती धूप में मरना! हा हा! अब वह इतना शक्तिशाली था कि उसे हराया नहीं जा सकता था। 'आज कुछ बेहतरीन मेमनों को काटा गया है। कुछ दिन यहीं रुकिए और हम आपको दावत देंगे। मैं नहीं चाहता कि मेरी प्यारी चचेरी बहन नाराज़ होकर घर जाए।'
'हिरण्या, मैं आज रात जा रही हूँ।' मताली ने कमरे से बाहर निकलते हुए कहा। हिरण्य ने प्याले को ध्यान से देखा। अगर उसने होलिका को इस शत्रुता के बारे में बताया तो वह बहुत क्रोधित होगी। बेहतर यही था कि कुछ न कहा जाए और उसे यही सोचने दिया जाए कि दानव अब भी उनके पक्ष में हैं।
उनकी तत्काल कार्रवाई स्पष्ट थी: उन्हें नागलोक के लिए रवाना होना था।

9

प्रहलाद

अंधेरे की चादर में लिपटी एक अलाव के सामने बैठे हुए, प्रहलाद धृति और विष्णुसेना के बाकी साथियों के साथ उस व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे थे जिसने उन्हें अपनी सहायता की पेशकश की थी।
उसका चचेरा भाई।
अंधका ने उनके शिविर से पचास गज की दूरी पर अपना डेरा जमा लिया था और एक दूत को यह बताने के लिए भेजा था कि वह अपने काफिले के साथ अपनी योजनाओं पर चर्चा करने के लिए आ रहा है, ऐसी योजनाएं जो विष्णुसेना की मदद करेंगी। ‘हम उस पर भरोसा नहीं कर सकते,’ प्रहलाद ने धृति और विष्णुसेना के नए नेता असमंज की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘वह… एक अजीब आदमी है।’
असामंजा के पूरे शरीर पर निशान थे। उसके कमर तक लंबे बाल और घनी दाढ़ी आदिवासियों की तरह गुंथी हुई थी। 'मुझे यकीन है कि वह है, लेकिन फिलहाल हमारे पास ज्यादा विकल्प नहीं है।'
धृति ने चेतावनी देते हुए कहा, 'उसे हमारी लोकेशन पता है। हमें अपना कैंप बदलना होगा।'
‘और हम करेंगे,’ आसा ने कहा। ‘जैसे ही यह बैठक समाप्त होगी। मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि उनके मन में क्या चल रहा है।’
प्रहलाद ने गहरी साँस ली। असमांजा समूह में सबसे उम्रदराज और रणनीति एवं योजना बनाने में अनुभवी होने के कारण नारदा के उत्तराधिकारी के रूप में सबसे प्रबल दावेदार था। प्रहलाद को असमांजा के बारे में बहुत कम जानकारी थी – उसे बस इतना पता था कि असमांजा की पत्नी को शहर के सैनिकों ने अगवा कर उसके साथ बलात्कार किया था और फिर उसे नालों में फेंक दिया था। उसने एक महीने तक उसकी तलाश की, जब तक कि उसे उसका शव नाले में तैरता हुआ नहीं मिला, जिसका चेहरा चूहों ने कुतर दिया था।
हिरण्य साम्राज्य के प्रति आसा की घृणा की गहराई अथाह थी। वह उन लोगों को नुकसान पहुंचाना चाहता था। उसने कभी अपना बदला नहीं लिया था, क्योंकि उसे पता नहीं था कि इसके लिए कौन से रक्षक जिम्मेदार थे।
‘यह अजीब बात है,’ आसा ने कहा, ‘कि तुम अपने चचेरे भाई पर भरोसा नहीं करते।’ ‘मुझे अपने परिवार पर भरोसा नहीं है,’ प्रहलाद ने दृढ़ता से कहा। धृति ने उसकी उंगलियों को अपनी उंगलियों में जकड़ लिया और उसे स्नेहपूर्ण, आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी।

‘यह बहुत दिलचस्प है,’ आसा ने जवाब दिया।
तभी वो आवाज आई। प्रहलाद का खून जम गया।
मुझे सुनाई दे रहा है!
घोड़ों के खुरों की आवाज हर मिनट करीब आती जा रही थी।
प्रहलाद ने अंधेरे से एक सफेद घोड़े को निकलते देख अपनी सांस रोक ली। उसका सवार एक गंजा आदमी था जिसने लाल कपड़ा ओढ़ा हुआ था। उसके पीछे... कोई नहीं था। अंधका अपने आदमियों के बिना आया था। क्यों? उसे पता है कि हम उसे नुकसान पहुंचा सकते हैं।
घोड़ा विशाल अलाव से थोड़ी दूरी पर रुक गया और सवार नीचे उतर गया। अंधका वैसा ही था जैसा प्रहलाद को याद था - पीला और दुबला-पतला, जिसकी लंबी, हड्डियों वाली उंगलियां उसके ऊपर कंबल की तरह लिपटे लाल कपड़े को सहला रही थीं।
‘हम्म,’ उसने धीमी आवाज़ में आह भरी और सूंघा, मानो वह सिर्फ गंध से ही वहां मौजूद आदमियों की संख्या का पता लगाने की कोशिश कर रहा हो।
आसा ने अपने बड़े समूह के दोनों ओर भाले लिए हुए दो पहरेदार तैनात कर दिए थे, ताकि अगर यहाँ कुछ भी अप्रिय घटित होता है तो वे हमला करने के लिए तैयार रहें।
‘एक सौ एक,’ अंधका ने कहा।
‘क्या?’ आसा ने उत्तर दिया।
‘तुम एक सौ एक लोग हो, और छिपने के लिए इससे बेहतर जगह नहीं चुन सकते थे, है ना?’ वह हँसते हुए बोला।
‘तुमने ये कैसे किया…’ आसा अचंभित और स्तब्ध दोनों था। इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, प्रहलाद ने उसे चुप कराने के लिए हाथ उठा दिया।
उन्होंने कहा, 'आपको देखकर अच्छा लगा, भाई।'
एक पल के लिए अंधका अपनी जगह पर जम गया, फिर उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। 'जैसा कि मेरी रिपोर्ट में बताया गया था, तुम सचमुच यहाँ हो। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि पिताजी का लाडला यहाँ होगा। आओ, अपने भाई को गले लगाओ।'
आसा के इशारे पर आगे बढ़ने पर प्रहलाद ने सोच-विचार करते हुए अपने होंठ चाटे। धृति की चिंतित निगाहों को अनदेखा करते हुए, वह अंधका की ओर बढ़ा और उसे गले लगा लिया। उसे तुरंत ही अंधका से अदरक और राख की गंध आ गई।

‘तुमने सही रास्ता चुना है,’ अंधका ने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा। ‘अनुहरद भी यही चाहता।’
प्रहलाद पीछे हट गया। 'तुम अनुहरद के बारे में क्या जानते हो?'
'जब उसकी हत्या हुई तब मैं वहीं मौजूद था।'
‘किसके द्वारा?’ प्रहलाद ने दांत भींच लिए।
अंधका क्षण भर के लिए रुक गया। प्रहलाद ने अपने चचेरे भाई के चेहरे पर थोड़ी सी बेचैनी देखी, फिर वह चेहरा एक गंभीर मुस्कान में बदल गया। ‘दुर्भाग्यवश, युद्ध का शिकार,’ उसने सवाल को टालते हुए जवाब दिया। प्रहलाद में इस समय अनुहरद के बारे में बात करने की न तो ऊर्जा थी और न ही मानसिक स्थिति। अपने भाई की मृत्यु की सच्चाई को स्वीकार करना उसके लिए असंभव था। वह अक्सर अनुहरद के सपने देखता था, मीठे, अमृत जैसे सपने जिनमें वे दोनों साथ होते थे, और फिर अचानक प्रहलाद खुद को अकेला पाता था। वह पसीने से तरबतर होकर जागता, खोया हुआ और अकेला महसूस करता, उसकी आँखों से आंसू बहते। फिर भी वह किसी से अपना दुख साझा नहीं कर पाता था, क्योंकि उसे डर था कि लोग उसे कमजोर समझेंगे।
हालांकि प्रहलाद को पूरा यकीन था कि उसका चचेरा भाई बेईमान है, फिर भी उसने कमजोर सी मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा।
‘भाई, यह एक बहुत बड़ी क्षति है। मैं उनके लिए शोक व्यक्त करता हूं।’
‘मैं भी। वह एक महान व्यक्ति थे।’ अंधाका ने क्षमा मांगते हुए नीचे देखा। हाँ, वह था।
प्रहलाद आग के पास अपनी जगह पर लौट आया, तभी अंधका ने अपने हाथ पीठ पीछे बांध लिए और कहा: “हम्म, शायद एक छोटा सा परिचय देना उचित रहेगा। मैं अंधका हूँ, उत्तर में स्थित असुर साम्राज्य का शासक, लेकिन जब मुझे पता चला कि प्रहलाद यहाँ है, तो मैंने अपनी मृत्यु का नाटक किया और तुम्हारे पास आया। मैं अपने सैनिकों के बिना आया हूँ, इसलिए तुम समझ लो कि मैं गंभीर हूँ और मैं मित्रता का प्रस्ताव रखता हूँ, हम्म।” उसने कुछ देर रुककर अपनी बात को प्रभावी बनाया।
पूरी विष्णुसेना में सन्नाटा छा गया।
उन्होंने आगे कहा, ‘अनुह्राद, प्रहलाद का भाई, और मैं घनिष्ठ मित्र थे, लेकिन हम दोनों को साम्राज्य ने धोखा दिया, हम्म। और अब मैं यहाँ अपनी सेना के साथ खड़ा हूँ, तुम्हारे साथ मिलकर असुरों का वध करने के लिए तैयार हूँ।’

‘क्यों?’ धृति ने पूछा।
प्रहलाद समझ गया था कि अंधका का कोई मकसद है, लेकिन उसे यह जानने के लिए इंतजार करना होगा कि वह क्या है।
“मेरी प्यारी बच्ची, जब मैं छोटा था, मुझे कुर्सी से बांधकर एक अंधेरे कमरे में मेरी इच्छा के विरुद्ध रखा जाता था। मुझे दिन में एक बार खाना मिलता था। एक दिन, मेरे पिता, हिरण्यक्षक, जो कश्यपुरी के शासक हिरण्यकश्यप के भाई थे, मेरे लिए तीन बार खाना लाए। ओह, मैं बहुत हैरान हुआ, लेकिन पता चला कि खाना ज़हर मिला हुआ था। ऐसा ज़हर जिससे खून की उल्टी होती है, छाले पड़ जाते हैं और इतनी तकलीफ होती है कि मरने का मन करता है – लेकिन जान नहीं जाती। मेरे पिता ने कहा कि वे मुझे ज़हर से होने वाले किसी भी जानलेवा हमले से बचा रहे हैं।” अंधका ने उदास होकर सिर हिलाया। “मैं आठ साल का था।” उसके बाद छाए सन्नाटे में प्रहलाद की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उसके चाचा ने उसके बेटे पर इतनी क्रूरता की होगी।
तो जब मैं तुमसे कहता हूँ, हम्म, कि मेरे पास असुर साम्राज्य को नष्ट करने के कारण हैं – तो मेरे पास कारण हैं। मैं अपने दिवंगत पिता की उस विरासत को मिटाना चाहता हूँ जो वे असुरों को देना चाहते थे, ताकि वे परलोक में कष्ट भोगें। और ऐसा करने के लिए, मुझे ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो इस अभियान में मेरी मदद कर सकें। मेरी बात मानो: मैं स्वार्थी हूँ। मैं यहाँ तुम्हारी मदद करने नहीं आया हूँ। मैं यहाँ इसलिए आया हूँ ताकि तुम मेरी मदद कर सको। विष्णुसेना अंधक की निर्मम ईमानदारी से दंग रह गया। प्रहलाद अपने चचेरे भाई की मानसिक स्थिति को लेकर चिंतित था। वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसे क्या-क्या सहना पड़ा होगा। हिरण्यकश्यप चाहे कितना भी क्रूर क्यों न हो, वह अंधक के पिता जैसा नहीं था।
‘तुम्हें हमारे बारे में कैसे पता चला?’ आसा ने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा। ‘आसान है – मैं बहुत से यात्रियों को सूचना के लिए पैसे देता हूँ। वे मेरे संदेशवाहक की तरह काम करते हैं, हम्म,’ अंधका ने कहा। ‘मुझे जो जानकारी मिली है, उससे पता चलता है कि शहर में हुई हार के बाद भी आपमें साम्राज्य को गिराने का जज़्बा बाकी है। और मुझे उन्हें पंगु बनाने का सही तरीका पता है।’

‘हमें तुम्हारी ज़रूरत क्यों है?’ आसा हँसते हुए बोला। ‘सच कहूँ तो, हम यह काम खुद कर सकते हैं।’
‘हाँ, ज़रूर कर सकते हो,’ अंधका ने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘लेकिन क्या तुम इसे उतनी ही कुशलता और पूरी तरह से कर पाओगे जितना मेरे साथ कर सकते हो? मैं युद्ध में बहुत उपयोगी साबित हो सकता हूँ। प्रहलाद यह जानता है।’ प्रहलाद असहज होकर घबरा गया क्योंकि सभी उसकी ओर पुष्टि के लिए देख रहे थे। उसने अंधका के देवों और अन्य शत्रुओं के विरुद्ध अभियानों के बारे में सुना था। वे सुनियोजित और चतुर माने जाते थे, लेकिन उसने स्वयं ऐसा कोई अभियान नहीं देखा था। लेकिन अपने चचेरे भाई की कहानी सुनकर उसे उस पर दया आई और दयालुतावश उसने कहा: 'वह सही कह रहा है। वह मेरे पिता का सबसे मजबूत सहयोगी था। वह उपयोगी साबित हो सकता है, बशर्ते वह कोई योजना प्रस्तावित करे।'
आसा को यकीन नहीं हुआ, लेकिन धृति ने प्रहलाद के साथ अपनी उंगलियां फंसा लीं और अपना समर्थन दिखाया, हालांकि वह खुद भी थोड़ी अनिश्चित थी।
“हम्म, धन्यवाद भाई। हाँ। मेरे पास एक योजना है। और यह सबसे स्पष्ट, सरल योजना है। पैसा छीन लो। सरकार पंगु हो जाएगी, सेना उनका समर्थन करना बंद कर देगी, और द्वारों की रक्षा के लिए कोई सैनिक नहीं होंगे। यह कैसा लगता है?” विष्णुसेना में सभी लोग कानाफूसी करने लगे, लेकिन प्रहलाद को आश्चर्य नहीं हुआ। अंधक की योजना तर्कसंगत लग रही थी। खजाने में सेंध लगाने का विचार चुनौतीपूर्ण लग रहा था, लेकिन अब उसके भीतर एक आग भड़क उठी थी, बहुत गुस्सा। उसके जीवन में अब कोई संघर्ष नहीं था। उसके मन में अपने पिता, अपने साम्राज्य और अपने लोगों के प्रति घोर घृणा थी।
‘यह तो बिल्कुल अजीब लग रहा है,’ आसा ने प्रहलाद की चिंताओं को व्यक्त करते हुए कहा। ‘मैं तुमसे कहता हूँ, हमें तो बस उन फाटकों को उड़ा देना चाहिए।’ ‘सच कहूं तो, मुखिया जी, आपके पास इसे करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं हैं,’ अंधाका ने कहा, और इस पर कुछ लोग हंस पड़े।
‘तो तुम्हारा क्या सुझाव है?’ आसा ने पलटवार किया। ‘हम उन्हें कैसे पंगु बना सकते हैं? हमें खजाने के बारे में कुछ नहीं पता। वह कहाँ स्थित है? क्या तुम्हें पता है?’ उसने प्रहलाद की ओर मुड़कर देखा, जिसने बेबसी महसूस करते हुए सिर हिलाकर जवाब दिया। ‘बहुत खूब। राजा के पुत्र को भी नहीं पता, तो किसे पता होगा?’

अंधका मुस्कुराया। 'खैर, एक व्यक्ति ऐसा है जो हमें सटीक जानकारी दे सकता है, लेकिन हमें उसे चुपके से पकड़ना होगा।'
‘कौन?’ प्रहलाद ने पूछा।
अंधका मुस्कुराया। 'वित्त मंत्री - शांड। जहाँ तक मुझे पता है, वह अभी भी कश्यपुरी में ही हैं। अगर हम उन तक पहुँच गए तो वह हमें शहर की लूटपाट के बारे में सब कुछ बता देंगे।'

'आप वास्तव में उसके बारे में कितनी गारंटी दे सकते हैं?' आसा ने संदेह भरे लहजे में पूछा, जबकि विष्णुसेना के कुछ वरिष्ठ सदस्य देख रहे थे, जो स्पष्ट रूप से अपने नेता के संदेह को साझा कर रहे थे।
वे एक अंधेरे कमरे में थे, जो कुछ मोमबत्तियों की रोशनी से जगमगा रहा था। अंधका के अपने शिविर के लिए रवाना होते ही आसा और अन्य लोगों ने प्रहलाद को घेर लिया था। धृति ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो हमेशा उसके साथ था। कभी उसका साथ नहीं छोड़ता था।
मैं उन्हें अच्छी तरह से नहीं जानता। मैं उनसे तब मिला था जब मैं छोटा था... आसा ने धीमी आवाज़ में कहा, 'तुमने वहाँ बताया था कि वह...'
‘वह अच्छा है,’ प्रहलाद ने शांत स्वर में बीच में ही टोकते हुए कहा, ताकि वे समझ सकें। ‘मेरे पिता उनकी रणनीतियों के बहुत बड़े प्रशंसक थे। हमें उन्हें एक मौका देना चाहिए। देखते हैं वे क्या करते हैं। वैसे भी हमारा कुछ नुकसान तो है नहीं।’
‘अगर वह तुम्हारे पिता को हमारे ठिकाने के बारे में बता दे तो क्या होगा?’ धृति ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'अगर उसे ऐसा करना ही होता, तो वह अब तक कर चुका होता और हम सब सुलगती राख का ढेर बन चुके होते। मुझे लगता है कि उसकी मंशा हमारे पक्ष में काम करेगी।'
आसा ने प्रहलाद को देखा, वह अभी भी अनिश्चित थी।
‘मुखिया,’ प्रहलाद ने दृढ़ स्वर में कहना शुरू किया, ‘अगर उसने कुछ भी ऐसा किया जो किसी भी तरह से संदिग्ध हो –’ वह विष्णुसेना सदस्यों के गंभीर,

चिंतित चेहरों को देखने के लिए रुका, फिर आगे बोला – ‘मैं सबसे पहले उस पर खंजर घोंप दूँगा।’

10

चेनचेन

‘यह रहा – बस सावधान रहना।’ और फिर उसने उसकी गर्दन मरोड़ दी।
वह आदमी दर्द से कराह उठा, और तुरंत ही उसे राहत और सुकून का एहसास हुआ। वह मुस्कुराया, 'हे भगवान, कितना अच्छा लग रहा है!'
चेनचेन ने अपनी मेज पर अकड़ी हुई पीठ वाले घायल योद्धा को देखकर मुस्कुराया। वह उसका दर्द कम करने के लिए उसे मालिश दे रही थी। वह उसके पैरों की ओर बढ़ी और फिर उसके बाएं पैर को बड़ी कुशलता से खींचा, जिससे उसकी मांसपेशियां जोर से चटक उठीं। इसके बाद उसने उसके दूसरे पैर और हाथों को भी फैलाया।
युद्ध के बाद सैनिकों को अक्सर अकड़न और पीठ दर्द का अनुभव होता था, और यहीं पर उसकी भूमिका सामने आई। और यद्यपि अंधका की पराजय के बाद उत्तर में उनका कोई शत्रु नहीं बचा था, फिर भी कुछ आदिवासी थे जिनसे उन्हें लड़ना आवश्यक था।
मेज के किनारे सैनिक के लहराते बालों को देखकर उसे नारा की बहुत याद आई। उसने उसे कई दिनों से नहीं देखा था, और उसकी अनुपस्थिति उसके दिल में लगातार दर्द बनकर रहती थी। जब भी वह किसी सिंह को देखती, तो उसकी याद उसे भारी कर देती।
कुछ मिनट बाद सिपाही ने उठकर उसे बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और चला गया। वह कटोरे में हाथ धोने के लिए मुड़ी ही थी कि उसने किसी को धीरे से कहते सुना, 'नमस्ते, मैडम।'

चेनचेन ने मुड़कर देखा तो उसे एक लंबा आदमी दिखाई दिया जिसके गंजे सिर के किनारों पर सफेद बाल थे और होठों पर ढीली मूंछें लटक रही थीं। उसके कमरे में प्रवेश करते ही आसमान में ज़ोरदार गड़गड़ाहट हुई।
‘भगवान इंद्र?’ चेनचेन ने धीमी आवाज़ में फुसफुसाया।
उसने सुना था कि नर द्वारा पशुपतास्त्र को नष्ट करने के बाद भगवान इंद्र और उनकी सेना भगवान शिव के किले में प्रवेश कर गए थे। लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि वह उससे मिलने आएंगे।
‘मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ, महाराज?’ वह उस आदमी को पसंद नहीं करती थी
– उसने उसके बारे में बहुत बुरी बातें सुनी थीं। लेकिन जब वह उसके सामने खड़ा था, तो उसे बस एक कमज़ोर, दुर्बल व्यक्ति दिखाई दिया, जिसके गाल पिचके हुए थे और चेहरे पर झुर्रियाँ थीं। लेकिन अपनी तमाम कमज़ोरियों के बावजूद, कमरे में उसकी मौजूदगी का दबदबा कायम था।
मैंने सुना है कि आप नारा के करीबी थे। आपने एक लड़ाई में उसके प्रतिद्वंदी को धनुष-बाण से मारकर उसकी जान बचाई थी।
'हाँ मैंने किया।'
'तो क्या आप मुझे यह समझाने में मदद कर सकते हैं कि वह उस एकमात्र हथियार को क्यों नष्ट करना चाहेगा जो हमें बचा सकता था?'
उन्होंने कहा, 'उन्होंने हमारे लोगों पर उस हथियार के पड़ने वाले दुष्परिणामों को देखा था,' उन्होंने उस समय को याद करते हुए कहा जब नरसिम्हा और उन्होंने उस गांव को देखा था जो परमाणु हथियार - पशुपतास्त्र
- के विकिरण से प्रभावित हुआ था।
इंद्र ने उसे देखा, लेकिन उनकी आँखों में कोई भाव नहीं था। बस एक घूरती निगाह, और वह भी बर्फीली सी। 'मैं समझ गया। अब हम असुरों के शासन का अंत कैसे करेंगे?'
'शायद किसी संधि के माध्यम से?'
उन्होंने सिर हिलाया। 'हम अब संधि का प्रस्ताव रखने के लिए बहुत गहरे संकट में हैं। नारा का साथ होना बहुत अच्छा होता।'
लेकिन मुझे डर है कि वह ऐसा नहीं चाहता। उसे लगता है...’ और वह जानती थी कि ऐसा कहने से हंगामा मच जाएगा, लेकिन फिर भी उसने हिम्मत दिखाई और कहा, ‘युद्ध के दोनों पक्ष सबसे घटिया किस्म के इंसान हैं जो बीच में फंसे निर्दोष लोगों को मरने दे रहे हैं।’

उसने उसे एक अजीबोगरीब खाली नज़र से देखा। 'मैं सहमत हूँ। मैंने इस बात को लेकर खुद को कई बार कोसा है, जितनी बार मैं बताना भी नहीं चाहता।' वह रुका।
'बताओ, तुम यहाँ क्यों हो, नारा के साथ क्यों नहीं?'
क्योंकि मैं वहीं हूं जहां मरीज हैं।
‘क्या आपको पता है कि वह कहाँ गया? मैं उससे बात करना चाहूँगा।’
‘मुझे नहीं पता,’ उसने झूठ बोला।
‘अच्छा, ठीक है,’ वह आगे आते हुए बोला। ‘आप बीमारों का इलाज करते हैं, है ना?’ उसने सिर हिलाया।
‘तो भैरव की पत्नी पार्वती का इलाज करो। जब से मैंने उसे यह बात बताई है, वह अपने बेटे को पाने की उम्मीद में पागल हो गई है।’
'आपका क्या मतलब है?'
इंद्र ने कहा, ‘मैंने उसे बताया था कि अंधका जीवित है। नारा द्वारा उसके देश में उसे हराने के बाद हमारे एक सैनिक ने उसे देखा था, लेकिन वह तुरंत गायब हो गया।’
चेनचेन का खून जम गया। लेकिन नारा ने उसे हरा दिया। 'वह कैसे है...?'
‘हम तो बस अनुमान ही लगा सकते हैं।’ उन्होंने सिर हिलाया। ‘खैर, मेरी एक विनती है। देवी पार्वती से बात करना और उन पर नज़र रखना। मैं यह स्थान छोड़ रहा हूँ। मेरा बेटा नागलोक में मेरा इंतज़ार कर रहा है।’
चेनचेन ने उसकी विनती पर कोई ध्यान नहीं दिया और न ही उसे ऐसा करने का समय दिया। वह बस चला गया।
चेनचेन ने पार्वती के बारे में सोचा। वह समझ सकती थी कि दूसरी महिला इस समय कैसा महसूस कर रही होगी। वह इस बात से बेहद खुश होगी कि उसका पागल बेटा जीवित है।
नहीं। चेनचेन को समझ आ गया। मैं ऐसा होने नहीं दे सकता…
जब वह वहाँ खड़ी सोच रही थी कि क्या करे, तभी चेनचेन ने दरवाजे पर एक और दस्तक सुनी। 'अंदर आ जाओ,' उसने कहा।
और उन्होंने ऐसा ही किया। दर्जनों की संख्या में। सिर पर दुपट्टा ओढ़े और सादे कपड़ों में नर्सें उसके कमरे में जमा हो गईं, सभी स्तब्ध और दुखी लग रही थीं।
'यह क्या है?'

उनमें से एक ने कहा, ‘बस बात ये है कि… महोदया, हम यहाँ से जाने की सोच रहे थे। अंधका प्रकरण के बाद, यहाँ हमारा कोई खास मकसद नहीं रह गया है।’
'आप सभी?'
'हां।' उन्होंने एक साथ सिर हिलाया।
‘लेकिन…’ वह उन्हें रुकने के लिए कोई बहाना ढूंढना चाहती थी, लेकिन वे सही थे। लंबे समय से कोई लड़ाई नहीं हुई थी, सिवाय कुछ कबीले के डाकुओं के हमलों के, और उनमें ज्यादा चिकित्सा देखभाल की जरूरत नहीं पड़ती थी।
एक अन्य नर्स ने कहा, 'हम कहीं न कहीं उपयोगी बनना चाहते हैं। हम अलग-अलग गांवों में जाने की योजना बना रहे हैं और काम पूरा होने के बाद आगे बढ़ जाएंगे। आप चाहें तो हमें घुमंतू नर्स कह सकते हैं।'
एक और व्यक्ति ने कहा, 'हम पूरब, पश्चिम और दक्षिण की यात्रा करना चाहते हैं। उत्तर में आने वाले बर्फीले तूफान शायद असहनीय हों। लेकिन हम वास्तव में यह कहना चाहते हैं - अगर आप हमारे साथ शामिल हों तो हमें बहुत खुशी होगी।'
यह विचार अच्छा लग रहा था क्योंकि कई गांवों को मदद की ज़रूरत थी, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे जाना चाहिए या नहीं। उसे यह भी नहीं पता था कि वह जाना चाहती है या नहीं, हालाँकि उसने यहीं रहने का फैसला कर लिया था। अचानक, देवी पार्वती का चेहरा उसके सामने प्रकट हुआ। अंधका जीवित था और अगर चेनचेन यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि वह फिर से बर्बाद न हो जाए, तो उसे देवी पार्वती से मिलना ही होगा।
‘मैं ऐसा करती,’ वह मुस्कुराई। ‘लेकिन मुझे कुछ और काम निपटाना है।’

आधी रात को वह बर्फ पर निकली। रेशमी दस्तानों में उंगलियां गड़ाए, चेनचेन आगे बढ़ी, अपने चेहरे पर काली टोपी ओढ़े हुए वह देवी पार्वती के घर की ओर चल पड़ी। वह किले के बाकी घरों से बड़ा था, और जैसे ही वह उसके पास पहुंची, उसे घोड़ों के खुरों की आहट सुनाई दी।
सामने घोड़ों की कतार लगी हुई थी, और चेनचेन ने बैंगनी रंग की पोशाक पहने एक महिला को घूमते हुए और उनमें से एक घोड़े पर चढ़ते हुए देखा। उसके आसपास

मौजूद पहरेदार अचंभित थे, लेकिन महिला को इसकी कोई परवाह नहीं थी। उसकी काठी तरह-तरह के हथियारों से लदी हुई थी।
चेनचेन उसकी ओर बढ़ते हुए बोली, 'मेरी मालकिन, आखिर ये क्या हो रहा है...' पार्वती ने मुड़कर उसे देखा। 'तुम यहाँ क्या कर रही हो?'
मैंने अंधका के बारे में सुना है।
उसकी आँखों में आँसू भर आए। 'हाँ, मैंने भी सुना।' उसने पहरेदारों को बाकी घोड़ों को अस्तबल में रखने का आदेश दिया। मुख्य द्वार पर नज़रें गड़ाए उसने कहा, 'मैं जाने की योजना बना रही हूँ। और मुझे खुशी है कि आप यहाँ हैं। मुझे अपनी यात्रा के लिए एक चिकित्सा सहायक की आवश्यकता है, कोई ऐसा व्यक्ति जो चोट लगने पर मेरे घावों का इलाज कर सके।'
‘चोट से बचाव के लिए, आपके पास भगवान वीरभद्र के सैनिक हैं।’
‘भैरव की मृत्यु के बाद, चेनचेन, मुझे यहाँ रहने का मन नहीं करता,’ उसने उदास मुस्कान के साथ कहा। ‘मैं अपने बेटे की मृत्यु का शोक मनाती रही और अब, जब मुझे पता है कि वह जीवित है, तो मैं घर में बैठकर यूँ ही रोती नहीं रह सकती। क्या तुम मेरे साथ आओगे?’
'क्या करना है?'
'उसकी मदद करने के लिए। मैं चाहती हूं कि उसे एहसास हो कि उसकी मां उससे प्यार करती है, और मुझे उम्मीद है कि मैं उसे बदल सकूंगी।'
चेनचेन जाना नहीं चाहती थी, लेकिन वह यह भी जानती थी कि अब यहाँ कोई मरीज़ नहीं है। उन्हें उसकी ज़रूरत नहीं थी, और नारा के बिना उसे यहाँ अच्छा नहीं लग रहा था। शायद अगर वह बाहर निकले, तो उसे नारा मिल जाए। शायद। बस यही उम्मीद की जा सकती थी।
‘क्या आपको पता है कि वह कहाँ है?’ चेनचेन ने पूछा।
‘नहीं।’ पार्वती मुस्कुराई। ‘लेकिन मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानती हूँ जिसे शायद पता हो।’
'कौन?'
पार्वती ने कहा, 'शादी से पहले मैं जिस महिला समुदाय का हिस्सा थी, वह मातृका समुदाय था।'

11

होलिका

यह अच्छा नहीं है। होलिका ने अभी-अभी पहरेदार से मिली पांडुलिपि पढ़ी।
‘नहीं, यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं है,’ उसने धीरे से कहा और फिर पहरेदार की ओर मुड़कर पूछा, ‘क्या आप निश्चित हैं?’
उसने सहमति में सिर हिलाया।
‘ठीक है। उसे अंदर बुलाओ – मुझे उससे बात करनी है,’ होलिका ने आदेश दिया।
गार्ड ने झुककर अभिवादन किया और उसके कार्यालय से चला गया।
वह अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गई, पांडुलिपि को मेज पर रख दिया और खाली निगाहों से छत को घूरने लगी। पांडुलिपि में लिखी बातों के बारे में विचार उसके मन में उमड़ रहे थे, और वह सोच रही थी कि अब इसका अंजाम क्या होगा। हिरण्य कुछ दिन पहले कश्यपपुरी की जिम्मेदारी उसे सौंपकर चला गया था। उसने सुरक्षा व्यवस्था मजबूत कर दी थी और हाल ही में हुए हमले के मद्देनजर शहर के हर कोने-कोने से भली-भांति परिचित हो गई थी। शहर की दीवारों का जीर्णोद्धार कार्य जारी था और लोगों के दैनिक जीवन में सेना की निरंतर भागीदारी थी। शहर के बाहरी घेरे में सेना की तैनाती बढ़ा दी गई थी।
उसने प्रहलाद की डायरी उठाई और उसके पन्ने पलटने लगी। उसमें ज़्यादातर बेतुकी बातें लिखी थीं – उसके जीवन, उसके पिता और भाई के साथ उसके रिश्तों और उसकी माँ की अनुपस्थिति के बारे में विचार। कुछ पन्ने पलटने के बाद, उसने अपना नाम देखा और पढ़ना शुरू किया:
मैंने अपनी माँ को कभी नहीं देखा, सिवाय उन तस्वीरों के जो मेरे पिता के कमरे में लगी हैं। लेकिन उन्होंने मुझसे कहा था कि अगर मुझे किसी से अपनी बातें बाँटनी हों, तो मैं अपनी मौसी होलिका के पास जा सकती हूँ। पर वो हमेशा रूखी रहती थीं और मेरा मज़ाक उड़ाती थीं। वो मुझसे बात नहीं करती थीं। मुझे कभी समझ नहीं आया कि क्यों। मैं इस बात को लेकर उत्सुक भी थी और दुखी भी, और कई बार तो मेरा मन करता था कि उनसे पूछ लूँ कि वो मुझसे इतनी

नफ़रत क्यों करती हैं। लेकिन मैंने उनसे नहीं पूछा – मैंने अपने भाई से पूछा।
और उसने मुझसे कहा, ‘उससे दूर रहो। वह हमसे नफरत करती है क्योंकि वह खुद बच्चे पैदा नहीं कर सकती, और हमारी माँ को दो बच्चे होने के कारण वह तिरस्कार करती थी।’ लेकिन इससे मुझे उससे दूर होने के बजाय, मैं उसे और अच्छे से समझ पाई। मैं उसके लिए कुछ अच्छा करना चाहती थी।
कविता सीखने के कारण मैंने एक कविता लिखी। लेकिन वो बिल्कुल अधूरी और बेतरतीब थी। ओह, कितनी भयानक थी वो, और अब जब मैं उसके बारे में सोचती हूँ तो शर्म से लाल हो जाती हूँ। फिर भी, एक उत्साही आठ साल की बच्ची की तरह, मैं उसके दरवाजे पर दौड़ पड़ी, उम्मीद थी कि उसे अपने अधूरे शब्द दे दूँगी। जब उसने मुझे देखा, तो वो बस घूरती रही। वो घूरती निगाहें। ऐसा लगा जैसे बर्फ मेरी आत्मा को भेद रही हो।
“तुम्हें क्या चाहिए, लड़के?” उसने कर्कश स्वर में कहा।
“उह, नहीं, कुछ नहीं,” मैंने उसकी मौजूदगी से डरते हुए कहा। मैं बस उसे बताना चाहती थी कि मैंने उसके लिए एक कविता लिखी है, ताकि उसे यह महसूस न हो कि उसने माँ बनने का मौका खो दिया है। कि उसका पहले से ही एक बेटा है।
मैं उसे “माँ” भी कहती। लेकिन मुझे नहीं लगता कि उसने कभी मुझे स्वीकार किया।
होलिका ने कागज़ों को मुट्ठी में भींच लिया, उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने इसकी उम्मीद नहीं की थी। उसने कागज़ वापस रख दिए। अगर वह प्रहलाद के प्रति ठंडी थी, तो वह अपने बच्चे न होने की निराशा के कारण थी, लेकिन उसे यह समझना चाहिए था कि उसके बच्चे तो थे। उसने सिर हिलाया, यह याद करते हुए कि कैसे सिम्हीका, जिसे वह बेटी कहती थी, प्रहलाद की वजह से मारी गई थी। अगर उसने प्रहलाद को वह प्यार दिया होता जो एक बच्चे को अपनी माँ से चाहिए होता है, तो क्या वह अलग होता?
होलिका अभी इस बारे में सोच ही रही थी कि तभी उसने दरवाजे पर दस्तक सुनी। वह आ गया है।
‘अंदर आओ,’ उसने कहा।
एक आदमी अंदर आया।
होलिका ने कहा, ‘लगता है कोई समस्या है। मेरे आदमियों का कहना है कि कुछ अनजान बच्चे तुम्हारा पीछा कर रहे हैं और तुम्हारी रोज़मर्रा की

गतिविधियों पर नज़र रख रहे हैं। हमने उनमें से एक बच्चे से पूछताछ की तो पता चला कि विष्णुसेना ने उन्हें तुम्हारी गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए पैसे दिए थे। शायद वे यह जानना चाहते हैं कि तुम्हें पकड़ने का सही समय क्या होगा, शान्द।’
मोटे-ताज़े आदमी के चेहरे पर चिंता झलक रही थी। उसने हाथ में रुमाल लिया और माथे से पसीना पोंछा। 'हे भगवान, मैं क्या करूँ... मैं अब और बाहर नहीं जाऊँगा।'
होलिका ने सिर हिलाया। ‘इसके विपरीत, तुम्हें बाहर जाना जारी रखना चाहिए,’ वह मुस्कुराई। ‘मेरे मन में कुछ विचार हैं।’

12

नरसिंह

‘क्या तुमने अपने बाल हटा दिए हैं? ये गहरा पानी है,’ गरुड़ ने कहा। ‘और अगर हम अपनी पहचान नहीं छुपाते हैं तो हमारे पकड़े जाने की संभावना बहुत अधिक है।’
नारा ने अपनी गर्दन के बाल पहले ही उतार दिए थे, और अब उन्हें उसने अपने हाथ में सावधानीपूर्वक लपेट रखा था, जिसे उसने अपने गठीले शरीर पर टिका रखा था। वह एक साधारण आदमी की तरह दिख रहा था, ठीक वैसे ही जैसे गरुड़, जिसने अपना सुपर्ण मुखौटा उतार दिया था।
जहाज अचानक उबड़-खाबड़ पानी पर लड़खड़ाने लगा। कप्तान, जो एक शराबी था, अपने चालक दल को लगातार सूरा (एक प्रकार की शराब) पिलाता रहा, जिससे वे भी नशे में धुत हो गए।
नारा क्षितिज से परे फैली गहरी खाई के जल को देख रहे थे। हालाँकि उनका जहाज बीच में था, फिर भी यहाँ से ऐसा लग रहा था मानो पूरी दुनिया डूबी हुई हो। यह वही स्थान था जो भगवान वराह के समय असुरों द्वारा लाई गई बाढ़ से सबसे अधिक

प्रभावित हुआ था। जहाँ अन्य लोगों ने जल को अपने क्षेत्र से बाहर धकेल दिया, वहीं नागलोक के नागों ने इसे गले लगाया। उन्होंने यात्रा के लिए विमान और उन्नत जहाज बनाए। उन्होंने इस स्थान को एक राज्य बना दिया।
और जिस प्रकार बर्फ ने पूरे उत्तर को अपनी चपेट में ले लिया था, उसी प्रकार पश्चिम भी पानी से ढक गया था।
‘क्या तुम्हें अपनी माँ याद है?’ गरुड़ ने पूछा।
‘नहीं, सिंह जाति के लोग अपने माता-पिता को याद नहीं रखते – वे उनसे मिलते भी नहीं हैं। उनके पास बस उनका मुखिया और उनका शेर साथी होता है।’
‘अरे, लगता है तुम्हारी किस्मत ही खराब है,’ गरुड़ हँसते हुए बोला। ‘मेरी अम्मा एक महान महिला थीं, शायद सबसे बुरी किस्म की क्योंकि वो बहुत दयालु थीं। लेकिन नागों ने उन्हें बार-बार धोखा दिया। सच में, वो बहुत ही घटिया और नीच लोग हैं। मुझे याद है, बचपन में वो मुझे सूप पिलाती थीं; वो हमेशा सबसे बढ़िया सूप बनाती थीं, वो भी इलवर्ती में। सच में, इंसान की याद नहीं आती; उससे जुड़ी चीजों की याद आती है। सूप। गर्माहट। कुछ ऐसा ही। काश, मैं उन्हें वापस ला पाता और उनसे फिर से वही सूप बनाने को कह पाता।’
‘आप स्वार्थी लग रहे हैं।’
‘मैं नहीं हूँ। भले ही मैं यह स्वीकार न करूँ, लेकिन मैं उस बुढ़िया से प्यार करता हूँ।’ उसने अपनी उंगलियाँ चटकाईं। ‘और अब वह वहाँ बंधी हुई है, जैसे कोई कुत्ता पट्टे से बंधा हो।’
आपको अतिरिक्त सहायता लानी चाहिए थी।
‘और अपने आदमियों को खो दूँ? बेहतर यही होगा कि मैं ज्यादा ध्यान आकर्षित न करूँ – बस चुपके से अंदर जाऊँ और चुपके से बाहर आ जाऊँ। मैं इस खूनी राज्य को अपनी गांड की दरारों से भी बेहतर जानता हूँ।’
‘क्या तुम हमेशा इतनी गालियां देते हो या सिर्फ मेरे लिए बचाकर रखते हो?’ ‘अच्छा, तो अपने कानों में रुई डाल लो,’ वह हँसते हुए बोला। ‘मैं अश्लील बातें करना बंद नहीं करने वाला। मुझे अपनी ज़बान और उससे निकलने वाले शब्द पसंद हैं।’
नारा चुप रहा। गरुड़ हमेशा से ही एक कठोर और बदमिजाज स्वभाव का था, जो किसी को भी मार कर उस पर थूक देता था। वह अक्सर अपनी माँ की बात करता था, यहाँ तक कि देवताओं के साथ अपने शुरुआती अभियानों के दौरान भी, जब नारा उसके साथ

गया था। नारा ने आह भरी और अपने बंकर में जाकर झपकी लेने के लिए मुड़ गया।
तभी उसने वह दृश्य देखा।
दूर से दिखाई दे रहा है। आकाश में चमकती हुई अरोरा किरणों के नीचे।
‘यह कितनी मनमोहक सुंदरता है!’ गरुड़ ने आगे देखते हुए कहा।
और यह सचमुच वैसा ही था। विशाल समुद्र के ठीक बीचोंबीच, ग्रेनाइट और संगमरमर से बना नागलोक स्थित था, जिसमें ऊंचे-ऊंचे टावर और शंकु के आकार की संरचनाएं, मेहराबदार द्वार और बहुत सारे जहाज थे, जिनमें व्यापारिक और सैन्य दोनों तरह के जहाज शामिल थे। बच्चे बंदरगाह पर ऐसे दौड़ रहे थे मानो वे किसी खेल के मैदान में हों।
‘देखो देवताओं ने इस सुंदरी का क्या हाल कर दिया! लेकिन ज्यादा देर तक नहीं।’
'क्यों?'
गरुड़ मुड़ा। ‘क्या तुमने नहीं सुना? पानी सूख रहा है और देवता इस बारे में कुछ नहीं कर रहे हैं – आकाश ने लंबे समय से हम पर अपनी वर्षा नहीं की है। पानी पहले से भी कम हो गया है और जल्द ही यह मेरी अम्मा की त्वचा की तरह सूख जाएगा। यही कर्म है, मैं तुम्हें बताता हूँ। तुम इस नश्वर संसार के साथ जैसा व्यवहार करोगे, संसार तुम्हें वैसा ही फल देगा। इसलिए, मैं कहता हूँ, इसका सदुपयोग करो।’
नारा ने बस सिर हिलाया।
जैसे-जैसे जहाज नागलोक के करीब आता गया, नारा को उसके चारों ओर के समुद्र तट दिखाई देने लगे, जो अन्य जहाजों के लिए बंदरगाह का काम कर रहे थे। नारा जहाज के पास आया और गहरी सांस लेकर समुद्री शैवाल की खुशबू को महसूस किया, तभी उसने एक और जहाज को उनकी ओर आते देखा।
शराब के नशे में धुत कप्तान चिल्लाया, 'सभी सवार हो जाओ! निरीक्षण का समय हो गया है।'
जैसे ही सैन्य पोत की छाया उनके जहाज पर पड़ी, नारा का दिल तेजी से धड़कने लगा। उसने चिंतित गरुड़ की ओर देखा, जो जानता था कि इसका अंत अच्छा नहीं होगा।
जब सैन्य जहाज पर चढ़ने की तैयारी चल रही थी, तब वे दोनों कप्तान के पास गए।

‘क्या हो रहा है, मित्र?’ गरुड़ ने पूछा। ‘यह एक व्यापारिक पोत है। हम यहाँ क्यों हैं…’
‘अरे, चुप रहो तुम दोनों!’ कप्तान ने कहा।
‘दरअसल, सिर्फ मैं ही बोल रहा था,’ गरुड़ा ने जवाब दिया।
'खैर, मैंने दो आवाजें सुनीं। जहाजों का अक्सर निरीक्षण किया जाता है - बिना किसी कारण के, मेरा मानना है।'
गरुड़ ने नारा को एक कोने में खींच लिया। उसने तिरछी नज़र से नाग अधिकारियों को अपने जहाज के डेक पर कदम रखते देखा। 'तुम कितने अच्छे तैराक हो?'
‘मैं तैर नहीं सकता।’ नारा ने पानी के डर से लगभग डूबते हुए कहा। ‘शायद यही एक चीज है जिससे मुझे डर लगता है।’
गरुड़ ने व्यंग्यपूर्वक बुदबुदाते हुए कहा, 'एक सच्चे शेर की तरह बोल रहे हो। हमें यहाँ से भागना होगा, नहीं तो हम पकड़े जाएँगे।'
‘हम सामान्य तरीके से व्यवहार क्यों नहीं करते? मुझे यकीन है कि इस देश का हर अधिकारी आपको नहीं जानता होगा।’
‘मैं आपको बता दूं,’ गरुड़ ने दांत पीसते हुए कहा, ‘इस राज्य के हर कोने में मेरी तस्वीरें लगी हुई हैं।’
‘और फिर भी, तुमने चुपके से अंदर घुसने की योजना बनाई थी?’
गरुड़ ने अपने चेहरे पर शॉल लपेट ली। 'मैंने सोचा था कि इतना काफी होगा।' ‘वाह! मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं पहचानता। गरुड़ कहाँ है?’ नारा ने गंभीर चेहरे से कहा।
‘जब तक हम... तब तक अपनी हंसी को आराम दें।’
एक अधिकारी बगल से उनके पास आया। 'पहचान पत्र?'
नाग की सिकुड़ी हुई नीली आँखों ने उन दोनों को वहीं रोक दिया जब नारा ने गरुड़ द्वारा दिए गए कागजात निकाले - कप्तान से खरीदे गए नकली दस्तावेज। अधिकारी कागजात पढ़ रहा था जबकि गरुड़ा, अपने चेहरे पर शॉल ओढ़े हुए, दूसरी तरफ देखता रहा।
नागा सैनिक ने पूछा, 'तुम्हारा दोस्त अपना चेहरा दिखाना पसंद नहीं करता, है ना?'
‘अच्छा, वो शर्मीला है।’ नारा मुस्कुराई। ‘सब ठीक है, अधिकारी जी?’

‘ठीक लग रहा है,’ उसने कहा और कागज़ वापस कर दिए। गरुड़ा ने शॉल के कोने से झाँकते हुए कहा, ‘मैं तुम्हारा बैग भी देखना चाहूँगा।’
नारा ने घबराकर गरुड़ा की ओर देखा। 'हमारे दोनों बैग?'
अधिकारी ने कहा, 'हाँ, दोनों। बस एक सरसरी नज़र।'
‘उम…’
नारा ने अपना थैला नाग को सौंप दिया, और नाग ने उसमें से बाल निकाले। ‘अहा, एक सिंह! कितना सुखद है। तुम साम्राज्य के सिपाही हो। इस तरह के जहाज पर क्या कर रहे हो?’
‘खैर…’ नारा ने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘मैं शेखी नहीं मारना चाहती, लेकिन मैं एक योद्धा होने के साथ-साथ एक लेखिका भी हूँ, और मुझे इन तटों पर मौजूद समुद्री डाकुओं में दिलचस्पी पैदा हो गई है।’
नागा सैनिक मुस्कुराया। 'वाह, लेखक बनो, है ना? काफी साहसिक शौक है।' 'उतना नहीं जितना आप सोचते हैं।'
सिपाही ने मुस्कुराते हुए बैग नारा को वापस सौंप दिया, जिसने जवाब में मुस्कुराते हुए उसे ले लिया।
सुरक्षित!
‘महाराज, आपके?’ नाग ने गरुड़ से पूछा।
‘मेरा दोस्त,’ नारा ने बीच में दखल देते हुए कहा, उसे गरुड़ के थैले में मौजूद चोंच याद आ गई थी, जिसकी वजह से उसे तुरंत जेल हो सकती थी, ‘वह मेरा सहयोगी है। चूंकि मैं साम्राज्य का योद्धा हूं, क्या आप हमें जाने देंगे? आप हमारे लिए इतना तो कर ही सकते हैं, है ना?’
जब नारा इंतजार कर रहा था और उसके माथे पर पसीना आ रहा था, तब नागा ने संदेह भरी निगाहों से उसे घूरना शुरू कर दिया।
‘ठीक है!’ नाग मुस्कुराया। ‘जैसा आप कहें, महाराज। मैं भगवान जयंत को बता दूंगा कि एक सिंह हमारे देश में आ रहा है।’
‘जयंत? वो यहाँ है?’ गरुड़ ने अचानक पीछे मुड़कर देखा, जिससे उसका चेहरा थोड़ा सा दिखाई दिया।
नागा ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'एक मिनट रुको - मैंने यह चेहरा कहीं देखा है।'
‘नहीं, तुमने नहीं किया है,’ नारा ने कहा।
'हां, बिल्कुल सही - आपने ऐसा नहीं किया है,' गरुड़ा ने आगे कहा।

नहीं, नहीं, मैंने कर लिया है। कृपया अपना शॉल हटा दें।
नारा और गरुड़ ने एक बार फिर एक-दूसरे को देखा।
‘तुमने ही ऐसा चाहा था।’ गरुड़ ने अपना सिर हिलाया और अपनी शॉल उतार दी, जिससे उसका चेहरा दिखाई दिया।
अरे! ये तो वही बदमाश विद्रोही है!
चिल्लाने वाले नाग नहीं थे, बल्कि कुछ अन्य सैनिक थे जिन्होंने गरुड़ को देखा था।
‘सुपरन!’ एक अन्य सैनिक चिल्लाया।
‘माफ़ करना, मेरे दोस्त, तुम्हें इस हालत में छोड़कर जाना पड़ रहा है,’ गरुड़ ने कंधे उचकाते हुए नाग के गले पर घूंसा मारा और जहाज़ की रेलिंग की ओर दौड़कर कूदने की कोशिश की। लेकिन इससे पहले कि वह बच पाता, नारा और उसे एक दर्जन हथियारबंद नागों ने घेर लिया।
‘हिलो मत, वरना हम गोली मार देंगे! और अगर तुम घायल हो गए तो हमेशा तैर नहीं सकते,’ एक नाग ने अपनी धनुष-बाण से निशाना साधते हुए दहाड़ा।
नारा उनसे लड़ सकता था, लेकिन इसका क्या फायदा? जहर दिए जाने के बाद से वह बेहद कमजोर महसूस कर रहा था; सैनिक पल भर में उस पर काबू पा लेते।
गरुड़ रेलिंग पर जम कर खड़ा रहा, फिर नीचे उतरा। 'ठीक है, मैं तुम्हारा हूँ।
महान उड़ने वाला पुरुष तुम्हारा है।'
‘क्या वे तुम्हें इसी नाम से बुलाते हैं?’ नारा ने पूछा।
‘खैर…’ गरुड़ ने आत्मसमर्पण करते हुए अपने हाथ ऊपर उठा लिए और नारा ने भी। ‘जयंत करता है। देवलोक का वो खूनी वारिस तो सच में सिरदर्द है। और उसने मेरी माँ को कैद कर रखा है। उसी ने सेना को मुझे चोट पहुँचाने के लिए भेजा था, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वो अभी भी यहाँ होगा। वो कमीना खरगोश तो हमेशा इधर-उधर उछलता रहता है।’
जब नागों ने उनके हाथ-पैर मोटी लताओं से बांध दिए, तो शराबी सरदार खड़ा हो गया और मंच पर अभिनय करते हुए जोर से बोला: ‘यह कैसे संभव है? उनके पास जाली दस्तावेज़ भी हैं, अगर आपको उन पर और आरोप लगाने की ज़रूरत पड़े तो।’ और उसने लाल आँखों से नारा और गरुड़ की ओर देखा। ‘कितनी शर्म की बात है, कितनी शर्म की बात है!’
नारा को अपनी स्थिति से बेहद नफरत थी। ज़हर के असर से वह पहले ही कमज़ोर हो चुका था और उसका मूल मिशन भी टल गया था। अब तो मौत भी नज़दीक लग रही थी।

हालात ठीक नहीं थे। वह सोच भी नहीं सकता था कि जब जयंत उसे ढूंढ लेगा, तो क्या होगा, क्योंकि उसे अच्छी तरह पता था कि वह भगोड़ा है।

13

प्रहलाद

उन्हें तेज़ी से आगे बढ़ना था। उन्हें एक दरवाज़े से अंदर जाना था, पहरेदारों से बचकर निकलना था, शान्ड को ढूंढना था और उसे धमकाकर पीछे के दरवाज़े से बाहर निकलवाना था। उन्होंने पहले ही सराय का मुआयना कर लिया था और उन्हें पता था कि वह दूसरे निकास की ओर खुलता है जहाँ शान्ड के पहरेदार तैनात नहीं होंगे। वहीं उनका रथ इंतज़ार कर रहा होगा।
एक मंत्री होने के नाते, शैन्ड को आम तौर पर अधिक सुरक्षा मिली होती, लेकिन वह ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहता था क्योंकि वह आधी रात को एक डांस बार में था और आखिरकार वह एक मंत्री था।
प्रहलाद धृति का हाथ थामे खड़ा था। वह डरा हुआ था, क्योंकि उसे ही अंदर जाना था। उसने स्वेच्छा से जाने का फैसला किया था, जबकि असमांजा ने उसे चेतावनी दी थी कि अगर शहर में किसी ने उसे पहचान लिया तो उसकी मौत हो सकती है। लेकिन उसने डर के आगे हार नहीं मानी। यह उस समूह के लिए वह कम से कम कर सकता था जिसने उसे निश्चित मृत्यु से बचाया था।
मुख्य द्वार से प्रवेश करना सरासर मूर्खता थी, लेकिन पूर्व राजकुमार होने के नाते, वह कुछ ऐसे गुप्त स्थानों को जानता था जहाँ से वे अंदर घुसकर व्यस्त इलाकों में गायब हो सकते थे। यदि इंद्र को ये योजनाएँ पता चल जातीं, तो कश्यपपुरी का अंत हो जाता। लेकिन वे ऐसा नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि शहर फिर से समृद्धि की ओर अग्रसर हो, लेकिन वर्तमान नेतृत्व की तुलना में अधिक स्थिर नेतृत्व के तहत।

तारों भरे आकाश के नीचे खड़े होकर, प्रहलाद ने सुनसान सड़क के बीचोंबीच स्थित सराय को देखा। दो पहरेदार बाहर खड़े थे, उनके हाथ तलवारों की मूठ पर थे।
‘क्या तुम तैयार हो?’ उसने धृति से पूछा।
‘ओह, मैं हूँ!’
दोनों ने हुड पहन रखे थे जिनमें केप भी जुड़े हुए थे। 'मुझे उम्मीद है कि आसा दूसरी तरफ हमारा इंतजार कर रही होगी।'
‘मैंने यह सुनिश्चित कर लिया है कि वह वहीं है,’ उसने जवाब दिया।
वे सराय की ओर चलने लगे और जैसे-जैसे वे पास पहुँचे, उनकी शारीरिक मुद्रा बदल गई। उन्होंने शराब के नशे में होने का नाटक किया, लड़खड़ाती ज़बान में बातें करने लगे, हिचकी लेने लगे और अपने पैरों पर डगमगाने लगे।
‘ये क्या हैं… ये क्या हैं…’ प्रहलाद बार-बार यही दोहराता रहा, अपना चेहरा पहरेदारों से छुपाते हुए, जो दरवाजे पर पहुंचने तक उन दोनों शराबी लोगों पर ध्यान नहीं दे रहे थे।
‘रुको,’ गार्ड ने प्रहलाद को रोकते हुए कहा। ‘तुम कौन हो?’
‘मैं इस शहर का राजा हूँ, बेवकूफ!’
‘हम्म,’ उसने एक पल रुककर कहा। ‘अपने हुड उतार दो।’
उन्हें आदेश का पूर्वाभास था, और उनके पास इसका सटीक जवाब था। 'नहीं, मैं नहीं करूँगा,' प्रहलाद ने नशे में धुत होकर उत्तर दिया। 'ठीक है, प्रिय?' 'चुप रहो!' गार्ड ने सिर पर से हुड हटाते हुए चिल्लाकर कहा।
सब कुछ पलक झपकते ही हो गया। धृति ने अपने लबादे से लाठी निकाली और एक पहरेदार के पिछले हिस्से पर जोरदार प्रहार किया, साथ ही दूसरे पहरेदार के पैर के अंगूठे पर भी वार किया। दोनों पहरेदार दर्द से कराहते हुए जमीन पर गिर पड़े।
‘उनके हमारे पीछे आने से पहले हमारे पास पांच मिनट हैं – जल्दी करो!’ जैसे ही वे सराय के अंदर दाखिल हुए, वे सीधे खड़े हो गए और अपने लक्ष्य को खोजने के लिए तैयार हो गए।
प्रहलाद ने देखा कि किसान, मजदूर, बदमाश, व्यापारी, सौदागर और रईस, सभी एक ही जगह पर अपनी कुर्सियों पर सुस्त होकर बैठे हुए थे, शराब और बीयर की चुस्कियां ले रहे थे और बीच में मंच पर चल रहे आकर्षण को घूर रहे थे - एक

नग्न महिला जिसके प्रत्येक हाथ में बीस चूड़ियाँ थीं, और उसके बाल ढीले जूड़े में बंधे हुए थे, वह मोहक ढंग से नृत्य कर रही थी।
वे मेजों और कुर्सियों के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े, तभी उनकी नज़र एक कोने में आराम से बैठे हुए, गिलास से घूंट भरते हुए शैंड पर पड़ी। उसके आसपास ज़्यादा लोग नहीं थे। ऐसा लग रहा था जैसे वह जगह खास लोगों के लिए बनी हो।
प्रहलाद और धृति उसकी ओर बढ़े और दोनों ओर बैठ गए। एक पल के लिए वह असमंजस में पड़ गया और बोला: 'यह निजी क्षेत्र है। मुझे उम्मीद है कि आप ऐसा नहीं सोचेंगे...'
धृति ने उसके गले पर एक धारदार हथियार रख दिया। उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'उठो और चलना शुरू करो।'
इसी बीच प्रहलाद ने भीड़ और पीछे के दरवाजे की ओर जाने वाले रास्ते पर नजर डाली, जिसका इस्तेमाल वे बाहर निकलने के लिए करेंगे। वह दरवाजा बार के उस पार दस गज की दूरी पर था।
शैन्ड खिलखिलाकर हँसा, उसका चेहरा लाल हो गया।
'क्या आपको लगता है कि यह हंसने का अच्छा समय है?'
उसने प्रहलाद की ओर देखा। 'मैं जानता हूँ, यह तुम ही हो, बेटा। क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हारे पिता तुम्हारी धृष्टता और विश्वासघात पर रो रहे हैं।'
‘लड़की जो कहती है वही करो,’ प्रहलाद ने कहा।
'मैं कोई कार्य नहीं कर रहा हूं।'
उसी क्षण, प्रहलाद ने देखा कि पहरेदार उन्हें ढूंढते हुए सराय में प्रवेश कर रहे हैं। उनके पास समय कम होता जा रहा था। उसने धृति से एक नज़र मिलाई, फिर इस मिशन के लिए अपने साथ लाई हुई रस्सी को मंत्री की मोटी गर्दन में लपेटकर उसे मेज से खींचकर दरवाजे की ओर ले गया।
सभी ग्राहक चिल्लाने लगे और भागने की हड़बड़ी में मेज-कुर्सियाँ उलट-पलट कर पहरेदारों के रास्ते में आ गए। प्रहलाद ने लात मारकर दरवाजा खोला और बड़ी मुश्किल से उस मोटे आदमी को खींचकर दूसरी तरफ ले गया।
‘तुम क्या कर रहे हो? वह मर जाएगा!’ धृति चिल्लाई।
प्रहलाद ने देखा कि शान्द का चेहरा आड़ू की तरह गुलाबी हो गया था और उसकी आँखों में आँसू थे, साथ ही वह लगातार खांस रहा था। लेकिन उसे इसकी परवाह

नहीं थी। रथ बस कुछ ही कदम दूर था, राजा के रूप में वह जिन रथों में यात्रा करता था, उनकी तुलना में वह छोटा था। आसा सबसे आगे बैठा था, शान्द को रथ में बिठाने का इंतज़ार कर रहा था।
प्रहलाद ने मोटे आदमी को जबरदस्ती अंदर जाने के लिए मजबूर किया, फिर धृति के आने का इंतज़ार किया। वह बस में चढ़ने ही वाला था कि दरवाज़ा ज़ोर से खुला और पहरेदार घबराए हुए और गुस्से में बाहर भागे।
‘जाओ, जाओ!’ प्रहलाद चिल्लाया और रथ के किनारे को पकड़ लिया, तभी आसा ने घोड़े को चाबुक मारा। घोड़ा हिनहिनाया और फिर तेज़ी से भाग निकला, पीछा कर रहे पहरेदारों को पीछे छोड़ते हुए।
प्रहलाद रथ के किनारे लटका हुआ था, जबकि अंदर धृति ने अपनी तलवार शांड के गले पर रखी हुई थी। मंत्री अभी भी हांफ रहा था, लगभग दम घुटकर मरने के बाद सांस लेने की कोशिश कर रहा था।
‘मुझे लगता है यह सफल रहा!’ प्रहलाद हँसते हुए बोला।
आसा हँसी, धृति भी हँसी, लेकिन वह प्रहलाद के करीब झुकी और फुसफुसाकर बोली: 'तुम्हें क्या हो गया है?'
‘मुझे नहीं पता,’ उसे बस इतना याद था कि किसी अवर्णनीय कारण से उसे शैन्ड के प्रति अत्यधिक क्रोध आ रहा था। ‘मुझे लगता है…’
‘मेरे प्यारे दोस्तों!’ आसा चिल्लाया जब उन्होंने अपने पीछे से पहियों की एक और खड़खड़ाहट की आवाज़ सुनी, जो तेज़ी से उनका पीछा कर रहे थे—जैसे कि उन्हें ठीक-ठीक पता हो कि रथ में कौन है। ‘हमारे साथ कोई और भी है।’
‘ये कैसे…’ प्रहलाद का चेहरा हैरानी से भर आया। ‘ये अच्छा नहीं है।’ जब उसने रथ पर बैठे व्यक्ति को देखा, तो स्थिति और भी खराब हो गई। वह उसकी चाची थी।
होलिका।

14

होलिका

‘तेज़ चलो!’ होलिका ने अपने सारथी पर चिल्लाते हुए कहा, उसकी दोनों तलवारें उसकी मुट्ठी में चमक रही थीं, वार करने के लिए तैयार।
उस आदमी ने घोड़ों को चाबुक मारा और उन्हें विद्रोहियों के करीब ले गया। होलिका ने अपना धनुष निकाला और दूसरे रथ पर निशाना साधते हुए अपनी निगाहें कस लीं। चलो, मुझे यह करना ही होगा।
दोनों रथ बहुत तेज़ी से चल रहे थे, इसलिए वह ठीक से निशाना नहीं लगा पाई – उसने तीर छोड़ा, लेकिन वह कहीं और जा लगा। उसने दोबारा तीर चलाया, और तीर तेज़ी से नीचे आया और नकाबपोश अपहरणकर्ताओं में से एक को जा लगा। जैसे ही उस आकृति का नकाब गिरा, एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी, और उसने होलिका की ओर मुड़कर देखा।
वह प्रहलाद था।
होलिका ने झट से धनुष नीचे गिरा दिया। प्रहलाद!? मुझे सावधान रहना होगा। ‘इसमें टक्कर मारो,’ उसने अपने आदमी को आदेश दिया, जिसने सिर हिलाया और रथ को इस तरह मोड़ा कि वह दूसरे रथ के एक तरफ से टकरा गया। प्रहलाद का रथ थोड़ा सा हिला, लेकिन उन्होंने पलटवार नहीं किया। उनका ध्यान सड़क पर था, भागने का रास्ता खोजने पर।
‘फिर से!’ होलिका ने आदेश दिया।
उसका रथ अचानक आगे बढ़ा और बगल में आकर रुके दूसरे रथ से ज़ोर से टकरा गया।
होलिका ने दूसरे रथ का पहिया तोड़ने के लिए अपनी तलवार उठाई ताकि वह पलट जाए, लेकिन तभी उसकी नज़र प्रहलाद के चेहरे पर पड़ी।
नहीं। अगर मैं ऐसा करूंगा तो उसे चोट लग सकती है – शायद उसकी मौत भी हो जाए। होलिका ने युद्ध के दौरान कभी किसी की परवाह नहीं की थी। लेकिन उसकी डायरी पढ़ने पर...
अपने विचारों की दिशा से निराश होकर, वह क्षण भर के लिए झिझकी। उसी क्षण उसने देखा कि प्रहलाद ने अपनी तलवार उसके सारथी पर फेंकी और बड़ी सटीकता से उसके गले पर वार किया। सारथी रथ के किनारे गिर पड़ा और उसके हाथों से

लगाम छूट गई। होलिका ने तुरंत लगाम पकड़ी और घोड़ों को चाबुक मारना शुरू कर दिया, उन्हें तेज़ी से चलने के लिए उकसाया। 'चलो!' वह चिल्लाई।
रथ एक साथ गलियों और सड़कों से होकर तेजी से गुजरे, एक दूसरे को पार करते और टकराते हुए, उनके पहियों के संक्षारक रूप से टकराने से चिंगारियां उड़ रही थीं।
वह अपनी ओर आ रहे तीरों से तब तक बचती रही जब तक कि...
एक तीर उसके कवच में जा लगा। इस प्रहार से वह लगभग रथ से गिर ही गई थी, लेकिन उसने एक हाथ से रथ के किनारे और दूसरे हाथ से लगाम पकड़कर खुद को संभाल लिया। उसे यह देखकर निराशा हुई कि प्रहलाद उससे आगे निकल चुका था और उनके बीच की दूरी बढ़ा चुका था। गति बढ़ाने की उम्मीद में उसने सारथी के शव को रथ से लात मारकर गिरा दिया। लेकिन उसका शरीर पहिए के नीचे आ गया और इससे उसका रथ पलट गया, जिससे वह अपने काले घोड़ों के साथ लुढ़क कर गिर पड़ी। उसने दुश्मन पर अचानक हमला करके जनता और अपहरणकर्ताओं दोनों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की उम्मीद की थी। लेकिन वह घमंडी थी। उसने सोचा था कि वह उन्हें हराने के लिए काफी है। वह गलत थी।
अंधकार के उस मित्रवत चेहरे द्वारा उसे अपने शिकंजे में लिए जाने से ठीक पहले, उसके भतीजे की छवि उसकी आँखों में अंकित हो गई थी।

15

हिरण्यकश्यप

‘कमजोर!’ हिरण्य ने अपने बेटे को पुकारा।
अनुहरद आगे की ओर कूदा और हिरण्य ने एक बार फिर आसानी से उसे चकमा दे दिया।
‘कमजोर!’ हिरण्य ने गुस्से से कहा। ‘तुम्हें क्या हो गया है, लड़के?’
दांत पीसते और मुट्ठी भींचते हुए, उसका छोटा बेटा गुस्से से उस पर झपटा।
हिरण्य ने तुरंत उसके चेहरे पर एक घूंसा मार दिया।

अनुहराद पीछे की ओर गिर पड़ा, उसके मुंह से खून बहने लगा।
‘बंजन!’
अपना नाम सुनते ही हिरण्य जम गया, उसके माथे से पसीना टपक रहा था। उसने देखा कि अनुहरद खून से सने मुंह के साथ उस पर मुस्कुरा रहा है।
‘अब तो काम हो गया। वो तुम्हें मार डालेगी। अहा!’ उसने खून पोंछते हुए कहा। हिरण्य ने मन ही मन बड़बड़ाते हुए कायधु की ओर मुड़कर पूछा, 'जी हां, मेरे प्रिय?'
आज भी, उनके कोमल भूरे बाल उनके सुंदर चेहरे को घेरे हुए हैं, मूंगे जैसी चमकती आंखें हैं, और लंबी ड्रेसिंग गाउन में वे अलौकिक प्रतीत होती हैं, उनकी छाती से एक बच्चा लिपटा हुआ है। प्रहलाद।
‘तुम क्या कर रहे हो?’ उसने अपनी नाक फुलाते हुए पूछा।
मैं…उह…उसे प्रशिक्षण दे रहा हूँ।’
‘वह मुझे मार रहा है!’ अनुहराद चिल्लाया।
‘अरे, तुम!’ हिरण्य ने तुरंत अपने बेटे को धमकाने के लिए उसकी ओर मुड़ा, जो हंसते हुए भाग गया। वह अपनी पत्नी की ओर मुड़ा। ‘नहीं, वह… ठीक है। मैं उसे चोट नहीं पहुंचा रहा था। यह अभ्यास का हिस्सा था।’
'पता है, कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या तुम मौका मिलने पर अपने ही बच्चों को मार डालोगे।'
हिरण्य ने अपने होंठ काट लिए। 'मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा - कसम से।'
‘क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारी बात पर विश्वास करूंगा?’
‘खैर, मैं उसकी जिंदगी की कसम खाता हूँ,’ उसने कहा और अपना बड़ा हाथ प्रहलाद के छोटे से सिर पर रख दिया।
‘नहीं,’ उसने उसका हाथ पकड़कर अपने सिर पर रखते हुए कहा। ‘मैं अपनी जान की कसम खाती हूँ।’
हिरण्य ने गहरी सांस ली। 'ठीक है। मैं अपनी जान की कसम खाता हूँ - मैं उन्हें कभी नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।'
और फिर, वह पसीने से भीगा हुआ, गुस्से से भरा हुआ, दिल की धड़कन तेज होते हुए जागा। मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।
और यद्यपि उन्होंने बहुत पहले प्रतिज्ञा ली थी, फिर भी उसे निभाना उनके लिए मुश्किल हो रहा था। उन्हें भगवान ब्रह्मा की तीसरी परीक्षा याद आई और कैसे, अपने पुत्र के असुर साम्राज्य के विनाश का कारण बनने के जोखिम से

बचने के लिए, उन्होंने प्रहलाद की बलि दी थी। यह बेशक एक माया थी, लेकिन वे यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाए कि क्या यह भगवान ब्रह्मा का भविष्य के बारे में पूर्वाभास देने का तरीका था।
उसने अपने होंठ दबाए और बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। ठीक उसी क्षण जहाज़ ज़ोर से हिल गया और उसे पेट में अजीब सी बेचैनी महसूस हुई – उसे समुद्री यात्रा से नफ़रत थी, इसीलिए उल्टी करने के लिए बाल्टी साथ रखना उसके लिए ज़रूरी हो गया था।
दरवाजे पर दस्तक हुई थी।
‘महाराज?’ बाहर से किसी ने झाँक कर पूछा।
‘जी?’ हिरण्य ने आह भरी।
‘जहाजों का एक बेड़ा हमारा रास्ता रोक रहा है। शायद भगवान वरुण को हमारे आने की खबर मिल गई है।’
क्या बेड़े के लिए कोई नेतृत्व उपलब्ध है?
'हां, बहुत बड़ी बढ़त - हमारे जहाज से दोगुनी बड़ी।'
हिरण्य ने सिर हिलाया। 'आ रहा हूँ।' वह दरवाजे तक गया और अपने अंगरक्षकों के साथ बाहर निकल गया। बाकी सभी सैनिक यह देखने के लिए इंतजार कर रहे थे कि वह क्या करेगा। वह डेक पर पहुँचा तो देखा कि सैकड़ों जहाज उनका रास्ता रोक रहे हैं, और सबसे आगे वाला जहाज उनकी ओर बढ़ रहा है। संभवतः वह किसी संदेशवाहक को लेकर आ रहा था और उसके साथ वापस लौटने की चेतावनी भी थी। उसके बगल में खड़े गार्ड ने पूछा, 'क्या हमें इंतजार करना चाहिए, महोदय? या हमें हमला करना चाहिए?'
'किस के लिए इंतजार?'
‘संदेश के लिए।’
तो क्या वे हमसे विनम्रतापूर्वक जाने के लिए कह सकते हैं?
पहरेदार चुप हो गया। सैनिक विस्मय से देखते रहे जब हिरण्य ने भगवान ब्रह्मा का नाम जपना शुरू किया, जिससे उसका कवच और तलवार अचानक प्रकट हो गए। बिना सोचे-समझे वह अपने जहाज से कूदकर पानी में जा गिरा और दौड़ने लगा। उसने सोचा था कि वह तेजी से आगे वाले जहाज की ओर तैरेगा, लेकिन कवच ने उसे पानी पर इतनी गति और शक्ति के साथ दौड़ने में सक्षम बनाया कि वह कुछ ही क्षणों में जहाज के पतवार तक पहुंच गया।

अपनी तलवार को ऊपर उठाते हुए उसने जहाज को दो टुकड़ों में काट दिया, और उसमें सवार लोग पानी में मलबे के बीच छटपटाने लगे।
जैसे ही हिरण्य अन्य जहाजों की ओर दौड़ा, वे मुड़ने लगे। उसने अपने खाली समय में ब्रह्मशास्त्र के नियमों का अध्ययन किया था और उसकी रहस्यमयी संभावनाओं का पता लगाया था। वह अपनी जगह से छलांग लगाकर एक जहाज के डेक पर पहुँच गया। एक झटके में उसने जहाज के बीचोंबीच एक विशाल दरार पैदा कर दी, जो जहाज के निचले हिस्से तक पहुँच गई। कुछ ही क्षणों में जहाज और उसके चालक दल समुद्र में डूब गए।
इसी बीच, हिरण्य एक जहाज से दूसरे जहाज पर छलांग लगाता रहा और हवा में कोड़े मारता रहा।

एक दर्जन से अधिक जहाजों को नष्ट करने के बाद, हिरण्य ने एक छीने हुए जहाज पर चढ़ाई कर ली। वह डेक पर अकड़कर चलने लगा जबकि नाग सैनिक भय से कांप रहे थे। उसका शरीर पीड़ा से भरा था, वह अजेय था।
उसके चारों ओर झुलसे हुए जहाज, आग और विस्फोटों से मची अफरा-तफरी उसका ध्यान भटकाने में नाकाम रही। हालांकि उसने अकेले ही अधिकांश जहाजों को नष्ट कर दिया था, लेकिन बाकी बचे जहाजों को उसके साथियों ने पल भर में ही खत्म कर दिया।
हिरण्य ने अपना ध्यान अपने सामने खड़े व्यक्ति की ओर मोड़ा। वह एक नाग सेनापति था। "अपने तटों पर लौट जाओ," हिरण्य ने दहाड़ती आँखों से कहा।
कप्तान ने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाया।
और अपने समुद्र के देवता वरुण को बता देना कि मैं यहाँ हूँ और उनसे दर्शन चाहता हूँ।
कप्तान ने सिर हिलाया।
'अच्छा।'
‘कौन… कौन… कौन, मुझे कहना चाहिए कि कौन उनसे मिलना चाहता है?’
‘वह मुझे जानता है।’ हिरण्य मुस्कुराया। ‘आखिरकार, हम चचेरे भाई हुआ करते थे।’

16

चेनचेन

उन्हें पता था कि भगवान शिव की भूमि के सुरक्षित आश्रय को छोड़कर बर्फीले जंगल में प्रवेश करने के बाद उनका जीवन पहले जैसा नहीं रहेगा, जहाँ सफेद बाघ दहाड़ते हैं। उनके आगे वीर पार्वती खड़ी थीं - एक समय में पतित और शत्रुतापूर्ण स्त्री, जिन्होंने अपने पुत्र की मृत्यु के बाद से अपने गौरव को घर की चारदीवारी में छिपा रखा था और घर के भीतर ही मानवता से दूरी बना ली थी। अब, वह यहाँ बाहर थीं। और वह एक मातृका थीं।
चेनचेन झूठ बोल रही होती अगर वह कहती कि वह उन्हें नहीं जानती। उसने उनके बारे में पढ़ा था – महिलाओं का वह भाड़े का दस्ता, जो हर तरह की लड़ाई में प्रशिक्षित था और कई साम्राज्यों के लिए लड़ चुका था। हर महिला को एक खास हुनर और एक हथियार दिया गया था, जिसका वह इस्तेमाल करती थी। भगवान इंद्र ने अपने शासनकाल के विस्तार के दौरान इस दल की स्थापना की थी, लेकिन मातृकाओं ने उनकी अदूरदर्शी सोच और अत्याचार को पहचानते ही उनसे नाता तोड़ लिया। चेनचेन ने उनके शुरुआती दिनों में, जब उसके अंदर जोश था, उनसे जुड़ने की इच्छा रखी थी। चिकित्सा सेवा में बिताए सालों ने उसकी जवानी छीन ली थी।
किसी से लड़ना और उसे मारना उसके बस की बात नहीं थी।
'मुझे नहीं पता था कि तुम मातृका हो,' चेनचेन ने कहा, जब उसका घोड़ा बर्फ की चादर पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था।
‘तो फिर मैंने अपना काम अच्छे से किया,’ पार्वती ने जवाब दिया।
वे पहाड़ी पर चढ़े और फिर टेढ़े-मेढ़े रास्ते से नीचे उतरे। आसमान में बादल छाए हुए थे, लेकिन बर्फ़ीला तूफ़ान हल्का था। चेनचेन ने अपने लबादे को कसकर अपनी छाती से चिपका लिया।
‘क्या आप उस तथ्य को छिपाना चाहते थे?’

“हाँ, बिल्कुल। भैरव को ही पता था। देखिए, मैंने भैरव से विवाह इसलिए किया क्योंकि वे शिव वंश के पुत्र बनने वाले थे। ऐसा माना जाता है कि शिव और मातृका के पुत्र इस संसार में शुभता लाएंगे,” उन्होंने कहा। “स्कंद नाम का वह पुत्र आशा का प्रतीक होगा। मेरे भाइयों ने मुझे भैरव से विवाह करने के लिए चुना था और विवाह के बाद मुझे स्कंद को जन्म देना था। दुर्भाग्यवश, ऐसा नहीं हुआ।” उनकी आवाज निराशा से भर उठी। “पहले तो मेरा एक मृत शिशु जन्मा, जिसका जन्म होते ही अंत में त्याग कर दिया गया। फिर भृंगी, जो प्रसिद्ध स्कंद बनने वाले थे, उनकी भी मृत्यु हो गई।”
‘अब तक तो ऐसा ही था,’ चेनचेन ने कहा। ‘क्या आपको सच में लगता है कि शिव की हत्या करने वाला व्यक्ति आशा का प्रतीक हो सकता है?’
‘अब मुझे नहीं पता।’ पार्वती को खांसी आ गई। सर्दी उसके शरीर में समा गई थी और उसकी नाक बंद हो गई थी। ‘मैं बस यही मान सकती हूँ। मेरे भाई निराश थे, और जब तक उन्होंने मुझे अपने नए ठिकाने के साथ शोक संदेश नहीं भेजा, तब तक हमारी कोई बात नहीं हुई – मैं जानती थी कि मुझे उन्हें ढूंढना ही होगा। हमें अब भी उम्मीद है कि हम मेरे बेटे स्कंदा को ढूंढ लेंगे।’ भविष्यवाणी में वास्तव में क्या कहा गया था?
उन्होंने कहा, ‘स्कंद सात माताओं की सहायता से महान भोर को पराजित करेगा।’ ‘ये सात माताएं मातृकाएं हैं।’
‘मैं समझ गई,’ चेनचेन ने कहा।
जैसे-जैसे वे ढलान से नीचे उतरते गए, जंगल घना होता गया और चारों ओर बर्फीली सफेद छतरी छाई रही। सूरज दिखाई नहीं दे रहा था और कड़ाके की ठंड पड़ रही थी।
पार्वती ने कहा, 'इसे यहीं होना चाहिए था।'
जब वे यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि क्या करें, तभी उनके सामने हलचल मच गई। लंगोटी पहने फटेहाल आदमियों का एक झुंड जान बचाकर भाग रहा था, जिनका पीछा एक पैंथर कर रहा था। चेनचेन ने एक छोटा खंजर निकाला, लेकिन पार्वती ने उसका हाथ रोक दिया और कहा: 'देखो।'
क्या? चेनचेन हैरान रह गई।
पैंथर ने एक आदमी पर झपट्टा मारा और उसे नीचे गिरा दिया। जब वह आदमी की खाल चबा रहा था, तभी एक और साया प्रकट हुआ और उसने त्रिशूल को उस आदमी के पास

लाकर उसे दो टुकड़ों में काट दिया। कुछ और साये भी थे, जिन्होंने उन आदमियों का तब तक पीछा किया जब तक वे सब ज़मीन पर गिर नहीं पड़े।
फिर वह जानवर कुछ देर रुका। उसने उन पर गुर्राया, उसकी मूंछें फड़फड़ाने लगीं और उसने अपने नुकीले दांत दिखाए। वह बिल्कुल काला और इतना सुंदर था कि चेंचेन को एक पल के लिए भी वह बिल्कुल खतरनाक नहीं लगा - जब तक कि उसने ज़ोर से दहाड़ नहीं मारी।
‘कोई बात नहीं। इसे हमसे डर या आक्रामकता का आभास न होने दें,’ पार्वती ने कहा। ‘हमें सावधान रहने की जरूरत है।’
चेनचेन ने सिर हिलाया, लेकिन उसे अपनी धड़कन तेज़ होती महसूस हो रही थी। उसने एक घूँट निगला जब पैंथर ने लापरवाही से उन्हें देखा और अपनी पूंछ हिलाई। अचानक, कहीं से हँसी की आवाज़ आई।
वे आवाज़ की दिशा में मुड़े और देखा कि छह महिलाएं जंगल से बाहर निकल रही हैं, हंस रही हैं और ताली भी बजा रही हैं। पैंथर लेट गया और पालतू बिल्ली की तरह अपने पंजे चाटने लगा।
‘क्या हो रहा है?’ चेनचेन ने पार्वती से पूछा, लेकिन पार्वती ने उसके सवाल पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह अपने घोड़े से उतरकर महिलाओं को गले लगाने लगी।
एक महिला ने जंगल में रहने वाले निषादों का जिक्र करते हुए बताया, 'कुछ निषादों ने हमसे चोरी करने की कोशिश की, इसलिए हमने उन्हें सबक सिखाया।' “चिंता मत करो, यह मेरा है,” दूसरी ने चेनचेन को पैंथर को संदेह भरी निगाहों से देखते हुए देखकर कहा। वह अपने काले बालों की तरह गहरे रंग की थी। उसने सीटी बजाई और पैंथर वापस जंगल में चला गया। “इसे नए आगंतुकों को डराना अच्छा लगता है। मेरा नाम चामुंडी है।”
चेनचेन घोड़े से उतरी और चामुंडी से हाथ मिलाया। उसने देखा कि चामुंडी की पीठ पर एक लंबा त्रिशूल था और कमरबंद में एक खोपड़ी लटकी हुई थी। मुस्कुराते हुए उसके लाल होंठ उसकी काली त्वचा पर चमक रहे थे।
पीले रंग का साटन पहने, कमर पर फंदा लटकाए और गले में कमल के आकार का झुमका पहने एक महिला आगे आई और चेनचेन से हाथ मिलाया। उसने कहा, 'मैं ब्राह्मणी हूं, इस समूह की नेता। मुझे खुशी है कि आप आए हैं।'
'आशा है आप ठीक होंगे,' पार्वती ने कहा।
‘बहन, हम होंगे।’

उन्होंने एक-दूसरे को ऐसे गले लगाया मानो वे सदियों से नहीं मिले हों। पार्वती ने खिलखिलाते हुए पूछा, 'आजकल तुम किसका शिकार कर रहे हो?' ‘डाकू। एक गांव ने हमें उन्हें भगाने के लिए पैसे दिए थे। हम अभी वहीं से लौटे ही थे कि उन खूनी निषादों ने हम पर हमला कर दिया।’
‘ठीक है।’ पार्वती ने सिर हिलाया, यह सोचते हुए कि अपनी यात्रा का कारण कैसे बताए।
ब्राह्मणी ने अपनी बहन के चेहरे पर उदासी का भाव देखा। 'क्या हो रहा है? इतने लंबे समय बाद तुम यहाँ क्यों आई हो?'
पार्वती ने उसकी ओर मुड़कर कहा, 'मुझे लगता है कि स्कंद जीवित है और कहीं बाहर है।'
कुछ पल के लिए सब चुप हो गए। ब्राह्मणी ने सिर हिलाया। 'ठीक है। चलो इस बारे में बात करते हैं।'

वे सब अलाव के चारों ओर बैठे थे और सूप और सब्ज़ियों के कटोरे आपस में बाँट रहे थे, जिन्हें चेन्चेन बड़े चाव से खा रही थी। उसकी नज़र एक सिम्ही पर पड़ी, जिसकी खाल शेरनी जैसी थी और मज़बूत शरीर के पंजे उसके हथियार थे। उसका नाम प्रत्यंगिरा था, लेकिन प्रसिद्ध नरसिम्हा के कारण वह खुद को नरसिम्ही कहती थी। चेन्चेन के मन में ईर्ष्या पनप उठी।
पार्वती की बात सुनने के बाद ब्राह्मणी ने पूछा, 'क्या आपको यकीन है कि दुनिया का सबसे दुष्ट इंसान माना जाने वाला अंधका ही उद्धारक है?' पार्वती ने उत्तर दिया, ‘वह मेरा इकलौता बच्चा है। और जैसा कि भविष्यवाणी में कहा गया है…’
‘मुझे पता है।’ ब्राह्मणी ने सिर हिलाया।
चामुंडी ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'मुझे पूरा यकीन है कि वह जैसा बना, उसका कारण यही था कि हम उसकी मां बनकर उसकी देखभाल करने, उसे सही राह दिखाने के लिए वहां मौजूद नहीं थे। मुझे पूरा यकीन है कि अगर हम सब वहां होते तो वह कहीं बेहतर इंसान होता।'
समूह में मौजूद सभी लोगों ने सिर हिलाया जबकि चेनचेन चुप रही।

‘और तुम अपने साथ एक मानव को क्यों लाए हो?’ ब्राह्मणी ने चेनचेन की ओर इशारा करते हुए पूछा। ‘क्या उसे हमारे ठिकाने का पता चलने से कोई फायदा होगा या हमें उससे छुटकारा पाना होगा?’
चेनचेन घबराकर खांसने लगी और सभी महिलाएं हंस पड़ीं। यहां तक कि ब्राह्मणी ने भी उसकी बात मानकर कहा, 'हम तो बस तुम्हारी टांग खींच रहे थे, औरत!'
पार्वती मुस्कुराईं। “जब मैं जा रही थी तो वह मेरे पास आई और जब मैंने उसे देखा तो मेरे मन में एक विचार आया। वह हमारी मदद कर सकती है। आप जानते हैं क्यों।”
चेनचेन पार्वती की बात नहीं समझ पाई, लेकिन ब्राह्मणी ने उसे एक शरारती मुस्कान के साथ देखा।
‘इसलिए तुम उसे लाए हो?’
‘जी हां।’ पार्वती ने चेनचेन की ओर मुड़ते हुए सिर हिलाया। ‘मुझे माफ़ करना, मेरे दोस्त। मैंने तुम्हारे साथ सच नहीं बोला। दरअसल, मैं तुम्हें हमारी मदद के लिए लाई थी।’
‘लेकिन कैसे…’ चेनचेन ने उलझन में पड़कर कहना शुरू किया।
ब्राह्मणी ने अपने बाल पीछे किए। ‘इन जंगलों में एक जादूगरनी रहती है। उसके पास तीसरी आंख है – वह वह देख सकती है जो हम नहीं देख सकते। वह स्कंद को ढूंढने में हमारी मदद कर सकती है।’
‘मुझे लगा था कि तुमने मुझसे कहा था,’ चेनचेन ने पार्वती से कहा, ‘कि मातृकाओं को स्थान का पता हो सकता है।’ पार्वती को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी रानी ने उससे झूठ बोला था।
पार्वती ने चेनचेन की निराश निगाहों से बचने के लिए दूसरी ओर देख लिया। ‘मैं कैसे मदद कर सकता हूँ? मैं तो बस एक डॉक्टर हूँ।’
‘हाँ, तुम हो,’ ब्राह्मणी ने सहमति जताते हुए कहा। ‘लेकिन तुम्हारी उम्र लगभग हमारी उम्र के बराबर है, और तुम मातृका नहीं हो – कम से कम कोई मान्यता प्राप्त मातृका तो नहीं।’ उन सभी ने उसे अपनी हथेलियाँ दिखाईं जिन पर अलग-अलग चिह्न अंकित थे।
ब्राह्मणी ने आगे कहा, “यह जादूगरनी, जो भी उससे सलाह लेने जाता है, उससे ये दो शर्तें पूरी करने की मांग करती है। हम तो ये शर्तें पूरी नहीं कर सकते, लेकिन आप कर सकते हैं। क्या आप हमारी मदद करेंगे?”

चेनचेन ने पार्वती को छोड़कर बाकी सभी की ओर देखा। पार्वती के पास अभी भी उसका भोजन का कटोरा था, और वह वापस जा सकती थी। यह दो दिन का सफर था। लेकिन किसी कारणवश, यह कुछ अलग सा लग रहा था। यह कुछ महत्वपूर्ण लग रहा था। 'ठीक है,' उसने कहा, 'मैं जाऊंगी। यह जादूगरनी कौन है?'
ब्राह्मणी ने आह भरी. 'उसका नाम नृऋति है।'
‘रुको… मैंने उसके बारे में सुना है…’
ब्राह्मणी ने सिर हिलाया। ‘वह महज़ एक जादूगरनी नहीं है। वह एक दिव्य प्राणी है, एक अमर प्राणी।’ वह थोड़ी देर रुकी और फिर बोली, जबकि आग ज़ोर से चटक रही थी। ‘वह मृत्यु की देवी है।’

17

नरसिंह

'यह तो वाकई अद्भुत है,' गरुड़ कराहते हुए अपनी कोठरी की दीवारों पर अपना सिर पटकने लगा।
नारा बिस्तर पर लेटी हुई थी और नम छत को देख रही थी। अन्य कैदियों के रोने- चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं, जिनमें से कुछ अपशब्द बोल रहे थे।
'सच कहूं तो, हमारी योजना उतनी सटीक नहीं थी,' नारा ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया।
‘तो तुम्हें मुझे यह पहले ही बता देना चाहिए था!’ गरुड़ ने गुस्से से कहा। 'हां, लेकिन मैं योजना बनाने में माहिर नहीं हूं। मैं कभी नहीं था। मैं एक अच्छा लड़ाकू हूं।'
लेकिन तुमने तो लड़ाई नहीं की!
'मैं निर्दोषों को नहीं मारता और नागा लोग तो बस अपना काम कर रहे थे,' नारा ने कहा।

गरुड़ ने गुर्राते हुए कहा, 'अरे, बेचारा!'
वे यहाँ कुछ समय से थे, और कोई भी उनसे बात करने नहीं आया था, जिससे गरुड़ की झुंझलाहट और बढ़ गई, और वह लगातार अपनी माँ के बारे में कुछ न कुछ बुदबुदाता रहता था।
‘आजकल मुझे नींद नहीं आती, दोस्त,’ उसने कहना शुरू किया। ‘मेरी अम्मा मुझे लोरी सुनाती थीं और कहानियां सुनाती थीं।’
नारा मुस्कुराई। 'तुम तो बच्चे हो, तुम्हें पता है ना?'
‘मैं अपनी मां का बेटा हूं, और मुझे इस पर गर्व है!’ उसने गुस्से से कहा। ‘बहुत कम लोगों को अपने माता-पिता के इतने करीब रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है।’
नारा ने सिर हिलाया। उसे अपने माता-पिता याद नहीं थे, और कभी-कभी उसे इस बात का बहुत अफसोस होता था।
‘मैं सहमत हूँ,’ नारा ने कहा। ‘मैं पूरी तरह सहमत हूँ।’
‘तुम्हें पता है कि हमें फांसी दी जाने वाली है, है ना?’
नारा को खांसी आ गई। उसे अपने पेट में हो रही तकलीफ अच्छी नहीं लग रही थी। 'इसका क्या फायदा? हम वैसे भी जहर से मर जाएंगे।'
‘अरे, मैं तो इसके बारे में भूल ही गया था!’
नारा ने उसके व्यंग्य को नजरअंदाज कर दिया। 'हमारे पास ज्यादा समय नहीं है, तुम्हें पता है।'
गरुड़ ने सिर हिलाया और नारा को अपनी हथेली दिखाई जिस पर वह खांस रहा था। वह लाल हो चुकी थी। 'अब तो खून की खांसी आ रही है, इसलिए मैं जल्दी मर जाऊंगा।'
नारा वहीं लेटी रही और सोचती रही कि चीजें कभी योजना के अनुसार क्यों नहीं होतीं। 'काश, मैं अपने पास मौजूद सोमास का इस्तेमाल कर पाती।'
नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुम जिस सोमा का इस्तेमाल करते हो, उसमें तुम्हारी शक्ति बढ़ाने के लिए बहुत सारी मिलावटें हैं। तुम्हें सोमालेटा पौधों से निकाला गया सबसे शुद्ध रूप चाहिए। शहर के पूर्वी कोने में एक सुरक्षित खेत है जहाँ हम पौधे ढूंढ सकते हैं और उनका सेवन कर सकते हैं। नारा ने सिर हिलाया। वह बुरी तरह से बाहर निकलना चाहता था और ज़हर के असर से उबरना चाहता था। उसे चेनचेन के साथ ही रहना चाहिए था - यही सबसे अच्छा होता। वह सोच रहा था कि वह कहाँ है, इस समय क्या कर रही है।

गरुड़ा ने गुस्से में कहा, 'उम्मीद है ये कमीने उसका ख्याल रख रहे होंगे। अम्मा को सुरक्षित रहना पसंद है, तुम्हें पता है ना? मैं तो अब बहुत घबरा रहा हूँ।'
'यह देखकर अच्छा लगता है कि बेटा अपने अलावा दूसरों की भी परवाह करता है।' ‘बिल्कुल! कौन सा बेटा ऐसा नहीं करता? जो ऐसा नहीं करता, वह बेटा नहीं है,’ उसने कहा।
नारा को जेल के गलियारे में कदमों की आहट सुनाई दी और उसने देखा कि सफेद कवच पहने एक चांदी जैसे बालों वाला आदमी उनकी ओर आ रहा है। उसका चेहरा पतला था, आँखें पीली थीं और हाथ पीठ के पीछे बंधे हुए थे, मानो वह गरिमा का प्रदर्शन करने की कोशिश कर रहा हो। राज्य में हर कोई उसे जानता था: जयंत, इंद्र का वंशज।
‘अरे वाह,’ उसने कहा। ‘सचमुच आँखों को सुकून देने वाला दृश्य है।’
‘उफ़!’ गरुड़ गुर्राया। ‘कृपा करके मुझे मार डालो। जल्दी?’ उसने नरसिम्हा से कहा।
‘एक सुपर्न और एक सिंह एक साथ एक कोठरी में। किसी मजाक की शुरुआत लग रही है, है ना?’ जयंत हँस पड़ा। ‘कैसे हो, लड़कों? क्या तुम्हें सच में लगा था कि तुम बस यूँ ही घुस जाओगे और जो मन में तुमने योजना बनाई थी, वो करोगे?’ नारा को गरुड़ के बोलने की उम्मीद थी, लेकिन वह नहीं बोला।
'गरुड़, पिछली बार जब तुमने हम पर हमला किया था, तब से हमने अपनी सुरक्षा बढ़ा दी है। तुम्हें बेहतर तैयारी के साथ आना चाहिए था।'
‘मैंने किया।’ गरुड़ ने आंखें घुमाईं। ‘और मैं बच निकलता अगर मेरा वह दोस्त न होता जो तुम्हारे आदमियों से लड़ना पसंद नहीं करता।’
‘तुम कठोर थे और तुमने दिमाग की बजाय दिल से सोचा। तुमने रणनीति नहीं बनाई। नारा एक नेक इंसान है,’ जयंत ने कहा। सिंह की ओर मुड़ते हुए उसने आगे कहा, ‘मैं तुम्हें मार नहीं सकता। मेरे पिता इसे मंजूर नहीं करेंगे क्योंकि तुम उनके दोस्त हो। लेकिन मैं तुम्हें जरूर मार सकता हूँ।’ उसने गरुड़ की ओर इशारा किया।
नारा खड़ी हो गई। 'अगर तुम उसे मारोगे, तो तुम मुझे भी मार दोगे।'
‘आह,’ जयंत ने आह भरी, ‘तुम इसे इतना मुश्किल बना देते हो। ठीक है! मैं नहीं बनाऊंगा।’
नारा और गरुड़ ने एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराया।

‘या फिर,’ जयंत ने सोचा, ‘मैं तुम दोनों को मार डालूंगा और बात खत्म। मैं अपने पिता को बता दूंगा कि तुम्हारी मौत एक दुर्घटना थी। उफ़! तो मृत्यु कक्ष में जाने से पहले, क्या तुम अपनी माँ को अलविदा कहना चाहोगे, गरुड़?’ गरुड़ आगे आया। 'वह कहाँ है?'
‘यहीं पर।’ जयंत ने अपना हाथ पीठ के पीछे से आगे बढ़ाया। उसके हाथ में एक धातु का कलश था।
नारा का दिल हैरानी से उछल पड़ा। अरे, ये क्या?
गरुड़ा ने कहा, 'उसे इसमें शामिल मत करो। वह काफी कुछ देख चुकी है।' ‘तुम्हारा मृतकों के प्रति जुनून!’ जयंत ने कलश खोलकर उसे उलटते हुए सिर हिलाया। नारा स्तब्ध होकर राख को जमीन पर गिरते हुए देखती रही और जयंत उसे पैरों से रौंदता रहा।
गरुड़ जोर से चिल्लाते हुए घुटनों के बल गिर पड़ा।
जयंत ने नारा की ओर देखा और उसकी उलझन को समझा। 'ओह, तुम्हें लगा कि वह ज़िंदा है? हाँ, वह उसके बारे में ऐसे बात करता है जैसे वह ज़िंदा हो, पागल। उसकी माँ को मरे हुए दस साल हो गए हैं।'

18

हिरण्यकश्यप

वह निमंत्रण पर महल में आया था। उसे इस नगर के देवता से मिलने का अवसर मिला था। इसलिए उसने बिना सोचे-समझे किसी की हत्या नहीं की। वह केवल भगवान वरुण से बात करना चाहता था, बस इतना ही। उसकी सेना उसके जहाजों पर थी, जो नागलोक के आसपास चक्कर लगा रहे थे, जबकि उसके निजी अंगरक्षक नगर की सड़कों पर तैनात थे।

जैसे ही वह गलियारों में आगे बढ़ा, उसने सैकड़ों सैनिकों को कतार में खड़े देखा, भाले सीधे खड़े थे, मानो किसी भी क्षण प्रहार करने के लिए तैयार हों। क्या वह डरा? नहीं। वह पलक झपकते ही उन सबको परास्त कर सकता था। वह सिंहासन कक्ष में दाखिल हुआ, जहाँ पचास सीढ़ियों से भी ऊँचे सिंहासन की रक्षा के लिए एक दर्जन सैनिक पहरा दे रहे थे। हिरण्य के पीछे दरवाजे बंद हो गए। उसके पास ब्रह्मास्त्र था। लेकिन सूर्यास्त का समय नजदीक आ रहा था। अगर उसे हमला करना था, तो उसे अभी करना होगा। लेकिन उसके पास अपने चचेरे भाई पर हमला करने की प्रेरणा नहीं थी।
कमरे के दोनों किनारों पर बनी हर नाली में बहुत सारा पानी भरा हुआ था, और वह सारा पानी हरे रंग का था, मानो किसी ने उसमें अजीबोगरीब रंग मिला दिए हों। वरुण सिंहासन पर अविचलित और बिना पलक झपकाए बैठे थे, उन्होंने एक विचित्र नीले रंग का वस्त्र पहना हुआ था और कई अंगूठियां और चूड़ियां पहनी हुई थीं। उनके बाल झड़ रहे थे, और उनकी आंखें, समुद्री शैवाल की तरह हरी, उनके दुबले-पतले चेहरे की एकमात्र विशेषता थीं जो अलग से नज़र आती थीं। ‘तुम्हें देखकर अच्छा लगा, भाई,’ उसने पुकार कर कहा।
'क्या हम इतने औपचारिक हो रहे हैं कि आपको अपने आदमियों को यहाँ बुलाने की ज़रूरत है?'
आपने मुझसे विनम्र तरीके से बात नहीं की है।
‘उन्होंने मुझ पर पहले हमला किया,’ हिरण्य ने झूठ बोला।
मुझे परवाह नहीं। तुम मुझे सत्ता से हटाने आए हो।
‘वरुण, अगर मेरा यही इरादा होता तो मैं अब तक कर चुका होता,’ हिरण्य हँसते हुए बोला। ‘तुम्हारे दखल के कारण इस समय शहर में अफरा-तफरी मची हुई है और लोग डरे हुए हैं। इससे भी बुरी बात यह है कि नाग इस बात से बिल्कुल भी खुश नहीं हैं कि एक असुर इतनी आसानी से तुम्हारी सुरक्षा को भेदने में कामयाब हो गया।’
‘लेकिन तुमने ये कैसे किया? क्या ये कवच कमाल का है? मेरे आदमियों ने कहा कि तुम पानी पर चले थे।’ वरुण के हाथ कांपते हुए उसने फिर पूछा, ‘तुमने ये कैसे किया?’
हिरण्य मुस्कुराया। 'अपने आदमियों को कमरे से बाहर निकालो, फिर मैं तुम्हें बताऊंगा।'

अनिच्छा से वरुण ने अपने सैनिकों को तितर-बितर होने का आदेश दिया। सभी नाग सैनिक हिरण्य को पार करके सिंहासन कक्ष से बाहर निकल गए। ‘तो फिर क्या बात है?’
‘इसे ब्रह्मशास्त्र कहते हैं, और यह मुझे अजेय बनाता है। यह मैंने अर्जित किया है।’ हिरण्य थोड़ा रुका। ‘आप पर भरोसा करने के लिए धन्यवाद।’ उसने थोड़ा झुककर कहा। ‘काश, जब आपने पाताल में मेरी पीठ में छुरा घोंपा था, तब मैं भी यही कह पाता।’
वरुणा ने कहा, 'तुम बेवकूफी कर रहे थे।'
‘मैं अपने भाई का बदला ले रहा था! मैं नहीं चाहता था कि मेरे साथ भी वही हो जो उसके साथ हुआ था। और असुरों के बड़े-बुजुर्ग मुझे इंद्र और वराह के विरुद्ध बड़ी सेना ले जाने की अनुमति नहीं दे रहे थे।’
‘हां,’ वरुण ने कहा। ‘मेरी वजह से।’
‘तुमने कहा था कि यह एक व्यर्थ प्रयास था। लेकिन फिर तुम उनकी पीठ पीछे इंद्र के धर्मयुद्ध में शामिल हो गए,’ हिरण्य ने उस पर थूकते हुए कहा। मुझे ऐसा करना पड़ा – हिरण्य एक अच्छा आदमी है। उसे बस गलत समझा गया है।’ 'और मैं नहीं हूँ?'
वरुण ने कुछ देर रुककर कहा, “तुम एक त्रुटिपूर्ण व्यक्ति हो। तुम्हें केवल रक्तपात, क्रोध और विनाश ही दिखाई देता है। तुम्हें पता है मैंने इंद्र का पक्ष क्यों लिया? इसका एक प्रमुख कारण यह था कि तुमने कायधु के सिद्धांतों का उल्लंघन किया।”
एक पल के लिए हिरण्य को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ और वह खुद से सवाल करने लगा। क्या वह बदल गया था? "उसे उसके आदमी नरसिम्हा ने मारा था, और इसके लिए मैं हमेशा इंद्र को दोषी ठहराऊंगा," हिरण्य ने अग्नि द्वारा कुछ महीने पहले बताई गई बात को याद करते हुए कहा।
‘नारा? तो तुम्हें पता है?’
‘हां। लेकिन मैं नरसिम्हा को भी उतना ही जिम्मेदार मानता हूं जितना इंद्र को,’ हिरण्य ने कहा।
‘तुम्हें पता है नरसिम्हा यहाँ है?’
हिरण्य का खून जम गया। 'क्या...'
‘हमने उसे शहर में घुसने की कोशिश करते हुए पकड़ा, कारण मुझे न तो पता है और न ही मुझे परवाह है। वह इंद्र का पसंदीदा था। मेरा नहीं। उसे ले जाओ और चले

जाओ। यह एक बार का प्रस्ताव है,’ उसने कहा। ‘मेरी चिंता सिर्फ शहर है; वह मेरे लिए कुछ भी मायने नहीं रखता। अगर तुम बदला लेना चाहते हो, तो मैं तुम्हें थाली में परोस रहा हूँ।’
हिरण्य ने एक क्षण के लिए सोचा कि उसकी पत्नी के हत्यारे को वह अपनी दया पर पा लेगा, और उसे मारने के कई तरीके खोजेगा, लेकिन इससे उसे तृप्ति नहीं मिली। इससे उसे अच्छा या संतुष्ट महसूस नहीं हुआ। बल्कि इससे उसे एक बात का एहसास हुआ। वरुण की ओर देखते हुए उसने कहा, 'मैं उसे भी पाऊंगा और इस नगर को भी।'
मुझे पता था! यह सब कयाधु के बारे में नहीं था – वह तो बस सबको जीतने का एक जरिया थी। तुम तो बिल्कुल पागल हो! तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुम खुद को विजेता समझते हो?
‘शायद मैं पहले ऐसा नहीं था – लेकिन अब मैं हूँ।’ हिरण्य के होंठों पर एक गंभीर मुस्कान आ गई।
वरुणा कुछ देर तक उसे घूरती रही। 'मुझे लगता है कि मुझे अपने आदमियों को बाहर नहीं भेजना चाहिए था।'
‘मुझे पता है,’ हिरण्य ने कहा। ‘जब मैंने तुमसे मुझ पर भरोसा करने का आग्रह किया था, तब मैं झूठ बोल रहा था। अभी इसी वक्त मेरे सैनिक शहर पर हमला कर रहे हैं। मेरे जहाज मुड़ चुके हैं और अपने गुलेलों से आग के गोले दाग रहे हैं।’
‘आप निजी मुलाकात क्यों चाहते थे?’ वरुण ने होंठ दबाते हुए पूछा।
हालांकि हिरण्य ने निर्भीकता दिखाई, लेकिन वह वरुण की आँखों में छिपे भय को स्पष्ट रूप से देख सकता था। उसे यहाँ रहना अच्छा नहीं लग रहा था। वह स्पष्ट रूप से असहज था।
क्योंकि जब मैं तुम्हारा दम घोंट दूँगी, तो मैं अकेली रहना चाहूँगी और मैं यह काम पूर्ण शांति में करना चाहूँगी।
वरुणा मुस्कुराया। 'अच्छा।' वह खड़ा हो गया, उसके पास कोई हथियार या कवच नहीं था। 'क्या तुम भूल गए हो कि मेरे पास भी एक वरदान है?'
हिरण्य जानता था कि वरुण को बचपन में जल-नियंत्रण की मानसिक क्षमता प्राप्त थी। उसका चेहरा हैरानी से भर गया। 'लेकिन लकवे की वजह से तुम इसे ठीक से इस्तेमाल नहीं कर पाए।' वरुण को यह समस्या जीवन के बहुत बाद के वर्षों में हुई थी।

‘ओह, मुझे पता है, लेकिन अमृत से लकवा भी ठीक हो जाता है। कुछ खुराकें लीं और मैं ठीक हो गया।’ वरुण मुस्कुराया और अपना हाथ आगे बढ़ाया, जिससे हिरण्य के बगल का पानी सुनामी की तरह ऊपर उठ गया। ‘इस पानी में पफर मछली से निकाला गया टेट्रोडोटॉक्सिन है। मैंने इसे अमृत के मिश्रण के साथ मिलाकर एक घातक मिश्रण बनाया है जो किसी भी कवच को भेद सकता है। और मेरा मतलब है, किसी भी तरह के कवच को।’
उन्होंने हिरण्य के सीने पर हरे पानी की एक धारा प्रवाहित करके अपना प्रदर्शन शुरू किया, जिससे उसमें एक जलता हुआ गड्ढा बन गया।
भय के साथ ही हिरण्य को एहसास हुआ कि उसने इस व्यक्ति को कम आंका था। उसने द्वंद्वयुद्ध के लिए तैयार होते हुए अपनी तलवार म्यान से निकाल ली। इस लड़ाई में जीतना मुश्किल होगा।

19

चेनचेन

जंगल राख जैसे रंगों से भरा हुआ था। उसने ऐसा नजारा पहले कभी नहीं देखा था। मैदान पार करते हुए चेनचेन को अपने दिल की धड़कन तेज होती और गला सूखता हुआ महसूस हो रहा था। इस जगह में कुछ अजीब सी भयावहता थी। कुछ ठीक नहीं लग रहा था। हर कदम के साथ, वह शिविर में वापस लौटने के बारे में सोच रही थी। लेकिन तब मैं क्या करूँगी? रुको, चेनचेन। सोचो। शायद तुम यहाँ किसी कारण से हो। शायद इस सब का कोई अर्थ है।
जीवन भर वह उस किले की सुरक्षा में पली-बढ़ी थी और अब वह बाहर आ गई थी... और उसे अच्छा लग रहा था। उसे आज़ादी का एहसास हो रहा था। लेकिन साथ ही, वह जानती थी कि वह ऐसा क्यों कर रही है। अंधका को शांत करने वाली एकमात्र व्यक्ति उसकी माँ थी। और यह तभी संभव था जब चेनचेन मातृकाओं की मदद करे।

वह जानती थी कि अगर वह पार्वती के साथ इस मुहिम में शामिल होने के लिए राजी नहीं होती तो उसे अपराधबोध होता। नारा के साथ बिताए थोड़े से अनुभव से वह जानती थी कि इस अंधकारमय संसार में नायक बनना कितना महत्वपूर्ण है।
उसके सामने एक बरगद का पेड़ खड़ा था, वही पेड़ जिसकी रक्षा करने के लिए मातृकाओं ने उसे चेतावनी दी थी। उसके ऊपर अब तक का सबसे विशाल छत्र था। उसमें से बहुत सी मुड़ी हुई लताएँ लटक रही थीं, और टेढ़ी-मेढ़ी शाखाएँ किसी सरीसृप जैसी लग रही थीं। गंध घनी थी, मानो यहाँ राख और मांस जलाया गया हो। उसके चारों ओर की ज़मीन सूखी पत्तियों से ढकी थी - कुछ तो खून से सनी हुई थीं।
‘मैं तुम्हें पुकारता हूँ, मृत्यु की देवी, कौवों की माता, रात्रि की रक्षक और सूर्योदय लाने वाली, सारसों की प्रेमिका, जो अंत में सबके लिए निवास करती है, नृत्या…’
खुले मैदान में कुछ हिला। पेड़ के तने में एक बड़ा सा छेद खुल गया और उसमें से एक पैर, फिर दो हाथ और फिर एक और पैर निकला, जैसे कोई टेढ़ी-मेढ़ी मकड़ी अपने बिल से बाहर रेंग रही हो।
देवी के बाल और होंठ काले थे, और आँखें... खैर, उनमें पुतलियाँ नहीं थीं, बस राख जैसी बर्फ की तरह पीली पुतलियाँ थीं जिस पर चेनचेन खड़ा था।
चेनचेन विज्ञान की ज्ञाता थीं और नारा की असाधारण शक्ति को छोड़कर जादू में विश्वास नहीं करती थीं। लेकिन इस जादूगरनी, इस देवी को देखकर चेनचेन को एहसास हुआ कि वह इस दुनिया की नहीं हैं। उनके प्रकट होने पर भेड़िये भी दहाड़ने लगे।
देवी ने बिना हिले-डुले, बाज की तरह चेनचेन को घूरती रहीं, और इस सन्नाटे ने तुरंत तनाव पैदा कर दिया। चेनचेन जानती थी कि अगर वह कुछ काम सही ढंग से करे तो देवी उसे नुकसान नहीं पहुँचाएँगी।
सही सवाल पूछें। घुमा-फिराकर बात न करें, भले ही वह सवाल से ध्यान भटकाने की कोशिश करे।
ध्यान मत भटकाओ। बिलकुल मत भटकाओ।
अगर चेनचेन सफल नहीं होती, तो ब्राह्मणी ने कहा था कि वह शायद उनके पास वापस भी न लौटे।

उसे बहुत सावधानी से आगे बढ़ना था। बड़ी मुश्किल से शब्द उसके गले से निकले, उसने कहा: 'भविष्यवाणी के नायक स्कंदा कहाँ हैं, जो महान भोर को नष्ट करेंगे?'
नृति ने व्यंग्य भरी आवाज़ में फुसफुसाते हुए कहा, 'यह दिलचस्प है कि तुम स्कंदा को नायक की तरह पेश कर रही हो, जबकि वह नायक नहीं है। तुम जानती हो कि नायक, अवतार कौन है। तुम हमेशा से जानती हो।'
चेनचेन ने अपने जबड़े भींच लिए। 'भविष्यवाणी के नायक स्कंदा कहाँ हैं, जो महान भोर को नष्ट करेंगे?'
'उसके बारे में दोबारा बात की तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।'
चेनचेन ने प्रश्न दोहराया।
नृति गुर्राई और फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी। ‘तुम्हें अच्छी तरह से सिखाया गया है। मुझे बताओ,’ उसने गुस्से से कहा। ‘क्या तुम्हें लगता है कि स्कंदा एक नायक है? मुझे तो ऐसा नहीं लगता। वह नियत समय पर अच्छाई की शक्ति बनेगा, लेकिन नायक नहीं बनेगा। बिलकुल नहीं।’
चेनचेन ने चौथी बार वही सवाल दोहराया।
क्या तुम मृतकों की पूजा करते हो?
उसने कोई जवाब नहीं दिया।
क्या तुम मृतकों की पूजा करते हो?
चेनचेन जम सी गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे।
‘मैं मृतकों से बात करती हूँ,’ नृति खिलखिलाकर हंस पड़ी। ‘तुम्हारी कुछ हड्डियाँ ठीक से जली नहीं हैं। बताओ, रंझना कौन है?’
उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह मेरा पति था।
‘वो तुम्हारे बारे में बुरा-भला बोलता है,’ नृति ने कहा। ‘तुम्हारे बारे में बहुत ही घटिया बातें कहता है, छी!’ वो फिर हंस पड़ी। ‘बताओ! क्या मैं गलत हूं?’
चेनचेन ने कुछ नहीं कहा।
‘वह कहता है कि तुम जीवित लोगों से झूठ बोलती हो,’ नृति ने आगे कहा। ‘कि उसे म्लेच्छों ने मार डाला। उफ़, नहीं। नहीं, नहीं, नहीं!’
चेनचेन का दिल रुक गया। नहीं।
‘उसने कहा,’ नृति के चेहरे पर एक चकाचौंध भरी मुस्कान थी, ‘तुमने ही उसे मारा था।’

20

नरसिंह

उनके ऊपर की छत हिल गई क्योंकि धूल का एक फव्वारा उन पर आकर गिरा।
'तुमने मुझे बताया ही नहीं कि तुम्हारी माँ मर चुकी है!' जयंत के जाते ही नारा ने हैरानी से कहा, गरुड़ की माँ की राख उनकी कोठरी के सामने पड़ी थी। बाहर हो रही हलचल को उसने अनसुना कर दिया, हालाँकि वह जानता था कि कुछ गड़बड़ है। आवाज़ों, चटकने की आवाज़ों और चीखों से ऐसा लग रहा था मानो कोई विद्रोह हो रहा हो। लेकिन उसका ध्यान यहीं, ठीक इसी वक्त, अपने सामने था जहाँ गरुड़ अपनी कोठरी की सलाखों को कसकर पकड़े हुए एक फटे हुए कपड़े में राख समेटने की कोशिश कर रहा था।
‘मुझे लगा था कि वह जीवित है,’ नारा ने मन ही मन कहा। ‘ऐसा क्यों सोचोगे…’ ‘क्योंकि मुझे यह मानना अच्छा लगता है कि वह अभी भी यहीं है!’ गरुड़ राख से सने हाथों से चिल्लाया। ‘मुझे यह मानना अच्छा लगता है कि सोने से पहले वह अभी भी मेरे सिर पर हाथ फेरती है। मुझे यह मानना अच्छा लगता है कि वह अभी भी मुझे वह सूप देती है। और मुझे यह मानना अच्छा लगता है कि वह जीवित है। मैं मूर्ख नहीं हूँ, नारा।’ उसने कपड़े को अपने सीने से लगा लिया। ‘मुझे पता है कि वह मर चुकी है। मुझे बस वास्तविकता को नज़रअंदाज़ करने की ज़रूरत है।’
हम सभी ने कभी न कभी किसी न किसी को खोया है, और इसे स्वीकार करना महत्वपूर्ण है।
‘मैं नहीं कर सकता!’ गरुड़ ने गुस्से से कहा। ‘मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूँ। मैं – मैं बलवान नहीं हूँ।’

‘क्या सुपर्न के ठिकाने पर तुम्हारे आदमी इंतज़ार कर रहे हैं? क्या तुम्हारे पास कोई है?’ नारा को लगने लगा था कि उसके अंदर ज़हर भी असली नहीं है, लेकिन उसे अपने भीतर हलचल महसूस हो रही थी।
‘बिल्कुल, वे हैं! मैं भ्रम में नहीं हूँ, नारा।’
तभी धरती कांपने लगी। और देखते ही देखते, बड़ी संख्या में लोग जेल में घुस आए और नाग जेलरों को पीटने लगे। असुर सैनिक अंदर घुस आए, कोठरियों के दरवाजे खोले और कैदियों को बाहर निकाल दिया।
‘जाओ! शहर को तहस-नहस कर दो!’ वे हंसते हुए बोले।
जब वे नारा की कोठरी में पहुंचे, तो उन्होंने उसकी ओर देखा।
‘अरे! देखो तो सही, यहाँ कौन है,’ असुरों में से एक हँसते हुए बोला, ‘एक सिंह।’
ओह नहीं। नारा को उम्मीद थी कि वे उसे नोटिस नहीं करेंगे।
‘वह यहाँ क्या कर रहा है?’ एक अन्य असुर ने पूछा।
‘हमारे राजा ने हमें आदेश दिया है कि रास्ते में मिलने वाले हर सिंह को मार गिराएँ,’ उन्होंने अपनी तलवारें निकालते हुए कहा। ‘तुम सिंह नहीं हो। तुम जा सकते हो,’ उन्होंने कोठरी में प्रवेश करते हुए गरुड़ से कहा।
गरुड़ ने नारा की ओर देखा और घबराकर कहा, 'क्षमा करें भाई। लेकिन मुझे जाना होगा।'
गरुड़ को कोठरी से बाहर निकलते देख नारा अविश्वास से देखता रहा, उसे असुरों से अकेले लड़ने के लिए छोड़कर। जैसे ही वे उस पर हमला करने के लिए दौड़े, उसने अपने पंजों से उनकी तलवारों को रोक दिया और झुककर उनके घुटनों पर वार किया। एक असुर दर्द से कराहते हुए गिर पड़ा, जबकि दूसरे ने अपनी तलवार उठाकर नारा की गर्दन पर वार किया। नारा ने उसके पेट में घूंसा मारा और उसका गला फाड़ दिया, जिससे उसकी तुरंत मृत्यु हो गई।
तब तक गिरा हुआ असुर लड़खड़ाते हुए अपने पैरों पर खड़ा हो चुका था और नारा की पीठ में अपनी तलवार घोंपने ही वाला था कि...
गरुड़ आया और उसने उसके सिर पर घूंसा मारा।
नारा ने पीछे मुड़कर अपने दोस्त को देखा। 'तुम वापस क्यों आए?'
‘मुझे सरप्राइज देना पसंद है।’ वह मुस्कुराया और गार्ड के बगल में घुटनों के बल बैठ गया। ‘क्या हो रहा है?’

सिर पर लगी चोट से असुर अभी भी सदमे में था, इसलिए गरुड़ ने उसे जोर से हिलाया।
'क्या हो रहा है?'
‘पागलपन, अराजकता। हमारे महान देवता शहर पर कब्ज़ा कर रहे हैं, और हम देवों, नागों या मानवों के किसी भी निशान को मिटा रहे हैं।’
नारा को अपने पेट में एक अजीब सी बेचैनी महसूस हुई। यह अच्छा नहीं है। ‘जयंत कहाँ है?’ गरुड़ ने असुर से पूछा और जब उसने कोई जवाब नहीं दिया तो उसे फिर से एक घूंसा मारा। ‘इंद्र का पुत्र कहाँ है?’
मैंने सुना था कि वह इस टीले के ऊपर से अपने विमान में बैठकर भागने वाला था।
असुर के बोलने से पहले ही गरुड़ अपने पैरों पर खड़ा हो गया और कोठरी से बाहर की ओर दौड़ पड़ा।
नारा ने उसके पीछे-पीछे जानलेवा रफ्तार से दौड़ लगाई। 'तुम क्या कर रहे हो?'
‘उस गंदगी को भागने से रोको!’ गरुड़ ने चिल्लाकर जवाब दिया।

कारागार भवन की छत पर आपस में लड़ रहे असुरों और मानवों के शव बिखरे पड़े थे। इस अफरा-तफरी के बीच, जयंत ने अपना विमान तैयार किया, जो कि सोमा- जीवाश्म पत्थरों से निर्मित और संचालित एक लंबी मशीन थी, जिसके किनारों पर पंख लगे थे। वह अपनी मशीन को चालू कर रहा था, जबकि उसके सैनिक उन असुरों से लड़ रहे थे जिनका वहां से जाने का कोई इरादा नहीं था।
एक शव से तलवार उठाकर गरुड़ जयंत की ओर दौड़ा। जैसे ही विमान आकाश में उठने लगा, गरुड़ उसमें कूद गया, जिससे जयंत चौंक गया।
मैं उसे अकेला नहीं जाने दे सकता। नारा तेजी से दौड़ा, उसका दिल तेजी से धड़क रहा था, उसका शरीर जहर के कारण आई थकान से जूझ रहा था। वह छत की चौखट से कूदा और विमान के पंख पर जा गिरा। जयंत और गरुड़ भयंकर युद्ध में लगे हुए थे, और उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।
मैं उन्हें आपस में एक दूसरे को मारने नहीं दे सकता।

वह विमान में चढ़ने लगा, और लगातार नीचे ज़मीन पर मची अफरा-तफरी को देखता रहा। दुकानें जलाई जा रही थीं। सड़कों पर लाशें बिछी हुई थीं। घरों को लूटा जा रहा था और उनमें तोड़फोड़ की जा रही थी। चारों ओर घोर अराजकता फैली हुई थी। यह सब हिरण्यकश्यप की वजह से हो रहा था।
इस युद्ध में नारा को यह नहीं पता था कि कौन ज़्यादा शक्तिशाली है – देव या असुर। लेकिन वह जानता था कि उसे अपने मित्र को बचाना ही है। विमान के अंदर पहुँचते ही उसने दोनों योद्धाओं के बीच आने की कोशिश की, लेकिन जयंत ने पहले ही अपनी तलवार गरुड़ के कंधे में घोंप दी थी। दर्द से चीखते हुए गरुड़ ने जयंत को ज़ोरदार धक्का दिया और वह अपने घायल कंधे को पकड़कर एक कोने में गिर गया। जयंत का संतुलन बिगड़ गया और वह विमान के किनारे से नीचे गिर गया। कुछ पकड़ने की हड़बड़ी में उसने नियंत्रण तोड़ दिया। तुरंत ही विमान नीचे की ओर घूमने लगा। पलक झपकते ही नारा ने विमान का लीवर पकड़कर उसे ऊपर खींच लिया और दूसरे हाथ से जयंत को पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए। 'मुझे पकड़ लो!' वह चिल्लाया। 'पकड़ लो!'
जयंत ने दोनों हाथों से कसकर पकड़ रखा था, लेकिन उसकी पकड़ ढीली पड़ने लगी। नारा ने एक हाथ से विमान को स्थिर रखते हुए उसे ऊपर खींचने की पूरी कोशिश की।
‘उसे छोड़ दो!’ गरुड़ चिल्लाया और नारा की मुट्ठी को धक्का देकर खोलने की कोशिश करने लगा। ‘यह नीच इंसान जीने लायक नहीं है।’
‘नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा,’ नारा ने कहा। ‘वह इंद्र का पुत्र है। तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि तुम किस तरह का प्रकोप लाओगे…’
लेकिन गरुड़ ने बात नहीं मानी। उसने नारा की बांह पर सीधा मुक्का मारा, जिससे नारा की पकड़ छूट गई। जयंत गिर पड़ा। भयंकर आग में। इस अफरा-तफरी में, एक मानव सैनिक ने ऊपर देखा और नारा और गरुड़ को देखा।
‘एक सिंह और एक सुपर्ण!’ वह चिल्लाया।
गरुड़ ने नारा को आदेश दिया, 'चलो अब चलते हैं। हमें उस खेत में जाना है जहाँ सोमालाता के पौधे उगाए जाते हैं। आओ!'
‘तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था,’ नारा ने पीले पड़े होंठों से कहा।
‘तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।’
लेकिन गरुड़ को इसकी परवाह नहीं थी। उसने अपने घायल कंधे को संभाला और विमान को खेत की ओर मोड़ दिया। देव राजकुमार के शव से दूर।

21

हिरण्यकश्यप

‘तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था!’ वरुण चिल्लाया और उसने हिरण्य पर विषैले जल की बौछारें फेंकीं, जिन्हें हिरण्य ने चकमा देते हुए पीछे की ओर लुढ़ककर पार किया। ‘तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था।’
हिरण्य को वरुण को हराने का कोई न कोई तरीका ढूंढना ही था, लेकिन वह ऐसा तब नहीं कर सका जब वह उस व्यक्ति की शक्ति की सीमा के भीतर था, जहां पानी उसका सहयोगी था और हिरण्य के लिए घातक साबित हो सकता था।
उसे आश्चर्य हुआ कि पानी उसके कवच को प्रभावित कर सकता है, लेकिन फिर उसने देखा कि जो छोटा सा गड्ढा बना था, वह भरने लगा था, मानो कवच खुद ही ठीक हो रहा हो। लेकिन हिरण्य जानता था कि अगर जहर उसकी त्वचा तक पहुँच गया तो कवच की खुद को ठीक करने की क्षमता किसी काम की नहीं रहेगी। उसे जल्दी करनी होगी।
उसने अपनी तलवार से वरुण के अगले हमले को रोका। हालांकि विष तलवार को धीरे- धीरे नष्ट कर रहा था, फिर भी तलवार कवच से कहीं बेहतर ढंग से हमले को झेल रही थी। वह वरुण की ओर दौड़ा, लेकिन तुरंत ही हरे पानी की एक दीवार ने उसका रास्ता रोक दिया। इस बीच, उसकी तलवार फिर से बन रही थी।
वरुण ने कहा, 'तुम उन आदर्शों पर धब्बा हो जिनके लिए कयाधु खड़े थे।'
‘और तुमने उसे मरने दिया!’ हिरण्य ने हैरानी से कहा।
‘यह मैं नहीं था। यह इंद्र नहीं था। यह सिंह था।’
हिरण्य ने कहा, 'जो भी हो, वे सब मरेंगे।'
दीवार सुनामी की तरह उसकी ओर बढ़ने लगी, मानो उसे निगलने को तैयार हो। जैसे ही लहर टूटी और पानी में गिरी, हिरन्या ने पीछे की ओर कलाबाजी मारी और पानी की पहुँच से बाहर निकल गया। हल्के कवच के कारण यह उसके लिए आसान था।

‘हिरण्य, तुम इसे सहन नहीं कर पाओगे,’ वरुण ने कहा।
मुझे परवाह नहीं। मुझे तुम्हें मारना है। मुझे—’
लेकिन वह और कुछ कह नहीं सका क्योंकि वरुण ने उसकी ओर विषैले पानी की धारें फेंकीं।
हिरण्य ने एक वार से खुद को बचाया, जबकि दूसरा वार उसके कवच को भेदते हुए उसकी त्वचा पर लगा। तीसरा वार उसके सिर के पास से गुजरा और उसके गाल को छूते हुए निकल गया – ऐसा लग रहा था मानो उसका पूरा चेहरा आग की लपटों में घिर गया हो।
मन ही मन बड़बड़ाते हुए, हिरण्य को पता था कि उसे कोई न कोई रास्ता ढूंढना ही होगा…
एक और उछाल!
हिरण्य ने अपने चारों ओर तलवार घुमाकर वारों की बौछार से खुद को बचाया। हर वार जो तलवार से टकराकर निकल जाता, उससे तलवार को थोड़ा और नुकसान पहुँचता। उसे जल्दी कुछ करना था। उसकी नज़र वरुण की गतिविधियों पर टिकी थी, जिस तरह वह अपने हाथों से पानी को नियंत्रित कर रहा था, और तभी उसे एक विचार आया। वह आगे बढ़ने लगा, अपने ऊपर हमला कर रही पानी की धाराओं का सामना करते हुए। जैसे ही वरुण ने अपने और हिरण्य के बीच एक दीवार खड़ी की, असुर ने अपनी तलवार पानी में घुसाकर वरुण की ओर बढ़ा दी।
हिरण्य ने तलवार की गर्मी को महसूस किया, लेकिन तलवार ने वरुण की भुजाओं को काटने के लिए पर्याप्त समय तक अपना आकार बनाए रखा।
उनके आसपास का सारा पानी शांत हो गया क्योंकि वरुण की बाहों से खून बहने लगा और उसकी चीखें हॉल में गूंजने लगीं।
हिरण्य सहज भाव से वरुण की ओर बढ़ा, जो अपने सिंहासन की सीढ़ियों पर दर्द से कराहते हुए असुर राजा से दूर रेंगने की कोशिश कर रहा था। मानो बच निकलना संभव ही हो। हिरण्य ने उपहास किया। लंबे समय बाद, उसने सचमुच अपनी मृत्यु का अनुभव किया था। बहुत करीब से। उसने अपनी गिरी हुई तलवार उठाई, जो पुनर्जीवित हो गई थी, और धीरे से उसे वरुण के हृदय में घुसा दिया - ठीक वैसे ही जैसे उसने अग्नि के साथ किया था, उसके चेहरे पर मुस्कान थी।
प्रकाश को दूर जाते देख वरुण का चेहरा पीला पड़ गया और उसने हिरण्य की बांह पकड़ने की कोशिश की।
‘सिंह कहाँ है?’

उफ़…
'मुझे बताओ!'
‘उफ़… सेल…’
हिरण्य ने तलवार को और गहरा धंसा दिया और वरुण की आंखें बंद होते देख वह देखता रहा। जल के देवता, नागलोक के राजा वरुण की मृत्यु हो गई थी। द्वार खुलने की आवाज सुनकर वह मुड़ा।
‘मेरे स्वामी, हमने शहर को तहस-नहस कर दिया है…’ चारों ओर खून और जहरीला पानी बिखरा देखकर उसके रक्षक रुक गए। ‘मेरे स्वामी…’
हिरण्य ने भौंहें चढ़ाते हुए मुड़ा। गोधूलि बेला छा रही थी। और वह अपनी पत्नी के हत्यारे से लड़ते समय अपना कवच पहनना चाहता था।
उन्होंने कहा, 'मुझे जेल से सिंह को ढूंढकर लाओ। उसका नाम नरसिम्हा है।' लेकिन, मेरे स्वामी… हमने जेल के दरवाजे खोल दिए…
‘उसे ढूंढो!’ हिरण्य चिल्लाया और सिंहासन कक्ष से बाहर निकल गया। वह स्वयं उस व्यक्ति को चुनौती देने के लिए तैयार था।

22

चेनचेन

नाम सुनते ही चेनचेन का शरीर जम गया। रंझना। उसने यह नाम काफी समय से नहीं सुना था।
'स्कंदा कहाँ है, भविष्यवाणी का वह नायक जो महान भोर को पराजित करेगा?' उसने फिर से दोहराया, और उसकी आँखों से आंसू बहने लगे।
‘बताओ,’ नृति ने फुसफुसाते हुए कहा और डर से कांपते हुए चेनचेन के पास रेंगकर गई, ‘क्या तुम उसे देखना चाहोगे?’
नहीं। चेनचेन यह कहना चाहती थी, पर कह नहीं सकी। वह खुद को विचलित नहीं होने दे सकती थी। यह सब एक परीक्षा है।

‘मैं उसे तुम्हारे लिए ला सकती हूँ। यहीं। अभी। तुम उसका उदास चेहरा देख सकती हो।’ नृत्यि खिलखिलाकर हंस पड़ी। ‘अरे बाप रे, वह सचमुच तुमसे मिलना चाहता है।’
‘स्कंदा कहाँ है, भविष्यवाणी का वह नायक जो महान भोर को पराजित करेगा?’ उसने आँखें बंद करते हुए फिर से पूछा, प्रश्न से भटके बिना।
‘वो तुम्हें एक नाम से पुकारता था, उफ़! वो तुम्हें चेनचिता कहकर बुलाता था। क्या यही तुम्हारा नाम नहीं था? चेनचेन तो बस एक... एक प्यारा सा नाम था जो तुमने खुद को दे रखा था, है ना? उसने तुम्हारे साथ क्या किया था? तुमने उसके बारे में झूठ क्यों बोला?’
चेनचेन ने कोई जवाब नहीं दिया, बस सवाल दोहराया। उसे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली और कुछ पल के लिए उसे लगा कि यातना खत्म हो गई है। जब उसने आँखें खोलीं, तो उसने देखा कि नृति उससे कुछ ही इंच की दूरी पर खड़ी है, उसकी दुर्गंधयुक्त साँसें चेनचेन के चेहरे पर पड़ रही हैं। वह तुरंत भाग जाना चाहती थी, लेकिन वह जैसे लकवाग्रस्त हो गई थी, मानो किसी चीज ने उसे जड़ से जकड़ लिया हो और उसे जाने नहीं दे रही हो।
दांत पीसते हुए चेनचेन ने अपना सवाल दोहराया। नृति एक कदम पीछे हट गई। चेनचेन समझ गई कि देवी नाराज हो रही हैं।
‘चेनचिता?’
वो आवाज़... उसकी आँखें नम हो गईं जब उसे एहसास हुआ कि वो कौन है। पीछे से आकर उसके सामने एक गंजा आदमी खड़ा था जिसकी घनी मूंछें थीं।
रांझना।
उसके पति।
चेनचेन को यकीन नहीं हो रहा था। उसकी आंखों को धोखा हो रहा था, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी।
उसका मृत पति न केवल उसके सामने था, बल्कि उसके माथे पर एक गहरे घाव से अत्यधिक खून बह रहा था, जहाँ कुल्हाड़ी धँसी हुई थी, जिसे चेनचेन ने स्वयं वहाँ रखा था। लेकिन पिछली मुलाकात के विपरीत, जब उसकी मृत्यु उस प्रहार से हुई थी, वह अब ठीक लग रहा था, मानो उसके सिर पर लगी कुल्हाड़ी एक प्राकृतिक सजावट हो।
‘तुम मुझे चोट पहुँचाना चाहते थे – तुम हमेशा मुझे मारना चाहते थे। मैं भगवान इंद्र का सिपाही था, एक गौरवशाली सिपाही,’ रंझना ने कहना शुरू किया।

‘मैं एक वीर सिपाही था, और तुमने मुझे और मेरे जीवन को नष्ट कर दिया। किसलिए?’
उसके मन में बहुत कुछ कहने को था, लेकिन वह चुप रही। इसके बजाय, उसने कुछ कदम दूर खड़ी चंचल नृति की ओर देखते हुए अपना सवाल दोबारा पूछा।
लेकिन रांझना ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'क्या सिर्फ इसलिए कि मैंने तुम्हें कभी-कभार मारा? क्या सिर्फ इसलिए कि यह शादी एक दिखावा थी? तुम टूटी हुई थी, तुम वैसी नहीं थी जैसा मैंने सोचा था - इसलिए मैंने ऐसा किया। मैंने तुम्हें मारा। मैंने तुम्हें कई बार मारा। लेकिन मैं तुमसे प्यार करती थी, चेंचिता। मैं करती थी। तुम्हें मारना... तुम्हारे लिए अपने प्यार को व्यक्त करने का एक तरीका था।'
नहीं, ऐसा नहीं था। मारना गलत है। यह हिंसा के सिवा किसी और चीज की अभिव्यक्ति नहीं है। अपने साथी को मारना प्रेम का रूप नहीं हो सकता। ‘मुझे आज भी याद है कि जिस दिन हम युद्ध हारे, उस दिन मैं कैसे लौटा था। मैं नशे में था और तुमने खाना बनाया था, मैंने उसे गिरा दिया और तुम्हें मारा। लेकिन तुम और बर्दाश्त नहीं कर सके, इसलिए तुमने मेरा हथियार छीन लिया और...’ उसने अपने माथे पर लगी कुल्हाड़ी की ओर देखा। ‘तुमने मुझे मार डाला,’ वह रुका। ‘और फिर तुम आसानी से यह नहीं कह सकते थे कि यह तुमने किया है। तुम हत्यारे कहलाते और एक राष्ट्रीय सिपाही की हत्या के लिए तुम्हें फांसी दी जाती, इसलिए तुमने पूरे अपराध को म्लेचाओं द्वारा घर में घुसपैठ के रूप में रचा।’
चेनचेन को वह दिन अच्छी तरह याद था। उसे उम्मीद थी कि वह कभी इस मामले में पकड़ी नहीं जाएगी, और वह कभी पकड़ी भी नहीं गई थी। जब तक कि उसके सामने यह महिला नहीं आ गई।
मैं तुमसे नफरत करना कभी बंद नहीं करूंगा। तुम एक वेश्या हो, तुम एक... ‘स्कंदा कहाँ है?’ चेनचेन ने रंझना को नज़रअंदाज़ करते हुए पूछा, क्योंकि वह समझ गई थी कि यह सब नृति का उसे विचलित करने का प्रयास था। ‘भविष्यवाणी का नायक जो महान भोर को पराजित करेगा…’
‘शानदार,’ नृति ने शरारती मुस्कान के साथ जवाब दिया और चुटकी बजाते ही रांझना का शरीर गायब हो गया। ‘बहुत ही शानदार। कई लोग इस परीक्षा में असफल हो जाते हैं और अपना गुस्सा दिखाते हैं, लेकिन तुम? तुमने हिम्मत नहीं

हारी। तुम मातृका की तरह व्यवहार करती हो, फिर भी तुम उनके विश्वासों या प्रतीकों को नहीं मानती। तुम कौन हो?’
चेनचेन कुछ नहीं बोली।
‘ठीक है,’ नृति ने तेवर चढ़ाते हुए कहा। ‘मैं तुम्हें बता दूंगी कि स्कंदा कहाँ है। लेकिन सावधान रहो, हे मनुष्य, जो जानकारी तुम खोज रहे हो वह वैसी नहीं है जैसी तुम सोच रहे हो। स्कंदा वह नहीं है जैसा तुम समझते हो। वह अचानक प्रकट होगा, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी किसी को उम्मीद नहीं होगी।’
यह उसकी मनगढ़ंत शगुन की कहानियों में से एक हो सकती है, लेकिन चेनचेन को इसकी परवाह नहीं थी। उसे बस जानकारी चाहिए थी और वहां से निकलना था। देवी ने कहना शुरू किया, ‘जिस स्कंद को तुम खोज रहे हो, वह विष्णु के अनुयायियों के पास रहता है। वह एक असुर का पुत्र है। उसे खोजो, और वह महान भोर लाएगा।’

शिविर तक वापस जाने का हर कदम उसके लिए एक चुनौती था, क्योंकि उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। उसका शरीर कमजोर महसूस हो रहा था और सिर में दर्द था। वह भावनात्मक रूप से पूरी तरह टूट चुकी थी।
चेनचेन को पता चल गया कि वह शिविर में है जब उसने प्रवेश द्वार पर बैठे पैंथर को आलस से अपने पंजे चाटते हुए देखा। अलाव के चारों ओर huddled सभी मातृकाएं चेनचेन के लौटने पर खड़ी हो गईं, उसके पीले चेहरे और सूखे होंठों को देखकर।
‘क्या तुम ठीक हो?’ पार्वती सबसे पहले उसके पास पहुंची। उसका हाथ पकड़कर उसने पूछा, ‘क्या तुम्हें चोट लगी है?’
चेनचेन ने सिर हिलाया। 'हां, मैं ठीक हूं,' उसने विनम्रता से कहा। 'उसने मुझे सब कुछ बता दिया।'
‘उसने क्या दिखाया?’ ब्राह्मणी ने पूछा।
उसने अपना सिर हिलाया, वह अभी भी इस बारे में बात करने को तैयार नहीं थी। ‘तुम्हारे लिए यह बहादुरी का काम है,’ ब्राह्मणी ने कहा। ‘नृति की शक्ति का सामना करने की क्षमता बहुत कम लोगों में होती है।’

‘वह कैसे है…’ चेनचेन ने कहना शुरू किया। ‘वह यहाँ कैसे है? मुझे तो पता ही नहीं था कि देवियाँ भी होती हैं। मतलब…’
‘ऐसी कई अजीब और रहस्यमयी चीजें हैं जिनका कोई अर्थ नहीं है, लेकिन वे मौजूद हैं,’ चामुंडी ने कहा, उसकी सांवली त्वचा आग की लपटों के प्रतिबिंब में तेल की तरह चमक रही थी। ‘जैसे सोमा। हम जानते हैं कि इंद्र सोमालता के पौधे लाए थे, लेकिन उन्हें वे कहाँ से मिले? उन्होंने सोमा को किस प्रकार रूपांतरित करके किसी को अलौकिक शक्ति प्रदान की? मेरा मानना है कि यह सब जादू है। अवतार, नायक, बुराई... मेरा मानना है कि जादू दोनों तरफ मौजूद है। हम बस इसे अनदेखा करना चुनते हैं।’
चेनचेन ने सिर हिलाया, पार्वती उसके बगल में खड़ी थी। उसने पूछा, 'अब हम क्या करें?'
पार्वती ने मुखिया ब्राह्मणी की ओर देखा। अन्य मातृकाएँ भी उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं।
‘हमें जो करना नियत है,’ ब्राह्मणी ने कहा। ‘स्कंद को ढूंढना और इस दुनिया को बचाना।’

23

नरसिंह

वे सोमगढ़ के ऊपर से उड़ रहे थे। या कम से कम गरुड़ ने उसे सोमगढ़ ही कहा था। वह एक खेत था, हरियाली और पौधों से भरा एक लंबा और चौड़ा मैदान, जिसमें कोई पेड़ नहीं थे। इधर-उधर कुछ किसानों की झोपड़ियाँ थीं, लेकिन इसके अलावा वहाँ कुछ खास नहीं था। बाकी दृश्य के विपरीत, खेत नीले रंग के थे, जैसे जंग लगा नीलम।

गरुड़ ने विमान को पौधों के ऊपर से नीचे उतारने का मार्गदर्शन करना शुरू किया। 'यहाँ आमतौर पर पहरेदार होते हैं, लेकिन वे आक्रमणकारियों से लड़ने के लिए मोर्चे पर गए होंगे।'
‘मुझे यह पसंद नहीं है,’ नारा ने कोने से कहा और विमान के उतरते ही उससे कूद गया। उसके चारों ओर पौधे थे, जिनके तने उसके पैरों जितने मोटे और लंबे थे। ‘मुझे नागलोक के लोगों को बचाना चाहिए।’
'आप हर किसी को नहीं बचा सकते,' गरुड़ ने कहा और कूदकर बाहर निकल गया, उसका हाथ उसके घाव पर था।
‘तुम्हें जयंत को नहीं मारना चाहिए था।’
वह बिलकुल बेकार था।
‘अब इंद्र हमारे पीछे पड़ जाएगा,’ नारा ने कहा।
‘उसे अच्छी तरह पता था कि उसने क्या किया है,’ गरुड़ ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘तुम और तुम्हारा आदर्शवाद। उस आदमी ने मेरी माँ की राख को ऐसे फेंक दिया जैसे वह धूल हो। क्या यह व्यवहार करने का कोई तरीका है?’
नारा ने कुछ नहीं कहा। वह एक पौधे के पास गया और उसे देखने लगा। वह पौधा बिल्कुल नीले रंग का था, उसमें पंखुड़ियाँ नहीं थीं, बस एक नीलमणि रंग की कली थी। उसने कली को दबाना शुरू किया और तुरंत ही उसमें से निकले गर्म नीले तरल को पी लिया। जैसे ही गर्माहट उसके शरीर में फैली, उसे ऐसा महसूस हुआ... जैसे वह मजबूत और शुद्ध हो गया हो, मानो उस तरल ने उसे पूरी तरह से शुद्ध कर दिया हो।
‘यह कब हुआ?’ नारा ने गरुड़ की माँ की ओर इशारा करते हुए पूछा, जब उसके भीतर की जलन कम होने लगी। जब उसे कोई जवाब नहीं मिला, तो वह मुड़ा और देखा कि गरुड़ पौधों को खाने के बजाय उन्हें इकट्ठा कर रहा था।
“जब नागों ने सुपर्णों के साथ विश्वासघात किया और देवताओं का साथ दिया, तब उसकी मृत्यु हुई। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसके अपने ही भाई उनके विरुद्ध चले जाएंगे,” गरुड़ ने अपने हाथों में मुट्ठी भर फूल इस तरह थामे हुए कहा, जैसे कोई शिशु अपने पिता की गोद में हो।
‘उसकी हत्या किसने की?’
गरुड़ ने सिर हिलाया। 'कोई नहीं। उसने आत्महत्या कर ली।' अपनी निगाहें झुकाते हुए उसने आह भरी। 'मैं विद्रोह करता हूँ और हार नहीं मानता, इसका एकमात्र कारण वह है। उसे इतना धोखा मिला कि उसने आत्महत्या कर ली, और मैं

उसकी मौत का बदला लिए बिना नहीं रह सकता। मुझे उसका राज्य एक दिन वापस दिलाना ही होगा।'
‘और इसीलिए तुम पौधे ले जाकर अपने लोगों को देते हो?’
‘नागों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले विषैले तीरों से घायल होने के बाद उनमें से कई बीमार पड़ गए हैं। मैं उनकी मदद कर सकता हूँ,’ गरुड़ ने कहा। ‘मैं बुरा आदमी नहीं हूँ, मेरे दोस्त। मैं बस नफरत और क्रोध से भरा हुआ एक इंसान हूँ…’
‘हर किसी में कुछ न कुछ जुनून होता है,’ नारा ने अपने जबड़े कसते हुए कहा। ‘ज़रूरी यह है कि वह जुनून, वह जोश इस दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डाले। हर कोई अपने आदर्शों, अपने बदले के लिए लड़ रहा है, लेकिन सही के लिए कौन लड़ रहा है?’
गरुड़ ने उसे घूरते हुए कहा, 'और सही-गलत का ज्ञान कैसे होता है?'
नारा ने आह भरी। ‘सब जानते हैं, गरुड़। सब हमेशा जानते हैं। लेकिन हम जानबूझकर इसे अनदेखा करते हैं।’ वह रुका और बोला, ‘मुझे लगता है हमें यहीं अलग हो जाना चाहिए। मैं शहर लौटकर लोगों की मदद करूंगा।’ वह जानता था कि वह गरुड़ के साथ नहीं रह सकता – वह उसके आसपास ज्यादा देर तक नहीं रह सकता था। ‘मेरे साथ रहो। उन लोगों को जीने का हक नहीं है।’
'हम भी नहीं। फिर भी, हम यहाँ हैं। क्यों न हम कुछ सार्थक काम करें।'
नारा मुड़ी और शहर की ओर चलने लगी। मुझे नहीं पता कि मैं यहाँ से कैसे निकलूँगी, लेकिन मैं कोई न कोई रास्ता ज़रूर ढूँढ लूँगी।

इमारत कांप उठी और गिरने लगी। लोग दहशत में इधर-उधर भागने लगे। कुछ नाग महिलाएं लड़खड़ा गईं। वे डर से चीखने लगीं क्योंकि इमारत का एक विशाल हिस्सा टूटकर उनकी ओर गिरने लगा, मानो उन्हें कुचलने ही वाला हो। अचानक एक ज़ोरदार गर्जना हुई और जब उन्होंने ऊपर देखा, तो उन्हें नारा उनके ऊपर मंडराता हुआ दिखाई दिया, जो इमारत के उस हिस्से को पकड़े हुए था, उसकी शक्तिशाली भुजाएँ भार से झुक रही थीं।

‘भागो!’ उसने चिल्लाकर कहा।

महिलाओं ने सिर हिलाया और घटनास्थल से तेजी से चली गईं।
वह तुरंत पीछे हट गया और मलबे को जमीन पर गिरने दिया।
चारों ओर अफरा-तफरी और तबाही मची हुई थी। नारा ने कुछ असुर सैनिकों को कुछ नाग पुरुषों को उनके परिवारों से अलग ले जाते हुए देखा। संभवतः वे उन्हें युद्धबंदी बना रहे थे। वह पहरेदारों की ओर दौड़ा और उन पर झपटा, उनके गले और सीने पर वार किया और अपने मानव पंजों से उनके अंगों को फाड़ डाला। ‘चले जाओ!’ नारा ने उन आदमियों पर चिल्लाते हुए कहा, जो तुरंत वहां से भाग गए।
वह किलों और तीन मंजिला इमारतों के बीच में था। सड़कें खून से लाल थीं और नागों के शवों के ढेर लगे थे। आगे पुल पर दोनों सेनाओं के बीच भयंकर युद्ध चल रहा था। नाग सैनिकों की एक छोटी टुकड़ी ने असुरों को शहर में प्रवेश करने से रोकने के लिए घेराबंदी कर रखी थी। असुर उनसे आकार में दोगुने थे, कांसे के कवच और चांदी के दस्ताने पहने हुए थे और लोहे की तलवारें लिए हुए थे। लेकिन वे हार रहे थे।
नरसिम्हा ने आगे बढ़कर नागों को असुरों की ओर बैरिकेड्स धकेलने में मदद की। नरसिम्हा की शक्ति का शानदार प्रदर्शन हुआ, जब उन्होंने आसानी से असुरों को पीछे धकेल दिया।
नागाओं ने रोते हुए कहा, 'धन्यवाद। आप हमारी मदद क्यों कर रहे हैं?'
‘वे कहाँ से आ रहे हैं?’ नारा ने उनके सवाल को अनसुना करते हुए पूछा। बंदरगाह।

नारा बंदरगाह पर पहुंचा तो उसने देखा कि वहां एक और नरसंहार चल रहा है। नाग और असुर आपस में लड़ रहे थे, और मुट्ठी भर मानव राक्षसी ताकतों के खिलाफ डटे हुए थे।
नारा तेजी से आगे बढ़ा, जेलर के कमरे से लौटाया हुआ उसका त्रिशूल उसकी पीठ पर ढीला लटका हुआ था। उसने जैसे ही गरुड़ के साथ जयंत को खोजने के लिए जेल से बाहर निकल रहा था, तभी उसने त्रिशूल पकड़ लिया। कुशलता से उस अफरा-तफरी से बचते हुए वह जहाज के डेक पर कूद गया, जहाँ असुर रक्षक तैयार खड़े थे। रक्षकों ने उन्माद में आकर उस पर हमला कर दिया। अपने हथियार को तेजी से

घुमाते हुए, नारा ने एक असुर को त्रिशूल से घायल कर दिया और उसे कोने में फेंक दिया। उसने दूसरे हमलावर को लात मारकर समुद्र में गिरा दिया। असुरों की लहरों का सामना करते हुए, नारा झुक गया और अपने त्रिशूल को गोल घुमाया। एक क्षण बाद जब वह उठा, तो वह असुर रक्षकों के शवों से घिरा हुआ था। कप्तान के पहिये के पास एक अकेला धनुर्धारी बचा था, जिसने एक तीर चलाया। नारा ने हवा में ही तीर को पकड़ लिया और उसे वापस धनुर्धारी पर फेंक दिया; तीर असुर की आँख में जा लगा।
'तुम्हारी हिम्मत तो देखो,' उसके पीछे से एक कर्कश, भारी आवाज आई।
नारा ने मुड़कर देखा तो उसे एक लंबा-चौड़ा आदमी दिखाई दिया जिसकी घनी मूंछें उसके चेहरे के दोनों ओर लटकी हुई थीं। उसने सोने का कवच, सींगों वाला हेलमेट पहना हुआ था और हाथ में एक लंबी तलवार थी। नारा को एक पल के लिए भी संदेह नहीं हुआ कि यह कौन था।
हिरण्यकश्यप.
‘तुम मेरे जहाज पर आकर मेरे आदमियों को मार डालते हो,’ वह हंसते हुए बोला। ‘उन्होंने कहा था कि एक सिंह उत्पात मचा रहा है।’
'आप से भी मिलकर अच्छा लगा।'
वे डेक पर अकेले थे। नारा ने अपने त्रिशूल को कसकर पकड़ रखा था और वह हिरण्य के चारों ओर चक्कर लगा रहा था, जबकि तट पर युद्ध और भी तीव्र होता जा रहा था। आकाश में भी भयंकर तूफान था, मानो वह ज़मीन पर मची अफरा-तफरी को प्रतिबिंबित कर रहा हो।
‘क्या आप नरसिम्हा हैं?’ हिरण्य ने पूछा। उसके चेहरे पर आशा झलक रही थी, वह लगभग चाहता था कि नरसिम्हा हाँ कह दें।
और उसने उसे यह उम्मीद दी। 'हाँ।'
कुछ देर रुकने के बाद उसने वह कठिन सवाल पूछा जो नारा नहीं पूछना चाहती थी। ‘क्या आप कयाधु को जानते थे?’
नारा का खून जम गया। 'मैं...'
‘हां, तुमने ही किया,’ उसने मुंह बनाते हुए कहा। ‘तुमने ही उसे मारा था, है ना?’
नारा ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। उसे पता था कि एक दिन कर्म का फल उसे ज़रूर मिलेगा, लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा। 'मुझे माफ़ करना। वह... वह

इंद्र पर हमला करने की कोशिश कर रही थी, और उसकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य था।'
'मेरा मानना है कि हम सभी कर्तव्य से बंधे हुए हैं। ठीक वैसे ही जैसे मैं हूं।'
हिरण्य ने अथाह गति और सटीकता के साथ उसकी ओर बढ़ने से पहले नारा को सोचने का भी समय नहीं दिया। उसने सहज ही एक तरफ हटकर असुर की तलवार को बाल-बाल बचा लिया।
जैसे ही हिरण्य ने पलटकर दोबारा हमला करने की कोशिश की, नारा ने एक हाथ से उसे मुक्का मारा और उसके ऊपर से छलांग लगा दी, जिससे हिरण्य गिर गया। फिर उसने त्रिशूल से उस पर हमला किया और उसके कवच को भेद दिया।
हिरण्य आश्चर्यचकित रह गया। ‘यह कैसे संभव है? यह तो भगवान ब्रह्मा का उपहार है।’
‘और मेरा हथियार भगवान शिव का है – हम दोनों दिव्य शस्त्र धारण करते हैं।’ नारा मुस्कुराया।
हिरण्य ने नर को पीछे धकेल दिया, जिससे वह डेक पर दूर जा गिरा। सिंह मस्तूल से टकराया और उसका सिर उस पर जोर से लगा।
हिरण्य जब नारा के पास पहुँचा तो फर्श की लकड़ियाँ खड़खड़ाने लगीं। सिंह को पकड़कर उसने नारा के चेहरे पर घूंसे बरसाने शुरू कर दिए। नारा कमज़ोर महसूस कर रहा था - उसका त्रिशूल खो गया था। अपने शत्रु के ऊपर घुटने टेककर हिरण्य ने उसके सिर के दोनों किनारों को पकड़ लिया और दबाव डालने लगा, मानो किसी तरबूज़ को निचोड़ने की कोशिश कर रहा हो। सहारा पाने के लिए छटपटाते हुए नारा ने अपने पंजों से उसे खरोंच दिया, जिससे हिरण्य के चेहरे पर निशान पड़ गए और उसे जलन होने लगी। असुर दर्द से चीखता हुआ पीछे हट गया। मौका पाकर नारा जहाज़ के किनारे की ओर बढ़ा और भागने की योजना बनाने लगा। हिरण्य एक कठिन प्रतिद्वंद्वी था, खासकर उसके पहनावे को देखते हुए। उससे सीधे लड़ना तो बस...
लेकिन इससे पहले कि वह जहाज से छलांग लगा पाता, उसने महसूस किया कि किसी ने उसके पैर पकड़ लिए हैं। अगले ही पल, उसे हवा में उठा लिया गया और ज़मीन पर पटक दिया गया, जिससे उसकी रीढ़ की हड्डी में ज़ोरदार झटका लगा। नारा दर्द से चीख उठा।

हिरण्य ने उसे दोबारा उठाने की कोशिश की, लेकिन नारा ने उसके धड़ पर लात मार दी। हिरण्य लुढ़क कर दूर चला गया। नारा उठा और फिर से चट्टान की ओर भागा। हिरण्य भी उसके पीछे दौड़ पड़ा।
'मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा,' हिरण्य दहाड़ते हुए नारा के पैरों को फिर से खींचते हुए उसे पीछे धकेलने लगा। 'मैं तुम्हें यहीं मार डालता। और मैं मारना चाहता था,' हिरण्य ने अपने चेहरे पर लगे खून को पोंछते हुए कहा। 'लेकिन तुम उसी जमीन पर मरने के लायक हो जहाँ तुमने मेरी पत्नी का वध किया।' और फिर, एक झटके में खींचकर और मुक्का मारकर, हिरण्य ने नारा के चेहरे पर जोरदार प्रहार किया, और सिंह पूर्ण अंधकार में डूब गया।

24

प्रहलाद

वे अपने तम्बू के बाहर खड़े थे जबकि हवा ज़ोर से चल रही थी। बीतते पल समय की बूंदों की तरह लग रहे थे, मानो धीरे-धीरे जीवन से दूर जा रहे हों। प्रहलाद क्षितिज को घूरते हुए, हाथ बांधे खड़ा था। विष्णुसेना के लोग अपने-अपने काम कर रहे थे, जबकि रहस्य उजागर करने वाला व्यक्ति उसके पीछे तम्बू में छिपा हुआ था।
‘क्या तुम ठीक हो?’ धृति की आवाज पीछे से आई। थोड़ी देर बाद वह उसके बगल में खड़ी हो गई और अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया।
'क्या वह जाग गया है?' प्रहलाद ने सवाल को नजरअंदाज करते हुए पूछा, क्योंकि इस सवाल से कुछ ऐसे जवाब सामने आते थे जिन्हें वह देना नहीं चाहता था। अभी नहीं। लेकिन वो ठीक हो जाएगा। डॉक्टर का कहना है कि वो बेहोश हो गया क्योंकि वो सांस नहीं ले पा रहा था, उसकी श्वास नली में दिक्कत थी... प्रहलाद ने झल्लाकर कहा, 'मुझे पता है, मुझे पता है - यह मेरी गलती है।' ‘तुम्हें क्या हो गया है?’

'मुझे नहीं पता - मुझे अपना लक्ष्य हर हाल में हासिल करना है, चाहे कुछ भी हो जाए,' प्रहलाद ने कहा।
लेकिन क्या तुम्हारा भी वही हाल नहीं होगा जो नारद का हुआ था?
प्रहलाद को याद आया कि कैसे उसने नारद के चरमपंथी कार्यों का विरोध किया था, और वह उससे अलग कुछ करना चाहता था। 'मैं जानता हूँ, लेकिन मुझे विश्वास है कि उसकी नीयत सही थी। मैं उसकी तरह अंधाधुंध लोगों की हत्या नहीं कर रहा हूँ। इस बार हम समझदारी से काम ले रहे हैं। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि निर्दयी और निर्दयी हुए बिना हम सफल नहीं हो सकते।'
मुझे उम्मीद है कि आपको पता है कि आप क्या कर रहे हैं।
कुछ देर रुकने के बाद प्रहलाद ने कहा, 'मैं ठीक नहीं हूं।'
'क्या?'
‘आपने मुझसे पूछा कि क्या मैं ठीक हूँ – मैं ठीक नहीं हूँ।’
'क्यों?'
मुझे लगता है कि मैं यहीं का हूं, लेकिन मुझे यह भी लगता है कि यहां करने के लिए बहुत कुछ है जो हम हासिल नहीं कर पा रहे हैं। हमें बस जाकर लड़ना चाहिए और इस घिनौने युद्ध को खत्म करना चाहिए।
हमारे पास पर्याप्त कर्मचारी नहीं हैं।
‘तो फिर सेनाएँ इकट्ठा करो,’ प्रहलाद ने उसकी ओर देखते हुए कहा। ‘युद्धविराम की घोषणा करो और मेरे पिता के शासन को समाप्त करने के उद्देश्य से एक सामूहिक संगठन बनाओ।’
धृति ने सिर हिलाया। 'तुम सही कह रही हो। हमें गठबंधन बनाना शुरू कर देना चाहिए - हम बहुत छोटी सोच रहे हैं। लेकिन... मैं हमेशा सोचती हूँ कि जीतने के बाद हमारा क्या होगा।'
‘धृति, तुम क्या चाहती हो? मेरा मतलब है, अंत में तुम क्या चाहती हो?’ प्रहलाद ने पूछा।
‘मेरा मानना है कि मैं एक सार्थक जीवन जीना चाहती हूँ… इस लक्ष्य को हासिल करने के बाद बस आराम से नहीं बैठना चाहती। मैं लंबे समय तक अकेले संघर्ष नहीं करना चाहती। बल्कि, मैं अपनी खुद की सेना का नेतृत्व करना चाहती हूँ,’ उसने हंसते हुए कहा। ‘जैसे शहर को बदमाशों से मुक्त कराने के लिए एक टास्क फोर्स।’
'क्यों?'

‘मुझे नहीं पता। बचपन से ही मेरी यही ख्वाहिश रही है कि मैं नेतृत्व करूं, लोगों को सही राह दिखाऊं,’ धृति ने कहा। ‘इसके बजाय, मैं एक बेरहम हत्यारा बन गई, जो कि अजीब बात है।’
प्रहलाद मुस्कुराया। 'मुझे यह अच्छा लगा। राजा प्रहलाद और रानी धृति इस दुनिया से बुराई को दूर कर न्यायपूर्वक शासन कर रहे हैं।'
‘अरे, क्या हम शादी करने वाले हैं? हम तो अभी चौदह साल के ही हैं, प्रहलाद।’ खैर, मुझे इंतज़ार करने में कोई आपत्ति नहीं है। मैं अपने पिता के जेल से छूटने के बाद राजा बनना चाहता हूँ...’ उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। वह उसे मारना नहीं चाहता था, लेकिन अगर कोई चारा नहीं था, तो उसे करना ही पड़ेगा... वह बस उस परिस्थिति में नहीं पड़ना चाहता था।
‘और तुम वैसे ही रहोगे। बिल्कुल पहले की तरह। और मुझे पता है,’ उसने अपने हाथों से उसका चेहरा घेरते हुए कहा, ‘कि तुम्हारा शासन बहुत महान होगा।’ प्रहलाद ने उसे देखकर मुस्कुराया। वह उसकी खुशी का स्रोत थी, और वह उसे किसी भी हालत में खोना नहीं चाहता था।
‘वह जाग गया है!’ असामनजा की आवाज तम्बू से आई।
दोनों ने मुड़कर देखा तो विष्णुसेना का नया नेता उन्हें अंदर आने के लिए कह रहा था। तीन मोमबत्तियों की रोशनी से जगमगाते अंधेरे तम्बू में उसके पीछे-पीछे चलकर वे बिस्तर के पास रुक गए, जहाँ डॉक्टर ने शांड की जाँच की। शांड का चेहरा अब लाल नहीं था, बल्कि चाँद की तरह पीला पड़ गया था। उसकी आँखें काली थीं, और हालाँकि वह हर कुछ सेकंड में घरघराहट और खाँसी कर रहा था, फिर भी उसकी साँसें काफी नियमित थीं।
अंधका एक कोने में हाथ आगे करके, सिर झुकाए, लाल कपड़े से आँखें ढके खड़ा था। उसके दाहिनी ओर कालनेमी था, जिससे प्रहलाद को पहले एक बार मिलने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ था। वह अपने पतले, कागज़ी बालों, चिपचिपी त्वचा, बड़ी आँखों और टूटे जबड़े के साथ अंधका से भी अधिक भयानक था। ऐसा लग रहा था मानो जन्म से ही उसे उचित पोषण न मिला हो।
‘कृपया मुझे चोट मत पहुँचाओ,’ शांड ने कहा जब प्रहलाद उसकी ओर बढ़ा, उसकी परछाई मंत्री के चेहरे पर पड़ रही थी। ‘कृपया मुझे अकेला छोड़ दो!’
‘अगर तुम सही जवाब दोगे, तो हम करेंगे,’ प्रहलाद ने अंधकार की ओर देखते हुए कहा, जो परछाई से बाहर नहीं आया था। वह चाहता था कि अंधकार ही सवाल पूछे। ‘ठीक है, तो… मैं हमारे खजाने के बारे में जानना चाहता हूँ।’

'हां, हां, लेकिन अगर मैंने तुम्हें कुछ भी बताया तो तुम्हारे पिता मुझे मार डालेंगे।'
'अगर वह तुम्हें नहीं ढूंढ पाया तो नहीं। हम तुम्हें घोड़े पर बिठाकर पूरब की ओर भेज देंगे। वहाँ छिपने की जगह ढूंढ लेना।'
शैन्ड ने पलकें झपकाईं, मानो वह पहली बार भागने की संभावना पर विचार कर रही हो। 'आप खजाने के बारे में क्या जानना चाहते हैं?'
शहर के पास कितना पैसा है?
‘इसमें से चोरी करना मूर्खता है। पागलपन! यह बहुत सुरक्षित है। अंदर जाने के लिए चाबी भी चाहिए जो सिर्फ तुम्हारे पिता के पास है।’
प्रहलाद ने सिर हिलाया और असमांजा और धृति के साथ चिंता भरी नजरें साझा कीं।
‘हम्म, उन्हें उन मूल डाक टिकटों के बारे में बताओ जिन्हें तुम पहले ढाला करते थे,’ अंधाका ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा।
‘वहाँ कौन है?’ शैन्ड ने पूछा। ‘आगे आओ!’
‘हमें बताओ!’ प्रहलाद ने उसका गला पकड़ते हुए कहा।
‘ठीक है, ठीक है!’ शांड मान गया। ‘आप जानते हैं कि मुद्रा को लगातार ढालना पड़ता है। हम अक्सर विनिमय और विदेशी व्यापार करते हैं। कुछ तांबे की मुहरें हैं जिनका उपयोग मूल रूप से हमारी मुद्रा को ढालने के लिए किया जाता था। हमने इलवर्ती में असुर व्यापार की शुरुआत से ही उनके डिजाइन नहीं बदले हैं।’
‘ये टिकटें कहाँ हैं?’ प्रहलाद ने पूछा।
'महल में कोषाध्यक्ष के कमरे में। एक तिजोरी में। कोई भी आसानी से अंदर जाकर उन्हें चुरा सकता है क्योंकि सुरक्षा इतनी कड़ी नहीं है,' शैन्ड ने समझाया।
‘और राजमहल में प्रवेश किया जा सकता है,’ प्रहलाद ने अपने बचपन को याद करते हुए मुस्कुराते हुए कहा, ‘उन सीवरों के रास्ते जो रसोई से जुड़े हुए हैं।’ ‘जहां मैंने काम किया है!’ धृति हंस पड़ी। ‘मुझे वहां के तौर-तरीके पता हैं।’
आसा ने बीच में दखल देते हुए अंधाका की ओर देखा और कहा, 'लेकिन तांबे की कुछ मुहरें चुराने का क्या फायदा?'

अंधका ने व्यंग्यात्मक ढंग से हंसते हुए कहा, “अगर हम डाक टिकटें चुरा लें, तो हम अपने खुद के नोट बना सकते हैं, जिससे अर्थव्यवस्था दो तरह से बर्बाद हो जाएगी। पहला, हम इसे फैला देंगे और मुद्रा का अवमूल्यन कर देंगे। इसका मूल्य लगातार गिरता रहेगा जिससे अर्थव्यवस्था अस्थिर हो जाएगी। दूसरा, हम्म, क्योंकि असली डाक टिकटें नहीं होंगी, इसलिए कुछ समय तक ज्यादा नोट नहीं बन पाएंगे और नई मुद्रा उपलब्ध नहीं होगी, जिससे व्यापार घाटा और मुद्रास्फीति होगी। पूरी अर्थव्यवस्था बुरी तरह से विफल हो जाएगी। किसान हड़ताल करेंगे, दंगे होंगे, और जनता... जो हमारी मुख्य प्रेरणा है, हम्म... विद्रोह का नेतृत्व करेगी। और अगर जनता हमारे साथ हो, तो साम्राज्य का पतन हो जाएगा।”
‘नहीं!’ शैन्ड ने भयभीत होकर कहा। ‘तुम ऐसा नहीं कर सकते। यह सबसे बुरी बात है। इससे पूरा राज्य नष्ट हो जाएगा।’
प्रहलाद मुस्कुराया। उसे यह विचार पसंद आया। इसमें धैर्य लगेगा, लेकिन यह समझदारी भरा कदम होगा। वह आगे झुका। 'मेरे प्रिय मित्र, एक नया साम्राज्य बनाने के लिए, उस साम्राज्य को नष्ट करना होगा।'

25

होलिका

मैं दोबारा हार नहीं सकती। अपने गुप्तांगों को ढकने वाली लंगोटी के अलावा पूरी तरह नग्न अवस्था में होलिका मेज की ओर चली और उस पर औंधे मुंह लेट गई। 'आपको ऐसा नहीं करना चाहिए, मेरी मालकिन,' अमरका की आवाज उसके बाईं ओर से आई।
वह अपने दंड कक्ष में थी। हालांकि, यह दंड किसी और के लिए नहीं बल्कि केवल उसके लिए था। पास ही में एक आदमी खड़ा था, जिसने सिर पर नकाब पहन रखा था और उसके हाथ में कोड़ा था।

होलिका ने कहा, 'मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं कि मुझे क्या करना चाहिए या नहीं। मैं वही करूंगी जो मुझे आवश्यक लगेगा।'
होलिका की पीठ पर पहला कोड़ा पड़ते ही अमरका ने दबी आवाज में मुंह बनाया। उसे ऐसा लगा जैसे उसके शरीर में बिजली का तेज झटका लगा हो। 'सिर्फ इसलिए कि तुम अपने भतीजे से हार गई?'
‘उसने मुझे हरा दिया।’
एक और कोड़ा।
उसे अपनी पीठ पर जलन महसूस हो रही थी। उसकी आँखों में आंसू भर आए। 'लेकिन बात इससे कहीं ज़्यादा है,' होलिका ने जवाब दिया।
यह सिर्फ प्रहलाद से आगे न निकल पाने की वजह से खुद को दंडित करने से कहीं अधिक था। यह उसके लिए मौजूद न रहने का भी था, और उस दोपहर डायरी में उसने जो पढ़ा था, उसका भी।

आज मेरी माँ की पुण्यतिथि थी। हम इस अवसर पर कुछ भी नहीं मनाते। हम इसे एक सामान्य दिन की तरह ही मनाते हैं। शायद आगे बढ़ने का यही तरीका है। जब तक आप मिट्टी में मिल न जाएँ, तब तक यह दिखावा करते रहना कि आप ठीक हैं। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका। हर साल मेरी बेचैनी बढ़ती गई। और जब मैं सात साल का था, तो मैं अपने गुरु नारद के पास गया और उनसे कहा, 'गुरुजी, मैं बेचैन हूँ।'
उन्होंने कहा, 'ऐसा इसलिए है क्योंकि तुमने श्राद्ध नहीं किया है।'
जब मैंने पूछा कि वह क्या है, तो उन्होंने समझाया कि जब परिवार में किसी की मृत्यु हो जाती है, तो हमें मृतक का सम्मान करना चाहिए और उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए।
मैं अपनी माँ के प्रति कभी कृतज्ञ नहीं रहा। मैंने उनसे पूछा कि हम इस रीति-रिवाज का पालन क्यों नहीं करते, तो उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरे पिता इस तरह के अनुष्ठानों में विश्वास नहीं करते थे। लेकिन मैं यह करना चाहता था। और इसलिए मैंने किया। गुरुजी ने मुझे बताया कि क्या करना है – उन्होंने पास के गाँव से एक पुजारी को भेस बदलकर बुलाया

और मैंने उनके पैर धोए, उन्हें भोजन दिया और उनका आशीर्वाद लिया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं इस तरह अपनी माँ के प्रति कृतज्ञता कैसे व्यक्त कर रहा हूँ, लेकिन उन्होंने बस मुझे ऐसा करने को कहा। उन्होंने मुझे कौवों को पका हुआ गेहूँ खिलाने को भी कहा, जो मैंने किया। यह अच्छा लगा।
उस पल, जब दिन समाप्त हुआ, मुझे अच्छा लगा। मुझे संतुष्टि का अनुभव हुआ, मानो मेरे ऊपर से कोई बोझ हट गया हो।
लेकिन फिर यादें ताजा हो गईं। और उन्होंने मुझे अंदर से खोखला महसूस कराया।
मुझे किसी की ज़रूरत थी। रात हो चुकी थी, और सीने में इस खालीपन के साथ, मैं अपने पिता को ढूंढने के लिए महल के गलियारों में चल रहा था, तभी मेरी नज़र चाची होलिका के कमरे पर पड़ी।
अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति को नजरअंदाज करते हुए, मैं अंदर चला गया, इस उम्मीद में कि मुझे बाहर नहीं निकाला जाएगा।

एक और कोड़ा।
‘महारानी, आपको यह जानकारी कहाँ से मिली?’ अमरका ने पूछा। ‘जब आप यहाँ घायल हो रही हैं, तो बाकी मंत्री शैंड के बारे में पूछ रहे हैं। उन्हें डर है कि विष्णुसेना उन्हें भी पकड़ लेंगे।’
‘चिंता मत करो, मैं उन्हें पकड़ लूंगी,’ होलिका ने कहा।
एक और कोड़ा। पिछले कोड़े से भी ज़्यादा तेज़ और दर्दनाक।
अब तक उसकी पीठ सुन्न हो चुकी थी।
‘पाताल में मेरे एक गुरु थे। मेरे और मेरे भाइयों के एक ही गुरु थे। भगवान स्वरभानु, जो असुरों की सर्वोच्च श्रेणी के आचार्य और अपने वंश के एक वरिष्ठ गुरु थे। उन्होंने हमें सब कुछ सिखाया,’ उन्होंने बताया। ‘उन्होंने हमें यह भी बताया कि जब हम सच्ची विजय प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं, तो हमें कोड़े खाने चाहिए। इसलिए प्रशिक्षण मैदान में, अगर हम हार जाते थे, तो हमें कोड़े पड़ते थे। कुछ समय बाद, हमारी पीठ मजबूत हो गई और सफल होने की हमारी प्रेरणा कभी कम नहीं हुई। आप जानते हैं क्यों?’

अमरका ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बस इंतजार करता रहा।
उन्होंने कहा, ‘क्योंकि डर ने हमें नियंत्रित किया। हमें हारने का इतना डर था कि हमने हमेशा जीत सुनिश्चित की।’ उन्होंने आगे कहा, ‘मेरा मानना है कि डर ही इंसान की सबसे बड़ी प्रेरणा है। डर को अक्सर बुरा-भला कहा जाता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है। यह हमें आगे बढ़ाता है। यह हमसे ऐसे काम करवाता है जो हमने पहले कभी नहीं किए।’
उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और सिसकियाँ लेने लगी। कोड़ों की मार के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि अब उसे समझ आ गया था कि उसने कितना बड़ा नुकसान उठाया है।
एक अच्छी मौसी और एक अच्छी माँ बनने का मौका।

मैं उनके कमरे में दाखिल हुआ, और मेरी चाची ने ऊपर देखा। वह एक किताब पढ़ रही थीं। मेरे आते ही उनका चेहरा भावहीन हो गया, लेकिन उन्होंने मुझसे यह नहीं पूछा कि मैं उनके कमरे में क्या कर रहा था।
‘नींद नहीं आ रही?’
मैंने सिर हिलाया। मुझे लग रहा था कि वह मुझ पर चिल्लाएगी, लेकिन इसके बजाय उसने उंगली टेढ़ी करके मुझे अपने पास आने का इशारा किया। मैं उसके पास गया और आराम से उसके बगल में बैठ गया, जबकि उसने मुझे नक्षत्रों, ज्योतिष और राशिफल की एक किताब दिखाई। उसने समझाया कि हम सब भाग्य और कर्म से बनते हैं। कैसे सब कुछ हमारे जन्म से पहले ही तय हो जाता है।
यह काफी दिलचस्प था।
'आपको यह पसंद है?'
मैंने तुरंत सिर हिला दिया।
‘अच्छा।’ वह मुस्कुराई। ‘अब वापस सो जाओ।’
‘क्या मैं यहाँ सो सकता हूँ?’
‘मेरे साथ?’
मेंने सिर हिलाया।

मैं देख सकती थी कि वह इस संभावना पर विचार कर रही थी। लेकिन फिर उसने अपना सिर हिलाया। 'मुझे लगता है कि तुम्हें वापस चले जाना चाहिए।'
मैंने निराशा से सिर हिलाया। काश उन्होंने मेरा स्वागत किया होता। मैं सिर्फ सात साल की थी। मुझे अपनी माँ की बहुत याद आ रही थी। और उनकी अनुपस्थिति में, मैं आंटी होलिका के स्नेह को तरस रही थी। लेकिन उन्होंने मुझे सिर्फ ठंडापन दिया। इसके बावजूद, मुझे उम्मीद थी कि वह मुझे फिर से कहानी सुनाएंगी। लेकिन उन्होंने नहीं सुनाया।
उसने मुझे फिर कभी अपने कमरे में नहीं आने दिया। और मैं सोचता रहा कि ऐसा क्यों हुआ।
मुझे अब भी आश्चर्य होता है।

कोड़ों की मार खत्म हो चुकी थी। जब वह खड़ी हुई तो उसे अपनी पीठ का एहसास लगभग न के बराबर था। वह संभलकर अमरका की ओर बढ़ी, तभी यातना देने वाले ने उसके शरीर पर एक लंबा लबादा डाल दिया ताकि उसके घाव छिप जाएं।
‘तो अब हम क्या करें, मेरी महिला? हमें बिलकुल भी अंदाजा नहीं है कि वे क्या कर रहे हैं। हमें नहीं पता कि उन्होंने शांड को क्यों बंधक बनाया है!’ अमरका ने हैरानी से कहा।
'आप गलत बोल रही हे।'
'क्या?'
‘आपको यह नहीं पता कि वे क्या करने वाले हैं, यह आपकी गलतफहमी है।’ वह मुस्कुराई। ‘क्योंकि मुझे पता है कि क्या होने वाला है, और मुझे यह भी पता है कि इसे कैसे रोकना है।’
अमरका खुशी से आंखें चौड़ी कर लीं। 'बहुत बढ़िया! लेकिन कैसे? क्या आपके पास कोई जासूस है?'
‘एक जासूस से कहीं बढ़कर। मुझे उनके खेमे के एक व्यक्ति से पूरी योजना के बारे में एक पत्र मिला।’ कमरे से बाहर निकलते हुए वह मुस्कुराई। ‘वह भरोसेमंद है, क्योंकि वह परिवार का सदस्य है।’
'कौन है भाई?'

उसे अमरका के कदमों की आहट सुनाई दी। 'तुम उसे जानते हो ना,' वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'वह अंधा राजकुमार, जिसने इंद्र से बचने के लिए अपनी मृत्यु का नाटक किया था - अंधका।'

26

प्रहलाद

उसने एक जगह पर इतनी गंदगी पहले कभी नहीं देखी थी। वे शहर के बाहरी इलाके में, सीवरों के पास पहुँच गए थे, और कचरे की मात्रा देखकर प्रहलाद चौंक गया। दर्जनों लोग थे, जो कीचड़, गंदगी और हर तरह की घिनौनी चीजों में पैर रखते हुए अंधेरे की नदी पार कर रहे थे, उस विशाल पाइप की ओर जिसके ज़रिए वे शहर के सबसे निचले हिस्से में प्रवेश करेंगे।
‘क्या आपको रास्ता पता है?’ प्रहलाद ने धृति से पूछा, जो उनका नेतृत्व कर रही थी।
उन्होंने कहा, 'बहुत समय पहले, जब मैं शाही महल की जासूसी कर रही थी, तब मैं अक्सर इन रास्तों से जाती थी। मैं मुख्य द्वार से प्रवेश नहीं कर सकती थी, इसलिए मैं यहां से जाती थी।'
प्रहलाद ने सिर हिलाया। यह अजीब बात थी कि वह इतने सालों तक उसके महल में रसोइया रही और उसे बहुत बाद में पता चला कि वह साम्राज्य के खिलाफ थी। उसके पीछे, असमांजा, अंधका और कालनेमी कुछ सैनिकों के साथ चल रहे थे।
लेकिन प्रहलाद जानता था कि शंद के दफ्तर में जाकर तिजोरी खोलने के लिए सिर्फ एक ही व्यक्ति की ज़रूरत थी। चाबी खगोल विज्ञान की किताबों में से एक में छिपी थी; शंद को तारे देखना बहुत पसंद था।
वे सभी एक-एक करके पाइप में दाखिल हुए। असमांजा के सैनिकों के पास मशालें थीं जिनकी रोशनी घोर अंधेरे को चीर रही थी। सौभाग्य से, पाइप इतने ऊंचे थे कि वे सीधे खड़े हो सकें।

प्रहलाद को मरे हुए चूहों और गंदगी की घिनौनी बदबू आ रही थी। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि राजघराने का कोई व्यक्ति, जिसे सोने का चम्मच खिलाया जाता था, शहर के गटरों में घूम रहा होगा। फिर भी, उसने दृढ़ निश्चय के साथ धृति का अनुसरण किया।
‘हमारी मदद करने के लिए धन्यवाद,’ उसने अंधका की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘मुझे आप पर भरोसा नहीं था, लेकिन मैं गलत था। आप एक अच्छे इंसान हैं।’
अंधका ने जोश भरी मुस्कान के साथ कहा, 'मैं वही करता हूँ जो सही है, हम्म। लेकिन मुझे आपको कुछ बताना है।'
'हाँ?'
‘आपका भाई। वह किसी भी हताहत का हिस्सा नहीं था।’
‘तो फिर?’ उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
‘उसकी हत्या—’ अंधका अचानक बोलना बंद कर दिया, उसकी निगाहें सामने टिक गईं।
प्रहलाद ने यह देखने के लिए ऊपर देखा कि समस्या क्या है, और ठीक उनके सामने होलिका अपने सैनिकों के साथ खड़ी थी, हाथ बांधे हुए और चेहरे पर मुस्कान लिए हुए।
नहीं।
राजसैनिकों ने अपने धनुष तैयार कर लिए थे, और धृति ने उन्हें तीर चलाने का आदेश दिया। विद्रोहियों की ओर तीरों की बौछार हुई, जिनमें से अधिकतर निशाने पर लगे। प्रहलाद ज़मीन पर गिर पड़ा, लेकिन उसने देखा कि धृति अपना हाथ पकड़े हुए पीछे की ओर लड़खड़ा रही है। उनके पक्ष के सैनिकों पर भी तीरों की बौछार हुई। अंधका और कालनेमी अपने साथ लाए एक लंबे ढाल के पीछे छिप गए – मानो उन्हें इस बात का पूर्वाभास था।
प्रहलाद उछलकर खड़ा हो गया और अपनी तलवार निकाल ली। घायल धृति और आसा को देखकर वह चिल्लाया, 'चले जाओ! मैं उन्हें रोकूंगा।' वह जानता था कि अगर उसे पर्याप्त समय मिल गया, तो उसके मित्र वहां से निकल सकेंगे। उसने होलिका की ओर तलवार चलाई, जिसे होलिका ने तुरंत रोक दिया।
‘तुम मुझे हरा नहीं सकते, लड़के,’ उसने कहा।
होलिका के सैनिक प्रहलाद से लड़ने के लिए आगे आए, और अपने सीमित प्रशिक्षण के बावजूद, उसने उनके हमलों को नाकाम कर दिया, एक के बाद एक उन पर वार करता रहा और उन्हें मारता रहा।

एक सैनिक ने प्रहलाद को पाइप की दीवार से धक्का दिया, लेकिन प्रहलाद ने अपनी कमरबंद के दूसरी तरफ से एक छोटा खंजर निकाला और उस पर बार-बार वार किया।
शव को नीचे गिराकर प्रहलाद होलिका पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन होलिका ने धनुष उठाया और उसका निशाना उसके चेहरे पर साध दिया। 'हिलो मत। मैं तुम्हें मारना नहीं चाहती। अपने पीछे देखो।'
प्रहलाद हिचकिचाते हुए पीछे मुड़ा। विद्रोही पहरेदारों के शवों के पास अंधका और कालनेमी खड़े थे; धृति और आसा कहीं नजर नहीं आ रहे थे।
मुझे लगता है तुम्हारे दोस्तों ने तुम्हें छोड़ दिया है।
‘अंधका यहाँ है।’ उसने होलिका की ओर चुनौती भरे लहजे में देखा।
‘वह हमारे परिवार का हिस्सा है। हमारा परिवार।’
प्रहलाद ने पीछे से एक हल्की हंसी सुनी और मुड़कर देखा तो अंधका मन ही मन मुस्कुरा रहा था।
‘तुमने हमें धोखा दिया!’ प्रहलाद ने अविश्वास से कहा। ‘मुझे लगा था कि तुम साम्राज्य के खिलाफ हो।’
अंधका ने सिर हिलाया। 'नहीं भाई - तुमने हमें धोखा दिया।'
‘तुम्हें तो हमेशा से यही पता था,’ प्रहलाद ने होलिका की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘मैं तुम्हारे हाथों मारे जाने की बजाय खुद को मारना ज्यादा पसंद करूंगा।’
उसकी आँखों में नरमी आ गई। 'मैं तुम्हें मारना नहीं चाहती, प्रहलाद।' और वह उसके व्यवहार में आए बदलाव को देख सकता था। 'मेरे पास वह शक्ति नहीं है। लेकिन तुम जानते हो किसके पास है?'
'कौन?'
उसने कहा, 'तुम्हारे पिता, और वो जल्द ही यहाँ आने वाले हैं।'

27

नरसिंह

उसे याद नहीं था कि उसकी गिरफ्तारी के बाद से कितने दिन बीत चुके थे।
जब वह अपनी संक्षिप्त बेहोशी से जागा, तो उसने जहाज के नीचे बनी कोठरी के बंद दरवाजे देखे। उसने गोलाकार खिड़की से बाहर देखा तो उसे दूर-दूर तक पानी ही पानी दिखाई दिया, बस लहरें और आसमान ही आसमान, जहाँ तक नज़र जाती थी। वह कमज़ोर महसूस कर रहा था इसलिए फिर सो गया। जब वह जागा, तो उसे शहर के द्वार की ओर घसीटकर ले जाया गया और एक दूसरी कोठरी में कैद कर दिया गया। वह हिरण्य से दोबारा नहीं मिला था, और न ही मिलना चाहता था। उसने कभी भी असुर राजा के उस क्रोध का सामना नहीं किया था जो हिरण्य उसके प्रति रखता था। हालांकि, यह बात समझ में आती थी। नर के कारण हिरण्य पहले ही सदमे में था, और अगर उसे पता चलता कि अनुह्रद की मृत्यु के पीछे भी नर का हाथ है... तो इससे होने वाली तबाही की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।
नारा ने अपनी कोठरी में चारों ओर उदास निगाहों से देखा। छत में एक दरार से ही रोशनी आ रही थी। कालकोठरी में कैदियों से ज़्यादा पहरेदार थे, शायद इसलिए कि वे नारा की बहादुरी को जानते थे। अपने त्रिशूल के बिना भी, जो उसने जहाज़ पर खो दिया था, और अपने पंजों के बिना भी, जो लड़ाई के दौरान टूट गए थे लेकिन जल्द ही फिर से उग आएंगे, वह एक दुर्जेय प्रतिद्वंद्वी था। बगल वाली कोठरी से एक कैदी ने फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम खास हो।'
‘तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?’ नारा ने दीवार से टेक लगाकर पूछा, उस आदमी का चेहरा देखने की उम्मीद में, लेकिन असफल रही।
‘उन्होंने तुम्हारे लिए ये सुरक्षा उपाय किए हैं। क्या तुम मजबूत हो?’ ‘मुझे नहीं पता कि मैं क्या हूँ।’ उसने अपना सिर हिलाया। ‘मैं बस इतना जानता हूँ कि मैं पछतावे से भरा हुआ इंसान हूँ।’
मैं भी ऐसा ही हूँ।
'आपको क्या हुआ?'
‘बहुत सी चीजें। हे भगवान! बहुत सी चीजें,’ वह हँसते हुए बोला। ‘क्या कोई महिला आपका इंतजार कर रही है?’

'इंतजार करने से ज्यादा, मैं उसके लिए यही चाहती हूं कि वह मेरे बिना जी सके और खुश रहे।'
‘मुझे यकीन है कि आप ऐसा करते हैं,’ उस आदमी ने नरमी से कहा।
वह नहीं चाहती थी कि मैं यहां आऊं।
‘तो फिर तुमने ऐसा क्यों किया?’
नारा रुक गया। वह किसी अजनबी को अपनी योजना के बारे में नहीं बताना चाहता था। 'मुझे यहाँ लाया गया है। मैं अच्छा आदमी नहीं हूँ, और साम्राज्य यह जानता है।' उसके सिर पर बाल नहीं थे। इससे भी बुरा, वे उससे छीन लिए गए थे। ठीक उसी क्षण, उसे नग्न और घृणित महसूस हुआ।
उस व्यक्ति ने अचानक कहा, 'जो मरता है, वही पुनर्जन्म लेता है।'
नारा ने उसकी ओर मुड़कर पूछा, 'तुम ऐसा क्यों कहोगे?'
अजनबी ने कहा, “हम यहाँ अपने जीवन की सबसे बुरी स्थिति में हैं, इस गटर में, इस दुर्गंध में जी रहे हैं और अपनी आपसी गुमनामी में सुकून ढूंढ रहे हैं। हम अभी मर चुके हैं। लेकिन हमारा पुनर्जन्म होगा।”
‘किस रूप में?’
उन्होंने आत्मविश्वास से भरे और निर्णायक स्वर में कहा, 'वीर, भगवान विष्णु के अनुयायी।'
‘भगवान विष्णु? क्या आप भक्त हैं?’ नारा ने उत्सुकता से पूछा।
'हाँ मैं हूँ।'
‘मुझे बताओ, क्या भगवान विष्णु ने तुम्हारे लिए यह योजना बनाई थी?’ नारा ने दांत भींचते हुए कहा। ‘क्या तुम्हें लगता है कि वह चाहते थे कि हमारे साथ ऐसा हो?’
उसके पास सबके लिए एक योजना है।
‘अरे! मुझे लगता है कि वह हमारी तकलीफों का आनंद ले रहा है,’ नारा ने कड़वाहट से कहा। ‘वह एक क्रूर व्यक्ति है।’
'सिंह के मुंह से निकले नासमझी भरे शब्द।'
उसका खून जम गया। 'तुम्हें कैसे पता चला?'
‘तुम्हारी दाढ़ी। यह एक बहुत ही विशिष्ट रंग में बढ़ रही है – मानव की दाढ़ी से बिलकुल अलग।’
नारा ने अपनी दाढ़ी को छुआ और सहमति में कंधे उचका दिए। यह आसानी से पहचाना जा सकता था।

‘क्या भगवान विष्णु ने सिंहों को अपने अनुयायी बनने और अपनी मातृभूमि में धर्म का पालन करने के लिए नहीं बनाया था?’
‘खैर, समय लोगों को बदल देता है,’ नारा ने कहा। ‘मैं सही का अनुसरण करती हूं।’
'मुझे आप पर विश्वास है, लेकिन भगवान विष्णु पर नहीं।'
नारा अजनबी की आवाज में आरोप सुन सकती थी। 'क्या ऐसा है?'
अजनबी ने कहा, “हम इसलिए जन्म लेते हैं क्योंकि एक अच्छा इंसान कभी मरता नहीं। उसे कुचला जा सकता है, तोड़ा जा सकता है, यातना दी जा सकती है, लेकिन वह कभी पूरी तरह से अक्षम नहीं हो सकता क्योंकि उसे हमेशा भगवान विष्णु का आशीर्वाद प्राप्त होता है। एक अच्छा इंसान अमर होता है।”
लेकिन अच्छे लोग अक्सर मर जाते हैं और बुराई जीवित रहती है। देखो असुर कैसे जीत रहे हैं।
मृत्यु अंत नहीं बल्कि मात्र एक विराम है। अक्सर, हम मानते हैं कि मृत्यु के बाद हमारा अस्तित्व समाप्त हो जाता है, लेकिन वास्तव में हम अंततः एक नए व्यक्ति बन जाते हैं। भगवान विष्णु ने मरने से पहले कहा था कि जब संसार सबसे अंधकारमय होगा, जब बुराई विजय प्राप्त करने लगेगी, तब वे लौटेंगे। वे लौटकर धर्म के लिए, अराजकता के विरुद्ध व्यवस्था के लिए संघर्ष करेंगे। ‘अवतार।’ नारा का हाथ अनायास ही उसकी छाती पर फिर गया जहाँ अभी भी श्रीवत्स का चिन्ह नहीं था, वह चिन्ह जो यह बताता कि वह एक अवतार है।
लेकिन इंद्र को नारा पर इतना गहरा विश्वास था कि वह निश्चित रूप से एक अवतार बनेगा, भले ही भगवान रुद्र ने उन्हें एक रहस्य बताया था - कि अवतार को कभी भी इस भूमि पर कदम नहीं रखने देना है।
फिर भी, नारा ने ऐसा किया था। शायद मैं अवतार नहीं हूँ। शायद इंद्र गलत थे, उसने सोचा। 'कोई कैसे जान सकता है कि वह अवतार है? मेरा मतलब है...' वह हिचकिचाया।
अजनबी ने आह भरी और कुछ देर सोचने के बाद जवाब दिया, 'मेरा मानना है कि व्यक्ति अपने कर्मों से ही अवतार बनता है। और कर्म जीवन में एक बार नहीं किए जा सकते; वे निरंतर होने चाहिए। कोई भी व्यक्ति एक अच्छा कर्म करके अच्छा होने का दावा कर सकता है, लेकिन लगातार सही काम करके महान व्यक्ति बनना कहीं अधिक कठिन है। और यह मुश्किल है, क्योंकि गलत काम करने से आसान कुछ नहीं है।'

‘तुम्हें इसके बारे में इतनी जानकारी कैसे है? तुम कौन हो?’ नारा ने पूछा। लेकिन इससे पहले कि उसे कोई जवाब मिलता, दो गार्ड उसके दरवाजे के पास से गुजरकर अजनबी की कोठरी की ओर चले गए।
उनमें से एक ने कहा, 'भगवान हिरण्यकश्यप दर्शन करना चाहते हैं।'
अजनबी अंधेरे से बाहर निकला और पहरेदारों द्वारा बांधे जाने दिया। ले जाने से पहले उसने नारा की ओर देखा। चौंककर सिंह ने महसूस किया कि यह किसी पुरुष का चेहरा नहीं, बल्कि लगभग चौदह साल के एक दुबले-पतले लेकिन मजबूत लड़के का चेहरा था, मानो उसने बहुत कुछ झेला हो।
जब वे जाने लगे तो लड़के ने कहा, 'आपको मुझे बांधने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। मैं भागूंगा नहीं। मैं अपने पिता से मिलने के लिए उतना ही उत्साहित हूं जितना कि वे होते।'
पिता?
नारा की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। कश्यपुरी की अपनी पूरी यात्रा के दौरान वह जिस व्यक्ति से मिलना चाहता था, वह ठीक बगल वाली कोठरी में मौजूद था - प्रहलाद।

28

हिरण्यकश्यप

‘क्या तुमने उसे ढूंढ लिया?’ हिरण्य ने होलिका को देखते ही पूछा।
'हां, हमने किया, भाई,' उसने जवाब दिया और उसके पीछे-पीछे उसके कार्यालय में चली गई।
‘वह कैसा है?’ हिरण्य ने चिंता से उसकी ओर देखा।
‘वह ठीक है। वह रास्ते में है।’
लेकिन वह जेल में क्यों था?

‘क्योंकि,’ वह रुक गई, मानो उसे बोलने में कठिनाई हो रही हो, ‘क्योंकि वह एक अपराधी है।’
हिरण्य पीछे झुक गया। वह कई दिनों से यात्रा कर रहा था और उसका शरीर थका हुआ महसूस कर रहा था। वापसी की यात्रा के दौरान वह लगभग पूरी तरह जागा रहा, क्योंकि उसने नागलोक में अपने सैनिकों को तैनात किया और अंततः किले पर कब्ज़ा कर लिया। उसका अगला और अंतिम गंतव्य देवलोक था, जहाँ इंद्र विश्राम करते थे। और वह इस समस्या से निपटने के बाद उस पर कब्ज़ा कर लेगा। थकान की जगह क्रोध ने उसे पुकारते हुए कहा, 'वह मेरा पुत्र है। उसे आज़ाद होना चाहिए।'
होलिका ने सरल शब्दों में कहा, 'तुम उसे रिहा कर सकते हो।'
‘कैसे?’ हिरण्य ने पूछा।
होलिका थोड़ी देर रुकी और बोली, 'मैं कहूंगी कि उसे सुधारो, लेकिन उसे मारो मत।'
बिल्कुल एक सच्ची चाची की तरह बात की। वह मुस्कुराया। 'मैंने इस बारे में सोचा है और अगर वह अपनी गलती मान लेता है तो मैं उसे माफ कर दूंगा।'
उसने सिर हिलाया और मुस्कुराते हुए जवाब दिया, ‘भाई, तुम्हें फिर से देखकर अच्छा लगा। नागलोक पर विजय प्राप्त करके तुमने वाकई कमाल कर दिया है।’ वह आगे बढ़ी और हिरण्य को कसकर गले लगा लिया।
‘मैंने वरुणा को मार डाला,’ उसने उसके कान में फुसफुसाया।
'गद्दार को यही मिलना चाहिए था।'
और मुझे कयाधु का हत्यारा मिल गया।
‘इंद्र?’ उसने अपनी भौहें ऊपर उठाईं।
उसने सिर हिलाया। 'जिस आदमी ने उसे मारा था, वह सिंह जाति का है। अपनी उम्र के हिसाब से काफी ताकतवर है।'
और आप उसके साथ क्या करने की योजना बना रहे हैं?
‘मुझे नहीं पता। मैं उसे मरने नहीं दूंगा।’ उसने धीरे से अपना सिर हिलाया। उसने अभी-अभी एक जंगली जानवर को पकड़ा था और उसके साथ खेलने के लिए पूरी तरह तैयार था।
'मैंने शुरू में उसकी जाति के सभी लोगों की हत्या करने की योजना बनाई थी, क्योंकि वे मेरे जीवन का अंत हैं।'

हिरण्य ने उसे अपनी यात्रा, अपने अजेय कवच के नियमों और उस अंतिम शत्रु के बारे में बताया था जिसका उसे सामना करना पड़ेगा।
‘क्या यह कैदी वही दुश्मन हो सकता है?’
‘मैं उसे ऐसा नहीं होने दूँगा,’ हिरण्य दहाड़ा और होलिका सहम गई। ‘मैं नरसिम्हा के सभी लोगों को, उसके सभी आदमियों को, उसके सामने मार डालूँगा। मैं सभी सिंहों को लाकर उसके सामने सूली पर चढ़ा दूँगा, इससे पहले कि मैं उसे मेरी पत्नी की हत्या के लिए सूअर की तरह चीर दूँ।’ उसने दाँत पीस लिए, उसके अंदर भयंकर क्रोध उबल रहा था।
होलिका ने कहा, 'मैं आपको सलाह दूंगी कि आप इसे अभी करें, वरना आप उसे खोने का जोखिम उठाएंगे।'
‘धैर्य से लिया गया बदला अक्सर त्वरित हत्या से कहीं अधिक संतोषजनक होता है। लापरवाही तो एक असफल व्यक्ति का प्रयास है,’ उसने उपहास उड़ाते हुए कहा। दीवार से टेक लगाकर उसने आगे कहा, ‘क्या तुम्हें डायरी में कुछ मिला?’ हिरण्य ने उसके चेहरे पर घबराहट के कुछ संकेत देखे जब उसने घूंट भरा। ‘मैं एक बुरा इंसान रहा हूँ, है ना भाई?’
‘तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?’ उसने पूछा। ‘क्या तुमने… पत्रिका में कुछ पढ़ा है?’
उसने सिर हिलाया। 'डायरी में केवल उसकी निजी कहानी है, उस समय तक जब उसे फांसी दी जाने वाली थी। इसके अलावा कुछ नहीं।'
उसने सिर हिलाया। 'तुमने उसे कैसे पकड़ा?'
‘मेरी मदद से,’ उसके कार्यालय में अंधेरे से एक आवाज आई।
हिरण्य चौंक गया और उसने अपना साधारण लोहे का हथियार निकाल लिया क्योंकि उसके पास ब्रह्मास्त्र नहीं था। उसके सामने अंधक खड़ा था, ठीक वैसे ही जैसे उसने उसे आखिरी बार देखा था।
‘कैसे… रुको… क्या? तुम ज़िंदा हो?’
अंधका मुस्कुराया। 'जी हां, मैं हूं, मेरे स्वामी।'
हिरण्य ने उसे गले लगाने की कोशिश की लेकिन रुक गया, क्योंकि वह जानता था कि अंधका को शारीरिक संपर्क पसंद नहीं था।
‘तुम इस तरह क्यों छिप रही थी?’ होलिका की ओर मुड़कर उसने पूछा, ‘क्या तुम्हें पता था?’

उसने अपना सिर हिलाया और उदासीनता से कहा, 'वह मुझे चौंकाना कभी बंद नहीं करता।'
‘मैं बस अपने पसंदीदा चाचा के साथ थोड़ा मज़ा करना चाहता था,’ अंधाका ने हंसते हुए कहा।
'बिल्कुल,' हिरण्य ने खुशी से मुस्कुराते हुए कहा, उसे इस बात की बहुत खुशी थी कि उसके परिवार के सदस्य छिपने की जगह से बाहर आ रहे थे।
होलिका ने उसे सारी घटना बताई और यह भी बताया कि अंधका ने उन्हें कैसे बचाया था।
‘सोनीतपुर को खोने के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।’ अंधका ने सिर झुकाया। ‘और अनुहरद की रक्षा न कर पाने के लिए भी क्षमा चाहता हूँ।’
‘तुमने मेरे एक पुत्र को वापस लाकर उसकी रक्षा की है, इसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ। जहाँ तक सोनितपुर की बात है, वह गढ़ केवल पशुपतास्त्र के अस्तित्व में रहने तक ही उपयोगी था। उसके नष्ट हो जाने के बाद, उत्तर में डटे रहने का हमारे पास कोई कारण नहीं रह गया,’ हिरण्य ने कहा।
‘उसे वापस ला रहे हो? अपने बेटे को?’ उसने हैरानी से पूछा।
‘प्रहलाद।’
“लेकिन मुझे डर है कि अगर मैं यह कहूँ कि वह अब आपका बेटा नहीं है, तो कहीं मैं उद्दंड न लगूँ, महाराज,” उसने कहा।
हिरण्य ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'और तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?'
‘वह तुम्हारे खिलाफ हो गया है। वह साम्राज्य और उसके आदर्शों से क्रोधित है। उसने शंद की हत्या तक कर दी, यह दावा करते हुए कि दुनिया को असुरों से मुक्त किया जाना चाहिए,’ अंधका ने कहा।
एक पल के लिए हिरण्य एकदम स्थिर खड़ा रहा, फिर कुर्सी पर भारी मन से बैठ गया और दीवार को निःसंकोच देखने लगा। 'क्या तुम्हें यकीन है कि उसने ही शैंड को मारा है?'
‘सिर्फ द्वेषवश, यह दिखाने के लिए कि वह असुरों के खिलाफ था।’
‘लेकिन वो मेरा बेटा है!’ हिरण्य गुस्से से भड़क उठा, उसकी आवाज दीवारों से टकराकर गूंज उठी और उसने मेज पर मुक्का मारा। उसने गहरी सांस ली और अपना सिर पकड़ लिया। ‘मैं क्या करूँ? मैं उसे मौत की सजा नहीं दे सकता।’
‘मेरे पास एक विचार है,’ अंधका ने खांसते हुए कहा। ‘क्या मैं आपको एक कहानी सुनाऊं?’

हिरण्य ने उत्तर नहीं दिया, लेकिन अंधक ने शुरुआत कर दी।
‘यायाति नाम का एक राजा था। वह बहुत ही रंगीन मिजाज का राजा था, जिसकी दो पत्नियां थीं और दोनों से एक-एक पुत्र था। वह एक पत्नी को हद से ज्यादा प्यार करता था और दूसरी की परवाह नहीं करता था। दूसरी पत्नी, अकेली और उपेक्षित, अपने पिता से शिकायत करने लगी, जिसने यायाति पर श्राप दिया कि वह बूढ़ा हो जाएगा और कभी अपनी जवानी का आनंद नहीं ले पाएगा।’
वह कार्यालय के गलियारे में धीरे-धीरे टहलते हुए बोले, “श्राप ने ययाति को कमजोर कर दिया था और वे शासन करने में असमर्थ हो गए थे। लेकिन श्राप से बचने का एक उपाय था, एकमात्र उपाय। वे इसे अपने किसी पुत्र को दे सकते थे। लेकिन उपेक्षित पुत्र यदु ने द्वेषवश उन्हें अस्वीकार कर दिया। तब राजा अपने धर्मात्मा पुत्र पुरु के पास गए, जिसने श्राप स्वीकार कर लिया और वृद्ध हो गया। ययाति ने एक सुखी जीवन व्यतीत किया, जो गौरव और विजयों से भरा था, और उन्होंने अपने राज्य का विस्तार किया। इन सबके लिए, उन्होंने अपने इकलौते प्रिय पुत्र को एक भयानक श्राप देकर बलिदान कर दिया।” हिरण्य ने अपने जबड़े भींच लिए। 'अंधक, तुम क्या कहना चाह रहे हो?'
'हे मेरे स्वामी, आप इस समय एक चौराहे पर खड़े हैं। या तो आपको प्रहलाद को मारकर विश्व के सबसे शक्तिशाली योद्धा बनना होगा और अपनी विजय यात्रा को सदा के लिए जारी रखना होगा, या फिर एक पिता के प्रेम में स्वयं को खो देना होगा, प्रहलाद को अपनी मनमानी करने देना होगा जबकि आप शापित ययाति की तरह धीरे-धीरे नष्ट होते चले जाएंगे।'
हिरण्य ने होलिका की ओर देखा, जो चुप थी लेकिन स्पष्ट रूप से अंधक के विचार से सहमत नहीं थी। सन्नाटा दरवाजे पर दस्तक से टूटा। होलिका ने दरवाजा खोला तो सामने एक रक्षक खड़ा था, जिसने कहा, 'महामहिम, प्रहलाद आ गए हैं। जैसा आपने अनुरोध किया था, वे भोजन कक्ष में प्रतीक्षा कर रहे हैं।'
‘भोजन कक्ष?’ हिरण्य ने अपनी भौंहें उठाईं।
‘लड़का भूखा था। मैंने सोचा कि आपसे बात करने से पहले मैं उसे कुछ खाना दे दूं,’ होलिका ने कहा।
‘अगर वह आ गया है,’ हिरण्य ने ऊँची आवाज़ में कहा, ‘तो मैं अभी उसके बारे में फैसला करूँगा।’
होलिका ने अपनी आंखें बंद कर लीं और प्रार्थना की कि उसका फैसला बुरा साबित न हो।

29

चेनचेन

हालात अप्रत्याशित मोड़ ले चुके थे। हालांकि मातृका और चेंचेन जानते थे कि स्कंद विष्णु के अनुयायियों, विष्णुसेना के साथ थे – जो असुर साम्राज्य को अपरंपरागत तरीकों से समाप्त करने पर तुली हुई एक लोकप्रिय विद्रोही सेना थी – लेकिन उन्हें उनकी सटीक स्थिति का पता नहीं था। अफवाह थी कि विद्रोही असुरों की राजधानी कश्यपुरी के पास डेरा डाले हुए थे।
यह जानने के लिए, चामुंडा ने उनसे धोखेबाज नामुची को ढूंढने को कहा था। चेनचेन ने उसके बारे में सुना था - वह एक लोक गायक था, एक घुमंतू यात्री था जिसने कई युद्धों में अलग-अलग पहचानों से काम किया था, कभी सैनिक के रूप में तो कभी जासूस के रूप में। नामुची एक सर्वज्ञानी धोखेबाज था जो लोगों पर नज़र रखता था और जानकारी इकट्ठा करने के बदले पैसे लेता था। हर चीज़ के बारे में जानकारी।
यक्षलोक के बाहरी इलाके से गुजरते समय चामुंडा ने दक्षिण की ओर जाते हुए नमुची को खोजने का सुझाव दिया था। उसे आखिरी बार पास के ही किसी गाँव में देखा गया था। उसने दावा किया था कि नमुची को पता हो सकता है कि विष्णुसेना कहाँ है।
ब्राह्मणी इसके खिलाफ थी जबकि पार्वती इसके पक्ष में थीं, क्योंकि इससे वह अपने बेटे के और करीब आ सकेंगी। चेनचेन ने किसी व्यक्ति में इतनी भूख कभी नहीं देखी थी। शायद, जब उसके बच्चे होंगे तो उसे भी ऐसा ही महसूस होगा। उसने हमेशा दो बच्चों की कल्पना की थी - एक लड़का और एक लड़की। और वह एक तीसरे बच्चे को गोद ले लेगी। बच्चों के बारे में सोचकर वह हमेशा भावुक हो जाती थी क्योंकि युद्धग्रस्त देश में इसका मतलब उन्हें खतरे में डालना ही था।

चेनचेन को अपने शिविर में आए हुए एक दिन हो गया था कि चामुंडा अपने पैंथर से उतरकर वापस लौटी।
चामुंडा ने कहा, “मैंने नामुची नाम के एक चालाक चोर के बारे में पूछताछ की, जिसकी एक आंख ठीक थी। कई लोग नहीं जानते थे कि मैं किसके बारे में बात कर रहा हूं, लेकिन एक ब्राह्मण पुजारी को एक आंख वाले चोर की सेवा करने की बात याद थी। शायद वही है।”
‘तो वह यहाँ था?’ ब्राह्मणी ने पूछा।
चामुंडा ने कहा, 'बेशक वह यहाँ था। मुझे याद है कि मैंने इसके बारे में उन ग्रामीणों में से एक से सुना था जिनकी हम मदद कर रहे थे।'
चेनचेन को यह जगह बिल्कुल पसंद नहीं थी। ठंडी, हवादार जगहों से रेत से भरी इस जगह पर आकर उसे इतनी उदासी का सामना करना पड़ेगा, इसकी उसने कभी उम्मीद नहीं की थी। उसे पता था कि गर्मी, उमस और रेत की भरमार से परेशानी होगी, लेकिन इस भारीपन से नहीं। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसे इतना दुख होगा। ‘लेकिन बुरी खबर यह है कि उसे किंपुरुषों में से एक ने अगवा कर लिया है।’ चामुंडा ने आह भरी।
‘किंपुरुष?’ चेंचन ने पार्वती से पूछने के बजाय ब्राह्मणी की ओर मुड़कर पूछा, क्योंकि वे अभी भी बात नहीं कर रहे थे।
‘यह एक आदिवासी जाति है,’ ब्राह्मणी ने उत्तर दिया। ‘वे घोड़ों की पूजा करते हैं। उनके पास सबसे बेहतरीन और सबसे तेज़ घोड़े होते हैं जिन पर सवारी करना संभव है। देवों की अधिकांश घुड़सवार सेना किंपुरुष वंश की है। घोड़ों के साथ उनका एक विशेष संबंध है, और कुछ लोग कहते हैं कि वे उनकी भाषा बोलते हैं। लेकिन किंपुरुष तो अधिकतर देवलोक में ही तैनात थे, है ना?’ “हां,” चामुंडा ने उत्तर दिया, “लेकिन इन पुजारियों ने कहा कि ये लोग डाकू बन गए हैं। उनके दुश्मनों को उनके ठिकाने का पता चल गया था और उन पर घात लगाकर हमला किया गया। जो बच गए उन्होंने नामुची को पकड़ लिया और उसे श्वेत पर्वतों पर ले गए।” उसने धुंध से ढकी पहाड़ियों की ओर इशारा किया जो रेगिस्तानी बंजर भूमि से बिल्कुल अलग दिख रही थीं, इतनी सफेद कि वे एक अजीब सी आकृति लग रही थीं।
‘क्या हमें उसे बचाना होगा?’ दूसरी मातृकाओं में से एक ने पूछा। ‘किंपुरुषों ने अब तक उसे मार डाला होता।’

‘ये तो यातना देने वाले हैं।’ ब्राह्मणी ने सिर हिलाया। ‘जो इनके बारे में पुलिस को बताएगा, उसे सज़ा देने में ये काफी समय लेंगे। खैर, हमें अब चलना चाहिए। लगभग रात हो चुकी है और हम इन्हें पकड़ सकते हैं या उसे रिश्वत देकर छुड़ा सकते हैं। हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे।’
सभी लोग अपने हथियार तैयार करने लगे। चेंचेन ने पार्वती की टकटकी भरी निगाहों को अनसुना कर दिया। जब वह इस पूरे मिशन में अपनी भूमिका के बारे में सोच रही थी, तभी ब्राह्मणी उसके पास आई और उसे एक लोहे की तलवार सौंप दी।
‘तुम्हें इसकी जरूरत पड़ेगी।’ वह मुस्कुराई।
लेकिन... लेकिन मैं तो डॉक्टर हूँ। आपको नहीं लगता कि मैं इस अभियान में शामिल हो सकता हूँ?
‘अच्छा, तुम यहाँ हो और हमें सबकी मदद की ज़रूरत है क्योंकि हम डाकुओं से निपट रहे हैं। मुझे लगता है कि तुम दिल से एक योद्धा हो।’
चेनचेन ने तलवार की ओर देखा। उसने तलवार से आज तक किसी को चोट नहीं पहुंचाई थी, सिवाय...
उसके पति।
किसी की हत्या करके बच निकलना और पकड़े न जाना गलत था।
क्या अब मैं सही कारणों से ब्लेड का इस्तेमाल कर सकता हूँ?
वह हिचकिचाते हुए मुस्कुराई। 'ठीक है।'

वे पहाड़ों में एक विशाल घाटी में खड़े थे जिसका ढलान नीचे की ओर था। वे किंपुरुषों को शराब पीते और अपने बैंड के कुछ सदस्यों द्वारा बजाए जा रहे संगीत पर नाचते हुए देख सकते थे। दर्जनों घोड़े पास ही खड़े थे, उनके बाल इतने चमकदार और मांसपेशियां इतनी मजबूत थीं जितनी चेनचेन ने पहले कभी नहीं देखी थीं।
उनके शिविर तक पहुँचने के दो रास्ते थे। एक मुख्य मार्ग था जहाँ पहरेदार तैनात थे, जो सतर्क थे और लंबी, मुड़ी हुई तलवारों से लैस थे। मशालों से पूरा इलाका रोशन था, जिससे अचानक हमले की कोई संभावना नहीं थी।

दूसरा रास्ता झील को तैरकर शिविर के पीछे उस जगह तक जाना था जहाँ नामुची को रखा गया था। इतनी दूरी से उसका पिंजरा मात्र एक परछाई जैसा दिख रहा था। ‘ठीक है, मेरे पास एक योजना है,’ ब्राह्मणी ने कहा। मातृकाएँ एक घेरे में इकट्ठा हो गई थीं, जिनमें चेनचेन भी शामिल थी, जिसे तलवार से लदी कमरबंद पहनने के कारण कुछ अजीब सा महसूस हो रहा था। ‘मातृकाएँ मुख्य मार्ग से जाकर किंपुरुषों का ध्यान भटकाएँगी, जबकि तुम दोनों’ – उसने पार्वती और चेनचेन की ओर इशारा करते हुए कहा – ‘झील से तैरकर आओ और पिंजरा खोल दो। जैसे ही तुम यह कर लोगी, हम भी वहाँ से भाग जाएँगे। सब ठीक है?’
‘अगर कुछ गलत हो जाए तो क्या होगा?’ पार्वती ने पूछा।
‘हम उन सभी से लड़ेंगे और उन्हें मार डालेंगे।’ ब्राह्मणी ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘उम्मीद है कि आज रात हमें हिंसा का सहारा नहीं लेना पड़ेगा।’ उन्होंने एकमत होकर सिर हिलाया और विपरीत दिशाओं में चले गए। चेनचेन चुपचाप पार्वती के पीछे-पीछे झील की ओर चल पड़ी।
‘अब तुम मुझसे बात नहीं करोगी?’ पार्वती ने पूछा।
'जी हां, मैं करूँगा, लेकिन केवल तभी जब आप मुझसे कोई प्रश्न पूछें।' मुझे पता है तुम गुस्से में हो, और मुझे तुम्हें बता देना चाहिए था। चेनचेन कुछ पल चुप रही। फिर धीरे से बोली, 'मैं तो वैसे भी आ जाती।'
लेकिन अगर आपने मना कर दिया तो? मैं यह जोखिम नहीं उठा सकता था। नृति से मिलने जाने से हर कोई डर जाएगा, लेकिन आप तो काफी बहादुर थीं।
चेनचेन ने बनावटी मुस्कान दी, लेकिन फिर कुछ नहीं बोली। वे झील तक पहुँचे और तैरने लगे। वह बहुत पहले तैर चुकी थी और पानी की गहराई के बारे में सोचना बंद करते हुए, अपने हाथों और पैरों को लय में चलाने की कोशिश कर रही थी। उसने शिविर की ओर देखा जहाँ मातृकाएँ संकट में फँसी हुई युवतियों का नाटक कर रही थीं, जो रास्ता भटक गई थीं और उन्हें सुरक्षा की ज़रूरत थी। किंपुरुष, जिनमें ज़्यादातर पुरुष थे, अपने शिविर में महिलाओं को देखकर स्पष्ट रूप से उत्साहित थे।
चेनचेन पार्वती से भी ज़्यादा तेज़ी से तैर रही थी, मानो कोई दौड़ लगा रही हो। गीले कपड़ों के कारण उसका वज़न बढ़ गया था और तेज़ी से चलना मुश्किल हो रहा था। फिर भी, वह पार्वती से कुछ ही पल पहले किनारे पर पहुँच गई। दोनों ने गहरी साँस ली और ज़मीन से बंधे सोए घोड़ों के पास से रेंगते हुए पिंजरे

की ओर बढ़ने लगीं। घोड़ों को जगाने से बचने के लिए, वे दबे पांव धीरे से पिंजरे तक गईं और तालों की जाँच करने लगीं।
अंदर तथाकथित असाधारण नमुची था, जिसका सिर गंजा था और एक आंख ठीक से काम कर रही थी। वह स्तब्ध और व्याकुल था। जब उसने चेनचेन और पार्वती को देखा, तो वह मुस्कुराया। चेनचेन को एहसास हुआ कि उसके दांत भी नहीं हैं।
‘धन्यवाद, धन्यवाद,’ उसने बिना यह पूछे कि वे कौन थे, बस इतना कहा। वह बस मुक्त होना चाहता था।
'मैं इसे फाड़कर खोल देती हूँ, तुम शिविर पर नज़र रखना,' पार्वती ने फुसफुसाते हुए कहा।
चेनचेन ने सिर हिलाया और कुछ गज की दूरी पर स्थित उस दृश्य को घूरने लगी जहाँ ब्राह्मणी गंदे किंपुरुषों को मोहित कर रही थी जो उन्हें शराब और भोजन भेंट कर रहे थे।
टकराना!
चेनचेन को ऐसा लगा जैसे उसका दिल सीने से निकाल लिया गया हो। उसने पीछे मुड़कर देखा तो पार्वती ने अपनी तलवार से पिंजरा तोड़ दिया था। इस आवाज से घोड़े जाग गए। वे जोर से हिनहिनाए और किंपुरुषों ने अपने-अपने घोड़ों की ओर मुड़कर देखा तो पाया कि दो स्त्रियाँ पिंजरा खोल रही हैं।
‘यह एक जाल है!’ एक डाकू चिल्लाया।
‘जाओ, जाओ!’ चेनचेन ने पार्वती पर चिल्लाया, जिसने नमुची को पकड़ लिया और झील की ओर दौड़ पड़ी।
जैसे ही चेनचेन उनके पीछे चलने लगी, उसने देखा कि मातृकाएँ किंपुरुषों से लड़ रही थीं, जिनमें से कुछ उनकी ओर आ रहे थे। उन्हें रोकने के लिए रुकने के बजाय, वह घोड़ों की ओर दौड़ी और उन्हें खोल दिया। शोर और हलचल से उत्तेजित होकर जानवर इधर-उधर भागने लगे और उनकी पूजा कर रहे किंपुरुषों को कुचलने लगे। चेनचेन ने मुड़कर देखा कि पार्वती और नमुची बिना किसी बाधा के तट पर पहुँच चुकी थीं। जैसे ही वह उनके साथ जाने के लिए आगे बढ़ी, अचानक उसे पीछे की ओर खींच लिया गया। वह लड़खड़ाकर गिर पड़ी।
डाकुओं में से एक भगदड़ से बच निकला था। जैसे ही उसने चेंचेन पर वार करने के लिए अपनी तलवार उठाई, पीछे से उसका सिर धड़ से अलग हो गया और गेंद की तरह उड़कर ज़मीन पर जा गिरा। चेंचेन ने अपने रक्षक की ओर देखा: वह पार्वती थी।

'धन्यवाद,' उसने मुस्कुराते हुए पार्वती का बढ़ाया हुआ हाथ पकड़ा और खुद को सीधा खड़ा किया।
और काफी समय बाद, उसे लगा कि उनके बीच सच्ची दोस्ती हो गई है। लेकिन तब तक नामुची तैरकर दूर जाने की कोशिश कर रही थी।
पार्वती ने कृतघ्नता से कहा, 'अहसानफरामोश!' फिर उन्होंने अपनी ओर आते किंपुरुषों की ओर देखा। 'तुम नमुची को ले आओ, मैं डाकुओं से निपट लूंगी।' चेनचेन ने सिर हिलाया और झील में छलांग लगा दी, नामुची की ओर तेज़ी से बढ़ने लगी। उसने अपनी तलवार पानी में छोड़ दी ताकि वह तेज़ी से तैर सके और जब वह नामुची के काफ़ी करीब पहुँच गई, तो उसने उसके सिर पर एक ज़ोरदार मुक्का मारा।
‘हिम्मत मत करना छोड़कर जाने की!’ उसने उसे पकड़ लिया और उसके सिर पर मारना शुरू कर दिया। ‘हिम्मत मत करना।’
‘ठीक है, माफ कीजिए, माफ कीजिए,’ उसने हांफते हुए कहा।
चेनचेन ने उसके बाल पकड़कर उसे घसीटते हुए दूसरे किनारे पर ले गई और उसे ज़मीन पर पटक दिया। वह छोटा, पतला-दुबला आदमी पाँच फीट से ज़्यादा लंबा नहीं था, लेकिन अब सिकुड़कर काँपते हुए वह बौना सा लग रहा था।
‘मुझसे क्या चाहती हो, औरत?’ उसने पूछा। ‘मुझे कुछ नहीं पता। मैं तुम्हें या तुम्हारे उन दोस्तों को नहीं जानती जिन्होंने मेरी मदद की।’
मैं जानना चाहता हूं कि विष्णुसेना कहां है।
‘यह जानकारी बहुत महंगी है।’
चेनचेन ने उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा और फिर उसकी नाक पर घूंसा घूंसा मारा। उसे एहसास हुआ कि पहली बार वह किसी को ठीक करने की बजाय उसे चोट पहुँचा रही है।
‘अब? क्या तुम्हें तुम्हारा भुगतान मिल गया, तुम कृतघ्न कीड़े?’
‘ठीक है, ठीक है, सिर्फ इसलिए कि तुमने मेरी मदद की,’ नामुची ने धीमी आवाज़ में कहा। ‘उन्होंने अपना ठिकाना बदल लिया है, पता नहीं कब से। मैं कुछ व्यापारियों को जानता हूँ जिन्होंने उनसे लेन-देन किया था, उन्हें खाना और दूसरी ज़रूरी चीज़ें दी थीं। उन्होंने मुझे उस जगह के निर्देशांक दिए हैं। मैं उन्हें तुम्हारे लिए लिख सकता हूँ।’
चेनचेन मुस्कुराई। 'धन्यवाद।'

‘एक और व्यक्ति था, एक अंधा आदमी। मैंने उसे जगह बता दी तो उसने मुझे भेड़ियों के सामने फेंक दिया। लेकिन विष्णुसेना वहां से आगे बढ़ चुके थे,’ नमुची ने कहा। ‘मुझे उम्मीद है कि आप ऐसा नहीं करेंगे।’
‘क्या तुम्हें कोई भेड़िये दिखाई दिए या कोई आवाज़ सुनाई दी?’ चेनचेन ने पूछा। ‘क्या यह अंधका था?’
मुझे नहीं पता। मैं नाम नहीं पूछता।
'ठीक है,' उसने आह भरी और मुस्कुराते हुए महसूस किया कि चांदनी रात में, उसकी साहसी भावना, जो इतने लंबे समय से कैद थी, आखिरकार मुक्त हो गई थी।

30

प्रहलाद

उसने ऐसे खाया जैसे उसने पहले कभी खाया ही न हो। रोटी का एक टुकड़ा, मसली हुई सब्जियां और भुने हुए आलू उसके मुंह में भरे हुए थे, लेकिन जाहिर तौर पर इतना काफी नहीं था। उसने एक सेब उठाया और उसका एक बड़ा टुकड़ा तोड़ लिया। वह हमेशा अपने भोजन का अंत सेब के एक टुकड़े से करता था।
वह अब भी पहरेदारों से घिरा हुआ था। अगर वह भागने की कोशिश करता, तो शायद आज़ाद हो जाता। पर उसने ऐसा नहीं किया। वह कर ही नहीं सकता था। जंगल में उसे बासी और फफूंदी लगा खाना खाने को मजबूर होना पड़ा था, लेकिन यहाँ सब कुछ इतना स्वादिष्ट और बढ़िया था। उसे राजकुमार के रूप में अपना जीवन याद आ रहा था।
उसने अपने विचारों पर नियंत्रण रखा। जब वह एक आदर्श असुर होने के बजाय एक अच्छे इंसान होने के शिखर पर पहुँच चुका था, तो वह सांसारिक सुखों की ओर आकर्षित नहीं हो सकता था।

उसके हाथ अभी भी बंधे हुए थे और वह अपने मुंह में और खाना ठूंस रहा था तभी उसे तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी। वह कहीं भी अपने पिता के कदमों की आवाज़ पहचान सकता था। हर कदम में एक अलग ही गंभीरता थी, मानो वह ज़मीन पर ज़ोर लगा रहा हो।
प्रहलाद ने अपने पिता की ओर देखा, जो पीठ पीछे हाथ बांधे खड़े थे। उसने सोचा था कि जब वे आखिरकार मिलेंगे तो उसे शर्मिंदगी या अपमान महसूस होगा, लेकिन उसे गर्व महसूस हुआ। क्योंकि, पहली बार, वह गलत पक्ष में नहीं था। काले कुर्ते और सुनहरी धोती में, खुले बालों और नुकीली मूंछों वाले उसके पिता उससे कहीं अधिक लंबे थे। एक गहरी अनुभूति के साथ, प्रहलाद को एहसास हुआ कि उसने उन्हें कितना याद किया था। वह अपने पिता को गले लगाने के लिए बेताब था, लेकिन वे एक असुर सम्राट थे और प्रहलाद एक विद्रोही था जो उन्हें सत्ता से हटाना चाहता था। वे शत्रुओं के रूप में मिल रहे थे।
हिरण्य ने प्रहलाद के बंधे हुए हाथों को देखा और तुरंत एक सैनिक को उन्हें खोलने का निर्देश दिया।
जैसे ही उसकी सुन्न उंगलियों में रक्त संचार वापस आया, प्रहलाद ने अपनी कलाई पर पड़े गहरे लाल निशानों को देखा। दोनों पिता-पुत्र यह सोच रहे थे कि एक-दूसरे से क्या कहें, और उस क्षण सन्नाटा छा गया।
'खाना कैसा था?' हिरण्य ने असहज होकर पूछा।
‘यह… पुरानी यादों को ताजा करने वाला था।’
‘तुम बदल गए हो। तुम दिखते हो…’ हिरण्य ने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं। ‘ज़्यादा गंदा?’
‘बूढ़ा।’
‘कई महीने बीत गए।’ प्रहलाद ने सिर हिलाया। ‘यक्षलोक के लिए तुम्हारा अभियान कैसा रहा?’
वह रुका और अपने होंठ सिकोड़ लिए। 'तुम्हें आतंकवादियों के हाथों खोना उचित नहीं था।'
‘पिताजी, वे आतंकवादी नहीं हैं,’ प्रहलाद ने धीमी आवाज़ में कहा।
“जो कोई भी अपने चरमपंथी धार्मिक विचारों से राष्ट्रीय हित को खतरा पहुंचाता है, वह आतंकवादी है,” हिरण्य ने गरजते हुए कहा। “और अब तुम भी उनमें से एक हो।”

प्रहलाद ने अनमने ढंग से सिर हिलाया। 'मुझे पता है। क्या आप माफी की उम्मीद कर रहे हैं?'
हिरण्य ने दांत भींच लिए। 'मुझे लगता है कि तुम देना नहीं चाहते।'
'नहीं, मुझे इसका कोई पछतावा नहीं है,' प्रहलाद ने सेब का एक और टुकड़ा खाते हुए कहा।
क्या आपके आतंकवादी संगठन में प्रवेश करने के लिए उद्दंड होना एक पूर्व शर्त है?
‘पिताजी, वे आतंकवादी नहीं हैं,’ प्रहलाद ने अपना बेफिक्र लहजा छोड़कर जोर देकर कहा। ‘वे अच्छे लोग हैं और उनका मकसद नेक है।’
‘वह कारण क्या है? मेरे साम्राज्य को गिराना? क्या आपको लगता है कि यह इतना आसान होगा?’
'शायद नहीं, लेकिन यह इसके लायक होगा।'
‘तुम मुझसे इतने दुश्मन क्यों हो? मैंने ऐसा क्या किया है कि मुझे तुमसे इतनी नफरत हो, बेटे?’
‘कुछ नहीं। वास्तव में, आप एक महान पिता हैं। लेकिन आप एक अस्थिर शासक हैं। जनता सद्भाव चाहती है, युद्ध नहीं। आपके कठोर शासन के कारण उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।’
'शांति को ज़रूरत से ज़्यादा महत्व दिया जाता है, मेरा विश्वास करो। कोई भी हर समय शांत नहीं रह सकता।'
मैं शांति सुनिश्चित करूंगा।
'मुझे खत्म करने के बाद तुम असुर नाम के बिना शासन करोगे?'
'हां, मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि हम अपने जीवन के सबसे बेहतरीन दौर में जिएं।'
‘तुम भ्रम में हो, पर इसमें तुम्हारी क्या गलती है? तुम आसानी से प्रभावित हो जाते हो, तुम कमजोर हो और तुम अभी जवान हो।’ हिरण्य ने सिर हिलाया। ‘तुम्हारा मन बदलने में मुझे एक महीना लग जाएगा।’
‘पिताजी, मैं भले ही जवान हूँ, पर मूर्ख नहीं,’ प्रहलाद ने जवाब दिया। ‘एक बार जब यह मृत और खंडहर नगर असुरों के चंगुल से मुक्त हो जाएगा, तो इसकी दुर्गंध भी दूर हो जाएगी। मैं धर्म, न्याय और भगवान विष्णु की एक शांतिपूर्ण भूमि की स्थापना करूँगा। और यदि आप हमारे रास्ते में आए, तो मैं आपको रोक दूँगा क्योंकि पिताजी, मैं अब भोला नहीं रहा। मुझे प्रकाश

दिखाई दे रहा है। मुझे वह अच्छाई दिखाई दे रही है जो आप पर विजय प्राप्त करेगी।’
‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई अपने राजा से इस तरह बोलने की?’
क्योंकि मुझे ऐसा करना ही होगा।
हिरण्य ने मेज पर मुक्का पटका और प्रहलाद की आँखों में घूरते हुए कहा, 'मुझे अब लगने लगा है कि होलिका का तुम्हें मृत्युदंड देने का निर्णय सही था।'
‘तुम मुझे मार नहीं सकते,’ प्रहलाद ने आत्मविश्वास से कहा, ‘भगवान विष्णु मेरे साथ हैं।’
हिरण्य ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'सचमुच? वह कहाँ है?'
‘वह यहीं है। वह मेरे साथ है। वह तुम्हारे साथ है। वह बुरे से बुरे लोगों को भी चुनकर अच्छा बना देता है। मैं तो इसे स्वीकार करता हूँ, पर तुम नहीं। तुमने माँ की मृत्यु के दर्द के आगे घुटने टेक दिए, और उनका इस्तेमाल अपनी घिनौनी साजिशों, अपने विनाश को सही ठहराने के लिए किया। माँ ऐसा नहीं चाहती थीं,’ उसने गुस्से से भरी आँखों से कहा।
हिरण्य ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। इसके बजाय, उसने एक प्याले में शराब उंडेली और एक घूंट पी ली। प्रहलाद भयभीत हो गया। उसे लगा जैसे उसकी हड्डियाँ ठंडी पड़ रही हों, लेकिन उसे यह विश्वास भी था कि वह विजयी होगा। वह मरेगा नहीं। भगवान विष्णु उसके साथ थे।
‘ठीक है,’ हिरण्य ने सिर हिलाया, ‘तो ऐसा ही हो। मैं तुम्हें दूसरा मौका देना चाहता था, लेकिन अब हम परिवार नहीं रहे। दुर्भाग्य से, मैंने युद्ध में अपना बेटा खो दिया है। मेरे सभी बेटे। मेरे सामने एक काफ़िर खड़ा है और उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाएगा जैसा एक काफ़िर के साथ होना चाहिए। प्रहलाद, अधिकारियों की हत्या, मंत्री की हत्या के अपराधों के लिए—’ प्रहलाद ने सोचा, किस मंत्री के कहने पर मैंने शांड को वादे के मुताबिक घोड़े पर सवार होकर भागने दिया?
“अतिवाद को भड़काने और अपने राज्य के साथ गद्दारी करने के कारण, मैं तुम्हें मृत्युदंड देता हूँ,” हिरण्य ने घोषणा की।
जैसे ही पहरेदार प्रहलाद के चारों ओर जमा हो गए और उसे बांधने लगे, प्रहलाद ने हिरण्य की आंखों में पनप रही उदासी को देखा।

'आज विद्रोही को हाथी के पैरों तले कुचलकर सजा दी जाएगी,' हिरण्य ने आगे कहा।
प्रहलाद को लगा जैसे मौत का बर्फीला स्पर्श उसके गले को जकड़ रहा हो, तभी हिरण्य ने ठंडी मुस्कान के साथ उसके चेहरे से कुछ क्षण पहले तक मौजूद उदासी का हर निशान मिटा दिया।
देखते हैं कि भगवान विष्णु इसे रोक पाते हैं या नहीं।

31

नरसिंह

मुझे यहां से निकलना होगा।
वह उस मुकाम के बेहद करीब था जहाँ उसे इस समय होना तय था – प्रहलाद की रक्षा करना। लेकिन अब, प्रहलाद अपने पिता के पास चला गया था।
अभी क्या हो रहा है?
उसने अपनी कोठरी की सलाखों को पकड़ा और उन्हें अलग करने की कोशिश की, लेकिन वे ठोस लोहे की थीं। नारा को कुछ सोचना ही था। वह जानता था कि वह अच्छा आदमी नहीं है। उसने सही काम करने का इरादा किया था, लेकिन गलती से निगले गए जहर से अपनी जान बचाने के लिए वह इस व्यर्थ की खोज में फंस गया था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके साथ ये सब क्यों हो रहा है।
लेकिन अगर रास्ता सरल होता, तो कोई भी उस पर चल सकता था। कठिन कार्य तो दृढ़ संकल्प वाले, कभी हार न मानने वाले लोगों के लिए थे। और जिनके भाग्य उनके साथ थे, उनके लिए भी। कदमों की आहट सुनकर उसके कान खड़े हो गए। कदमों की आहट हल्की थी, किसी नर्तक की तरह, लेकिन साथ ही किसी ऐसे व्यक्ति की भी जो जानता था कि उसके कदमों का कितना महत्व है।
‘कौन है?’ नारा ने पुकार कर पूछा।
‘और कौन?’

लाल पट्टी बांधे, गंजे सिर वाले अंधका को देखकर नारा का खून जम गया। 'मैं...मैं...'
'हां, तुमने मुझे मार डाला था, फिर भी मैं यहां हूं,' उसने हंसते हुए कहा। 'कैसे?'
‘लंबी कहानी है।’ अंधका मुस्कुराई। ‘कैसी हो ना, नारा?’
'आप मरा नाम जानते हो।'
‘बिल्कुल, मैं करता हूँ। जब मुझे पता चला कि यहाँ एक सिंह है, तो मुझे जिज्ञासा हुई। मैं खुद देखना चाहता था कि वह तुम हो या कोई और। सिंह एक दिलचस्प जाति हैं, खासकर तुम, जो मुझे जान से मारने के बहुत करीब आ गए थे। लेकिन तुम नाकाम रहे,’ वह रुका, उसकी आवाज़ में हल्की सी कर्कशता आ गई। ‘यह आश्चर्यजनक है कि कैसे भाग्य हमें उन लोगों से मिलवाता है जो मायने रखते हैं। मुझे जिज्ञासा हो रही है।’
‘तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हारी जिज्ञासा शांत करने वाली कठपुतली नहीं हूँ,’ नारा ने गुस्से से कहा।
‘अरे वाह, आप तो इससे कहीं बढ़कर हैं।’ अंधका मुस्कुराया और मन ही मन हंसने लगा। उसकी पतली, स्त्री जैसी आवाज़ सुनकर नारा के रोंगटे खड़े हो गए। उसकी गर्दन में सिहरन दौड़ गई। ‘आप तो हीरो हैं।’
नारा ने सिर हिलाया। 'नहीं, मैं ऐसा नहीं हूँ। मैंने बहुत से निर्दोषों को मारा है। लेकिन मैं खुद को सुधारना चाहता हूँ।'
‘तुम्हारे मन में जो सही लगता है, उसी के नाम पर,’ अंधका ने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘सही होना व्यक्तिपरक होता है। इसे याद रखना, वरना तुम हमेशा अच्छे इंसान बनने की कोशिश में मूर्ख बने रहोगे, जबकि शायद तुम पहले से ही अच्छे इंसान हो।’
ये शब्द नारा पर पत्थर की तरह गिरे।
‘मुझे बताओ, तुम यहाँ क्यों हो?’ अंधका ने पूछा।
'यह जानने के लिए तुम्हें मेरी लाश पर से होकर गुजरना पड़ेगा।'
‘शायद!’ अंधाका खिलखिलाकर हंस पड़ी। ‘ठीक है, तुम मुझे न बताओ, लेकिन अगर तुम बताओगी तो मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ।’ अंधाका ने एक चाबी निकाली। ‘यह मुझे वार्डन से मिली है। मैंने सोचा था कि मैं अपने काम के लिए कुछ… स्वयंसेवकों को जुटा लूँगी, लेकिन अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें भी रिहा करवा सकती हूँ।’

'आपको ऐसा क्यों करना होगा?'
क्योंकि तुम बाहरी दुनिया में ज़्यादा दिलचस्प हो। मेरे चाचा तुम्हारी रीढ़ की हड्डी तोड़ना चाहते हैं, इससे मुझे कोई खास मतलब नहीं है। मैं चाहता हूँ कि उन्हें तकलीफ हो, चाहे अपने बेटे की बेवजह हत्या करने के लिए हो या अपनी पत्नी के हत्यारे को खोने के लिए।
‘बेटा? वो कहाँ है? क्या उसे फाँसी दी जा रही है?’
‘आह,’ अंधका ने गहरी सांस ली। ‘तो बात ये है? तुम्हें उसी में दिलचस्पी है। तुम उसे भी अनुहरद की तरह मार डालना चाहते हो?’
‘नहीं,’ नारा ने विरोध करते हुए कहा, ‘वह एक दुर्घटना थी।’
‘हाँ, हाँ।’ अंधका ने सिर हिलाया। ‘प्रहलाद बुरा लड़का नहीं है। उसके दिल में नेक इरादे हैं। अब वह अपने पिता के खिलाफ खड़ा है।’
'वास्तव में?'
‘हाँ। वह जानता है कि उसके पिता गलत हैं और वह विष्णुसेना के साथ काम करता है।’ अंधका ने उसे तथाकथित विद्रोहियों के बारे में बताया और अंत में, नारा उनसे मिलने के लिए उत्सुक हो गया। ‘क्या तुम उसे मारना चाहते हो?’
नारा को एहसास हुआ कि अगर उसने सच बताया तो अंधक उसे जाने नहीं देगा क्योंकि इससे हिरण्यकश्यप को यातना देने का उसका अवसर छिन जाएगा।
‘हाँ। मैं चाहता हूँ। और मैं यह हिरण्य के सामने करना चाहता हूँ, ठीक वैसे ही जैसे मैंने उसकी पत्नी और उसके दूसरे बेटे को मारा था। सोचो उसे कितना कष्ट होगा।’ नारा ने दुष्टतापूर्ण मुस्कान के साथ कहा।
अंधका ने सिर हिलाया। 'तुम मुझे बहुत आकर्षित करते हो। अगर तुमने मुझे मारने की कोशिश न की होती, तो मैं तुम्हें अपने गार्ड के रूप में रख लेता।' 'मुझे प्रह्लाद को मारने दो, अंधका।'
और अगर तुम यहां से निकलते समय मुझे मार दो तो?
नारा रुका। वह रुकना चाहता था। 'तुम सिर्फ भरोसा कर सकते हो।'
‘जिसने मुझे जान से मारने की कोशिश की थी, उस पर भरोसा करूं?’ उसने हंसते हुए कोठरी के दरवाजे खोले। ‘आज़ाद घूमो।’
नारा स्तब्ध रह गया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है। वह संभलकर बाहर निकला, उसे यकीन नहीं था कि यह सब सच है या नहीं।
‘ऊपर जाओ। मीनार के पूर्वी हिस्से में एक सीढ़ी है,’ अंधका ने कहा। ‘वहाँ से नीचे उतरो। रास्ते में दो पहरेदार मिलेंगे, लेकिन वे इन इलाकों की निगरानी

करने वाले पहरेदारों से बेहतर हैं। तुम भाग्यशाली हो क्योंकि अभी दोपहर के भोजन का समय है।’ वह रुका, फिर बोला, ‘प्रहलाद को मुख्य बाज़ार में सार्वजनिक रूप से फांसी दी जा रही है। जाओ और उसे मार डालो। मुझे नहीं पता कि मेरे चाचा वहाँ होंगे या नहीं। लेकिन तुम्हारे ऐसा करने के तुरंत बाद उन्हें इसकी खबर मिल जाएगी।’
नारा ने अंधे व्यक्ति की ओर देखते हुए सिर हिलाया।
‘मैं तुम्हारी धड़कन सुन सकता हूँ। तुम मुझे मारना चाहते हो, है ना?’ अंधका मुस्कुराया। ‘अच्छा, तो अब असली मज़ा सुनो। तुम मुझे मार सकते हो और इस बात का पछतावा कर सकते हो कि तुमने असली अंधका के लिए काम करने वाले एक निर्दोष स्वयंसेवक को मार डाला, या तुम असली अंधका को मार सकते हो, जो मैं…’ वह रुका, ‘शायद हूँ। क्या तुम यह जोखिम उठाओगे?’
नारा का हाथ कांप रहा था। वह ऐसा नहीं कर सकता था।
‘तुम अपने चाचा से इतनी नफरत क्यों करते हो?’ नारा ने पूछा।
अंधका की मुस्कान रुक गई। उन्होंने कहा, ‘यह जानने के लिए आपको मेरे पैतृक घर जाना होगा, वह जगह जहाँ मैं रहता था। यह कश्यपपुरी के दक्षिण में है, और अगर आप चाहें तो इसे खोज सकते हैं। लेकिन मेरे उद्देश्य का उत्तर एक सरासर विडंबना है क्योंकि यह बहुत सरल है। लेकिन क्या सरल चीजें अक्सर जटिल नहीं होतीं?’
नारा ने अपना सिर हिलाया और कोठरी को पीछे छोड़ते हुए ऊपर की ओर दौड़ने लगा।
मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ, प्रहलाद।

32

प्रहलाद

वह उसी रास्ते पर चला। वही लोग। उसके प्रति तिरस्कार और घृणा से भरे हुए, सड़े हुए सेब और अन्य फल-सब्जियां फेंक रहे थे जिनसे बचने की उसने कोशिश की।
होलिका पहले की तरह ही उसके बगल में चल रही थी। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि उसके चेहरे पर न तो शत्रुता का भाव था और न ही घमंड का। वह चुपचाप उसे फांसी के स्थान तक ले गई। वह एक गोलाकार अखाड़ा था जहाँ एक विशाल हाथी उसका इंतज़ार कर रहा था। वही हाथी उसकी मृत्यु का साधन था। दर्शक दीर्घा में लोग जमा थे, भव्य फांसी देखने के लिए।
‘इस बार उसे मार डालो!’
उसे जाने मत दो!
‘मैं तुमसे प्यार करता हूँ, प्रहलाद!’
शोरगुल के बीच होलिका ने फुसफुसाते हुए कहा, 'अगर यह मेरे हाथ में होता, तो मैं ऐसा नहीं करती।'
'लेकिन आपने तो कुछ ही महीने पहले ऐसा किया था, प्यारी चाची।'
‘मैं गलत थी। लेकिन तुमने बहुत से लोगों को दुख पहुंचाया है और चूंकि तुममें पश्चाताप या बदलने की कोई इच्छा नहीं दिखती, इसलिए यह करना जरूरी है,’ उसने कहा। ‘मैं बस इतना ही कह सकती हूं कि काश मुझे तुम्हारे साथ और समय बिताने का मौका मिलता।’
प्रहलाद ने भारी मन से सिर हिलाया, जब उसे अखाड़े में घसीटा गया। हाथी ने चिंघाड़ते हुए अपनी सूंड हिलाई और ज़मीन पर पैर पटके। पाँच असुर रक्षकों ने उसे रोके रखा ताकि वह बेकाबू न हो जाए। महावत जानवर के ऊपर बैठा था, यह सुनिश्चित करते हुए कि सब कुछ नियंत्रण में है।
समारोह के संचालक ने ऊँची, कर्कश आवाज़ में बोलना शुरू किया तो भीड़ में सन्नाटा छा गया, “स्वागत है जनमानस! हम यहाँ अपने राजा के इकलौते पुत्र, राजकुमार प्रहलाद की फाँसी देखने आए हैं – वह बालक जो दूसरे पक्ष में चला गया, अपने वंश के साथ विश्वासघात किया और आतंकवादियों से मिल गया। वह युद्ध भड़काने वाला है और अगर उसे मौत की सजा नहीं दी गई तो समय बीतने के साथ-साथ हमारे प्रति उसकी नफरत और बढ़ती जाएगी। उसने एक मंत्री और अन्य अधिकारियों की निर्मम हत्या की है, इस शहर की अर्थव्यवस्था को तबाह करने का प्रयास किया है और इतना विनाश किया है कि यह सब कहते हुए मेरा दिल दुख रहा है। उसके पिता, हमारे आदरणीय राजा, इतने गहरे शोक में डूबे हैं कि वे

यहाँ नहीं हैं। उन्हें बहुत दुख हुआ है – एक ऐसा दुख, जो मुझे लगता है, हम सभी इस समय महसूस कर रहे हैं।”
फिर असुर ने प्रहलाद को इस तरह देखा मानो उसकी आत्मा को भेद रहा हो। ‘अब उसे अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ेगा। हाथी को लाओ!’
प्रहलाद को उस तख्ते पर धकेल दिया गया जहाँ हाथी का पैर उसे कुचल देगा, उसकी हड्डियाँ तोड़ देगा और मांस नोच डालेगा। हाथी ज़ोर से चिंघाड़ता हुआ उसके करीब आता गया। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और भगवान विष्णु का नाम जपने लगा। जैसे ही हाथी की छाया उस पर पड़ी, उसे पता चल गया कि उसका अंत निश्चित है।
‘हे प्रभु, मेरी मदद करो,’ उसने अंतिम प्रार्थना करते हुए फुसफुसाया, जब हाथी ने अपना पैर उसके सिर के ऊपर उठा लिया।
अचानक, भीड़ ने एक साथ गहरी सांस ली और फिर सन्नाटा छा गया। असमंजस में डूबा प्रहलाद इंतजार करता रहा। जब उसने आखिरकार अपनी आंखें खोलीं और लोगों की ओर मुड़ा, तो उसने देखा कि वे आश्चर्य से उसे नहीं, बल्कि किसी और को घूर रहे थे।
उसने ऊपर देखा और यह देखकर चौंक गया कि जानवर का पैर हवा में लटका हुआ था, जिसे लाल दाढ़ी वाले एक हट्टे-कट्टे आदमी ने ऊपर उठा रखा था।
जब उसे एहसास हुआ कि यह वही सिम्हा है जिससे वह कालकोठरी में बातचीत कर रहा था, तो उसका खून जम गया।
'आप कौन हैं?'

33

नरसिंह

अपनी मांसपेशियों को कसते हुए नारा ने हाथी को धक्का दिया। हाथी का संतुलन बिगड़ने लगा और वह ज़मीन पर गिर पड़ा, उसके नीचे असुर सैनिक दब गए। हाथी की

दहाड़ भीड़ और सैनिकों की चीखों में घुलमिल गई, और इस अफरा-तफरी में नारा समझ गया कि उसे प्रहलाद के साथ भागना होगा।
‘क्या तुम अपनी हथकड़ियां खोल सकते हो?’ उसने उससे पूछा।
प्रहलाद ने अपना सिर हिलाया।
‘बाह!’ नारा ने कराहते हुए प्रहलाद को ऊपर उठाया ताकि वह कम से कम चल सके, लेकिन उसने देखा कि उसके पैर भी बंधे हुए थे।
यह ठीक नहीं होने वाला है। नारा ने देखा कि असुर रक्षकों ने उन्हें घेर लिया था।
ठीक है, शांत हो जाओ, गहरी सांस लो। भागने के तरीके पर ध्यान केंद्रित करो। भीड़ के बीच रथ पर उनकी नजर पड़ी। प्रहलाद को कंधे पर उठाकर वे रथ की ओर दौड़ने लगे, तभी एक असुर ने उनका रास्ता रोक दिया। एक हाथ से प्रहलाद को पकड़े हुए नारा ने असुर की छाती पर मुक्का मारा, उसके कवच को पकड़ा और उसे सिर के ऊपर से एक बड़े चाप में घुमा दिया। असुर पीछे दौड़ रहे अन्य रक्षकों के ऊपर जा गिरा।
वह रथ में कूद पड़ा, प्रहलाद को सीट पर पटक दिया और सारथी को एक तरफ फेंक दिया। उसने रथ की लगाम पकड़ ली।
‘लड़का?’ नारा चिल्लाया, जैसे ही घोड़े कश्यपुरी की घुमावदार गलियों से सरपट दौड़ते हुए निकले, व्यस्त कोलाहल, गिरे हुए हाथी और भ्रमित असुर रक्षकों को पीछे छोड़ते हुए।
'हां?' प्रहलाद ने अपनी कलाई पर बंधी रस्सियों को कुतरने की कोशिश करते हुए पूछा।
'मेरे दोस्त बनो और इन गलियों में मेरी मदद करो, क्योंकि तुमने लगभग अपना पूरा जीवन यहीं बिताया है।'
उसने रथ के किनारों से झाँककर दिशा का जायजा लिया। ‘भागने का एक रास्ता उस दीवार से होकर जाता है जिसका इंद्र के आक्रमण के बाद से जीर्णोद्धार हो रहा है। उसका पुनर्निर्माण हो रहा है। दूसरा रास्ता बंद है क्योंकि पिछली बार हम वहीं से आए थे और होलिका ने अतिरिक्त सुरक्षा उपाय करके उसे अवरुद्ध कर दिया था,’ उसने चिल्लाकर कहा।
प्रहलाद के निर्देशों का पालन करते हुए, नारा सड़कों पर तेज़ी से दौड़ा, सड़क किनारे की दुकानों और स्टालों को तोड़ता हुआ, फलों और माल से भरी

गाड़ियों को उलटता हुआ आगे बढ़ा। उनके पीछे, असुर सैनिकों की एक सेना घोड़ों पर सवार होकर उनका पीछा कर रही थी।
हे भगवान विष्णु की कृपा से, मुझे बचाओ, प्रहलाद ने भयभीत होकर सोचा क्योंकि अगले मोड़ पर महल के रक्षकों की एक और टुकड़ी ने उन पर घात लगाकर हमला कर दिया था।
जैसे ही पहरेदारों ने तीरों की बौछार की, नारा ने घोड़ों को बेकाबू कर दिया और पहरेदारों की पंक्तियों को तोड़ते हुए उन्हें हवा में पत्तों की तरह बिखेर दिया।
‘हाँ!’ नारा ने विजयोन्माद से चिल्लाते हुए कश्यपपुरी की संकरी गलियों से रथ को आगे बढ़ाया।
जैसे ही वे तेजी से आगे बढ़े, वह प्रहलाद की ओर मुड़ा। 'क्या तुम्हें यकीन है कि यही सही रास्ता है? सामने तो बस पानी ही पानी है।'
‘हाँ, ठीक है, इसके ऊपर से कूद जाओ,’ प्रहलाद ने कहा। ‘उनसे छुटकारा पाने का यही एकमात्र तरीका है।’
‘क्या तुम पागल हो गए हो, लड़के?’
‘मेरी जांच नहीं हुई है!’ प्रहलाद ने गुस्से से कहा।
ठीक है, चलिए शुरू करते हैं।
नारा ने एक रैंप पर अपनी गति बढ़ाई और घोड़ों को शहर के बीच से बहने वाली नहर के ऊपर से कूदने के लिए उकसाया। जगह-जगह छतों पर सशस्त्र असुर सैनिक धनुष-बाण लिए खड़े थे। एक तीर उनकी पीठ में लगा, लेकिन यह दर्द आने वाले खतरे के सामने कुछ भी नहीं था। पुनर्निर्माण की दीवार बस सौ गज दूर थी। दीवार की अधिकांश ईंटें लगा दी गई थीं, लेकिन अभी सीमेंट से जोड़ना बाकी था। घोड़ों के लिए दीवार को पार करना नामुमकिन था। असुर उनके ठीक पीछे थे। ‘मैं कुछ पागलपन भरा काम करने जा रही हूँ,’ नारा ने कहा। ‘दीवार के उस पार क्या है?’
'एक नदी जो जंगलों में जाकर मिलती है।'
'बहुत बढ़िया, मैं अब घोड़ों को रोकने जा रहा हूँ।'
'क्या?' प्रहलाद चीख उठा।
एक हाथ से लगाम थामे नारा ने प्रहलाद को अपनी बगल में खींच लिया और उसे कसकर पकड़ लिया। दीवार के पास पहुँचते ही उसने लगाम को ज़ोर से झटका दिया, जिससे घोड़े अचानक रुक गए। इस झटके से दोनों रथ से बाहर गिरकर दीवार से जा

टकराए। प्रहलाद को सीने से कसकर पकड़े नारा ने अपनी पीठ से अधूरी बनी दीवार को तोड़ दिया। वे दीवार के दूसरी तरफ गिरे, ज़मीन पर लुढ़के और नदी में जा गिरे।
और जैसे ही धारा उन्हें नीचे की ओर ले गई, नारा ने प्रहलाद पर अपनी पकड़ और मजबूत कर ली और बच निकलने की राहत महसूस करते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं।

नदी के जंगल में प्रवेश करते ही नारा ने प्रहलाद को किनारे तक खींचा और उसके बंधन काट दिए। उसने नदी में अपना प्रतिबिंब देखा और मुँह बनाया। अपने बालों के बिना वह खुद को नंगा महसूस कर रहा था, मानो वह अब सिंह न रहा हो।
उसका दिल टूट गया।
‘मुझे बचाने के लिए धन्यवाद,’ प्रहलाद ने कहा।
नारा मुस्कुराई। यही एकमात्र सकारात्मक पहलू था।
‘मुझे यकीन है कि मेरी धार्मिक बकवास ने आपको मुझे बचाने के लिए प्रेरित नहीं किया।’ प्रहलाद हँस पड़ा।
नहीं, नहीं, मैं... मुझे बस लगा... आप एक अच्छे इंसान लगते हैं।
‘तुम कैसे बच निकले?’
‘मुझे… किसी ने मदद की थी,’ नारा ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा।
‘अरे, यह क्या है?’
'क्या?'
‘वो।’ प्रहलाद ने अपनी छाती की ओर इशारा किया।
नारा ने नीचे देखा और उसे अपने सीने के बीचोंबीच एक चमकता हुआ चिन्ह दिखाई दिया। उसका दिल बैठ गया। वह उस क्रॉस-क्रॉस चिन्ह को कहीं भी पहचान लेता। वह चिन्ह तब तक चमकता रहा जब तक कि वह निशान उसके सीने पर पूरी तरह से अंकित नहीं हो गया। यह श्रीवत्स चिन्ह था।
मैंने अपना भाग्य स्वयं तय कर लिया है।
‘आप… रुकिए… मैंने गुरु नारद के ग्रंथों में इसके बारे में पढ़ा है।’ प्रहलाद ने नारद को ध्यान से देखा और धीरे से उनकी छाती को छूते हुए कहा,

‘आप… आप अवतार हैं?’ वह पीछे हट गए। ‘मुझे अभी-अभी भगवान विष्णु के अवतार ने बचाया है। यह सच है! भगवान विष्णु ने मुझे बचाया है! यह सच है!’
नारा ने देखा कि उसका साथी खुशी से उछल-कूद कर हवा में मुक्के मार रहा था। अंत में उसने कहा, 'तुम्हें इसके परिणामों का अंदाजा नहीं है।'
'आपका क्या मतलब है?'
मुझे अवतार नहीं होना चाहिए। अवतार होना ही नहीं चाहिए।
‘क्यों? क्योंकि वे व्यवस्था और न्याय लाते हैं।’
‘इस युग में नहीं।’ नारा ने अपनी परछाई को देखा और भगवान रुद्र द्वारा बताई गई बात, उस रहस्य को याद किया। ‘इस युग में अवतार व्यवस्था नहीं लाता।’ 'तब?'
सिंह के चेहरे पर पीड़ा के भाव उभरने लगे जब उन्होंने भारी मन से वाक्य पूरा किया। 'इस युग में, प्रहलाद, अवतार अराजकता लाता है।'

34

होलिका

कमरा घुटन भरा और क्रोध एवं भय से भरा हुआ था। हिरण्य हाथ में प्याला लिए मेज पर बैठा था। अखाड़े में मची अफरा-तफरी को कुछ घंटे बीत चुके थे। होलिका एक तरफ खड़ी थी, सतर्क और चौकस। वह मन ही मन खुश थी कि प्रहलाद बच निकला था। वह उसे मारना नहीं चाहती थी। सिम्हीका के साथ जो हुआ था, उसके लिए वह उससे नफरत करती थी, लेकिन शायद समय ने उसके घावों को भर दिया था और उसे माफ करने की शक्ति दे दी थी।
अंधका भी कमरे में मौजूद था और जब भी वह सूंघते हुए उसकी ओर मुड़ता, होलिका के रोंगटे खड़े हो जाते। उसे नहीं पता था कि वह उसे देख पा रहा है या नहीं, लेकिन उसे ऐसा महसूस होता था कि वह आत्माओं को भेद सकता है।

“मेरा बेटा ही नहीं भागा, बल्कि मेरी पत्नी का हत्यारा भी भाग गया?” हिरण्य दहाड़ते हुए बोला, उसने चांदी का प्याला इतनी जोर से पकड़ा कि वह टूटकर छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गया। “क्या वे दोनों मिलकर काम कर रहे हैं?”
'ऐसा लगता है,' अंधका बुदबुदाया।
‘अंधका? क्या तुमने ध्यान दिया कि सिंह को किसने मुक्त किया?’
मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है, चाचा जी।
हिरण्य ने सिर हिलाते हुए कहा, 'हम क्या करेंगे? हमें नहीं पता कि वे कहाँ हैं। इंद्र की उपस्थिति का खतरा मंडरा रहा है। मेरे आदमियों ने मुझे बताया कि जब मैंने नागलोक पर हमला किया था, तब इंद्र का पुत्र मारा गया था। उसे लगता है कि मैंने ही ऐसा किया है।'
‘जी हां,’ होलिका ने अपने जासूसों से सुनकर कहा। ‘वह बहुत क्रोधित है और हमें उससे सीधे मुकाबले से पहले इस मामले को सुलझाना होगा। जहां तक मैंने सुना है, इंद्र अपनी सेना जुटा रहा है और जल्द ही हमला करने की योजना बना रहा है।’
‘लगभग दस दिन,’ अंधका ने आगे कहा। ‘मेरे घुड़सवारों का कहना है कि वे अभी भी बहुत दूर हैं और इंद्र महान युद्ध के लिए कम ज्ञात जनजातियों के साथ संधि कर रहे हैं।’
‘तो फिर हमें अपने आदमियों को भी इकट्ठा करना होगा।’ हिरण्य ने सिर हिलाया। ‘चाचा जी, मुझे एक विचार आया है,’ अंधका ने आगे बढ़ते हुए कहा। ‘मैंने नागलोक की घेराबंदी में तैनात सैनिकों से बात की और मुझे पता चला कि उन्होंने एक सिंह को जयंत को रथ से फेंकते हुए देखा था। क्या यह वही सिंह हो सकता है जो कुछ घंटे पहले भाग निकला था?’
हिरण्य खड़ा हो गया। ‘कोई दूसरा सिंह तो था ही नहीं। क्या इसी नरसिंह ने जयंत की हत्या की होगी?’
‘अगर उसने ऐसा नहीं भी किया, तो हम यह बात फैला सकते हैं कि उसने ऐसा किया है, जिससे इंद्र का क्रोध नारा की ओर मुड़ जाएगा।’ अंधका मुस्कुराया। ‘अच्छा विचार है। ऐसा ही करो।’ हिरण्य होलिका की ओर मुड़ा। ‘बहन, तुम चुप क्यों हो? क्या हुआ? तुम तो हमेशा से ही हत्या करने के लिए उत्सुक रहती हो। क्या तुमने विष्णुसेना को हराने का तरीका ढूंढ लिया है?’

होलिका ने बोलने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन उसके दिमाग में केवल आठ वर्षीय प्रहलाद की छवि उभर रही थी, जो विशाल हॉल के गलियारों में टहल रहा था, और खुद की छवि, जब वह गिर गया था तो उसे उठाने में असफल रही थी।
‘हम संधि क्यों न करें?’ अंधका ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘पिछली बार जब मैंने विष्णुसेना को देखा था, तब से उन्होंने अपना ठिकाना बदल लिया है। हम कश्यपुरी के बाहरी इलाके में बसे ग्रामीणों के माध्यम से यह घोषणा कर सकते हैं कि हम संधि चाहते हैं। उनकी जिज्ञासा उन्हें जवाब देने के लिए विवश करेगी। हम उन्हें, विशेषकर प्रहलाद और बूढ़े नरसिम्हा को, लाख और मोम के एक घर में संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए बुलाएंगे और फिर उस जगह को जला देंगे।’
‘विष्णुसेना के अन्य सैनिकों का क्या हुआ?’ होलिका ने पूछा।
‘एक जासूस के तौर पर मैंने देखा कि प्रहलाद ही समूह का असली नेता था,’ अंधका ने कहा। ‘अगर हम नेता को हटा दें, तो अनुसरण करने वाला कोई और नहीं बचेगा।’ ‘लेकिन कौन जाएगा?’ हिरण्य ने पूछा।
‘आप क्यों, चाचाजी।’
हिरण्य की आवाज में भय का भाव था। 'नहीं, मैं अब भी अपने बेटे को अपनी आँखों के सामने मरते हुए नहीं देख सकता। क्या तुम नहीं जा सकते, अंधका?' उन्होंने कहा, 'वे मुझ पर भरोसा नहीं करेंगे। उन्हें लगेगा कि यह चाल किसी तरह की दुर्भावनापूर्ण योजना है।'
‘फिर केवल एक ही व्यक्ति बचा है…’ हिरण्य ने होलिका की ओर देखा।
वह विरोध करना चाहती थी, उसे कोसना चाहती थी क्योंकि वह अपने ही बच्चे को मारना चाहता था लेकिन खुद ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। वह उसे अच्छी तरह जानती थी। लेकिन वह राजा था और राजा की आज्ञा माननी चाहिए। ‘ठीक है,’ होलिका ने कहा, ‘मुझे बताना कि इसका क्या नतीजा निकलेगा।’

35

नरसिंह

भगवान रुद्र मरणासन्न अवस्था में थे। उम्र ने उन्हें वृद्ध और दुर्बल बना दिया था, वे अपने नश्वर शरीर को धारण करने में असमर्थ थे। उन्होंने नर को बुलाया और सिंह सेनापति तुरंत आ गए। कमरा अँधेरा था और केवल पलंग के बगल में रखी मोमबत्ती से ही प्रकाश आ रहा था।
‘नर…’ भगवान रुद्र ने तेज और छोटी-छोटी सांसें लीं।
‘मेरे स्वामी, मैं यहाँ हूँ।’ नारा आगे आया और रुद्र का हाथ थाम लिया। ‘आपको मेरी क्या ज़रूरत थी?’
'मुझे आपसे कुछ कहना है।'
'जी महाराज।'
‘तुम तो अभी बहुत छोटे हो।’ रुद्र हंसते हुए बोला। ‘तुम्हें अभी बहुत कुछ सीखना है।’
'जी महाराज।'
मुझे नहीं पता कि मेरे पास कितना समय है और मैंने एक ऐसा रहस्य छिपा रखा है जिसे आपको जानना चाहिए। यह आपसे संबंधित है। मुझे आभास हो रहा है कि आप धर्म की शक्तियां प्राप्त कर रहे हैं।
नारा ने सिर हिलाया। वह अन्य सिंहों से अधिक शक्तिशाली, बलवान और तेज था। भगवान इंद्र ने कहा था कि वह धर्म बनेगा, और अगला अवतार बनने की राह पर है। 'जी महाराज।'
‘उपाधि की शान-शौकत से मत अभिभूत हो जाओ। इस युग का गूढ़ सत्य बहुत कम लोगों को पता है। असल बात यह है कि इस युग में अवतार ही तबाही मचाता है।’ लेकिन क्या अवतार दुनिया को नहीं बचाता?
‘इस युग में तो नहीं।’ रुद्र खाँसी के दौरे से रुक गया। ‘वही सबसे भयानक तबाही मचाता है। नारा, तुम्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि तुम स्वयं अवतार न बन जाओ।’
लेकिन मैं ऐसा कैसे करूँगा?

‘छोड़ो। भागो। भाग्य को अपने जाल में फंसाकर ऐसा मत बनो।’ वह फिर खांसा। ‘उसने कुछ और भी कहा था।’
'क्या?'
भगवान रुद्र ने नारा को अपनी फीकी नीली, गहरी और उदास आँखों से देखा, जिसे देखकर नारा कांप उठा। 'इस युग में अवतार अधर्म से पराजित होता है।'
नारा अविश्वास से सुन रहा था। क्या अवतार अधर्म से हार गया? असंभव! उसने सोचा कि क्या भगवान रुद्र अपने अंतिम क्षणों में भ्रम में पड़ गए थे।

नारा जगमगाते सूर्यास्त को निहार रहे थे, जिसकी नारंगी किरणें उनके चेहरे पर पड़ रही थीं। उन्हें अपने पीछे विष्णुसेना शिविर की हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उन्होंने प्रहलाद से वादा लिया था कि वह उन्हें यह नहीं बताएगा कि वह एक अवतार है, भले ही लड़के ने कहा था कि ऐसा कहने से वह उनका नेता बन जाएगा।
लेकिन मैं नेता नहीं बनना चाहता, उसने सोचा।
‘नारा?’ उसके पीछे से एक जानी-पहचानी आवाज आई।
नारा ने मुड़कर देखा तो प्रहलाद आया और उसके बगल में बैठ गया।
'आपको कैसा लगता है?'
‘मैं ठीक हूँ,’ नारा ने कहा। शारीरिक रूप से, वह ठीक था। वह चिन्ह अभी-अभी प्रकट हुआ था और उसके समग्र शारीरिक स्वास्थ्य पर इसका कोई खास असर नहीं पड़ा था। लेकिन मानसिक और भावनात्मक स्थिति – वह एक अलग ही मामला था। उन्होंने कहा, 'आपको उन्हें बताना चाहिए।'
‘आप मुझे मना नहीं सकते। क्या आपको अभी-अभी हुई घटना के परिणामों का एहसास नहीं है?’
प्रहलाद ने कहा, “जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे अपने गुरुजी की कही बात याद आती है। आप जो कुछ भी करते हैं, वह आपके चुनाव का परिणाम होता है, और भाग्य जो चाहता है, वह भगवान विष्णु की इच्छा होती है। और कोई भी भगवान विष्णु की इच्छा को नहीं बदल सकता। मैं हमेशा इस बात से चिंतित रहता

था कि मैं भाग्य को, इस चक्रव्यूह को नहीं बदल सकता, लेकिन अब मुझे लगता है कि मैं गलत था।”
'ऐसा किस लिए?'
मुझे लगता है कि अगर कोई व्यक्ति सही राह पर है और न्यायसंगत कार्य कर रहा है, तो वह इस बाधा को तोड़ देगा और भगवान विष्णु स्वयं उसे सही कार्य करने के लिए आशीर्वाद देंगे। कोई भी नियति उसे रोक नहीं सकती।
‘देखो, एक चौदह साल का लड़का मुझे जीवन के बारे में सिखा रहा है!’ नारा ने आंखें घुमाईं। ‘क्या शानदार पल है!’
‘व्यंग्यपूर्ण, मैं समझ गया।’ प्रहलाद हँस पड़ा। ‘जीवन का सार यही है कि आप अपने भाग्य में लिखी बातों से अलग होकर ऐसे कर्म करें कि देवता भी सिर झुकाकर कहें कि यह अपने कर्मों का फल पाने वाला व्यक्ति है।’ वह रुका। ‘मैं जानता हूँ कि आपने प्रतीक के बारे में क्या सीखा है, लेकिन यदि आप अपने कर्मों को पूरा करते हैं और एक अच्छे इंसान बने रहते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि ऐसा होगा।’
‘लेकिन मैं अच्छा आदमी नहीं हूँ,’ उसने कहा और उसके सामने अनुहराद, कायाधु और उन सभी लोगों की तस्वीरें कौंध गईं जिन्हें उसने मारा था। ‘मुझे नहीं लगता कि मैं कभी अच्छा आदमी था। साथ ही, मेरे अंदर बहुत गुस्सा भरा हुआ है।’
'यह क्या है?'
जब मुझे गुस्सा आता है, तो मैं अपना आपा खो देता हूँ। मैं अपने गुस्से को खुद पर हावी होने देता हूँ। मैं इसे रोकने के लिए गहरी साँसें लेता हूँ, लेकिन यह हमेशा कारगर नहीं होता। हालाँकि, एक व्यक्ति की तरह कोई और चीज मेरे अंदर के सारे गुस्से को बाहर नहीं निकाल देती।
'कोण है वोह?'
‘उसका नाम चेनचेन है। मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ। हालाँकि उसे मेरे साथ यहाँ आना था, मुझे पता था कि वह मेरी कमजोरी बन जाएगी और मैं अपना आपा खो दूँगा। लेकिन मैं ऐसा होने नहीं दे सकता।’
‘मैं समझ गया। एक महिला, है ना? मुझे भी लड़कियां पसंद हैं।’ प्रहलाद ने आँख मारी। ‘वो... छोड़ो।’
‘नहीं, चलो बताओ,’ नारा ने उससे आग्रह किया।
नहीं, मेरा मतलब है कि मुझे नहीं पता कि यह पर्याप्त दिलचस्प है या नहीं।

'बिल्कुल है, बेटा। मुझे बताओ।'
प्रहलाद शरमा गया। 'यहाँ एक लड़की है। धृति। मुझे वो बहुत पसंद है।'
‘यह तो अच्छी बात है। क्या वह भी तुम्हें पसंद करती है?’
'हां, वह करती है।'
‘जिससे आप प्यार करते हैं, उससे बदले में प्यार पाना एक सौभाग्य की बात है। यह सौभाग्य बहुत कम लोगों को मिलता है।’ नारा मुस्कुराई।
प्रहलाद ने आह भरी। 'किसी के साथ अपनी भावनाओं को साझा करना अच्छा लगता है।'
‘अच्छा,’ नारा ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, ‘मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, बेटा। यह याद रखना। मैं यहाँ…’ तुम्हारी रक्षा करने, तुम्हारी सेवा करने के लिए हूँ – नारा को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। ‘मुझे तुम्हें कुछ बताना है।’
'हाँ?'
नारा ने अभी-अभी अनुहराद और कायाधु की मौत के बारे में बोलने की हिम्मत जुटाई ही थी कि उसे एक आवाज़ सुनाई दी। शिविर से किसी आगंतुक के आने की चीखें सुनाई दे रही थीं।
‘एक आगंतुक आया है!’ प्रहलाद ने खड़े होते हुए कहा। ‘हमें जाना होगा। इस जगह के बारे में ज्यादा लोग नहीं जानते, इसलिए मुझे आश्चर्य है कि उन्हें इसके बारे में कैसे पता चला।’
नारा, प्रहलाद के पीछे-पीछे चल रहा था, उसके दिमाग में अनगिनत विचार उमड़ रहे थे, जैसे-जैसे वह शिविर के केंद्र की ओर बढ़ रहा था, जहाँ लोगों का एक समूह घोड़ों पर सवार था, जिनमें कुछ पुरुष थे, लेकिन ज्यादातर महिलाएं थीं।
‘ये तो मातृकाएं हैं!’ विष्णुसेना के विवादित नेता असमंज ने चीखते हुए कहा, जिसे प्रहलाद ने नारा से मिलवाया था। ‘महादेवी, आप यहां क्या कर रही हैं और आपको इस जगह के बारे में कैसे पता चला?’
यह स्पष्ट था कि आसा मातृकाओं को देखकर बहुत प्रसन्न थी, जो बिना किसी निश्चित कीमत के किसी भी युद्ध में शामिल नहीं होती थीं। वे उन्हीं का साथ देती थीं जिनके पास उन्हें भुगतान करने के लिए धन और भोजन होता था। और नारा जानती थी कि आसा शहर के राजा के विरुद्ध उनकी सहायता लेना चाहेगी।

बीच में खड़ी महिला, जिसने सुनहरा कवच पहना हुआ था और हाथ में फांसी का फंदा लिए हुए थी, अपने घोड़े से उतरी। 'हम शांति से आए हैं। मैं कुछ जानना चाहती हूँ, मुखिया। शायद हम आपके तम्बू के अंदर बात कर सकें।'
जी हां, मेरी महिला। कृपया अंदर आइए।’ असमांजा ने महिला को अंदर ले जाने का निर्देश दिया। जैसे ही अन्य मातृकाएं घोड़ों से उतरीं, नारा की नज़र एक महिला पर पड़ी। वह जानी-पहचानी लग रही थी। बिल्कुल जानी-पहचानी। ‘चेनचेन!’ उसने पुकारा।
महिला मुड़ी। कवच और हथियार के साथ वह बिल्कुल अलग दिख रही थी। वह बहुत ही... कठोर और सुंदर लग रही थी। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। सभी मातृकाएँ रुककर देखने लगीं कि क्या हो रहा है और यहाँ तक कि विष्णुसेना की सदस्य भी उत्सुकता से देखने लगीं।
फिर चेनचेन पूरी तेज़ी से उसकी ओर दौड़ी। नारा ने अपनी बाहें फैलाईं और चेनचेन ने उसे पूरी ताकत से गले लगा लिया। उसने भी अपनी बाहों में चेनचेन को लपेट लिया और लैवेंडर की जानी-पहचानी खुशबू उसे घेरने लगी।
उसने ऊपर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, 'तुम यहाँ हो। तुम ऐसा नहीं कर सकते... कैसे?'
नारा ने कुछ नहीं कहा। उसने बस उसे चूमा। और लंबे समय बाद, उसने अपने मन में सामंजस्य, शांति और सबसे महत्वपूर्ण, आशा का संचार होते हुए महसूस किया।

36

होलिका

बैठक के बाद के दिन कठिन थे। होलिका ने अपनी सेना को किसी भी प्रकार की समस्या या अचानक हमले के लिए तैयार कर रखा था। दीवारों का जीर्णोद्धार पूरा हो चुका था। शहर के बाहरी इलाकों में गुलेलें तैनात कर दी गई थीं। सुरक्षा बढ़ा दी गई थी और यद्यपि असुर सेना का अधिकांश भाग नागलोक और यक्षलोक में तैनात था, कश्यपुरी में सैनिकों की सबसे बड़ी संख्या थी क्योंकि यह राजधानी और इंद्र के आक्रमण का मुख्य केंद्र था।
होलिका इस बात से खुश थी कि अब इल्लावर्ती के अधिकांश भाग पर असुरों का शासन था। केवल देवलोक ही बचा था, जिसे शायद हिरण्य जीतने के मूड में नहीं था। विष्णुसेना के साथ चल रहे छोटे-मोटे युद्ध से वह थक चुका था। होलिका ने कुछ गुप्त दल बनाए थे जो भेस बदलकर बाहरी इलाकों में जाकर उनके शिविर की खोज करेंगे। वह अंधक की भयानक योजना को अंजाम देने से पहले ही विद्रोही सेना को ढूंढना चाहती थी।
वह नहीं चाहती थी कि प्रहलाद को चोट लगे। वह उसे वापस नहीं ला सकती थी क्योंकि अब तो उसके अपने पिता भी उससे नफरत करते थे। उसे नहीं पता था कि वह उससे क्या चाहती है या उसे कैसे बचाएगी, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए था। होलिका अपने दफ्तर में प्रहलाद की डायरी का आखिरी हिस्सा पढ़ रही थी। उसे बस यही उम्मीद थी कि वह उद्दंड लड़का उस साम्राज्य को समझ जाए जिसके खिलाफ वह लड़ रहा है। हिरण्य को हराने का एकमात्र तरीका उसे मारना था, जिससे नेतृत्व का शून्य उत्पन्न हो जाता। लेकिन हिरण्य को मारना अपने आप में एक चुनौती थी। वह अजेय था।
उसने डायरी देखी और वह हिस्सा पढ़ा जहां उसका आखिरी बार जिक्र हुआ था।

मुझे आंटी होलिका के साथ बिताए पलों में से एक पल स्पष्ट रूप से याद है, वह समय जब उनकी दहाड़ें पूरे महल में सुनाई देती थीं।
तब मैं नौ साल का था और इस शोर-शराबे के पीछे की वजह समझ नहीं पा रहा था। दासियों और पहरेदारों की तरह मैं भी गलियारे से होते हुए उस जगह पहुँचा जहाँ मेरी चाची गुस्से से लाल चेहरे के साथ चिल्ला रही थीं कि उनकी अनमोल तलवारों में से एक गायब है।
उसके गायब होने का कोई सुराग नहीं था, लेकिन ज़ाहिर है तलवार के अपने पैर तो नहीं थे जिन पर चलकर वह भाग सकती थी। उसने पुजारियों से लेकर पहरेदारों और नौकरों तक, सब पर इल्ज़ाम लगाया। मुझे पता चला कि उसने तलवारें लोहार के पास धार लगवाने के लिए भेजी थीं, लेकिन उनमें से सिर्फ़ एक ही वापस लौटी। मैं एक जिज्ञासु बच्चा था। मुझे एहसास हुआ कि अगर मुझे उसकी तलवार मिल गई, तो मेरे प्रति उसका सारा गुस्सा शांत हो जाएगा। मैं उसे ढूंढने की उम्मीद में महल में इधर-उधर भागा। मैंने लोहार की दुकान से महल तक तलवार के कदमों के निशान का पीछा किया, जहाँ मेरी मुलाकात मेरे मित्र विपरिचित से हुई, जिसने मुझे बताया कि दोनों तलवारें उस दुकान से निश्चित रूप से ले जाई गई थीं।
आखिरकार मुझे वह एक कोने में मिल गया, जहाँ उसे अदालत में लाने वाले व्यक्ति ने गलती से छोड़ दिया था। मैंने मुस्कुराते हुए उसे उठाया और उसके दरवाजे पर दस्तक दी।
तलवार देखते ही उसने उसे झट से छीन लिया।
‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!’ उसने ताना मारा।
मेरी मुस्कान गायब हो गई। 'नहीं, मैंने इसे आपके लिए ढूंढा है, आंटी।' ‘तुमने इसे चुराया है, बेवकूफ, लापरवाह लड़के।’
‘नहीं, मैंने नहीं किया।’ मेरा चेहरा पीला पड़ गया था और मैं असमंजस में थी।
'मेरी चीजों को कभी मत छूना वरना मैं तुम्हें नुकसान पहुंचाऊंगी,' उसने गुर्राते हुए कहा और मेरे चेहरे पर दरवाजा बंद कर दिया।
मैं वहीं खड़ी रही, असमंजस में और भयभीत। मुझे बहुत दुख हुआ था। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। उसकी स्वीकृति पाने की कोशिश करते-करते मैं थक चुकी थी और अब समय आ गया था कि मैं परवाह करना छोड़ दूं। मेरा मानना है कि

अगर कोई सही पक्ष में है तो उसे किसी की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।
और तब से, जब भी बात होलिका आंटी की आती, मैं न तो कुछ बोलता और न ही उनके मामलों में दखल देता। उनका व्यवहार कभी मेरी आंटी जैसा नहीं था, इसलिए मैंने भी उनके भतीजे की तरह बर्ताव करना बंद कर दिया।
होलिका ने डायरी एक तरफ रख दी। उसे वह घटना साफ-साफ याद थी और यह भी कि उस छोटे लड़के पर गुस्सा करने के पल भर में ही उसे कितना पछतावा हुआ था। फिर उसने उस विचार को मन से निकाल दिया और अपनी जिंदगी जीती रही, उसे कभी यह एहसास ही नहीं हुआ कि उस घटना का उस पर कितना गहरा असर पड़ा था। दरवाजे पर दस्तक हुई और उसने दरवाजा खोला तो सामने अंधका खड़ी थी।
‘जी?’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।
'आशा है आप व्यस्त नहीं होंगे।'
नहीं। कृपया मुझे बताएं कि यह क्या है।
‘मैं अपनी योजना पर अमल कर रहा हूँ। मैंने गाँव के सभी लोगों को संदेश भेज दिया है कि हम विष्णुसेना के साथ शांति चाहते हैं और यदि वे चाहें तो सात दिन बाद काश्यपुरी से पाँच सौ गज दूर नदी के पूर्व में स्थित घर में हमसे मिल सकते हैं। हमने वादा किया है कि हम केवल एक अधिकारी भेजेंगे, कोई सेना नहीं, ताकि हम उनकी शर्तों को सुनने और बातचीत करने के लिए तत्पर रहें।’ ‘क्या आपको लगता है कि वे आएंगे?’
‘वे हताश हैं। मुझे पता है वे आएंगे,’ अंधका ने पूर्ण विश्वास के साथ कहा। ‘और अगर वे नहीं आए, तो मैं उनकी जासूसी करके उन सबको मार डालूंगा। लेकिन इसमें बहुत समय लगेगा, जो मेरे पास नहीं है।’
'हां, मैं सहमत हूं।' होलिका ने उदास भाव से सिर हिलाया। 'बस इतना ही? और कुछ?'
अंधका ने ताली बजाई और घनी मूंछों वाला एक आदमी एक लंबा कोट पकड़े हुए अंदर आया।
मैंने तुम्हारे लिए एक खास पोशाक बनवाई है।
उस व्यक्ति ने कोट का हुड दिखाया जिसे वह अपने पूरे शरीर पर लपेट सकती थी।
'यह ऊन और मोडाक्रिलिक अग्निरोधी पदार्थों से बना है।'
‘आप मुझसे इससे क्या करने की उम्मीद करते हैं?’ होलिका ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं।

'जब हम उस मुलाकात की जगह को जला देंगे, तो इससे आपको बिना किसी नुकसान के बच निकलने में मदद मिलेगी,' अंधाका ने कहा।
होलिका ने कोट को छूकर उसके मोटे कपड़े को महसूस किया। 'क्या आपको यकीन है कि यह काम करेगा?'
'बिल्कुल, हमने इसे आजमाया है, महोदया।'
होलिका ने अंधका की मदद से वह कोट पहना, जो देखने में असमर्थ होने के बावजूद आश्चर्यजनक रूप से सक्षम प्रतीत होता था।
‘जब तुम ये काम करोगी तो तुम सुरक्षित रहोगी।’ अंधका ने विजयी मुस्कान के साथ उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा, ‘मेरी देवी, मुझे उम्मीद है कि तुम समझती हो कि तुम एक महान काम कर रही हो, है ना?’
होलिका ने सिर हिलाया। 'धन्यवाद, अंधका।'
वह उसकी मनमोहक मुस्कान के पीछे छिपी दुर्भावना को भांप सकती थी। उसे इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति था, और उसके पास एक भयावह, शैतानी योजना थी जिसके बारे में शायद केवल वही जानता था। अब देखना यह था कि वह वास्तव में साम्राज्य का वफादार सेवक था या कुछ और।

37

चेनचेन

आखिरकार वह पल आ ही गया, और वह बस उसकी आँखों में देखती रह गई। उसे कभी एहसास नहीं हुआ था कि उसके उठाए गए ये छोटे-छोटे कदम उसे यहाँ तक ले आएंगे, सीधे उसकी बाहों में और उसकी खूबसूरत, गर्मजोशी भरी मुस्कान के पास।
वे जंगल में थे, लोगों की निगाहों से दूर, एक-दूसरे का हाथ थामे हुए।
मातृकाएँ विष्णुसेना के साथ थीं, लेकिन विष्णुसेना को इस बात की परवाह नहीं थी कि वे क्या बातें कर रही हैं, क्योंकि वह नारा के साथ यहाँ थी।
‘तुम अलग दिख रहे हो,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा।

‘तुम भी। तुम्हारे पास तुम्हारा…’
उन्होंने दुख भरे लहजे में स्वीकार किया, 'मैंने उसे खो दिया।'
और उसने उसे सब कुछ बताया, पहाड़ियों में स्थित शिव किले को छोड़ने के बाद से लेकर अब तक की सारी बातें। वे मंद रोशनी में खिले ट्यूलिप के बीच बैठे थे। उसकी कहानी सुनने के बाद चेनचेन ने उसे फिर गले लगा लिया। 'तुम सुरक्षित हो और यही सबसे महत्वपूर्ण है।'
‘मुझे पता है,’ उसने अपनी बाहों को उसके चारों ओर कसते हुए कहा। ‘तुम्हें क्या हुआ था?’
‘अरे, पूछो मत।’
उसने भी उसे अपनी कहानी शुरू से सुनाई।
'वहां मेरा कोई उद्देश्य नहीं था। मुझे अब कोई चीज रोक नहीं रही थी। मैं जानती थी कि मैं सिर्फ लोगों का इलाज करने से बढ़कर कुछ करना चाहती हूं। मैं दुनिया को बचाना चाहती थी।'
‘यह अचानक इच्छा क्यों?’
‘मुझे नहीं पता – तुम्हें देखकर मुझे एहसास हुआ।’ उसने उसकी छाती पर नज़र डाली जहाँ उसे शॉल के पीछे कुछ चमकता हुआ दिखाई दिया। उसने शॉल को उसकी छाती से हटाया और उसे श्रीवत्स चिन्ह दिखाई दिया, जिसके बारे में उसने पहले बात की थी। ‘तुम्हारे पास है। लेकिन…’
‘मुझे पता है,’ उसने सिर हिलाते हुए कहा, ‘मैं घबराया हुआ हूँ।’
'चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा, मुझे पूरा यकीन है।'
‘तुम्हें देखकर मुझे एहसास हुआ कि मैं अपनी पिछली जिंदगी को कितना याद कर रही थी।’ नारा मुस्कुराई। ‘वह जिंदगी जिसमें मैं तुम्हारे साथ हो सकती थी।’ ‘तुमने जो चुना है और जिस राह पर तुम चल रहे हो, वही तुम्हारे लिए सबसे सच्चा मार्ग है।’ चेनचेन ने उसकी आँखों में देखते हुए मुस्कुराया। ‘मुझे तुम पर गर्व है।’
लेकिन मैं अराजकता फैला सकता हूँ या किसी को मार सकता हूँ या वह कर सकता हूँ जो भगवान रुद्र करते हैं –’
चेनचेन ने अपनी उंगली उसके होठों पर रखी। 'कोई बात नहीं, शांत हो जाओ। सब ठीक हो जाएगा।'
उसने शॉल पर एक नजर डाली। 'तुम इस बात को छिपाने की कोशिश कर रहे हो कि तुम एक अवतार हो, है ना?'

उसने सहमति में सिर हिलाया।
'क्यों?'
‘क्योंकि मैं लोगों को यह उम्मीद नहीं देना चाहती कि मैं उन्हें बचा सकती हूँ।’ नारा ने आह भरी। ‘मैं इस दबाव को सहन नहीं कर सकती।’
‘आपने प्रहलाद को बचाया था, है ना?’
नारा ने कुछ नहीं कहा।
चेनचेन ने कहा, 'खुद को, अपने भाग्य को और अपने उद्देश्य को स्वीकार करो। अंधका प्रकरण के बाद तुम सही रास्ते पर थे। आखिर हुआ क्या?'
‘इस प्रतीक ने मुझे चीजों पर दोबारा सोचने पर मजबूर कर दिया। मैं डर गया हूँ।’
उन्होंने कहा, 'हम सब ऐसे ही हैं, और इसीलिए हमें यहां एक साथ लाया गया है, ताकि हम एक-दूसरे का समर्थन कर सकें। भरोसा रखें कि सब कुछ ठीक हो जाएगा।' वे काफी देर तक एक-दूसरे को गले लगाए रहे, खामोशी ने उन्हें सुकून दिया। उसके हाथ उसकी पीठ पर थे, वह उसके बालों की लटों से खेल रहा था। उनके बीच गर्माहट छा गई और उसे लगा जैसे वह अपने घर में है।

जब चेनचेन विष्णुसेना प्रमुख के मुख्य तंबू में दाखिल हुई, तो उसने ब्राह्मणी को यह कहते हुए सुना, 'इसीलिए हम यहां आए हैं। हमें अंधका को ढूंढने में आपकी मदद चाहिए।'
मुखिया असमंजा आश्चर्यचकित और उत्सुक दिखे। उन्होंने कहा, 'मुझे आश्चर्य है कि मातृकाएं हमारी सहायता मांग रही हैं, जबकि इसके विपरीत होना चाहिए था।'
चामुंडा ने कहा, 'देवी नृति ने हमें यहां तक पहुंचाया। हमने सोचा था कि स्कंद... अंधक यहां होंगे, लेकिन वे नहीं हैं।'
‘जब तक उसने हमें धोखा नहीं दिया था, तब तक वह अच्छा था,’ काले बालों और गोरी चमड़ी वाले लड़के प्रहलाद ने कड़वाहट से कहा। ‘यकीन मानिए, वह किसी काम का नहीं है। वह दुष्ट है –’
पार्वती ने लड़के की बात काटते हुए झल्लाकर कहा, 'हो सकता है वो हो, लेकिन वो महत्वपूर्ण भी है। हमें उसकी जरूरत है।'

चेनचेन को एहसास हुआ कि मातृकाओं ने यह खुलासा नहीं किया था कि अंधका पार्वती का पुत्र था और वही भविष्यवक्ता उद्धारकर्ता था। लेकिन तर्कसंगत रूप से देखा जाए तो वे ऐसा क्यों करतीं?
‘खैर, देवियों, सच कहूँ तो मुझे पक्का नहीं पता कि उसे कैसे ढूँढा जाए,’ आसा ने मुँह बनाते हुए कहा। ‘लेकिन जब तक हम मिलकर उसे ढूँढने की योजना नहीं बना लेते, तब तक आप यहाँ रह सकती हैं।’
‘हमारे पास समय नहीं है,’ ब्राह्मणी ने घोषणा की। ‘आपने कहा था कि वह कश्यपपुरी में है? क्या हम किसी तरह उसे बाहर निकाल सकते हैं?’
एक रास्ता है।
तंबू में मौजूद लोग यह देखने के लिए खुले द्वार की ओर मुड़े कि किसने बात की थी।
नारा बाहर के अंधेरे से निकली और चेनचेन के पास चली गई। 'मैं अंधका के बारे में यहां मौजूद किसी भी व्यक्ति से ज्यादा जानती हूं क्योंकि... मैंने उसे एक बार मार डाला था।'
सब लोग चौंक गए और पार्वती ने अपने जबड़े भींच लिए। वह नारा को जानती थी। लेकिन वह उससे नफरत नहीं करती थी क्योंकि उसके कारण जायज थे।
नारा ने कहा, ‘अंधका अनाथों को अपने यहाँ ले आता है और उन्हें अपने दूसरे रूप में ढालने की प्रक्रिया से गुजारता है। हम उस गाँव में विष्णुसेना का एक ऐसा सिपाही भेज सकते हैं जो इस भूमिका में फिट बैठता हो, जिसे अंधका शायद अपने साथ रखना चाहे। और जब वह हमारे “अनाथ” को लेने आएगा, तो हम उसे पकड़ लेंगे।’
‘इस भूमिका के लिए कौन उपयुक्त रहेगा?’ ब्राह्मणी ने पूछा।
'अच्छा, एक गंजा बच्चा या एक आदमी, कोई ऐसा व्यक्ति जिसका रंग पीला हो।' आसा ने कहा, 'मेरे पास एक आदमी है। वह चारा बन सकता है। लेकिन हमें कैसे पता चलेगा कि उसे गांव में कहां भेजना है ताकि वह अंधका को बाहर निकाल सके?' ‘यह आसान है,’ नारा ने कहा, ‘मैं उसकी गंध पहचानती हूँ और हम वहाँ नकली चारा रखकर उसे ढूंढ सकते हैं।’
अपने आस-पास के अनिश्चित चेहरों को देखकर उसने कहा, 'मुझे पता है कि यह एक मुश्किल काम है, लेकिन यही हमारा एकमात्र मौका है। हमारे पास कश्यपपुरी पर पूर्ण पैमाने पर हमला करने के लिए पर्याप्त सैनिक नहीं हैं। प्रहलाद और मेरे भागने के बाद से महल की सुरक्षा दोगुनी कर दी गई है, जिससे अंदर-बाहर

आना-जाना लगभग असंभव हो गया है।' 'मुझे पता है कि यह एक मुश्किल काम है, लेकिन यही हमारा एकमात्र मौका है। शहर पर हमला करना मूर्खता होगी क्योंकि वहां प्रवेश करना या बाहर निकलना बहुत मुश्किल है, खासकर मेरे होने के बाद।'
ब्राह्मणी ने आसा की ओर देखा। 'क्या आप हमारी मदद करेंगे, मुखिया?' “ज़रूर, मेरी देवी! आप आख़िरकार महान मातृकाएँ हैं। मैं अंधका से बदला लेना चाहता हूँ जिसने हमें धोखा दिया और हमें मात दी। एक बार उसे मात देना अच्छा रहेगा।” आसा मुस्कुराया।
तभी एक और महिला तम्बू में दाखिल हुई, उसके लाल बालों के कारण वह सबसे अलग दिख रही थी।
उन्होंने कहा, 'हमारे पास कुछ महत्वपूर्ण खबर है।'
‘क्या बात है, धृति?’ प्रहलाद ने पूछा।
लड़की ने सबकी ओर देखा और बोलने से पहले अपने होंठ चाटे। 'असुर साम्राज्य हमसे संधि करना चाहता है।'

38

प्रहलाद

वे संदेश में बताए गए घर की ओर चल पड़े। प्रहलाद, आसा और धृति ने अपने सिर पर नकाब पहन रखे थे और घर पर कड़ी नज़र रख रहे थे। घर सुनसान था और आसा यह सुनिश्चित करना चाहता था कि संधि कोई जाल तो नहीं है, जिसमें सैनिक उन्हें पकड़ने के लिए घात लगाए बैठे हों। जब उन्होंने पूरे इलाके की छानबीन की और किसी को नहीं पाया, तो वे घर की ओर चल पड़े - एक टूटी-फूटी झोपड़ी जिसकी दीवारें लाल थीं और छत भूसे की थी।
‘तो बस यही है,’ आसा ने घोषणा की।

संधि में समय, दिन और स्थान निर्दिष्ट थे, लेकिन युद्धविराम के बारे में कोई विशिष्ट जानकारी नहीं दी गई थी। विष्णुसेना के एक सैनिक ने सभी गांवों में लगे नोटिस देखे और उनमें से एक नोटिस अपने साथ ले आया।
धृति ने कहा, 'सब ठीक लग रहा है। इसमें कुछ भी असाधारण नहीं है।'
'यह सोचकर हैरानी होती है कि उन्होंने इस जगह को क्यों चुना,' प्रहलाद ने कहा।
धृति ने सुझाव दिया, 'शायद इसलिए कि यह एकांत में है, शहर से काफी दूर है, इसलिए हमें हमले का एहसास नहीं होगा।' यह बात तर्कसंगत लग रही थी, लेकिन इस पूरे परिदृश्य में कुछ गड़बड़ थी। उसने कहा, 'वे अचानक युद्धविराम क्यों चाहते हैं? यह बात समझ में नहीं आती।'
आसा ने तुरंत जवाब दिया, 'हमारे पास कोई विकल्प नहीं है, है ना? हमें जो दिया गया है, उसी के साथ आगे बढ़ना होगा। कम से कम, चलो उनकी बात सुन लेते हैं।'
प्रहलाद यह कहकर विरोध करना चाहता था कि पिछली बार जब उन्होंने अंधका की बात सुनी थी, तब चीजें योजना के अनुसार नहीं हुईं थीं। अंधका ने उनके खिलाफ जाकर सब कुछ अपने नियंत्रण से बाहर कर दिया था।
‘मुझे लगता है कि अगर हम अपने आदमियों को पहाड़ियों के दोनों सिरों पर, पेड़ों की छांव में छिपाकर तैनात कर दें, तो हमें अच्छी सुरक्षा मिलेगी। यह तभी संभव है जब असुर हमें धोखा देने की कोशिश कर रहे हों।’
‘वे युद्धविराम क्यों चाहेंगे? क्या आपने सच में इस बारे में सोचा है?’ प्रहलाद ने पूछा।
‘शायद इसलिए क्योंकि वे हमें ढूंढ नहीं सकते और यही एक फायदा है जो हमें उन पर हासिल है,’ आसा ने जवाब दिया। ‘वे भले ही महाशक्ति हों, लेकिन हम चूहों की तरह हैं, जो हर कोने में छुपते रहते हैं।’
‘और यही उनका हमें बाहर निकालने का तरीका है,’ प्रहलाद ने कहा। ‘मुझे अकेले अंदर जाने दो।’
‘क्या तुम पागल हो? मैं विष्णुसेना का मुखिया हूँ,’ आसा ने दाँत पीसते हुए कहा, उसके जटाएँ माथे पर लटक रही थीं। ‘मुझे वहाँ होना ही है। तुम्हें नहीं। तुम अभी बच्चे हो, प्रहलाद। मुझे खुशी है कि तुम हमारे उद्देश्य में विश्वास करते हो, लेकिन पिछली घटना के बाद जब तुम पकड़े गए थे और मरने ही वाले थे… हम तुम्हें खो नहीं सकते।’

धृति ने आगे कहा, 'वह सही कह रहा है।'
प्रहलाद को याद आया कि जब वह लौटा तो धृति ने उसे गले लगाया था और उसे कितना अच्छा लगा था। धृति रोते हुए बोली थी कि वह उसकी मदद करना चाहती थी। शाही खानदान से होने के कारण उन्होंने सोचा भी नहीं था कि उसे फांसी दी जाएगी।
धृति ने कहा, 'मुझे लगा था कि तुम उनके हमलों से अप्रभावित रहोगे। लेकिन ऐसा नहीं है। अब तुम्हें शिविर में ही रहना होगा।'
प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'आप मुझे यहाँ आने से नहीं रोक सकते। जब मैं विष्णुसेना में शामिल हुआ था, तब मुझे जोखिमों का पता था और फिर भी मैं शामिल हुआ। इसलिए आप मुझे रोक नहीं सकते।'
उसने आसा की ओर देखा और कहा, 'जब संधि पर चर्चा हो रही होगी, मैं यहीं रहूंगा। मुझे पता होगा कि वे लोग शहर में क्या कर रहे होंगे, क्योंकि इस शहर पर मैंने ही राज किया है। अंधका ने मुझे चौंका दिया, क्योंकि मैं उससे कभी करीबी रिश्ता नहीं रखता था। मैं यह गलती दोबारा कभी नहीं दोहराऊंगा।' ‘खैर, अंधका के लिए हम सब ही जिम्मेदार हैं।’ आसा ने आह भरी। ‘ठीक है, तुम आ सकते हो। लेकिन अगर वे हमला करते हैं, तो तुम चले जाना। ठीक है? तुम यहाँ नहीं रुकोगे।’
प्रहलाद जानता था कि मृत्यु के कगार पर होने पर भी वह यहीं रहेगा, लेकिन उसने उन्हें शांत करने के लिए सिर हिलाया। उसने धृति की ओर देखा, लेकिन उसने उसे अनदेखा कर दिया। स्पष्ट रूप से, वह इस योजना से नाखुश थी। लेकिन वह इसे अपने निर्णय पर हावी नहीं होने दे सकता था। वह जानता था कि वह उससे भी बड़ी, उन सभी से भी बड़ी किसी चीज़ का हिस्सा है।
उन्हें बस यही उम्मीद थी कि यह संधि कोई धोखा न हो।

39

नरसिंह

रात घनी थी और नारा को दूर से उल्लू की आवाज सुनाई दे रही थी। वे सब भेस बदले हुए थे। नारा ने अपने बालों पर एक हुड ओढ़ रखा था, जो उसने हाल ही में प्राप्त किया था। वह एक कोने में था, जबकि दूसरी तरफ उसे चेनचेन और ब्राह्मणी दिखाई दे रही थीं। उसके दाहिनी ओर चामुंडा थी।
उसने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि वह आज रात आएगा।'
‘उसे आना ही चाहिए। एक बार जब मुझे उसकी गंध महसूस हुई, तो मैंने इस गाँव में पूछताछ की और सबने पुष्टि की कि उन्होंने लाल रुमाल बांधे एक गंजे आदमी को देखा था,’ नारा ने जवाब दिया। ‘वह अक्सर यहाँ आता है और लोगों को अपने साथ ले जाता है, कभी-कभी उन्हें पैसे देने या यश और प्रसिद्धि दिलाने के बहाने।’
उसने मातृकाओं द्वारा तैनात किए गए नकली भिखारियों को देखा। वे सभी विष्णुसेना के बच्चे थे; उनमें से कुछ गंजे थे, जबकि अन्य के घने बाल थे। ‘हम कुछ दिनों से इंतजार कर रहे हैं,’ नारा ने खुद को याद दिलाते हुए कहा कि आज ही के दिन संधि पर चर्चा होनी थी। ‘ठीक सात दिन।’
चामुंडा ने उसे याद दिलाते हुए कहा, 'और हर दिन एक असफल प्रयास था। मुझे उम्मीद है कि आज ऐसा नहीं होगा। अगर आपकी योजना काम नहीं करती है, तो इससे हमारे लिए समस्याएँ पैदा होंगी क्योंकि तब हमें कोई दूसरा विकल्प सोचना पड़ेगा।'
नारा ने अनिच्छा से सिर हिलाया, उसे कुछ दिन पहले चेनचेन के साथ हुई बातचीत याद आ गई।

‘उसे पकड़ने का अधिकार मुझे है। और मैं मातृकाओं को यह सोचने भी नहीं दूंगी कि वे उसे पा सकती हैं। वह मेरा है। उसने भैरव को मारा है। मुझे उसका सिर चाहिए।’
‘तुम समझते नहीं हो।’ चेनचेन ने उसका हाथ पकड़ लिया। वे उसके तम्बू में थे। ‘अंधक वह नहीं है जो वह खुद को बताता है। वह सोचता है कि उसे सब कुछ पता है, लेकिन ऐसा नहीं है। वह स्कंद है, शिव और पार्वती का पुत्र, मानव जाति का रक्षक।’

‘लेकिन वो तो दुष्ट है,’ नारा ने कड़े स्वर में कहा। ‘वो तबाही मचाना चाहता है। वो रक्षक कैसे हो सकता है?’
‘वह बुरा नहीं है, नारा। उसके व्यक्तित्व में और भी बहुत कुछ है, तुम जानती हो। मैंने तुम्हें उसके अतीत के बारे में बताया था। तुम जानती हो कि उसका अतीत कितना चुनौतीपूर्ण था। मुझे लगता है कि वह सच में बदल सकता है,’ उसने धीरे से कहा।
‘तुम बहुत आदर्शवादी हो रहे हो।’ नारा ने सिर हिलाया। उन्हें झोपड़ी के बाहर किसी की आवाज सुनाई दी। ‘कौन है?’
बालों को संवार कर एक महिला अंदर आई; नारा ने उसे तुरंत सिम्ही के रूप में पहचान लिया।
'मैं प्रत्यंगिरा हूं।' वह मुस्कुराई।
नारा ने सिर हिलाया। 'मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ, महोदया?' मैंने देखा कि तुम्हारे बाल नहीं हैं।
'हां, मैंने इसे खो दिया,' उसने अपने पंजों को देखते हुए कहा। वे बढ़ रहे थे, और वह इससे खुश था।
‘अगर आपको कोई आपत्ति न हो,’ प्रत्यंगिरा ने चेनचेन की ओर देखते हुए, मानो स्वीकृति मांगते हुए कहा, ‘मेरे पास एक दोस्त की अयाल है, अगर आप चाहें तो।’ ‘दोस्त? सिंह की खाल सबसे कीमती होती है। उसने इसे तुम्हारे पास कैसे छोड़ा?’
‘उनकी मृत्यु बहुत समय पहले हो गई थी। मैंने इसे संभाल कर रखा था, लेकिन जब मैं आपसे मिली तो मुझे लगा कि शायद आपको इसकी ज़रूरत हो।’ प्रत्यंगिरा ने अपने बैग से इसे निकालते हुए कहा।
‘हम्म…’ नारा ने सोचते हुए चेनचेन की ओर एक नज़र डाली, जो स्पष्ट रूप से नाराज़ था; उसे अच्छा नहीं लगता था जब उसे लड़कियों का ध्यान मिलता था, लेकिन फिलहाल वह चुप रहने का नाटक कर रही थी। ‘हाँ, यह आपकी बहुत मेहरबानी है।’
सिम्ही ने सिर हिलाया और अपने बालों का गुच्छा पीछे छोड़ते हुए चली गई। ‘वह तो बस अच्छी बन रही है, चेनचेन।’ नारा हंस पड़ी।
चेनचेन ने अपनी आंखें घुमाईं और मुंह बनाया।
‘गंभीरता से कहूँ तो,’ नारा ने कहना शुरू किया, ‘मुझे उम्मीद है कि आप मुझे अंधका धारण करने देंगे, मातृकाओं को नहीं। मुझे मत रोकिए।’

‘मुझे नहीं पता।’ वह सोच-विचार करते हुए रुकी। ‘मैं कुछ समय उनके साथ थी, और वे मेरे साथ बहुत अच्छे से पेश आए… बस…’
‘इस बारे में सोचने के लिए थोड़ा समय लो,’ नारा ने कहा। ‘लेकिन अगर तुम मेरा समर्थन करो तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।’
उसने और कुछ नहीं कहा, बल्कि किसी और के बालों और खाल को पहनने लगा, जो उसे अपने बालों को खोने के बाद से अब तक के सबसे अच्छे दिनों की तुलना में बेहतर महसूस करा रही थी।

वह बाकी लोगों के साथ अंधेरे में इंतज़ार कर रहा था और गुनगुना रहा था। उसे काफ़ी समय से आराम नहीं मिला था। उसका शरीर आग की तरह तप रहा था और दर्द के तेज़ झटके उसे हिला रहे थे। लेकिन वह जानता था कि वह अंधका को मारना चाहता है - अगर उसे सही व्यक्ति मिल जाए। अनुहरद की सलाह काम नहीं आई थी, लेकिन वह यह भी जानता था कि जब उसे अगला अंधका मिलेगा, तो वह यह जांच करेगा कि वह अंधा है या नहीं, ठीक वैसे ही जैसे उसने पिछली बार जांच की थी। और उसे मारने की सबसे ज़्यादा संभावना उसी की होगी, भले ही यह जोखिम भरा हो। उसे उस अंधका को मार देना चाहिए था जिसने उसके लिए कोठरी खोली थी, लेकिन उस समय वह बहुत आभारी महसूस कर रहा था।
मुझे अब पछतावा क्यों हो रहा है?
क्योंकि वह अंधका नकली हो सकता था। वह निर्दोष भी हो सकता था।
लेकिन अंधका से जुड़ा कोई भी व्यक्ति निर्दोष नहीं हो सकता और मुझे यह बात समझ लेनी चाहिए।
‘तुम्हें पता है,’ चामुंडा ने कहना शुरू किया, ‘तुमने कहा था कि कई अंधक हैं। क्या हम जान पाएंगे कि जो आएगा वह असली होगा?’
नारा ने अपने जबड़े भींच लिए। 'तुम ऐसा नहीं करोगे। लेकिन जहाँ तक मुझे पता है, अगर मुझे अपनी ही प्रतिकृति बनवानी हो, तो मैं खुद वहाँ जाकर चुनूँगा।' ‘यह बात समझ में आती है लेकिन…’
‘वह हमेशा हमसे एक कदम आगे रहता है,’ नारा ने अपनी बात पूरी की और चामुंडा ने चिंता से उसकी ओर देखा।

उसने उसके हाथ में मौजूद त्रिशूल की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मेरे पास भी ऐसा ही एक त्रिशूल हुआ करता था।'
‘उसका क्या हुआ?’
‘मैंने उसे खो दिया,’ नारा ने अफसोस जताते हुए स्वीकार किया। ‘मुझे नहीं पता कि वह अब कहाँ है। लेकिन खैर छोड़ो।’
इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, उसने घोड़ों के खुरों की आवाज़ सुनी और एक रथ शांत गाँव की गलियों के बीच से तेज़ी से गुज़रा। रथ से एक दुबला-पतला आदमी निकला। अगर उसके सिर पर लाल रुमाल न होता तो वह कंकाल जैसा दिखता। 'यह वही है,' नारा ने गंभीर स्वर में पुष्टि की, और फिर अंधेरे से बाहर आ गई।

40

प्रहलाद

रात का समय था। प्रहलाद कवच पहने आसा के साथ लाल झोपड़ी के बाहर इंतजार कर रहा था। कुछ ही देर में, एक महिला अंधेरे से निकली, उसके दोनों ओर एक-एक सैनिक थे जिनके हाथों में मशालें थीं और उनके पास कोई हथियार नहीं थे। कोई हथियार नहीं? अजीब बात है, प्रहलाद ने सोचा।
आसा और प्रहलाद ने असमंजस में एक-दूसरे की ओर देखा। उन्हें और लोगों के आने की उम्मीद थी।
होलिका उनके सामने खड़ी थी और सन्नाटा तब टूटा जब आसा ने प्रहलाद से फुसफुसाते हुए कहा, 'शुभकामनाएं।'
'मुझे खुशी है कि तुम यहां हो,' होलिका ने प्रहलाद से कहा, जिसने जवाब में सिर हिलाया।
'हमें आश्चर्य है, महोदया, कि आप बिना सेना के इस सुनसान जगह पर आई हैं।'

‘हम यहाँ युद्धविराम पर चर्चा करने आए हैं, है ना?’ होलिका ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘मुझे आप पर कोई गुस्सा नहीं है। महल ने मुझे आपसे निपटने के लिए नियुक्त किया है। मैं चाहती हूँ कि आप मुझ पर और मेरी बात पर भरोसा करें, इसलिए मैं खुद को असुरक्षित स्थिति में डाल रही हूँ, भले ही आपके आदमी आस-पास छिपे हों और मुझे फिरौती के लिए पकड़ने का इंतज़ार कर रहे हों या—’ ‘हम भी आपकी ही तरह शांति चाहते हैं। मैं असमांजा हूं, विष्णुसेना का नेता।’
होलिका ने सिर हिलाया और झोपड़ी के अंदर चली गई जबकि सैनिक बाहर ही रहे। प्रहलाद ने उसका अजीबोगरीब भारी कोट देखा, लेकिन उसने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की। आसा ने कहा, 'बताइए, मेरी स्वामिनी, हम इस बस्ती तक कैसे पहुँच सकते हैं?'
‘आपकी मांगें क्या हैं?’
“असुर राजा हिरण्यकश्यप के शासन को उखाड़ फेंको,” आसा ने शांत भाव से कहा। “उस व्यक्ति ने मेरी पत्नी और बच्चों की हत्या की है। उसके आदमियों ने उसके साथ बलात्कार किया और उसे कचरे की तरह फेंक दिया। मैं न्याय की मांग करता हूँ।”
‘वह परिसर छोड़कर नहीं जा सकता, मुखिया जी,’ होलिका ने अपनी नाक फुलाते हुए कहा। ‘यह नियम नहीं है। हम कोई दूसरा रास्ता निकाल सकते हैं। अन्यथा हमें हिरण्यपुर के नागरिकों को शामिल करना पड़ेगा।’
दानवों के विशाल नगर के बारे में सोचते ही प्रहलाद के शरीर में एक ठंडी कंपकंपी दौड़ गई - दानव असुरों के भाई थे।
‘हमने अभी तक उन्हें तलब नहीं किया है और जब हम करेंगे, तो स्थिति अच्छी नहीं होगी। बेहतर होगा कि आप उन्हें बुलाने से पहले ही इस मांग को छोड़ दें।’
‘जब तक आपके सारे संसाधन खत्म नहीं हो जाते, हम छिपे रहेंगे।’ आसा मुस्कुराया। ‘दानव डरावने तो हैं, लेकिन साथ ही असभ्य और भोगी भी हैं। अगर हिरण्यकश्यप पद नहीं छोड़ता, तो मेरी एक और मांग है – कश्यपुरी के सभी पवित्र स्थानों में मूर्ति पूजा, विशेषकर भगवान विष्णु की मूर्ति पूजा, फिर से शुरू करो और शहर का नाम बदलकर मानवपुर कर दो, जो पहले हुआ करता था।’ कुछ देर का विराम रहा। प्रहलाद उसे इस बारे में सोचते हुए देखता रहा।

आसा ने आगे कहा, 'और हमें आपकी सरकार द्वारा किसी भी अचानक हमले या अभियोजन से सुरक्षा प्रदान करें।'
होलिका ने सिर हिलाया। ‘मुझे लगता है यह ठीक है, लेकिन मुझे इस बारे में राजा से बात करनी होगी।’ उसने प्रहलाद की ओर देखा। ‘क्या मैं अपने भतीजे से अकेले में बात कर सकती हूँ?’
आसा ने सिर हिलाया और झोपड़ी से बाहर निकल गया। प्रहलाद और होलिका एक-दूसरे को चुपचाप देखते रहे।
होलिका ने कहना शुरू किया, ‘मैं बस इतना कहना चाहती थी कि मैंने आपके साथ जो भी बर्ताव किया, उसके लिए मुझे बहुत खेद है। मुझे पता है कि मैं अच्छी मौसी नहीं बन पाई, बल्कि सच कहूँ तो मैं अच्छी इंसान ही नहीं बन पाई। लेकिन मुझे लगता है कि हर किसी को दूसरा मौका मिलना चाहिए। क्या आप मुझे माफ कर देंगी?’
'आप क्यों कहते हो कि?'
मैंने तुम्हारी डायरी पढ़ी।
प्रहलाद एकदम जम गया। अपनी निजी चीज़ों के अपनी चाची के हाथों में होने के ख्याल से ही उसके रोंगटे खड़े हो गए, लेकिन होलिका के शब्दों से वह हैरान रह गया। "उम, मैं आपकी माफी स्वीकार करता हूँ," उसने धीरे से कहा।
'अगर मेरी घृणा न होती, तो क्या तुम अब भी इस विष्णुसेना के अनुयायी होते?' उसने पूछा, उसकी आवाज पहले से कहीं अधिक कोमल थी।
प्रहलाद ने कहा, 'यहाँ उनके साथ होने का तुमसे कोई लेना-देना नहीं था। तुमने जीवन भर मेरी उपेक्षा की, लेकिन मैंने तुमसे कभी नफरत नहीं की। उस दिन भी नहीं जब तुम मुझे मारना चाहते थे।'
होलिका ने सिर हिलाया और उसकी आँखों में नमी आ गई। 'मुझे माफ़ कर दो... मैं एक बुरी औरत रही हूँ।' उसने अपना कोट उतारकर उसे दे दिया। 'इसे पहन लो।' 'क्यों?'
बस इसे पहन लो।
तभी प्रहलाद ने देखा कि आग की लपटें दीवारों को पार करते हुए पुआल की छत की ओर बढ़ रही थीं। कुछ ही मिनटों में झोपड़ी जलकर राख हो जाएगी।
‘ये सब क्या हो रहा है!’ वह चिल्लाया। ‘आखिरकार ये सब एक चाल थी,’ उसने अपनी चाची की ओर दोषारोपण भरी नजरों से देखते हुए कहा।

‘ये अंधका और तुम्हारे पिता हैं।’ होलिका के पास अभी भी कोट था और उसकी चीखों को अनसुना करते हुए उसने उसे पकड़ा और जबरदस्ती पहना दिया। ‘ये सब एक साजिश थी। तुम्हारे आस-पास तैनात आदमियों को पकड़ लिया गया है और असमांजा शायद बाहर बेहोश पड़ा है, ये सब मेरी वजह से हुआ है। हम दोनों अंदर बंद हैं।’
तापमान बढ़ने लगा और नारंगी रंग की चटकती हुई लपटें किसी जीव के अंदरूनी अंगों की तरह दहाड़ने लगीं।
‘यह कोट मुझे बचाने के लिए था।’ होलिका ने अपने हाथों से उसका चेहरा थाम लिया। ‘हममें से केवल एक ही इससे बच सकता है।’
लेकिन... लेकिन आपके बारे में क्या?
वह आगे झुकी और उसके पिता की नई ताकत का रहस्य और उसे हराने का एकमात्र तरीका फुसफुसाकर बताया।
‘मैं नहीं चाहती कि वह तुम्हें मार डाले, इसलिए मैं तुम्हें यह बता रही हूँ,’ उसने कहा। ‘अपना ख्याल रखना, मेरे बेटे।’
उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि होलिका रो रही है। वह वैसी महिला नहीं थी जैसी वह उसे जानता था।
‘मैं तुम्हारी पूरी जिंदगी एक अच्छी चाची नहीं रही,’ उसने कहा, उनके चारों ओर गिर रही जलती हुई भूसी को अनदेखा करते हुए। ‘मुझे तुम्हारे लिए वह बनने दो – बस एक बार।’
उसने उसे ज़ोर से धक्का दिया और वह झोपड़ी की दीवार से जा टकराया, जिससे दीवार टूट गई और झोपड़ी का बाकी हिस्सा होलिका पर गिर पड़ा। आग की लपटों के बीच खड़ी, गालों पर आँसू लिए मुस्कुराती हुई उसकी आखिरी छवि उसके मन में हमेशा के लिए बस गई।

41

नरसिंह

नारा जानता था कि उसके पास ऐसा करने के लिए केवल कुछ ही सेकंड बचे हैं। उसने अपना हुड हटाया और अंधका की ओर दौड़ा। उसका शरीर ऊर्जा से प्रज्वलित था और उसके पंजे चांदनी में चमक रहे थे, जैसे ही वह उसका पीछा कर रहा था, तभी उसे एहसास हुआ कि ब्राह्मणी के नेतृत्व में मातृकाएँ उससे पहले ही वहाँ पहुँच चुकी हैं।
कुछ गड़बड़ महसूस करते हुए अंधक ने अपने रथ पर हाथ फेरा। नारा और मातृकाएँ दोनों रुक गईं। ग्यारह अंधक उनके सामने एक घेरे में खड़े थे, और किसी को नहीं पता था कि असली अंधक कौन है।
उनमें से एक ने कहा, 'तुम मुझे पकड़ नहीं सकते।'
दूसरे ने कहा, 'यह असंभव है।'
नारा आगे आई। 'क्या तुम्हें मैं याद हूँ?'
सभी अंधकों ने सूंघते हुए नारा की ओर देखा। उनमें से एक ने हंसते हुए कहा, 'अरे, ये तो वही सिंह है जिससे मैं पहले ही निपट चुका हूँ,' जबकि दूसरे ने जोर से पागलों जैसी हंसी हंसी।
हाथ में त्रिशूल लिए चामुंडा नारा के बगल में आक्रमण के लिए तैयार खड़ी थी। उसने धीमी आवाज में कहा, 'मुझे लगता है कि बीच में खड़ा व्यक्ति अंधका है।'
अंधक तुरंत दो भागों में बंट गए, आधे मातृकाओं का सामना करने के लिए और बाकी आधे नारा की ओर बढ़ गए। जैसे ही गंजे आदमी तलवारें लहराते हुए आगे बढ़े, नारा ने उनके धड़ नोंचकर उन्हें दूर फेंक दिया। एक ने उस पर छलांग लगाई, लेकिन नारा ने उसे भी ज़मीन पर पटक दिया। चामुंडा भी उसके साथ लड़ती रही, लात-घूंसे मारती रही, और किसी निर्दोष अंधक को मारने से बचने की कोशिश करती रही। लड़ाई और भी कठिन होती जा रही थी।
नारा ने तलवार के हमले को रोकते हुए एक अंधका को मुक्का मारा और मुड़कर देखा तो चेनचेन जमीन पर पड़ी थी और एक अंधका उसका गला घोंट रहा था। वह तुरंत उसकी ओर दौड़ा और अपने कंधों से अंधका को एक तरफ धकेल दिया।
‘सावधान रहो!’ चेनचेन चिल्लाई।
नारा ने समय रहते ऊपर देखा और हवा में उसकी ओर आती तलवार से बच गया। एक फुर्तीली लात से उसने पीछे से आ रहे अंधका को ढेर कर दिया।
‘यह ठीक नहीं चल रहा है,’ नारा ने चेनचेन को उठने में मदद करते हुए कहा।

उसने एक कोने की ओर इशारा करते हुए कहा, 'वहाँ एक परछाई है। कोई हाथापाई से भाग रहा है।'
नारा ने अपनी दृष्टि का उपयोग करते हुए स्पष्ट रूप से देखा कि वह एक अंधका था जो गांव के निकट स्थित ट्यूलिप के खेत की ओर दौड़ रहा था।
वह क्यों भाग रहा है?
नारा मुस्कुराई। 'मात्रिकाओं को मत बताना कि वह उस तरफ चला गया है। मुझे इसे हमेशा के लिए खत्म करने दो।'
चेनचेन ने कुछ नहीं कहा, जबकि नारा अंधका के पीछे दौड़ पड़ा। वह ट्यूलिप के फूलों की क्यारियों से होते हुए भागा, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था क्योंकि वह अंधका के करीब पहुँच रहा था। उसने अंधका के पैर पर झपट्टा मारा और उसे ज़ोर से खरोंचा - मांस फट गया और अंधका ज़मीन पर गिर पड़ा।
अंधे आदमी के ऊपर खड़े होकर नारा गुर्राया, 'अब तुम मुझसे बच नहीं सकते।' ‘नहीं… नहीं… कृपया… मैं आपसे विनती करता हूँ…’ अंधका सिसकते हुए बोला और यह पहली बार था जब नारा ने उसे आत्मविश्वास से रहित देखा था।
'तुम ही असली हो,' वह मुस्कुराया और अपने पंजे अपने गले के पास ले आया, जैसे काम करने के लिए तैयार हो।
‘उसे छोड़ दो!’ उसने एक चीख सुनी। नारा आवाज की ओर मुड़ा और कुछ गज की दूरी पर एक स्त्री को धनुष और बाण लिए देखा। वह पार्वती थी।
‘तुम क्या कर रही हो?’ नारा ने पूछा, यह सोचते हुए कि क्या चेनचेन ने ही उसे इस दिशा में भेजा था। ‘आखिरकार हमने उसे पकड़ लिया।’
पार्वती ने कहा, ‘मैंने तुम्हें यहाँ भागते हुए देखा। मुझे आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे जैसा योद्धा हमें इस तरह क्यों छोड़ गया। अंधका को जाने दो!’ ‘तुम उसके साथ क्या करने वाले हो?’ नारा ने पूछा।
‘उसे वापस ले आओ। वह हमारे लिए महत्वपूर्ण है।’
‘ऐसा इसलिए है क्योंकि वह आपका बेटा है, है ना?’
पार्वती वहीं स्थिर खड़ी रही, बाण उसकी ओर ही इंगित था।
‘क्या तुम मुझे चोट पहुँचाने वाले हो?’ नारा हँस पड़ी। ‘तीर से मुझे कोई चोट नहीं पहुँचेगी, मेरी देवी।’
‘परंतु आँख में तीर लगना काफी कष्टदायक हो सकता है। मैं निशाना नहीं चूकती। वह मेरा है, नारा। उसे छोड़ दो,’ पार्वती ने आदेश दिया।

नारा ने अपनी नाक फुलाते हुए पीछे मुड़कर अंधका से दूर चले गए, जो अभी भी जमीन पर कांप रहा था। तभी नारा ने खेत के किनारे दो और अंधकों को देखा। इससे पहले कि नारा उन्हें चेतावनी दे पाते, उन्होंने पार्वती की पीठ में छुरा घोंप दिया। पार्वती खेत में गिर पड़ीं और नारा उनकी ओर दौड़े। उन्हें अब उन्हें चोट न पहुँचाने की कोई परवाह नहीं थी। वे देवी पार्वती का उतना ही सम्मान करते थे जितना भैरव का।
बढ़ते क्रोध से वह दहाड़ा और अंधकों का गला पकड़ लिया। वे छटपटाने और उसके हाथों पर खरोंच मारने लगे, लेकिन वह उन पर भारी पड़ा। उसने उनका गला घोंट दिया और उनके बेजान शरीरों को एक तरफ फेंक दिया।
'कृपया उसे मत मारो,' पार्वती खांसते हुए बोली।
नारा ने अपनी आँखें बंद कर लीं, अपने कड़वे गुस्से को शांत होने दिया; उसकी जगह तुरंत पछतावा आ गया। लेकिन उसने इसे फिलहाल किनारे रख दिया, और वापस उस जगह की ओर देखा जहाँ असली अंधका था। लेकिन, वह वहाँ नहीं था।
‘वह भाग गया,’ नारा ने पैर पटकते हुए कहा, ‘धिक्कार है!’
उसने पार्वती की ओर देखा और उसे अपनी बाहों में उठा लिया। 'मेरी प्रियतमा, मुझे खेद है, आशा है आप ठीक होंगी।'
पार्वती ने उसे थाम लिया और सिर हिलाया। 'तुम मेरे बेटे को मारने की कोशिश कर रहे थे, नारा। मुझे तुम्हें रोकना ही पड़ा।'
'मेरी महिला, क्या मैं कुछ कह सकता हूँ?' उसने उसे वापस गाँव ले जाते हुए पूछा।
'हाँ?'
‘वह अब तुम्हारा बेटा नहीं रहा,’ नारा ने कहा। ‘वह एक पतित व्यक्ति है और उसने तुम्हारे पति की हत्या की है।’
पार्वती ने अपने जबड़े भींच लिए और जवाब देने से इनकार कर दिया। वे दो अलग-अलग विचारधाराओं वाले लोग थे। और मौन में, उन्हें एक समानता मिली - असफलता।

42

प्रहलाद

वह लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ, उसके पीछे जलता हुआ मलबा था जिसके नीचे उसकी चाची का शव पड़ा था। चारों ओर धनुषों की आवाज़ गूंज रही थी, बाणों की सरसराहट और तलवारों की खड़खड़ाहट। प्रहलाद की दुनिया मानो इस युद्धक्षेत्र तक सिमट गई थी। उसने गहरी सांस ली और देखा कि कोई उसकी ओर दौड़ रहा है। वह एक आदमी था।
उसने गार्ड द्वारा उसकी ओर फेंके गए भाले से खुद को बचाया और खुद को उस आदमी की छाती पर झोंक दिया, उसे जमीन पर गिरा दिया और तब तक उसे मुक्के मारता रहा जब तक कि गार्ड बेहोश नहीं हो गया।
मुझे यह जगह छोड़नी होगी।
प्रहलाद चारों ओर फैले धुएँ में चलने लगा। उसने आगे देखने के लिए अपनी आँखें मलीं, लेकिन वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा। घबराया हुआ और दिशाहीन होकर उसने पीछे मुड़कर देखा और एक दिल दहला देने वाली चीख निकाली। आसा का बेजान शरीर ज़मीन पर पड़ा था, मानो खाली आँखों से उसे देख रहा हो। उसका सिर बुरी तरह कुचला गया था, शायद हथौड़े से।
नहीं, नहीं, नहीं।
उसने आसा को अपनी बाहों में भर लिया। 'जाग जाओ, भाई। जाग जाओ।'
धुंआ छंटने पर उसने देखा कि विष्णुसेना पहाड़ियों पर असुर सैनिकों से लड़ रहे थे। आग और गुलेलों के बीच, हर जगह शव पड़े थे; अंधेरे में भी धरती खून की तरह लाल चमक रही थी। प्रहलाद आसा के शव को जंगल की ओर खींचने लगा, जो उसे एकमात्र सुरक्षित विकल्प लगा। अचानक उसका सामना दो असुर सैनिकों से हुआ। ‘गद्दार!’ उनमें से एक ने अपनी तलवार आगे बढ़ाई। निहत्थे होने के कारण, प्रहलाद ने तलवार को रोकने के लिए अपना हाथ उठाया। तलवार उसकी चाची द्वारा दिए गए ऊनी कोट को चीर गई।
‘तुमने होलिका देवी को मार डाला!’ दूसरे असुर ने गरजते हुए कहा। ‘तुमने उसे धोखा दिया!’

प्रहलाद के पास बचने का कोई रास्ता नहीं था। वह अब भी आसा के शव को पकड़े हुए था। जैसे ही सैनिक करीब आया, प्रहलाद ने उसके हमले से बचते हुए उसे सिर से टक्कर मारी। सैनिक दर्द से कराहते हुए पीछे गिर पड़ा। एक और तलवार प्रहलाद की पीठ पर लगी, लेकिन उसके कोट ने उसे बचा लिया। उसने गिरे हुए सैनिक का हथियार उठाया और दूसरे असुर को उसकी बगल में घोंप दिया।
दो और असुर युद्ध में शामिल हो गए। आसा का हाथ थामे हुए प्रहलाद ने बचने का रास्ता खोजने के लिए अपने आसपास नज़र दौड़ाई। तभी एक असुर के शरीर में तीर लगकर वह गिर पड़ा, और दूसरा तीर दूसरे असुर को भी लगकर गिरा दिया।
उसने उस दिशा में मुड़ा जहाँ से तीर आए थे, उसने धृति को देखा। वह दौड़कर उसके पास आई और जल्दी से उसे गले लगा लिया। उसने आसा के शव को देखा और गहरी साँस ली।
'अगर हमें जीवित रहना है तो तुम्हें उसे छोड़ना होगा,' उसने कहा, उसकी आवाज मजबूत थी लेकिन उसकी आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं।
‘मैं नहीं कर सकता। यह… यह मेरी गलती है।’
‘नहीं, ऐसा नहीं है।’ उसने अपनी हथेलियों को उसके गालों पर दबाया। ‘चलो चलते हैं। हम पर घात लगाकर हमला किया गया था और मैंने अपने आदमियों को तितर-बितर होने का आदेश दिया था। हम उनसे ज्यादा देर तक लड़ नहीं सकते।’ ‘होलिका… होलिका ने बलिदान दिया,’ प्रहलाद ने कहा, उसकी आवाज अब कमजोर और कांप रही थी।
'क्या हुआ?'
‘यह योजनाबद्ध था। वे संधि नहीं चाहते –’
‘कोई बात नहीं,’ उसने कहा और उसे खींचकर जंगल में ले गई।
अराजकता से दूर। अंधकार से दूर। जैसे ही वह हर चीज़ से दूर भागा, उसका मन दो बातों की ओर खिंचा चला गया - आसा का शव और होलिका का बलिदान।
वह अपने दोस्त का बदला लेना चाहता था। और वह अपनी चाची के प्रति न्याय करना चाहता था।

43

हिरण्यकश्यप

वह मर चुकी थी। लेकिन उसने उसके लिए शोक नहीं मनाया, क्योंकि अपनी प्यारी बहन के चले जाने और उसके शरीर के राख में तब्दील हो जाने की सच्चाई को स्वीकार करने में उसे कई दिन लग गए। और सबसे बुरी बात क्या थी? इसके लिए उसका बेटा ज़िम्मेदार था। या कम से कम उसके आदमियों का यही कहना था। हिरण्य ने अपने सबसे नज़दीक खड़े सैनिक की ढाल पर मुक्का मारा। दर्द की लहर उसके पूरे शरीर में दौड़ गई, जिससे कुछ पल के लिए उसका ध्यान अपने दुख से हट गया। वह अपने प्रशिक्षण मैदान में था, जहाँ चारों ओर सैनिक ढालें पकड़े खड़े थे, जिन पर वह मुक्के बरसा रहा था। एक के बाद एक, उसने ढालों को चकनाचूर कर दिया और गुस्से में आखिरी ढाल को मैदान के पार फेंक दिया। वह हताशा से चीखते हुए घुटनों के बल गिर पड़ा और ज़मीन पर मुक्का मारा। धरती काँप उठी।
उनका ब्रह्मास्त्र प्रकाश में चमक उठा, जिससे नारंगी किरणें कई भागों में विभाजित हो गईं।
उसने अखाड़े में एक दुबले-पतले, पतले बालों वाले व्यक्ति को प्रवेश करते देखा। हिरनाया ने उसे तुरंत पहचान लिया। वह अंधका का डरावना सहायक, कालनेमी था।
हिरण्य ने अपना अभ्यास रोक दिया और सहायक की ओर देखा। 'तुम क्या चाहते हो?' ‘हे स्वामी, मुझे भगवान अंधका ने भेजा है।’ कलानेमी ने प्रणाम किया। वह बिना दांत दिखाए बोलता था, या शायद उसके दांत थे ही नहीं।
'वह अब कैसा है?'
हिरण्य ने जब आखिरी बार अंधका को देखा था, तब वह जख्मी था और उसके पैर पर एक बड़ा घाव था - सिंह के पंजों के निशान।
‘महाराज, अभी भी घाव भर रहे हैं। हमें पता चला है कि देवी होलिका द्वारा अपने भतीजे के साथ किए गए व्यवहार के बारे में अफवाहें फैल रही हैं।’ कालनेमी ने एक सैनिक को आगे आने का इशारा किया। वह एक कृत्रिम कपड़ा लिए हुए था जिस पर एक मोटी, बदसूरत औरत की तस्वीर बनी थी जिसकी नाक बड़ी थी और

वह एक बच्चे को कड़ाही में जलाने वाली थी। ‘लोग कह रहे हैं कि देवी होलिका ने उसे अपनी गोद में जलाकर मारने की कोशिश की, लेकिन भगवान विष्णु ने उसकी रक्षा की और वह बच गया। जिस दिन यह घटना घटी, उस दिन को आपके लोग बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाते हैं।’
‘यह किसने किया?’ हिरण्य ने मुंह बनाते हुए पेंटिंग को पकड़ा और तुरंत उसे फाड़ दिया।
‘हमने उसे कैद कर लिया है, महाराज,’ कालनेमी ने कहा। ‘वह विष्णु का उपासक है। लोग मानते हैं कि वास्तव में भगवान विष्णु उसकी रक्षा करते हैं और चूंकि यहां असुरों से अधिक मानव हैं, इसलिए वे सभी आपके खिलाफ विद्रोह करने और पुराने शहर को वापस लाने की योजना बना रहे हैं।’
हिरण्य को इस बात का डर था। वह आम नागरिकों को नहीं मार सकता था, अपने लोगों को तो बिल्कुल नहीं। लेकिन अगर वे उसके खिलाफ विद्रोह कर दें तो क्या वे वाकई उसके लोग रह जाएंगे?
‘सुनो,’ हिरण्य ने कहना शुरू किया।
हिरण्य के बोलते ही कलानेमी की आँखें अत्यंत प्रसन्न हो उठीं। हिरण्य ने आगे कहा, “उन सभी हमदर्दों को ढूँढ़ो जो विद्रोह कर रहे हैं या गुप्त रूप से विद्रोह भड़का रहे हैं। मैं उन सबको सूली पर चढ़ाना चाहता हूँ।” हिरण्य ने अपने आदमियों को ऊँचे स्वर में आदेश दिया, “मेरे राज्य में गुस्ताखी का कोई दंड नहीं मिलेगा। समझे?”
सभी ने सिर हिलाया।
हिरण्य ने कालनेमी की ओर देखा, उसकी आँखें घृणा से सिकुड़ गईं। 'मुझे चित्रकार के पास ले चलो।'

हिरण्य कालकोठरी में आगे बढ़ा और कालनेमी उसके पीछे लड़खड़ाते हुए चल रहा था। कैदी अपनी कोठरियों में दुबके हुए थे, असुर राजा के क्रोध को आमंत्रित करने के डर से। जब वे अपनी मंज़िल तक पहुँचे, तो हिरण्य एक तरफ खड़ा हो गया जबकि कालनेमी कुछ देर तक चाबियों से जूझता रहा और अंत में दरवाजा खोल

दिया। जैसे ही हिरण्य अंदर दाखिल हुआ, कोठरी का कैदी दूर कोने में दीवार से सट गया।
‘क्या तुमने यह किया?’ असुर राजा ने चित्रकार को चित्र के फटे हुए टुकड़े दिखाते हुए पूछा।
चित्रकार ने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, वह धीरे-धीरे कुछ बुदबुदाने लगा। ‘ओह,’ हिरण्य ने हंसते हुए कहा, ‘क्या तुम अपने देवता की पूजा कर रहे हो? यह अच्छा है। करो। मैं इंतजार करूंगा।’
चित्रकार ने हाथ जोड़कर जोर-जोर से मंत्रोच्चार किया। अंत में आंखें खोलते हुए उसने कर्कश स्वर में कहा, 'वह तुम्हें पकड़ लेगा, और तुम्हें जल्द ही अपने पुत्र के हाथों भगवान विष्णु के क्रोध का सामना करना पड़ेगा।'
हिरण्य ने दांत पीसते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे देवता के आने का इंतजार कर रहा हूं। वह अभी तक नहीं आया है।'
चित्रकार की आंखें भय से चौड़ी हो गईं।
‘तुमने मेरी बहन का मज़ाक उड़ाया। तुमने उसे राक्षसी बना दिया।’ हिरण्य थोड़ी देर रुका, घृणा से बोला। ‘वह एक सुंदर स्त्री और दयालु स्वभाव की थी, लेकिन तुम जैसे प्रचारकों को बस एक ही चीज़ चाहिए – अपना काला-सफेद रंग दिखाना। खैर, मैं तुम्हें एक बात बता दूं: मुझे परवाह नहीं। भगवान विष्णु ने उसे नहीं पाया। मेरे बेटे ने पाया। किसी तरह उसने उसे चकमा दिया और ऐन मौके पर बच निकला।’
‘मुझे याद है कि हमारे गुरु, भगवान स्वरभानु, हमें हर दिन अभ्यास करने के लिए मजबूर करते थे, हमारे हाथों में गर्म कोयले रखकर हमें जलन का एहसास कराते थे। वे कहते थे कि इससे हम कठोर और लड़ने में सक्षम बनेंगे। हमारे पास जलन को शांत करने के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त ठंडा पानी होता था, और वह अपना हाथ पानी में डुबोना छोड़ देती थीं ताकि मैं सारा पानी इस्तेमाल कर सकूँ।’ वह चित्रकार के करीब आया और धोखे से कोमल लेकिन धमकी भरे स्वर में फुसफुसाया, ‘और तुमने इतनी सौम्य महिला का मजाक उड़ाया।’
चित्रकार को कुछ समझ आने से पहले ही, हिरण्य के हाथ ने उसके मांस और नसों को चीरते हुए हड्डियाँ चकनाचूर कर दी और उसका धड़कता हुआ दिल बाहर निकाल लिया। उसकी आँखें बंद हो गईं और वह कोठरी के फर्श पर गिर पड़ा।

उसने मन ही मन सिर हिलाया, तभी उसकी मुट्ठी चित्रकार की छाती में जा लगी, टूटी हुई हड्डियों को महसूस करते हुए, मांस को भेदते हुए उसने अंततः चित्रकार का धड़कता हुआ दिल बाहर निकाल लिया। हिरण्य का हाथ खून से लाल हो गया था। चित्रकार की आँखें बंद हो गईं और वह गिर पड़ा।
‘गुरुजी, मुझे आपको एक और बात बतानी है,’ कलानेमी ने उनके पीछे से कहा। ‘गुरुजी अंधका ने आपके लिए किसी से मुलाकात तय की है। उन्होंने कहा कि उस व्यक्ति के पास विष्णुसेना शिविर के संभावित स्थान के बारे में जानकारी है।’
‘कौन है?’ हिरण्य ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं।
कलानेमी मुस्कुराई।

44

चेनचेन

देवी पार्वती घायल हो गई थीं। चेनचेन ने उनके घावों पर कई तरह के मलहमों का मिश्रण लगाकर मालिश की और फिर एंटीसेप्टिक क्रीम लगाई।
'मैं नहीं चाहती कि उसकी मृत्यु हो,' पार्वती ने किसी से विशेष रूप से न कहते हुए, ऊपर छत की ओर देखते हुए कहा।
चेनचेन शांत रहा।
‘मुझे नहीं पता कि मैं उसके साथ क्या करना चाहती हूँ…’ पार्वती की आवाज भर्रा गई। ‘मैं बस इतना जानती हूँ कि वह मेरा बेटा है और मैं चाहती हूँ कि वह फिर से ठीक हो जाए।’
'मुझे पूरा यकीन है कि उसके भीतर कहीं न कहीं भृंगी जरूर है,' चेनचेन ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए जवाब दिया।

‘मुझे पता है।’ पार्वती ने चेनचेन का हाथ पकड़ते हुए मुस्कुराते हुए कहा। ‘नारा का अनुसरण करने के लिए कहने के लिए धन्यवाद।’
चेनचेन स्तब्ध रह गई। वह पार्वती को बताना नहीं चाहती थी। उसने नारा से वादा किया था कि वह अंधका के प्रति उसके कार्यों में दखल नहीं देगी, लेकिन वह खुद को रोक नहीं पाई। वह एक अच्छी इंसान थी। और वह दूसरों में अच्छाई देखती थी।
चेनचेन ने कहना शुरू किया, 'मैं उससे प्यार करती हूँ, लेकिन वह गलत है। और इसमें उसकी कोई गलती नहीं है। वह लोगों में अच्छाई नहीं देख पाता, जैसे मैं देखती हूँ। मेरा मानना है कि हर किसी को बेहतर इंसान बनने का दूसरा मौका मिलना चाहिए। अंधाका को वह मौका नहीं मिला है और मैं चाहती हूँ कि आप उसे वह मौका दें।'
पार्वती मुस्कुराई। 'तुम एक अच्छी दोस्त हो, चेनचेन। बहुत कम लोग अपने प्रिय व्यक्ति के खिलाफ जाते हैं।'
चेनचेन ने सिर हिलाया। 'क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूँ?'
'हाँ?'
'अगर वह नहीं बदला तो क्या होगा, मेरी महिला?'
मोमबत्तियों की मंद रोशनी टिमटिमा रही थी, जिससे पार्वती के चिंतित चेहरे की खाली जगहें रोशन हो रही थीं। वह गहरी सोच में डूबी हुई धीरे-धीरे पलकें झपका रही थी।
‘मुझे नहीं पता। मैं उस संभावना के बारे में सोचना भी नहीं चाहती,’ उसने अंत में कहा। ‘अगर वह नहीं भी सुधरता है, तो भी मैं उसे नहीं छोड़ूंगी। मैं उसे सुधारने की पूरी कोशिश करूंगी।’
‘क्या आपको सच में लगता है कि वह अच्छाई की ताकत बन सकता है?’
‘हां।’ पार्वती की आंखों में आंसू थे।
चेनचेन ने उसे गले लगाया, इस उम्मीद में कि सब कुछ बेहतर हो जाएगा।

चेनचेन नारा के तम्बू में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि वह अपने घावों को खुद ही सिल रहा था। हर टांका लगाते ही वह दर्द से कराह उठता, फिर सुई के अगले चुभन के लिए खुद को तैयार करता। चेनचेन उसकी मदद करने के लिए पास गया। 'मुझे लगता है कि तुम काफी करीब थे,' उसने कहा।
मैं थी। और वह भाग निकला। बिल्कुल हर बार की तरह। मुझे उसके साथ ऐसा मौका दोबारा नहीं मिलेगा।
चेनचेन ने नारा को शोक में डूबा हुआ देखा, इसलिए उसने उसे कसकर गले लगा लिया। 'मुझे तुम्हें कुछ बताना है।'
'हाँ?'
‘मैंने… मैंने अपने पति को म्लेचाओं के हाथों नहीं खोया।’
नारा पीछे हट गई और गंभीरता से उसकी ओर देखने लगी। 'तो फिर?'
उसने कहा, 'यह मैं ही थी, मैंने ही उसे मारा। वह... उसने मुझे चोट पहुंचाई। मैंने उसे कई दिनों तक मेरा शोषण करने दिया, जब तक कि मुझे यह एहसास नहीं हुआ कि मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकती और मैंने...'
नारा ने सिर हिलाया। 'मैं समझ गई।'
चेनचेन हैरान थी: वह खुद से इतनी कड़वाहट रखती थी कि उसने उससे अलग व्यवहार की उम्मीद नहीं की थी।
चेनचेन ने रुक-रुक कर कहा, 'मैं लोगों में अच्छाई देखना चाहती थी, लेकिन मैं नहीं देख पाई। उसके बाद... उसके मरने के बाद, मैं एक बहुत ही नैतिक रूप से संदिग्ध जीवन जी रही थी, जब तक कि मैं तुमसे नहीं मिली। उसके बाद जो कुछ भी हुआ है, उससे मुझे एहसास हुआ है कि लोगों को दूसरा मौका मिलना चाहिए। मुझे अपने पति को नहीं मारना चाहिए था। मुझे भाग जाना चाहिए था। मुझे अपने गुस्से के आगे नहीं झुकना चाहिए था।'
‘तुम मुझे यह बात अभी क्यों बता रहे हो?’ नारा ने पूछा।
वह उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गई और उसका चेहरा अपनी ओर घुमाते हुए बोली, ‘क्योंकि मैं चाहती हूँ कि तुम मुझसे वादा करो कि तुम क्रोध को अपने ऊपर हावी नहीं होने दोगे। तुम एक अच्छे इंसान हो, नारा। लेकिन तुम्हारा क्रोध तुम्हें हिंसक बना देता है और मैं ऐसा नहीं होने दे सकती। मुझसे वादा करो?’

नारा ने सिर हिलाया, मुस्कुराने की कोशिश करते हुए, चेनचेन ने उसे ज़ोर से चूमा। नारा के हाथ उसके चारों ओर कस गए और उसने उसे कालीन पर लिटा दिया, वह उसमें खो गया, उनके पैर आपस में उलझ गए, उनके हाथ एक-दूसरे को छू रहे थे। और उस भावुक क्षण में, वे एक हो गए थे।

45

प्रहलाद

तीन दिन बीत चुके थे। वह मानचित्र कक्ष में था, जहाँ सभी योजनाएँ बनाई जाती थीं और रणनीति तय की जाती थी, जहाँ आसा अपना अधिकांश समय बिताना पसंद करता था। और अब वह यहाँ फंसा हुआ था, उसके बगल में धृति थी, जो उनके सामने मेज पर रखे आसा के निजी सामान को देख रही थी।
‘हमें इसके बारे में क्या करना चाहिए?’ उसने अंगूठियां और किताबें दिखाते हुए पूछा।
'उन्हें रखो।'
प्रहलाद ने सिर हिलाया, क्योंकि उसे भी उन्हें नष्ट करने का मन नहीं था। यह एक दुखद दिन था। अंधका बच निकला था, होलिका मर गई थी। संधि एक जाल साबित हुई थी।
धृति ने कहा, ‘हम इस तरह की गलती दोबारा नहीं होने दे सकते। उस दिन हममें से लगभग पचास लोग मारे गए थे। भगवान विष्णु का शुक्र है कि हम पीछे हट गए और तितर-बितर हो गए।’
‘मुझे पता है। अब और कोई संधि नहीं। अब सिर्फ साम्राज्य को नष्ट करने की योजनाएँ ही बची हैं।’ प्रहलाद उस कुर्सी पर झुक गया जो पहले आसा की थी, और उससे पहले नारद की। ‘हमें कहीं और चले जाना चाहिए।’
‘मुझे पता है। फिर से। पूरे शिविर का मनोबल गिरा हुआ है, प्रहलाद। हमारा नेतृत्व करने वाला कोई नहीं है। पिछले दोनों नेताओं की भयानक मौत हो गई।

मुझे नहीं पता कि इस स्थिति में क्या करना चाहिए। हर कोई हार मानकर इलवार्टी के बाहरी इलाके में भाग जाना चाहता है,’ उसने कहा।
प्रहलाद ने सिर हिलाया। यह एक उपयुक्त समाधान प्रतीत हुआ। 'आप क्या करेंगे?'
कुछ साल पहले, विष्णुसेना में शामिल होने से पहले, मैं एक गली का लड़ाका था, एक ऐसा आवारा जो किसी से भी लड़ने को तैयार रहता था। मेरे प्रशिक्षक हमेशा मुझसे कहते थे कि अगर कुछ भी योजना के अनुसार न हो, तो इसका मतलब यह नहीं कि उसका महत्व कम हो जाता है। अगर आप किसी मुक्के से गिर जाते हैं, तो उठो और पलटवार करो।
‘तो, तुम गिरते हो, सीखते हो और उठते हो?’ प्रहलाद ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। ‘एक स्ट्रीट फाइटर, है ना? मुझे लगता है तुम तो हर काम में माहिर हो।’ ‘मैंने सड़कों पर बहुत मुश्किल समय बिताया है,’ उसने कहा। ‘मैंने अच्छे से बुरे और बुरे से बुरे दोनों तरह के इंसान देखे हैं, और यकीन मानिए, उनकी मुस्कान और शक्ल एक जैसी होती है। उनके काम ही तो…’ वह अचानक रुक गई। ‘लेकिन जब मैं तुम्हें देखती हूँ, तो मुझे एक नेता नज़र आता है। मुखिया बनो। मेरे पास अब भी तुम्हें मुखिया बनाने की शक्ति है क्योंकि मैं आसा की दूसरे नंबर की अधिकारी थी।’
प्रहलाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'मुझे डर है कि मैं नारद और आसा जितना अच्छा नहीं हो पाऊंगा।'
धृति ने सिर हिलाया। 'तुम उनसे बेहतर बनोगी।'
प्रहलाद को धृति के सुझाव पर विचार करने का अवसर ही नहीं मिला, क्योंकि ठीक उसी समय नारा, चेनचेन और मातृकाएं तम्बू में प्रवेश कर गईं। नारा ने सबसे पहले बोलना शुरू किया।
'इंद्रा हमसे गठबंधन करना चाहता है।'
नारा ने आगे कहा, 'लेकिन हिरण्यकश्यप को हराने के लिए नहीं। बल्कि अंधक से निपटने के लिए। उन्हें लगता है कि वह उनके लिए एक वास्तविक खतरा है।' “इंद्र को इस गठबंधन की खबर कैसे मिली?” प्रहलाद ने सावधानी से पूछा। ‘मेरे माध्यम से,’ ब्राह्मणी ने हाथ उठाते हुए कहा। ‘जब मुझे पता चला कि देवों का शिविर पास ही है, तो मैं उनसे मिलने गई। जैसा कि आप जानते हैं, उन्होंने ही हमें बनाया है। खैर, जब उन्हें पता चला कि हम अंधका के कितने करीब पहुँच गए हैं, तो उन्होंने हमारी मदद करने की पेशकश की।’

‘आपने उसे हमारे ठिकाने के बारे में बता दिया?’ प्रहलाद अविश्वास से बोला। ‘आप यूं ही यह जानकारी नहीं दे सकतीं, मेरी मालकिन!’
‘चिंता मत करो, ये भगवान इंद्र हैं।’
प्रहलाद ने धृति की ओर देखा। 'तुरंत जगह बदलो।'
उसने सिर हिलाया।
‘क्या हो रहा है?’ ब्राह्मणी ने चिढ़कर पूछा।
हम अब और जोखिम नहीं ले सकते। मुझे यकीन है कि भगवान इंद्र एक अच्छे इंसान हैं लेकिन—’
नारा ने प्रहलाद का कांपता हुआ हाथ पकड़ा और उसे मजबूती से थाम लिया। 'शांत हो जाओ, पुत्र। सब ठीक है। मुझे पता है तुम चिंतित हो। लेकिन इंद्र हमारे साथ हैं। वे हमेशा से हमारे साथ रहे हैं, भले ही कभी-कभी ऐसा न लगे। उन्हें कई बार क्रूर होना पड़ा है, लेकिन वे राजा हैं।'
प्रहलाद ने कांपते हुए आह भरी, अपनी आँखें बंद कीं और कहा, 'क्या उसने तुम्हें बताया है कि अंधका कहाँ है?'
‘जी हां,’ ब्राह्मणी ने कहा। ‘वह एक सुरक्षित रथ में यक्षलोक जा रहा है। अगर हम सूर्यास्त के समय वहां पहुंच जाएं, जब वह यात्रा कर रहा होगा, तो हम उसे पकड़ सकते हैं।’
‘उसे कैसे पता चला?’ प्रहलाद ने पूछा।
‘क्या?’ ब्राह्मणी ने पूछा।
‘उसे कैसे पता चला कि अंधका कहाँ था?’
‘जासूस, बिलकुल,’ ब्राह्मणी ने उपहास उड़ाते हुए कहा।
और बदले में उसे क्या चाहिए?
पार्वती ने आगे कहा, 'हम उसे गिरफ्तार करने के लिए तैयार हैं। वह जनशक्ति बर्बाद नहीं करना चाहता।'
प्रहलाद ने सिर हिलाते हुए कहा, 'लेकिन हमें फिर भी जगह बदलनी चाहिए। आप सब जाकर अंधका को ले आइए और उसके साथ जो भी उचित लगे वो कीजिए।'
धृति ने कहा, 'मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।'
प्रहलाद को यह विचार पसंद नहीं आया, लेकिन उसने सहमति में सिर हिलाया क्योंकि धृति जानती थी कि वह क्या कर रही है।
‘क्या तुम विष्णुसेना के प्रमुख बनने जा रहे हो?’ नारा ने पूछा।

तंबू में मौजूद सभी लोग उसकी ओर ऐसे देख रहे थे मानो प्रश्न का उत्तर केवल वही जानता हो, लेकिन ऐसा नहीं था।
‘मैं बहुत छोटा हूँ,’ प्रहलाद ने जवाब दिया। ‘क्या कोई स्वेच्छा से आगे आना चाहता है?’
ब्राह्मणी ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'हम तो यहाँ सिर्फ अंधका के लिए आए हैं।' प्रहलाद ने आशा भरी निगाहों से नारा की ओर देखा। सिंह कुछ क्षणों के लिए चिंतन में डूबे रहे, फिर उन्होंने प्रहलाद को तम्बू से बाहर खींच लिया और लोगों को अपने चारों ओर इकट्ठा होने के लिए चिल्लाने लगे।
‘तुम क्या करने की कोशिश कर रहे हो?’ प्रहलाद ने पूछा।
‘इस पूरी समस्या के बाद मुझे क्या करना चाहिए था,’ नारा ने जवाब दिया। ‘तुम इसके लायक हो –’
धमाका!
अचानक शिविर में एक जोरदार धमाका हुआ। नारा ने तुरंत प्रहलाद को अपनी बाहों में भर लिया और उसे नीचे दबाए रखा, तभी एक और धमाके ने पूरे शिविर को तहस-नहस कर दिया। लोग इधर-उधर भागने लगे, जबकि मातृकाएं, चेनचेन और धृति तेजी से बाहर निकल आईं।
'क्या हो रहा है?'
असुर सैनिक गुलेलें लेकर शिविर के बाहर जमा हो गए और उनसे विष्णुसेना पर आग के गोले फेंक रहे थे। इस आक्रमण का नेतृत्व प्रहलाद के पिता हिरण्यकश्यप कर रहे थे।

46

नरसिंह

एक और धमाका। वह जानता था कि उसे क्या करना है। प्रहलाद और चेनचेन की रक्षा करनी है।

अपने शरीर से लड़के की रक्षा करते हुए, नारा ने चेनचेन और धृति से चिल्लाकर कहा, 'भागो!'
वे दोनों जंगल की ओर दौड़ पड़े।
‘तुम्हें भी भागना होगा,’ नारा ने कहा। ‘मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी।’ प्रहलाद ने सिर हिलाया और तेज़ी से आगे बढ़ने लगा। नर ने मुड़कर देखा तो हिरण्य अपनी लंबी तलवार से विष्णुसेना पर वार कर रहा था। ज़ोरदार दहाड़ के साथ, नर ने अपने पंजे अपने चारों ओर मौजूद असुर सैनिकों के गले और धड़ में गाड़ दिए, जिससे मैदान में खून की बौछार होने लगी। उसने प्रहलाद की ओर देखा। वह गिर पड़ा था और उसके टखने में एक तीर लगा हुआ था। असुर सैनिक उसकी ओर बढ़ रहे थे, जान बचाकर भाग रहे नागरिकों की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। नारा का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, वह प्रहलाद की ओर दौड़ा और लड़के के सबसे नज़दीक खड़े सिपाही से टकराकर उसे कई गज दूर फेंक दिया। दूसरे सिपाही ने अपनी तलवार नारा के गले पर तान दी, लेकिन नारा ने अपने पंजों से उसे रोक दिया। बिजली की तेज़ी से नारा ने असुर के पेट पर वार किया और उसे बेरहमी से चीर डाला। तीसरे सिपाही ने अपने गिरे हुए साथियों को देखा और भाग गया। नारा उस पर झपटा और उसे नीचे गिरा दिया, उसके पंजे उसकी त्वचा को इस तरह फाड़ रहे थे कि उसकी नसें दिखाई दे रही थीं।
नारा ने फिर दहाड़ते हुए प्रहलाद से कहा, 'मेरे साथ रहो!'
प्रहलाद ने नर को सूंड से पकड़ लिया और जंगल की ओर चल दिए, जहाँ विष्णुसेना के अधिकांश अनुयायी तितर-बितर हो चुके थे। मातृकाएँ, जिन्होंने अब तक वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी थी, वे भी भाग रही थीं, क्योंकि वहाँ बहुत सारे असुर थे।
‘मैं बस… मैं नहीं कर सकता…’ प्रहलाद कांप रहा था।
‘कसकर पकड़े रहो। चिंता मत करो। हम इससे सुरक्षित निकल जाएंगे,’ नारा ने आश्वासन दिया।
एक असुर सैनिक उनके सामने आया, नारा ने उसके चेहरे पर वार किया। दूसरे असुर की हड्डियाँ अलग कर दी गईं और उसे जंगल की ज़मीन पर छोड़ दिया गया।
उसने अभी कुछ ही कदम बढ़ाए थे कि एक जानी-पहचानी सी आवाज ने उसे रोक दिया।
कर्कश स्वर में आवाज आई, 'सिम्हा, अब तुम भाग नहीं सकते।'
नारा ने हिरण्यकश्यप पर झपट्टा मारा, जो लापरवाही से उसकी ओर बढ़ रहा था, उसके पीछे सौ असुरों की सेना मार्च कर रही थी।

‘सब खत्म हो गया। तुम्हारा काम तमाम हो गया।’ हिरण्य हँसा, उसकी सुनहरी कवच तेज धूप में चमक उठी। उसने प्रहलाद से कहा, ‘तुमने अक्षम्य अपराध किया है।
तुमने अपनी चाची की हत्या कर दी है। अब तुम मेरे पुत्र नहीं रहे।’
‘मुझे अकेला छोड़ दो,’ प्रहलाद ने फुसफुसाते हुए कहा।
मुझे आपकी आवाज सुनाई नहीं दे रही है।
‘मुझे अकेला छोड़ दो!’ प्रहलाद ने नारा के धड़ को कसकर पकड़ते हुए चिल्लाया, मानो वह उससे ऊर्जा सोखने की कोशिश कर रहा हो।
'अरे बाप रे, मैं ऐसा नहीं कर सकता,' हिरण्य ने उपहास करते हुए नारा और प्रहलाद पर निशाना साधा और अपनी तलवार फेंक दी।
लड़के ने भय से अपनी आँखें बंद कर लीं, लेकिन जब उसने आँखें खोलीं तो देखा कि नारा ने ठीक समय पर तलवार रोक दी थी। नारा का चिन्ह प्रकाशस्तंभ की तरह चमक रहा था। उसके हाथ खून से लथपथ थे, लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी। वह दहाड़ा। प्रहलाद को ज़मीन पर लिटाकर, वह हिरण्य की ओर कूद पड़ा, तलवार हमले के लिए तैयार थी।
‘अरे, मेरी ही निशस्त्र का प्रयोग मेरे विरुद्ध करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई,’ हिरण्य ने सिंह पर झपट्टा मारते हुए उपहास किया।
जब दोनों योद्धा आमने-सामने आए, तो नारा ने हिरण्य पर उसकी ही तलवार से वार कर दिया, जिससे असुर राजा चौंक गया। तलवार सुनहरे कवच को भेद गई और हिरण्य कराह उठा। उसने नारा पर पैर से हमला किया। नारा ने उसका पैर पकड़कर उसे पीठ के बल गिरा दिया। उसने हिरण्य पर फिर से वार करने की कोशिश की, लेकिन इस बार वह खुद पीठ के बल गिरा और एक पेड़ के तने से जा टकराया। शरीर में तेज दर्द के बावजूद, नारा खड़ा हो गया। तलवार अभी भी उसके हाथ में थी। उसने देखा कि हिरण्य प्रहलाद को मारने के लिए उसकी ओर बढ़ रहा है।
उसने तलवार से हिरण्य की पीठ पर वार किया और उसके कवच को भेद दिया। असुर राजा गिर पड़ा। नारा प्रहलाद के पास दौड़ा और उसे फिर से उठाया। 'हमें अब यहाँ से निकलना होगा,' उसने खांसते हुए कहा।
लेकिन तब तक हिरण्य अपने पैरों पर खड़ा हो चुका था। उसने कवच से अपनी तलवार निकाल ली थी और उसे नारा की ओर तान रखा था।
‘अरे, तुमने मुझे इससे ज्यादा गुस्सा नहीं दिला सकते थे। लेकिन तुमने अभी- अभी ऐसा कर दिया।’

एक प्रचंड गर्जना के साथ, हिरण्य और उसकी सेना ने नारा और प्रहलाद पर आक्रमण किया। अचानक, आकाश से असुरों पर बाणों की वर्षा होने लगी। हिरण्य ने ऊपर देखा, यह जानने की कोशिश करते हुए कि बाण कहाँ से आ रहे हैं। जैसे- जैसे अधिक से अधिक असुर सैनिक आक्रमण में मारे जाते गए, केवल राजा ही दृढ़ता से डटे रहे।
‘कौन है? सामने आओ!’ उसने आदेश दिया।
एक क्षण के लिए नारा को लगा कि यह इंद्र हैं, जब उन्होंने दो पंखों वाली एक उड़ती हुई मशीन और उसके पीछे वैसी ही एक दर्जन मशीनों को देखा। ज़मीन से देखने पर वे मधुमक्खियों जैसी लग रही थीं, लेकिन वे विशाल विमान थे। एक विमान नारा और प्रहलाद के करीब से गुजरा।
‘अंदर आ जाओ!’ सूरज की एक तेज किरण ने नारा की दृष्टि को धुंधला कर दिया, तभी उसे एहसास हुआ कि यह कौन है।
गरुड़।

47

नरसिंह

नारा अपने पुराने मित्र को देखकर बहुत प्रसन्न हुए, लेकिन साथ ही साथ असमंजस में भी थे। जब असुर सुपर्णों से लड़ रहे थे, तब उन्होंने प्रहलाद को विमान में बिठाया। गरुड़ ने एक झटके में विमान को ऊपर की ओर खींच लिया, तभी एक बड़ा हलचल हुई। जब विमान उतनी ऊंचाई तक नहीं पहुंचा जितना उसे चढ़ना चाहिए था, तो गरुड़ ने नीचे झांका और देखा कि एक असुर चबूतरे से लटका हुआ है। नारा ने अपने पंजे असुर के हाथों में गाड़ दिए। असुर दर्द से कराह उठा, चबूतरे को छोड़ दिया और नीचे जमीन पर गिरकर मर गया।
‘तुम्हें कैसे पता चला? तुम यहाँ क्यों हो?’ नारा ने अपने दोस्त से पूछा, जो असामान्य गति से जंगल में रास्ता ढूंढ रहा था।

‘तुमने मुझसे कहा था कि हमें सही काम करना चाहिए,’ गरुड़ ने कहा। ‘इंद्र के शिविर में मेरे एक जासूस को मातृकाओं और सारी घटनाओं के बारे में पता चलने के बाद, मुझे लगा कि मुझे तुम्हारी मदद करनी चाहिए। यह सब नहीं होना चाहिए था, लड़ाई और सब कुछ। मुझे लगा था कि तुम सब शांति से आए हो, लेकिन मुझे नहीं पता था कि असुर आज हमला करेंगे, मित्र।’
नारा ने अपने दोस्त की पीठ थपथपाई। 'अच्छा हुआ कि तुम यहाँ हो। तुम्हारे बिना हम जीवित नहीं रह सकते थे।'
“खैर, हमारे वाहनों को चलाने और हमारी स्वास्थ्य समस्याओं को ठीक करने के लिए सोमा प्राप्त करने में आपकी सहायता के लिए मेरे सहकर्मी बहुत आभारी थे। बदले में हम इतना तो कर ही सकते थे।” गरुड़ मुस्कुराते हुए विमान को नीचे गिराने लगा।
मुझे उम्मीद है कि वे असुरों से सुरक्षित रहेंगे।
“अच्छा, ठीक है। स्थिति को देखकर हमें एहसास हुआ कि यह निकासी प्रोटोकॉल था, इसलिए हमने आपको बाहर निकाल लिया। अब तक वे तितर-बितर होकर अपने शिविर में वापस चले गए होंगे। वे समय-समय पर इस तरह की हरकतें करते रहते हैं।” ‘मैं पूछना चाह रहा था,’ गरुड़ द्वारा पहले कही गई बात को याद करते हुए नारा ने कहा, ‘इंद्र के शिविर में आपके जासूस क्यों हैं?’
‘खैर, मेरे जासूस हर जगह हैं। हर जगह कान होना अच्छी बात है,’ उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा।
वे जंगल के मध्य में पहुँचे जहाँ नारा ने प्रहलाद को विमान से बाहर निकलने में मदद की।
‘तो अब क्या?’ गरुड़ ने पूछा।
प्रहलाद ने कहा, 'हमें अपने दोस्तों को ढूंढने का कोई तरीका चाहिए।' ‘दोस्त, है ना?’ गरुड़ ने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘अब अपनी नाक का इस्तेमाल करो, यार।’
नारा ने सिर हिलाया और सूंघा; उसे जंगल में चेनचेन की गंध साफ महसूस हो रही थी। 'इधर।' उसने पूरब की ओर इशारा किया और तीनों जंगल में और अंदर चले गए।

वे तीन घंटे से चल रहे थे और गंध और भी तीव्र होती जा रही थी। चलते-चलते प्रहलाद ने गरुड़ को पूरी कहानी सुनाई थी कि कैसे सब लोग विष्णुसेना शिविर में आए, उन्होंने क्या-क्या झेला और हिरण्यकश्यप उन्हें मारने पर क्यों तुला हुआ था।
अंततः वे एक खुले मैदान में पहुँचे, जहाँ नारा ने दो असुर सैनिकों को अपनी तलवारों के साथ आसपास के क्षेत्र का जायजा लेते हुए देखा।
‘चुप रहो, ये तो जासूस ही होंगे,’ नारा ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘मुझे इनसे निपटने दो।’
वह आगे बढ़ा, अपने पंजे हमले के लिए तैयार किए हुए, तभी सैनिक मुड़े और अपनी तलवारें नारा की ओर बढ़ा दीं। अचानक कहीं से और सैनिक आ गए, मानो वे घात लगाकर उनका इंतज़ार कर रहे हों। प्रहलाद और गरुड़ झाड़ियों से निकलकर खुले मैदान में आ गए, नारा के पास। असुर अभी सोच ही रहे थे कि उनके साथ क्या करें, तभी बाणों की बौछार उनकी मदद के लिए आ गई। किसी ने एक असुर के गले में फंदा डाला और उसे तुरंत मार डाला। देखते ही देखते, घात लगाकर हमला करने वाले सभी असुर मारे गए।
‘हमें याद किया?’
नारा ने मुड़कर देखा तो ब्राह्मणी, पार्वती, चामुंडा और अन्य मातृकाएँ धृति और चेंचेन के साथ खड़ी थीं। सभी ने एक-दूसरे का अभिवादन किया, जबकि गरुड़ थोड़ी दूरी पर अकेले खड़े थे।
'हाँ, जिसने तुम्हारी कृतघ्न जान बचाई है, उससे मिलने-जुलने और अभिवादन करने की कोई ज़रूरत नहीं है,' उसने बुदबुदाते हुए कहा।
नारा हँसा और अपने दोस्तों से मुँह मोड़कर गरुड़ का परिचय सभी से कराया। 'आपसे मिलकर अच्छा लगा,' चेनचेन ने कहा, और गरुड़ ने नाटकीय अंदाज में झुककर अभिवादन किया। 'हम सब पास की एक गुफा में छिपे हुए हैं। हमें जाकर अपनी अगली चाल की योजना बनानी चाहिए।'
नारा को उम्मीद थी कि अब वे जो भी योजना बनाएंगे, वह इस समस्या को हमेशा के लिए समाप्त करने वाली आखिरी योजना होगी।

48

प्रहलाद

नारा, चेनचेन, मातृकाएँ, धृति और गरुड़ टपकती हुई गुफा की ऊँची छत के नीचे एक घेरे में खड़े होकर प्रहलाद के आरंभ की प्रतीक्षा कर रहे थे। समय अत्यंत महत्वपूर्ण था – असुर सैनिक जंगल के इन कोनों में उनकी तलाश कर रहे होंगे। प्रहलाद जानता था कि उसे शीघ्र ही कार्रवाई करनी होगी।
पंद्रह साल का होने ही वाला प्रहलाद पिछले एक साल में बहुत दबाव झेल चुका था। बाहर विष्णुसेना के बचे हुए लोग थे, जो अपने पिछले शिविर से लाए गए आवश्यक सामान से एक शिविर बनाने की कोशिश कर रहे थे। उनमें से बहुत कम ही बच पाए थे। एक और हमला हुआ तो शायद वे भी मारे जाएंगे।
‘हमें यह स्पष्ट करना होगा। अब से हम जो भी करेंगे, हमें सफल होना ही होगा,’ प्रहलाद ने सख्ती से कहा और सभी ने सहमति में सिर हिलाया।
‘श्रीमती ब्राह्मणी,’ उन्होंने आगे कहा, ‘आपको अपनी योजना के अनुसार आगे बढ़ना होगा। अंधका का पता लगाइए। आपके पास इस पर अमल करने के लिए शायद कुछ घंटे और हैं। सूरज डूबने वाला है और अगले कुछ घंटों तक धुंध छाई रहेगी।’ उसने सिर हिलाया।
‘धृति, क्या तुम अभी भी जा रही हो?’ प्रहलाद ने लाल बालों वाली लड़की से पूछा।
'हाँ।'
‘मैं भी,’ चेनचेन ने स्वेच्छा से कहा। ‘मैं अपनी सहेली पार्वती के लिए यहाँ आई हूँ,’ उसने रानी की पीठ थपथपाते हुए कहा, ‘मैं यह सुनिश्चित करूँगी कि उसे अंधका मिल जाए।’
नारा और प्रहलाद दोनों मुस्कुराए। इस युद्ध और रक्तपात ने लोगों को एक-दूसरे के करीब ला दिया था।
प्रहलाद ने भारी मन से कहा, ‘हे भगवान गरुड़, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप बचे हुए लोगों को बाहर अपने शिविर में ले जाएँ।’
गरुड़ हैरान तो हुआ, लेकिन उसने अपनी बाहों को सीने पर बांधकर सिर हिलाया।
'ज़रूर, मुझे अपने आदमियों के अलावा किसी और का साथ अच्छा लगेगा, बच्चे।

मुझे उम्मीद है कि उन्हें मेरे लोगों के इस शोर मचाने वाले शैतानों के झुंड से कोई आपत्ति नहीं होगी।'
प्रहलाद हँस पड़ा। 'मुझे यकीन है कि वे ऐसा नहीं करेंगे। अगर मैं अपनी योजना में सफल हो गया, तो मैं राज्य के सभी लोगों को इकट्ठा कर पाऊँगा।' ‘और आपकी आगे क्या योजना है?’ धृति ने पूछा।
प्रहलाद ने होलिका की मृत्यु से कुछ क्षण पहले कही गई बात को याद करते हुए अपने जबड़े भींच लिए। 'इसके लिए मुझे नारा से अकेले में बात करनी होगी।' ब्राह्मणी ने सिर हिलाया। 'शुभकामनाएं, बच्चे।'
एक-एक करके उन्होंने हौसला बढ़ाते हुए उनके कंधे पर थपथपाया और गुफा से निकल गए। गरुड़ लोगों के जाने की व्यवस्था करने लगे, जबकि ब्राह्मणी ने चेन्चेन और मातृकाओं को जाने का आह्वान किया।
धृति वहीं जम गई। 'तुम क्या करने वाली हो?'
‘यह बात मेरे और नारा के बीच की है,’ प्रहलाद ने उसके कंधों को हल्के से दबाते हुए कहा। ‘चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा। मुझे पूरा यकीन है।’
‘तुम मुझे डरा रहे हो।’
उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'आपके साथ रहना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी।' मुझे नहीं पता मैंने आपको बताया था या नहीं, लेकिन विष्णुसेना की ओर मुड़ते हुए, यह सब कुछ हद तक आपकी वजह से ही संभव हो पाया। आपने मुझे इस ब्रह्मांड से भी बड़ी किसी चीज में विश्वास करने की शक्ति दी। धन्यवाद।' धृति ने न तो मुस्कुराया और न ही उसे गले लगाया। उसने बस उसकी निगाहें हटाईं और गुफा से भाग गई। प्रहलाद ने अपने कंधे पर नारा की मजबूत हथेली का स्पर्श महसूस किया।
‘क्या तुम ठीक हो, बेटा?’
‘इस विकट परिस्थिति में तुम ठीक कैसे हो सकते हो?’ उसने सिंह की ओर मुड़कर पूछा, जो बुरी तरह से पिटा हुआ था, लेकिन फिर भी लड़ने की ऊर्जा रखता था। तो योजना क्या है?
प्रहलाद ने आह भरी, उसे समझ नहीं आ रहा था कि होलिका की बात पर विश्वास करे या नहीं। क्या वह सच कह रही होगी?
उन्होंने कहा, 'आपने मेरे पिता द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे कवच और हथियार पर जरूर ध्यान दिया होगा।'

नारा ने सिर हिलाया। 'यह क्या चीज़ है?' उसने अपने हाथों की ओर देखा, जिन पर पट्टियाँ बंधी हुई थीं और सफेद पट्टियों के बीच से गहरा लाल रंग रिस रहा था।
‘यह इस दुनिया की चीज नहीं है। और जब तक वह इसे पहने रहता है, वह अजेय हो जाता है। लेकिन उसे हराने का एक तरीका है,’ प्रहलाद ने हिचकिचाते हुए मुस्कुराते हुए कहा।
'दूर?'
'हां, लेकिन इसके लिए आपको सीवर के रास्ते से गुजरना होगा।'
और कहाँ जाएँगे?
प्रहलाद ने गुफा के बाहर देखा। बस कुछ ही घंटे बचे थे।
‘अगर मेरी गणना सही है, तो तुम्हें महल में होना चाहिए। कोई छुपने की जगह ढूंढो।’ प्रहलाद ने गंभीर स्वर में कहा। ‘मैं उससे भागते-भागते थक गया हूँ। अब समझदारी से काम लेने और यह विश्वास करने का समय है कि भगवान विष्णु हमारी मदद करेंगे।’ उसने नारा के सीने पर बने चिन्ह की ओर देखा।
‘मैं भी यही सोचती हूं। मुझे विश्वास है कि इस बार वह हमारी मदद करेगा,’ नारा ने कहा।

एक घंटे बाद, नारा ने खुद को शहर के द्वार के बाहर पाया। बिना किसी सुरक्षा, सैनिकों या हथियारों के। उसे अब डर नहीं लग रहा था। अब करो या मरो। यह जल्द ही खत्म हो जाएगा। ऐसा होना ही है, उसने मन ही मन दोहराया। भगवान विष्णु का नाम जपते हुए, वह खुले हुए पुल पर चला गया और द्वार पर तैनात पहरेदारों ने एक आकृति को उनकी ओर सहजता से बढ़ते हुए देखा। प्रहलाद ने ढीली कुर्ती और गंदी धोती पहन रखी थी। वह नंगे पैर था। उसकी हालत देखकर कोई कह भी नहीं सकता था कि वह कभी राजकुमार रहा होगा। घबराकर पहरेदारों ने प्रहलाद पर हथियार तान दिए, लेकिन वह चलता रहा।
‘पीछे हटो! तुम कौन हो?’ अचानक गार्ड का चेहरा सदमे से भर गया। ‘अरे, यह तो वही गद्दार है!’

प्रहलाद ने आत्मसमर्पण करते हुए अपने हाथ ऊपर उठा लिए। उसने द्वार की खिड़कियों की ओर देखा जहाँ बड़े-बड़े धनुष उसकी ओर निशाना साधे हुए थे। प्रहलाद ने कहा, 'मुझे कोई परेशानी नहीं चाहिए। मैं बस अपने पिता से मिलने जाना चाहता हूं।'
‘तुम क्या कह रहे हो?’ असुर ने पूछा।
प्रहलाद ने मन में द्वेष रखते हुए उत्तर दिया, 'मैं स्वयं को सौंपने आया हूँ।'

49

नरसिंह

सीवर की रखवाली तीन असुर कर रहे थे। नारा ने मन ही मन बड़बड़ाते हुए पहरेदारों की ओर दौड़ लगाई और अपनी अदम्य शक्ति से उन्हें चौंका दिया। उसने झट से अपने पंजों से एक पहरेदार की छाती पर वार किया और दूसरे का जबड़ा तोड़ दिया। तीसरे ने अपनी ढाल से सिंह के प्रहारों को रोका। लेकिन नारा ने उस पर कलाबाजी मारी और उसे अंधेरे, गंदे पानी में गिरा दिया। फिर उसने तब तक उसका दम घोंटा जब तक उसने अपनी जान नहीं दे दी।
और फिर उसे पीछे से एक धक्का महसूस हुआ।
वह पानी में गिर पड़ा, काला पानी उसके चेहरे पर छलक गया और उसका शरीर गंदा हो गया। उसने पीछे से पकड़ी हुई पकड़ को ढीला करने की कोशिश की, लेकिन उसे ज़मीन पर धकेल दिया गया, पकड़ जितनी मज़बूत हो सकती थी उतनी ही मज़बूत थी। उसने झट से खुद को पीछे धकेला, उसके पैर तेजी से उछले जबकि उसकी बाहें दर्द से छटपटा रही थीं। वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया, जबकि उस आदमी की पकड़ अभी भी उस पर थी।
नारा ने खुद को पीछे से धक्का दिया और उसे दीवार से सटाकर पकड़े हुए गार्ड को भी धक्का दे दिया।

जैसे ही पकड़ ढीली हुई, एक ज़ोरदार चीख और विलाप की आवाज़ सुनाई दी। नारा आज़ाद हो गया और राहत की साँस लेते हुए, साथ ही तनाव के एक झटके के साथ, उसने मुड़कर उस तीसरे गार्ड को देखा जो अन्य गार्डों को मारते समय उस पर झपटा था।
यह आकार में बड़ा था और उसके दो बड़े, मजबूत हाथ थे जिनसे वह आगे बढ़ा। वह अपने पास मौजूद तलवार का इस्तेमाल नहीं करना चाहता था, शायद इसलिए क्योंकि वह अपनी ताकत का प्रदर्शन करने के लिए नारा को अपने हाथों से चोट पहुँचाना चाहता था।
लेकिन नारा फुर्तीला था, जैसे ही गार्ड आया, वह तेजी से मुड़ा और गार्ड की पीठ के पीछे छिप गया।
एक चिकित्सक होने के नाते, वह सैनिक की गर्दन की रीढ़ की हड्डी की स्थिति को जानता था और इसलिए उसने वहीं मुक्का मारा जहां इसकी जरूरत थी।
उसी क्षण, पहरेदार दर्द से चीख उठा और खुद नाले के पानी में गिर गया। उसने संघर्ष करने की कोशिश की, लेकिन नारा ने उसे लातों से मारा और उसकी गर्दन मरोड़ दी, जिससे वह अनिश्चित समय तक वहीं पड़ा रहा।
नारा अपने से दोगुने बड़े लेकिन काफी संकरे सीवर पाइप में घुस गया, और उसने अपने पैरों के नीचे गंदे, काले पानी की एक धारा बहती देखी। उसके पास ज्यादा समय नहीं था। महल के हॉल तक पहुँचने के लिए शायद पंद्रह मिनट। उसने अपने हाथ में मौजूद कागज को देखा जिसमें धृति द्वारा उसके लिए बनाए गए दिशा- निर्देश थे।
वह पाइपों के बीच से चलने लगा, उसकी नज़रें कागज़ से लेकर सामने, जहाँ अँधेरा छाया था, तेज़ी से ऊपर-नीचे घूम रही थीं। उसके कदमों के साथ बहते पानी की आवाज़ और चूहों व गंदगी की घिनौनी बदबू आ रही थी। नारा ने जल्दी से आखिरी मोड़ लिया और तेज़ी से आगे बढ़ा जब तक कि वह एक टूटे हुए गेट तक नहीं पहुँच गया, जिसके नीचे से वह झुककर निकल गया। उसने शहर की ओर खुलने वाले दो सीवर गेट पार किए, लेकिन वह उस गेट तक पहुँचना चाहता था जो महल की ओर जाता था।
उसे प्रहलाद की कही बात याद आ गई: 'जब तुम सीवर तक पहुँचो, तो ध्यान रखना कि तुम्हारा ध्यान न भटके। और तुम्हें मुझसे पहले महल पहुँचना है। हमारे पास समय नहीं है। इसलिए, जल्दी करो।'

और आखिरकार वह अपने नक्शे पर अंकित आखिरी द्वार तक पहुँच गया। उसने द्वार पर चढ़कर गोलाकार नाले को पार किया। गंदा और बदबूदार, वह लड़खड़ाते हुए नाले से बाहर निकला और मीठी खुशबू वाले शराब के तहखाने में पहुँचा। वह निकास द्वार की ओर बढ़ा, जहाँ उसने एक पहरेदार को ड्यूटी पर देखा।
मैं महल में हूँ। भगवान का शुक्र है!
उसने देखा कि पहरेदार गलियारे के दूसरी तरफ था, इसलिए वह चुपके से बाहर निकला और दबे पांव सिंहासन कक्ष की ओर बढ़ा, जहां प्रहलाद ने उसे जाने के लिए कहा था।
मैं करीब हूँ। मुझे उम्मीद है कि वह भी करीब होगा।

50

चेनचेन

जैसे ही घोड़े ने हिनहिनाहट की, उसने अपना पेट पकड़ लिया।
मैंने उसे नहीं बताया।
काश उसने बता दिया होता, पर उसे पता था कि सब कुछ खत्म होने के बाद ही वह उसे बता पाएगी। वही सबसे सही समय होगा। उसने अपने बगल में खड़ी घोड़ी पर नज़र डाली, जिस पर धृति सवार थी। धृति ने चेनचेन का चिंतित चेहरा देखा, लेकिन उसे नज़रअंदाज़ करते हुए आगे देखने लगी। वे सब अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर रेगिस्तान की तेज़ हवा के विपरीत दिशा में बढ़ते हुए अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रहे थे। यह दक्षिणी मैदानों के बाहरी इलाके में था और वे इलवर्ती के सुनसान मैदान की ओर जा रहे थे।
चेनचेन को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने एक डॉक्टर के रूप में अपना करियर शुरू किया था जिसने कभी अपनी जान जोखिम में नहीं डाली थी, फिर भी वह हर मिशन में जोखिम उठा रही थी और अपने दोस्तों की मदद कर रही थी। वह बहुत बदल गई थी और उसे इस बात की खुशी थी।

जैसे ही वे एक टीले जैसी संरचना के पास पहुँचे, सबसे आगे चल रही ब्राह्मणी ने सबको रोक दिया। उसने दूरबीन निकाली और उसमें से देखने लगी। चेनचेन ने भी अपनी दूरबीन निकाली और दूर हो रही गतिविधियों को देखने लगी। वहाँ दो गाड़ियाँ खड़ी थीं, लेकिन स्थिर थीं। दो आदमी खड़े होकर पहियों की जाँच कर रहे थे।
‘इंद्र ने कहा था कि वे यहाँ होंगे,’ ब्राह्मणी ने कहा। ‘मैदानों के कारण उनका रथ रुक गया होगा। अक्सर इन उबड़-खाबड़ रास्तों पर पहिए लाल हो जाते हैं।’ उसने अपने साथियों की ओर देखा। ‘सब लोग! चलो इसे अपनी आखिरी लड़ाई बनाते हैं।’
और वह अपने घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ती रही, उसकी फांसी का फंदा उसकी जांघ से टकरा रहा था, और चामुंडा और अन्य मातृकाएं ठीक उसके पीछे-पीछे चल रही थीं।
धृति और चेनचेन पीछे की सीट पर बैठी थीं। उसने पूछा, 'तुम उसे कब बताने का इरादा रखती हो?'
चेनचेन ने अपने जबड़े भींच लिए, 'जल्द ही। मैं बस... मुझे नहीं पता कि वह इसे कैसे लेगा।'
‘मुझे यकीन है कि वह खुश होगा।’ धृति मुस्कुराई।
‘हमारी अभी आधिकारिक तौर पर शादी भी नहीं हुई है और मैं पहले से ही गर्भवती हो गई हूँ,’ चेनचेन ने मन ही मन बड़बड़ाते हुए कहा। ‘लेकिन फिर, हमारे पास समय भी नहीं था।’
धृति ने शांत भाव से कहा, 'मुझे पूरा यकीन है, सब कुछ ठीक हो जाएगा।'
चेनचेन को यही उम्मीद थी। सचमुच थी। वह रेगिस्तान के भयंकर बर्फीले तूफान में आगे बढ़ी और रथों तक पहुँची, जहाँ पुरुष उनके आने से बेखबर होकर काम करते रहे। सभी रथों से उतरे, उनके पैर रेत में धंस गए। चेनचेन और ब्राह्मणी रथ की ओर चल पड़ीं। पुरुष अब भी टस से मस नहीं हुए।
जिज्ञासावश चेनचेन ने असुर रक्षक को कंधे से पकड़कर घुमा दिया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह बांस और भूसे से बनी एक कठपुतली थी।
'क्या …'
चेनचेन ने आश्चर्यचकित धृति की ओर देखा, और फिर ब्राह्मणी की ओर, जिसने भी वही खोज की थी।

पार्वती उसके पीछे-पीछे चलते हुए रथ के द्वार तक गईं और उसे खोल दिया। अंदर कोई नहीं था।
‘यह अच्छा नहीं है,’ चेनचेन ने पार्वती की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘हमें धोखा दिया गया है।’
अचानक, लोग उन्हें घेरने लगे। पार्वती और चेनचेन उन आदमियों को घूरने लगीं। वे असुर नहीं थे, बल्कि चेनचेन और पार्वती जैसी त्वचा वाले मानव थे। वे धनुषों से लैस थे और उनके कवच के बीच में एक उठते हुए हाथी का चिन्ह बना हुआ था।
और धूल भरी आंधी के बीच, स्पष्ट रूप से, महिलाओं ने उस व्यक्ति को देखा जो इसके लिए जिम्मेदार था - इंद्र।

51

प्रहलाद

उसे बांधकर और मुंह पर पट्टी बांधकर कश्यपुरी की गलियों से ले जाया गया, पहले की तरह ही उसे धक्का-मुक्की का सामना करना पड़ा। लेकिन इस बार लोग उसके खिलाफ नहीं थे। वे उसके लिए जयजयकार कर रहे थे। वह पुरुषों और महिलाओं को यह कहते हुए सुन सकता था कि होलिका दुर्घटना के बाद, वे भगवान विष्णु में विश्वास करते हैं और प्रहलाद के मार्ग का अनुसरण करना चाहते हैं।
प्रहलाद का सीना खुशी से फूला हुआ था।
उसके चारों ओर दर्जनों सैनिक थे, जबकि अन्य सैनिक कड़ाही और लकड़ी के डंडे लिए हुए उपद्रवी लोगों को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे थे। वे उन सैनिकों से लड़ना चाहते थे जो उन्हें रोके हुए थे।

प्रहलाद के बगल में खड़े एक गार्ड ने कहा, 'काफी समय हो गया है। वे मौजूदा सरकार से संतुष्ट नहीं हैं।'
प्रहलाद ने सिर हिलाया। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसकी प्रशासनिक विफलताएँ जनता को भड़का देंगी। वह असुर राजा के स्वर्ण महल की ओर जाने वाली लंबी, सफेद संगमरमर की सीढ़ियों की ओर चल पड़ा, जहाँ वह कश्यपुरी के राजकुमार के रूप में बैठा करता था। जैसे ही वह आखिरी सीढ़ी पर पहुँचा, उसने पीछे मुड़कर देखा कि हजारों लोग सैनिकों द्वारा पीछे धकेले जा रहे थे, जो उनके किसी कदम का इंतजार कर रहे थे।
प्रहलाद ने अपनी बाहें ऊपर उठाईं। इसके जवाब में, लोग खुशी से झूम उठे और जोर-जोर से शोर मचाते हुए उछलने-कूदने लगे। वह मुस्कुराता रहा, तभी पहरेदार ने उसे धक्का देकर महल के अंदर फेंक दिया। उसके पीछे, लोगों के शोर के बीच महल के द्वार बंद हो गए। उसने ऊपर देखा और सबसे पहले उसे एक लंबा, मोटा लाल कालीन दिखाई दिया, जिसके दोनों ओर विशाल स्तंभ खड़े थे।
कालीन के दूसरे छोर पर, उसके पिता सिंहासन पर बैठे थे। चूंकि गोधूलि बेला हो रही थी, इसलिए उन्होंने कवच नहीं पहना था। वे असुरक्षित थे, ठीक वैसे ही जैसे प्रहलाद ने उनके बारे में अनुमान लगाया था।
‘यह सोचकर हैरानी होती है कि गद्दार वापस क्यों लौट आया है,’ हिरण्य ने गरजते हुए कहा, उसकी आवाज पूरे हॉल में गूंज उठी। वह सिंहासन से उतरा और हाथ में गदा लिए प्रहलाद की ओर बढ़ा। उसके पास उसका हथियार भी नहीं था। ‘तुम्हारा इरादा क्यों बदल गया? तुम वापस क्यों आए हो? क्या तुम फिर से मेरे बेटे बनना चाहते हो?’
प्रहलाद ने कुछ नहीं कहा। उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। 'पिताजी, मैंने कभी आपकी अवज्ञा करने की योजना नहीं बनाई थी। लेकिन आपने मुझे विवश कर दिया। आपने इस राज्य पर भ्रष्ट तरीके से शासन किया है।'
और सही रास्ता कौन सा है?
‘शांति की ओर मार्ग।’
‘इस वर्तमान समाज में शांति का कोई अस्तित्व नहीं है। हमें इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।’
प्रहलाद ने अपना सिर हिलाया, उसकी निगाहें हिरण्य पर टिकी थीं, जो अभी भी उससे कुछ गज की दूरी पर था। उसे डर था कि अगर उसके पिता और करीब आए तो

उन्हें गदा से चोट लग जाएगी, लेकिन अचानक उसके मन से डर गायब हो गया, क्योंकि वह जानता था कि भगवान विष्णु उसकी रक्षा करेंगे।
‘मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता था,’ प्रहलाद ने कहा। ‘लेकिन तुमने मुझे कोई और विकल्प नहीं छोड़ा था।’
'आपका क्या मतलब है?'
‘मैंने देखा कि तुमने लोगों के साथ, मेरे लोगों के साथ क्या किया। तुमने मुझे इतनी बेरहमी से मारना चाहा। यह पागलपन था, पिताजी। तुम्हें जीने नहीं दिया जा सकता,’ प्रहलाद ने कहा। ‘अगर तुम्हें कैद भी कर दिया जाए, तो भी तुम उस कवच और हथियार के साथ भाग निकलोगे।’
हिरानी ने उपहास करते हुए कहा, 'रुको, ज़रा ठहरो। तुम मेरे सामने, मेरे महल में, मेरे राज्य में, बंधे खड़े हो, फिर भी तुम दावा करते हो कि तुम्हारे पास मुझे जीवित रहने देने की शक्ति है? मैं ही तुम्हें जीवित रहने दे रहा हूँ! तुम नहीं, लड़के।'
‘भगवान विष्णु ही हमें जीवित रख रहे हैं। और भगवान विष्णु ही मेरी रक्षा करेंगे।’
‘भगवान विष्णु?’ हिरण्य ने उपहासपूर्वक हंसते हुए कहा। ‘वे कहाँ हैं? क्या मैं जान सकता हूँ, क्या वे यहाँ हैं?’ उसने एक खंभे की ओर इशारा करते हुए पूछा। उसने गदा उठाई और खंभे पर प्रहार किया, जिससे वह चकनाचूर हो गया। ‘मुझे नहीं लगता कि वे यहाँ हैं। यह तो बस मलबा है।’
मुझे उम्मीद है कि वह जल्द ही आ जाएगा। नारा – तुम कहाँ हो?
प्रहलाद ने दृढ़ और गंभीर चेहरे के साथ कहा, 'भगवान विष्णु सर्वत्र विद्यमान हैं। वे हर चीज में विद्यमान हैं, यहां तक कि स्तंभों में भी।' ‘तो आप कह रहे हैं कि वह यहाँ है?’ हिरण्य ने एक दूसरे स्तंभ की ओर इशारा किया। ‘मुझे यकीन है कि वह यहाँ है। और कहाँ होगा, है ना?’
एक बार फिर, उसने गदा को दूसरे खंभे पर जोरदार प्रहार किया और उसे चकनाचूर कर दिया। छत जगह-जगह से फटने लगी।
हिरण्य प्रहलाद के करीब आया और फिर उसके बगल वाले खंभे की ओर चल पड़ा। “अगर वह यहाँ नहीं है, तो वह कहीं नहीं है। तुम्हारे भगवान विष्णु का कोई अस्तित्व नहीं है,” असुर राजा गरजते हुए बोला। “वह न कभी थे और न कभी होंगे। इन काल्पनिक बातों पर विश्वास करना छोड़ दो, बालक!”
नारा… तुम कहाँ हो? हे भगवान विष्णु, मेरी रक्षा करो!

हिरण्य द्वारा एक बार फिर गदा उठाते देख प्रहलाद भय से अपनी आँखें बंद कर लीं। कुछ सेकंड बीत गए। जब उसने आँखें खोलीं तो उसने हिरण्य को एक धुंधली आकृति से कुश्ती करते देखा।
प्रहल्द पीछे हट गया, यह महसूस करते हुए कि नरसिम्हा ही वह व्यक्ति था जिसने असुर राजा को आश्चर्यचकित कर दिया था और उससे उसकी गदा छीन ली थी। हिरण्य ने तेवर चढ़ाए और कुछ बुदबुदाने लगा।
‘तुम इसे बुला नहीं सकते।’ प्रहलाद हँसा। ‘बाहर देखो।’
लेकिन तुम मुझे मार भी नहीं सकते!
‘न किसी मनुष्य द्वारा, न किसी पशु द्वारा, न बाहर से, न भीतर से, न आकाश से, न पृथ्वी से,’ प्रहलाद ने कहा।
हिरण्य हांफते हुए बोला, 'तुमने यह कैसे किया—'
इससे पहले कि वह अपनी हैरानी ज़ाहिर कर पाता, नारा ने उसका गला पकड़ लिया। असुर ने विरोध किया, लेकिन व्यर्थ।
नारा अत्यंत शक्तिशाली था। श्रीवत्स उसकी छाती पर चमक रहा था, जब उसने हिरण्य को घसीटकर दरवाजे तक ले जाकर लात मारकर खोल दिया। रक्षक अपनी जान के डर से इधर-उधर भाग गए; किसी ने भी अपने राजा को बचाने के लिए हस्तक्षेप करने का साहस नहीं किया। नारा ने हिरण्य को अपने घुटनों पर झुकाया और उसकी रीढ़ की हड्डी को दो टुकड़ों में तोड़ दिया। असुर राजा दर्द से चीख उठा। सहारा पाने के लिए छटपटाते हुए, वह सिंह के चेहरे पर खरोंच लगाने में कामयाब रहा, लेकिन नारा को इसका ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। अपने तेज धार वाले पंजों को मिलाकर, उसने हिरण्य के धड़ को फाड़ डाला और उसके आंतरिक अंगों को बाहर निकाल दिया।
इस प्रकार हिरण्यकश्यप का अंत हुआ: न भीतर, न बाहर; न धरती पर, न आकाश में; न सुबह, न रात। वह दहलीज के पार, नरसिम्हा की गोद में, गोधूलि बेला में प्राण त्याग कर बैठा। ठीक उसी क्षण, शोक संतप्त बालक की उपस्थिति में, अत्याचारी असुर वंश का अंत हो गया।
प्रहलाद को विश्वास नहीं हो रहा था कि सब कुछ खत्म हो गया है। अपने पिता के क्षत-विक्षत, बेजान शरीर को देखने के बाद भी, वह अविश्वास में रहा।
यह सचमुच हो गया था। उसके शरीर में एक कंपकंपी दौड़ गई, जो दुख के आँसुओं से भरी एक चीख में तब्दील हो गई। उसे इतना रोना और चीखना था कि पूरी दुनिया सुन ले। उसने कभी इतनी गहरी उदासी महसूस करने की उम्मीद नहीं की थी।

लेकिन उसने ऐसा किया।
आखिरकार, उसने अपने पिता को मार डाला था। अब तक तो यह सब सपनों जैसा ही था, लेकिन अब जब यह काम हो चुका था, तो यह एक भयानक सपने जैसा लगने लगा था। अपनी भावनाओं को काबू में रखने के लिए उसने खुद को गले लगाया, तभी उसे नारा की मजबूत, तगड़ी बाहें एक पिता की तरह अपने चारों ओर लिपटती हुई महसूस हुईं – एक ऐसा पिता जिसकी उसे हमेशा से चाह थी।
और जब वह खुद को गले लगाकर खुद को थामे बैठा था, तो नारा की मजबूत बाहें उसे एक पिता की तरह जकड़ लिया। एक ऐसा पिता जिसकी चाहत प्रहलाद हमेशा से रखता था।
‘मुझे खेद है,’ नारा ने कहा।
‘यह करना ही था।’ उसने उसे कसकर गले लगा लिया। ‘यह करना ही था।’

52

पार्वती

जब उन्हें कठपुतलियाँ मिलीं तो उन्हें पता चल गया था कि कोई मुसीबत आने वाली है। और जब उन्हें पता चला कि यह एक घात लगाकर किया गया हमला था, तो स्थिति और भी बदतर हो गई।
ब्राह्मणी ही एकमात्र ऐसी थी जो भयभीत नहीं हुई; उसने निष्पक्ष रूप से पूरी स्थिति का आकलन किया। ‘इंद्र, इसका क्या अर्थ है?’
चांदी के कवच में लिपटा हुआ वह विशालकाय व्यक्ति उन पर हावी था। उसकी मूंछें और बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और वह पहले से अलग दिख रहा था। पार्वती पहली बार इंद्र को इस अवतार में देख रही थीं।

‘अरे लड़कियों, इसे व्यक्तिगत रूप से मत लो।’ इंद्र ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘इसका तुम लोगों से कोई लेना-देना नहीं है। तुम सब यहाँ सिर्फ़ उसकी वजह से हो।’
पार्वती यह देखकर चौंक गई कि वह चेनचेन की ओर इशारा कर रहा था। 'उसने क्या किया?' पार्वती ने पूछा।
‘वह एक अभागे आदमी की प्रेमिका है।’ इंद्र ने आह भरी। ‘जब मैंने उसे पहली बार देखा था, तभी मुझे उसे मार देना चाहिए था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया क्योंकि मैं नारा को पसंद करता था। जब तक उसने अक्षम्य काम नहीं कर दिया।’ ‘और उसने क्या किया?’ पार्वती ने पूछा।
पार्वती की भयभीत आँखों से ठंडी, शांत आँखें मिलीं। 'उसने मेरे बेटे को मार डाला।'
पार्वती के शरीर में एक कंपकंपी दौड़ गई, इस हद तक कि उसने चेनचेन की ओर देखा, जो खुद को पहचान नहीं पा रही थी।
‘वह ऐसा नहीं कर सकता…’ चेनचेन का गला रुंध गया।
‘खैर, दुर्भाग्य से, उसने ऐसा किया।’ इंद्र ने शोक से सिर हिलाया। ‘मुझे पता है। मैं उससे वह छीनना चाहता था जो उसे सबसे प्रिय था।’ उसकी ‘सबसे प्रिय चीज छीनने की उसकी तीव्र इच्छा,’ उसकी बर्फीली निगाहें चेनचेन को सताती रहीं। वह अब शांत नहीं दिख रहा था। ‘दरअसल, मेरे बेटे की मृत्यु ही एकमात्र कारण था जिसके कारण मैंने अंधका और हिरण्यकश्यप के साथ संधि की। यह सब अंधका की वजह से हुआ। वह अपने पैतृक घर जाने से पहले एक आखिरी काम करना चाहता था।’
‘वह कब गए?’ पार्वती ने अपनी नाक फुलाते हुए पूछा।
“ओह, कल रात। जब मुझे पता चला कि आप उसे मातृकाओं की श्रेणी में शामिल करने की योजना बना रहे हैं, तो मैंने ब्राह्मणी से झूठ बोला ताकि वह चेनचेन को अपने साथ ला सके। दुख की बात है कि वह आपके साथ नहीं जाएगी।”
और चूंकि तुम सब यहाँ हो, मैं तुममें से किसी को भी जाने नहीं दे सकता, है ना? क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरे जाने के बाद तुम लोग मुझसे बदला लेने आओ। तो जाओ, मर जाओ!
और इतना कहकर वह धूल भरी आंधी में वापस चला गया। पार्वती ने इंतजार नहीं किया। एक झटके में उसने अपना धनुष-बाण तैयार किया और मानव सैनिकों पर तीर चलाने लगी। कुछ ही क्षणों में अन्य मातृकाएँ भी उसमें शामिल हो गईं। लेकिन

मानवों ने तीरों की बौछार कर दी। पार्वती को दो बार तीर लगा - एक बार सीने में और फिर कंधे में, और वह पीछे गिर पड़ी। कुछ पल के लिए सब कुछ धुंधला सा हो गया, लेकिन वह हारी नहीं। वह उठी और अपने तरकश के खाली होने तक यथासंभव तीर चलाती रही।
गहरी साँस लेते हुए वह ज़मीन पर गिर पड़ी। उसने मातृकाओं की ओर देखा – चामुंडा को छोड़कर, जिसने त्रिशूल से हमलों को रोका था, बाकी सभी के शरीर में तीर धंसे हुए थे। वे सभी घात से बचने के लिए संघर्ष कर रही थीं। उसने धृति की ओर देखा, जो घुटने में तीर लगने के कारण रथ के सहारे, कठपुतली के पास, धंसी हुई थी।
चामुंडा इंद्र की खोज में रेगिस्तान में गई और लौटकर बोली, 'वह चला गया। वह हरामखोर चला गया।'
पार्वती ने आह भरी, “हम बच गए, है ना?” उसने अपनी दृष्टि के किनारे पर मौजूद चेनचेन से कहा। कोई जवाब नहीं आया। “चेनचेन?”
पार्वती ने मुड़कर अपनी सहेली को देखा तो वह रथ के पास पड़ी थी, उसके सिर में तीर लगा हुआ था, उसकी आँखें बेजान और निर्जीव थीं। पार्वती ने चेनचेन को अपनी बाहों में उठा लिया। 'नहीं, नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकती... नहीं!' मातृकाएं आगे आईं और भय से हांफते हुए बोलीं, 'वह मर नहीं सकती... वह मर नहीं सकती...'
पार्वती के गालों से आंसू बहने लगे और उसकी सहेली के बेजान शरीर पर गिरने लगे। यह सब इंद्र और उसकी षडयंत्रों की वजह से हुआ था। वह जानती थी कि किसकी गलती थी। वह हमेशा से जानती थी, लेकिन देखने में असमर्थ थी।
उसने मातृकाओं की ओर देखा। ‘मैं गलत थी। अंधका,’ उसने स्वयं की ओर सिर हिलाते हुए कहा, मानो इसे स्वीकार करने से यह बात सच हो जाएगी। ‘अंधका स्कंद नहीं है।’
मातृकाएं मौन रहीं।
‘नहीं,’ पार्वती ने दृढ़ता से कहा, ‘वह मेरा पुत्र नहीं है। वह दुष्ट है। और हम दुष्टता का क्या करते हैं? हम उसका वध करते हैं।’

53

नरसिंह

उसने जलती हुई चिता की ओर देखा जहाँ चेनचेन का शव पड़ा था। उसकी बाहें कसकर बंधी हुई थीं और उसे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। न तो गुस्सा था, न ही निराशा। वह बस सुन्न था।
उसने अपने जीवन में कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। हिरण्यकश्यप पर विजय प्राप्त करने के बाद जब उसने उसे पहली बार देखा तो वह फूट-फूटकर रोया था। एक बुराई का अंत हुआ तो दूसरी त्रासदी ने दस्तक दे दी, मानो कोई उसकी खुशी को टिकने ही नहीं देना चाहता था।
उसे पता था कि उसकी मौत उसके कर्मों का फल है। उसने इतने भयानक काम किए थे कि उनका नतीजा यही निकला। उसका अतीत उसे सुधरने नहीं देगा। वह हमेशा एक हत्यारा ही रहेगा।
अच्छा इंसान बनने से बेहतर है कि वही बने रहें।
जब वह सदमे में बैठ गया, तो धृति ने उससे कहा, 'वह तुम्हारे बच्चे को गर्भ में धारण किए हुए थी।'
उसका बच्चा। वह और देर तक, और ज़ोर से रोना चाहता था, लेकिन उसने पीछे गरुड़ और सुपर्ण सेना, मातृकाओं, धृति और अंत में अपने बगल में बैठे प्रहलाद की ओर देखा।
उन्होंने कहा, 'वह एक महान महिला थीं। वास्तव में, एक महान इंसान थीं।' नारा ने अपने जबड़े कस लिए, 'शहर की क्या स्थिति है?'
‘हम इस बारे में बाद में बात कर सकते हैं। अभी तो सिर्फ तीन दिन ही हुए हैं। आप शोक मनाने के लिए समय ले सकते हैं।’
‘मैं नहीं चाहती,’ नारा ने कर्कश स्वर में कहा। ‘मुझे जवाब दो। शहर की स्थिति क्या है?’
‘लोग दंगा कर रहे हैं। सत्ता का शून्य उत्पन्न हो गया है। बचे हुए असुर सैनिकों को अभी पकड़ा जा रहा है,’ प्रहलाद ने उत्तर दिया।
और आपकी आगे क्या योजना है?

‘वापस जाओ। शांति लाओ। मुझे लगता है कि अब वे सब मेरी तरफ देखते हैं,’ प्रहलाद ने कहा।
‘और अंधका कहाँ है?’
‘किसी को नहीं पता। पिछली बार की तरह, वह फिर से भाग गया है,’ प्रहलाद ने कहा। ‘लेकिन वह कुछ न कुछ कर रहा है।’
नारा ने सिर हिलाया। 'और मैं मान रही हूँ कि हमें नहीं पता कि इंद्र कहाँ है?'
‘उसने अपना आखिरी शिविर छोड़ दिया है। वह शायद देवलोक लौट गया है क्योंकि अब वही इलवर्ती का एकमात्र शासक है। वह जल्द ही कश्यपपुरी पर कब्ज़ा करने के लिए अपनी सेना भेजेगा। लेकिन हम ऐसा नहीं होने दे सकते,’ प्रहलाद ने दृढ़ता से कहा। ‘यह अभी भी हमारा शहर है और हम इसका डटकर मुकाबला करेंगे।’ नारा ने सिर हिलाया। 'हम करेंगे। तो, इस सेना, इस राज्य का नेतृत्व कौन करेगा?'
प्रहलाद ने कहा, 'मैं सोच रहा था कि मैं कमान संभाल लूंगा।'
नारा ने सिर हिलाया। 'यह तुम नहीं हो सकते।'
उसने प्रहलाद को घृणा भरी निगाहों से देखा। वह अपना कर्तव्य दूसरों को सौंपने से तंग आ चुका था।
'तब?'
नारा ने चिता को देखा, चेंचेन के लिए किए गए अंत्येष्टि अनुष्ठान के बारे में सोचा और उसके मन में अनेक भावनाएँ उमड़ पड़ीं। उसका क्रोध और कुंठा उमड़ पड़ी। वह अब सेवा नहीं करना चाहता था। वह जानता था कि किसी दूसरे साम्राज्य में मात्र एक सैनिक बनकर वह इंद्र का सिर नहीं काट सकता और उसकी बेजान आँखें नहीं निकाल सकता। उन्हें हराने के लिए उसे उन्हीं की तरह बनना होगा - अंधक और इंद्र की तरह।
‘नहीं,’ नारा ने उस डरपोक लड़के की ओर देखते हुए कहा। ‘मैं ही राजा बनूंगा। मैं कश्यपुरी का राजा बनूंगा।’
जारी है ---…

नरसिम्हा त्रयी का तीसरा भाग

प्रहलाद

***** *****

किताब के बारे में

प्रतिशोधी हिरण्यकश्यप इंद्र को नष्ट करना चाहता है राज्य तो उनके पास है, लेकिन उनके बेटे प्रहलाद के फैसले से वे परेशान हैं। उसका विरोध करो। नरसिम्हा प्रहलाद को खोजने के लिए निकले हैं, लेकिन... अपने रास्ते में, उसका सामना एक पुराने दोस्त और एक प्राचीन विष से होता है।
जो उसकी योजनाओं को पटरी से उतारने की धमकी देता है। क्रोधित होलिका उसकी तलाश में निकल पड़ती है।
अपने भतीजे के बारे में दर्दनाक जानकारियों का पता चलने पर
बचपन की ऐसी घटनाएं जिन्होंने उसे अपने कार्यों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया।
क्या हिरण्यकश्यप इंद्र को हरा पाएगा? क्या होलिका
क्या नरसिम्हा अपने भतीजे के प्रति अपना गुस्सा भूल जाएगा? और क्या नरसिम्हा
प्रहलाद को ढूंढकर उसकी नियति पूरी करना?
इस रोमांच का सिलसिला श्रृंखला की दूसरी किताब के साथ जारी है। बेस्टसेलिंग लेखक केविन द्वारा रचित रोमांचक नरसिम्हा त्रयी
मिस्सल.

लेखक के बारे में

केविन मिसल सेंट स्टीफंस कॉलेज के बाईस वर्षीय स्नातक हैं। उनकी पहली पुस्तक, कल्कि त्रयी का पहला भाग, धर्मयोद्ध कल्कि: विष्णु का अवतार, 2017 में प्रकाशित हुई और समीक्षकों द्वारा खूब सराही गई। इसे '2017 की पौराणिक घटना' कहा गया और यह राष्ट्रीय स्तर पर बेस्टसेलर रही।
केविन को पढ़ना, फिल्में देखना और अपने मन में कहानियां गढ़ना बहुत पसंद है। वह नई दिल्ली में रहता है और आप उससे इस पते पर संपर्क कर सकते हैं: kevin.s.missal@gmail.com

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

BOOK 1
NARASIMHA
THE MAHAAVATAR TRILOGY
KEVIN MISSAL

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

एक गाँव में चिकित्सक के रूप में उनका वेतन बहुत कम था। लेकिन उनके एक परिचित चेहरे ने उन्हें फिर से अपनी ओर आकर्षित किया।
अतीत अंधे सत्ता हथियाने वाले के अत्याचार को रोकने के लिए उसकी मदद मांगता है।
अंधका। अगर नरसिम्हा इनकार करते हैं, तो शायद दुनिया का अंत हो जाएगा। वह क्या करेगा? और उसने शुरुआत में ही युद्ध क्यों छोड़ दिया?
जगह?
कश्यपुरी के अंतरिम राजा प्रहलाद दुविधा में हैं।
अपने अधर्मी पिता के आदर्शों और भगवान विष्णु के प्रति उनके प्रेम के कारण।
वह किसे चुनेगा?
असुर साम्राज्य के शासक हिरण्यकश्यप की इच्छा है कि...
अपनी पत्नी की मृत्यु का बदला लेने के लिए, उसे कई परीक्षाओं से गुजरना होगा और परम हथियार - ब्रह्मास्त्र - प्राप्त करना होगा। लेकिन
इन मुकदमों ने कई अन्य लोगों को मौत के घाट उतार दिया है। क्या
क्या हिरण्यकश्यप बच पाएगा? भगवान के चौथे अवतार की पुनर्कल्पना में आपका स्वागत है।
विष्णु, बेस्टसेलिंग लेखक केविन मिसल द्वारा लिखित।

Harper
Collins

हमसे बात करें
ट्विटर पर बातचीत में शामिल हों http://twitter.com/HarperCollinsIN
हमारी किताबों से संबंधित पोस्ट ढूंढने और अपने दोस्तों के साथ साझा करने के लिए हमें फेसबुक पर लाइक करें। http://www.facebook.com/HarperCollinsIndia इंस्टाग्राम पर हमारी फोटो स्टोरीज़ को फॉलो करें http://instagram.com/harpercollinsindia/
Tumblr पर हमारी किताबों से जुड़ी मज़ेदार तस्वीरें, उद्धरण और बहुत कुछ पाएं।
http://www.tumblr.com/blog/harpercollinsindia

[illegible]

[illegible] 2020 [illegible]

[illegible]-75, [illegible] 57, [illegible], [illegible] [illegible] 201301, [illegible]

www.harpercollins.co.in

2 4 6 8 10 9 7 5 3 1

[illegible] © [illegible] 2020

[illegible]-[illegible]: 978-93-5357-819-0

[illegible] © [illegible] 978-93-5357-820-6

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible], 1957 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]: [illegible]

www.harpercollins.co.in

ए-75, सेक्टर 57, नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301, भारत
1 लंदन ब्रिज स्ट्रीट, लंदन, SE1 9GF, यूनाइटेड किंगडम हेज़ल्टन लेन्स, 55 एवेन्यू रोड, सुइट 2900, टोरंटो, ओंटारियो M5R 3L2 और 1995 मार्खम रोड, स्कारबोरो, ओंटारियो M1B 5M8, कनाडा
25 राइड रोड, पिम्बल, सिडनी, न्यू साउथ वेल्स 2073, ऑस्ट्रेलिया
195 ब्रॉडवे, न्यूयॉर्क, एनवाई 10007, यूएसए